एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति : एक अध्ययन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की पीएच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबंध

निर्देशक
डॉ. नागेश दुबे
वरिष्ठ व्याख्याता
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

प्रस्तुतकर्त्ता
मोहन लाल चढ़ार
शोध छात्र
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
2007

Scanned by CamScanner

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति : एक अध्ययन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की पीएच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

निर्देशक
डॉ. नागेश दुबे
वरिष्ठ व्याख्याता
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

प्रस्तुतकर्त्ता
मोहन लाल चढ़ार
शोध छात्र
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
2007

Scanned by CamScanner

CERTIFICATE OF THE SUPERVISOR

CERTIFICATE

This is to certify that the work entitled 'एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति : एक अध्ययन' is a piece of research work done by **Shri. Mohan Lal Chadhar** under my guidance and supervision for the degree of Doctor of Philosophy of Dr. Hari Singh Gour University, Sagar (M.P.) India. That the candidate has put - in an attendance of more than 200 days with me.

To the best of my knowledge in and belief the thesis:

(i) embodies the work of the candidate himself ;

(ii) has duly been completed ;

(iii) fulfills the requirements of the ordinance relating to the Ph.D degree of the University; and

(iv) is up to the standard both in respect of contents and language for being referred to the examiner

17.4.07

Signature of Supervisor

Lecturer
Dept. of Ancient Indian History,
Culture & Archaeology
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
SAGAR (M. P.)

Forwarded

17/4/07

Signature of Head U.T.D/Principal

Head of the Dept.
Ancient Indian History, Culture &
Archaeology,
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
SAGAR (M. P.)

Scanned by CamScanner

DECLARATION BY THE CANDIDATE

I declare that thesis entitled 'एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति : एक अध्ययन' is my own work conducted under the supervision of Dr. Nagesh Dubey (supervisor) at (center) Deptt. of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Dr. Hari Singh Gour University, Sagar (M.P.) India, approved by Research Degree committee. I have put in more than 200 days of attendance with the supervisor at the center.

I further declare that to the best of my knowledge the thesis does not contain any part of any work, which has been submitted for award of any degree either in this University or in any other University/Deemed University without proper citation.

17.4.07

Signature of Supervisor

Lecturer
Dept. of Ancient Indian History
Culture & Archaeology
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
SAGAR (M. P.)

Signature of Candidate

17/4/07

Signature of Head U.T.D/Principal

Head of the Dept.
Ancient Indian History, Culture &
Archaeology,
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
SAGAR (M. P.)

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

मध्यप्रदेश का प्राचीनतम् सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक सम्पदा से परिपूर्ण 'एरण' सागर जिले की बीना तहसील में सागर नगर से 78 कि.मी. उत्तर–पश्चिम दिशा में बीना नदी के तट पर स्थित है। दूसरी व प्रथम शताब्दी ई.पू. की नगर नाम वाली ताम्रमुद्राओं पर इस नगर का तत्कालीन नाम 'एरिकिण' तथा 'एरकण्य' अभिलिखित है। गुप्तकालीन अभिलेखों में भी नगर की यही संज्ञा मिलती है। इस अंचल की जीवनदायनी बीना नदी अर्द्धचन्द्राकार रूप में प्रवाहित होती हुई एरण ग्राम को तीन ओर से सुरक्षा प्रदान करती है। चौथी ओर (दक्षिण दिशा में) मिट्टी से निर्मित सुरक्षा–प्राचीर है। जिसका निर्माण लगभग 1750 ई.पू. में किया गया था। एरण की भौगोलिक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए यहाँ नवपाषाण, कायथा और ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माताओं ने इस सुरक्षित स्थल को अपने निवास का केन्द्र बनाया था। परवर्तीकाल में मौर्यों, शुंगों, सातवाहनों, शकों, नागों, गुप्तों, हूणों, गुर्जर–प्रतिहारों, कल्चुरियों, चंदेलों, परमारों तथा उत्तर मध्यकाल में क्षेत्रीय दांगी शासकों, सल्तनतकालीन व मुगलकालीन शासकों का भी एरण पर आधिपत्य रहा। नवपाषाणयुगीन, ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति तथा शक, नाग और गुप्तकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में एरण की विशिष्ट भूमिका रही है।

1838 ई. में बिट्रिश कप्तान टी.एस.बर्ट ने एरण की सर्वप्रथम खोज की। उन्हीं का अनुकरण करते हुए भारतीय पुरातत्त्व के जनक जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम ने (1874–75 ई.) इस क्षेत्र का सर्वेक्षण किया और यहाँ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं, अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट (जिल्द 9–10) में प्रकाशित करवाया। कालान्तर में एरण को प्रकाश में लाने का कार्य सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के संस्थापक विभागाध्यक्ष प्रो. के.डी. वाजपेयी ने किया। एरण में 1960–61 ई. से 1964–65 ई. तक प्रो. के.डी. वाजपेयी एवं डॉ. उदयवीर सिंह के संयुक्त निर्देशन में सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग द्वारा उत्खनन कार्य सम्पन्न हुआ। इसके उपरान्त 1984–85 ई. से 1987–88 ई. के दौरान प्रो. सुधाकर पाण्डेय एवं डॉ. विवेकदत्त झा के निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया। 1998 ई. में प्रो. विवेकदत्त झा के निर्देशन में पुनः एरण में उत्खनन किया गया। उत्खनन में यहॉ से हड़प्पा सभ्यता के समकालीन नवपाषाण संस्कृति, कायथा संस्कृति व ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए।

Scanned by CamScanner

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से स्वर्ण वस्तुएँ, ताम्रवस्तुएँ, हाथी–दांत, शंख, पत्थर, पकी मिट्टी और अस्थि पर निर्मित दैनिक–जीवन की उपयोगी वस्तुएँ, मनोरंजन की सामग्री, शतरंज की मुहरें, चौपड़ के पांसे, खिलौना गाड़ियों के पहिये, अंजन–शलाकाएं, पत्थर के उपकरण, पकी मिट्टी की छोटी गोलियाँ, आभूषण और अस्त्र–शस्त्र प्राप्त हुए हैं, जो तत्कालीन मानव जीवन के विविध पक्षों पर व्यापक प्रकाश डालते हैं। इस काल के निवासियों ने विविध मानव तथा पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियों का निर्माण किया। जिनसे इस काल की कला व धर्म की जानकारियां भी प्राप्त हुईं हैं। यहाँ से समृद्ध व विकसित मृद्भाण्ड उद्योग के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। जिन पर विभिन्न आकृतियों का चित्रण किया गया है। एरण से विशिष्ट कायथा मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं, जिनसे कायथा संस्कृति के स्वरूप पर भी प्रकाश पड़ता है। एरण के ताम्रपाषाणयुगीन मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी, हड़प्पा सभ्यता व मौर्यकालीन ब्राह्मीलिपि से समानता रखती है। इस प्रकार एरण से प्राप्त मृद्भाण्डों से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्षों की जानकारी भी प्राप्त हुई हैं।

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति का भारत के आद्यैतिहासिककाल में महत्वपूर्ण योगदान है। एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का समग्र विवेचन अब तक नहीं किया गया है। शोध प्रबंधों, लघु शोध प्रबंधों, शोध पत्रों में एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। इस शोध प्रबंध में एरण उत्खनन से प्राप्त सामग्री का सूक्ष्म अध्ययन व विश्लेषण कर एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। शोध प्रबंध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित है :–

प्रथम अध्याय में, एरण की भौगोलिक स्थिति, पहुचमार्ग, नामकरण, भू–संरचना, सर्वेक्षण व उत्खनन तथा एरण के महत्व की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय में, एरण का प्रारंभ से लेकर अठारहवीं शताब्दी ई. तक का संक्षिप्त इतिहास दिया गया है। इसमें नवपाषाणकालीन संस्कृति, कायथा संस्कृति ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति, प्रारंभिक लौह संस्कृति, मौर्य, शुंग, शक, सातवाहन, कुषाण, नाग, गुप्त, हूण, कल्चुरी, परमार राजवंशों तथा उत्तर–मध्यकालीन राजनीतिक इतिहास का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में भारत की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ तथा एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का सामान्य परिचय दिया गया है । इसमें ताम्रपाषाण संस्कृति का प्रारंभिक

Scanned by CamScanner

परिचय, भारत के प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों का संक्षिप्त विवरण ,एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता, एरण उत्खनन से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा व्यवस्था एवं पुरावशेषों की सामान्य जानकारी का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय चतुर्थ में, एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों का अध्ययन किया गया है इसमें एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड उद्योग, काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड, सफेद रंग से चित्रित काले और लाल मृद्भाण्ड, धूसर मृद्भाण्ड (ग्रेवेयर), मृद्भाण्ड़ चित्रण अभिप्राय, टोंटीदार बर्तन, सपीठ थालियाँ या साधार तश्तरियाँ, मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी का हड़पा सभ्यता की लिपि से तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

अध्याय पंचम में, एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृण्मूर्तियों का अध्ययन किया गया है। इसमें मृण्मूर्तिकला का परिचय एवं भारत में मूण्मूर्तियों की प्राचीनता, ताम्रपाषाणकालीन, मानवीय मूण्मूर्तियाँ, पशु मृण्मूर्तियाँ, तथा पक्षियों की मृण्मूर्तियों का विस्तृत अध्ययन किया गया हैं।

अध्याय षष्ठ में, एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का विवरण दिया गया है। इसमें ताम्रपाषाणकालीन महत्वपूर्ण पुरावशेष, धातु निर्मित वस्तुएँ, प्रस्तर निर्मित वस्तुएँ पकी मिट्टी की वस्तुएँ, शंख तथा अस्थि निर्मित वस्तुएँ तथा भवन अवशेषों का विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

अध्याय सप्तम में, एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का भारत की अन्य समकालीन संस्कृतियों के साथ सम्पर्क एवं सह–सम्बन्धों का अध्ययन किया गया है। इसमें कायथा संस्कृति, आहाड़ संस्कृति, मालवा संस्कृति, जोर्वे संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति से एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों के सम्पर्क का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय अष्ट्म् में, एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का तिथि निर्धारण, महत्व तथा पतन पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय नवम् में, एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के विश्लेषणात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। निष्कर्ष के तहत ताम्रपाषाणयुगीन एरण की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अवस्था की व्याख्या की गई है। साथ ही साथ मृण्मूर्तिकला, मृद्भाण्ड कला के, कला के परिपेक्ष्य में निष्कर्ष दिये गये हैं।

Scanned by CamScanner

अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची दी गई है। मुख्य प्रतिमाओं, चित्रित मृद्भाण्डों, मृण्मूर्तियों, धातु की वस्तुओं, प्रस्तर वस्तुओं, अस्थि निर्मित वस्तुओं, मिट्टी की वस्तुओं के चित्र, रेखाचित्र और मानचित्र सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के बाद संलग्न हैं।

एरण क्षेत्र के प्रति जिज्ञासा तथा आकर्षण का कारण यह ग्राम मेरी जन्मभूमि है, एरण में हुए उत्खननों में मेरे पूर्वजों ने सक्रिय योगदान दिया। दादा जी द्वारा सुनाये गये उत्खनन से प्राप्त सामग्री के संस्मरणों व प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में एम.ए. उत्तरार्द्ध की प्रायोगिक परीक्षा के दौरान देखे गये, ताम्रपाषाणयुगीन पुरावशेषों से एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति पर विस्तृत कार्य करने की प्रेरणा मुझे मिली । इसी मनोभावना के साथ में परम आदरणीय गुरू व पूर्व विभागाध्यक्ष, (प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग)व एरण उत्खनन के निर्देशक प्रो. विवेकदत्त झा से मिला उनके समक्ष संकुचित भाव से एरण से प्राप्त उत्खनन सामग्री पर शोध कार्य करने की जिज्ञासा को व्यक्त किया उन्होंने मेरे अनुरोध को एरण की "ताम्रपाषाण संस्कृति : एक अध्ययन" शीर्षक पर शोध करने की अनुमति देकर पूर्ण किया तथा वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. नागेश दुबे जी ने मेरे अनुरोध को कृपापूर्वक स्वीकार कर इस शोध कार्य में निर्देशक बनना स्वीकार किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा निर्धारित करने से लेकर शोधकार्य की पूर्णता तक निर्देशक महोदय ने मार्गदर्शन दिया तथा शोधकार्य के दौरान जो भी कठिनाईयाँ आई उन्हें सुलझाकर मुझे सम्बल प्रदान किया। शोध प्रबन्ध के निर्देशक के रूप में उन्होंने मेरी प्रत्येक जिज्ञासा का बड़ी ही सरल व्याख्या कर समाधान किया। उनका सानिध्य मुझे प्रोत्साहित करता रहा निर्देशक जी के परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यवहार मेरे प्रति सदैव स्नेहपूर्ण रहा। गुरूमाता श्रीमति वंदना दुबे ने हमेशा पुत्र जैसा व्यवहार किया ऐसे गुरू व गुरूमाता पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मात्र शब्दों में उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त नहीं कर सकता मेरे मन व हृदय में उनके प्रति श्रद्धाभाव आजीवन अंकित रहेगा। उनका यह ऋण अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पण कर भी नही चुका सकता। पूज्यनीय गुरु व विभागाध्यक्ष प्रो. विवेकदत्त झा जिनके सानिध्य में एरण से सागर विश्वविद्यालय तक आया और उच्च शिक्षा प्राप्त की इनका यह उपकार मेरे ऊपर हमेशा बना रहेगा। विभाग के वरिष्ठ व्याख्याता पूज्यनीय गुरू डॉ. आलोक श्रोत्रिय जी ने शोध कार्य पूर्ण करने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। जब भी मैं किन्हीं कारणों से विचलित हुआ उन्होंने मेरे मन की

Scanned by CamScanner

बात समझी और लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा दी। उनके पितृ–तुल्य ममत्व ने मुझे उत्तरदायित्व वहन करने तथा संघर्षों से जूझने की शक्ति दी। ऐसे गुरू पाकर मैं कृतज्ञ हो गया। उनके पूरे परिवार का आत्मीय व्यवहार सम्पूर्ण अध्ययन व शोध कार्य के दौरान रहा। वर्तमान विभागाध्यक्ष, डॉ. सन्तोष वाजपेयी जी ने निरन्तरता और समय को ध्यान में रखकर कार्य करने की प्रेरणा दी और समय–समय पर शोध कार्य मन लगाकर करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. रविन्द्रनाथ अग्रवाल (उपाचार्य) डॉ. के.के. त्रिपाठी (विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, संगीत, वि.वि. खैरागढ़,छ.ग.) प्रो. उदवीर सिंह, (पूर्व विभागाध्याक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, कुरूक्षेत्र वि.वि. हरियाणा), के प्रति में आभार व्यक्त करता हूँ। सभी गुरूजनों ने अपने परामर्शों द्वारा शोध कार्य को दिशा प्रदान की। प्रो. रहमान अली (पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग,विक्रम वि.वि. उज्जैन, म.प्र.) व प्रो. सीताराम दुबे (विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, विक्रम, वि.वि., उज्जैन,) ने भी मुझे शोध कार्य के प्रति प्रोत्साहित किया।

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्त्व संग्रहालय में एरण उत्खनन से प्राप्त ताम्रपाषाणयुगीन पुरावशेषों में मृण्मूर्तियाँ, मृद्भाण्ड, प्रस्तर वस्तुएँ, धातु की वस्तुएँ, पकी मिट्टी की वस्तुएँ व अन्य सामग्री सुलभ मुझे रही। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय, कलकत्ता, पुरातत्त्व संग्रहालय, विक्रम, विश्वविद्यालय उज्जैन, राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय भोपाल में संग्रहित ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेषों के अवलोकन व विश्लेषण से भी शोध कार्य में काफी सहायता मिली। शोध प्रबन्ध में जिन विद्वानों की रचनाओं की सहायता ली गई उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पं. जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय व विक्रम विश्वविद्यालय, पुस्तकालय के कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग मिला, उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

परम पूज्य दादाजी, स्व. दादी जी, पिताजी स्व. माताजी व दूसरी माँ का आशीर्वाद व छोटी बहन शोभा, भावना, प्रवेश अनुज नरेश का स्नेहभाव शोध कार्य के दौरान मिलता रहा। बड़े भ्राता तुल्य डॉ. प्रदीप शुक्ल, डॉ. राजेन्द्र दीक्षित, डॉ. सुरेन्द्र चौरसिया, डॉ. शिवकुमार पारोचे, डॉ. मनोज सचान (सहायक पुरातत्त्ववेत्ता,ए.एस.आई.) व विभाग के सभी कर्मचारियों का सहयोग हमेशा शोध कार्य में मिला। उनके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। सभी मित्रों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य में सहयोग दिया।

Scanned by CamScanner

शोध कार्य करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने जूनियर रिसर्च फैलोशिप व सीनियर रिसर्च फैलोशिप समय–समय पर उपलब्ध कराकर आर्थिक रूप से मदद की इसके बिना भी शोध कार्य सम्भव न हो पाता, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। विश्वविद्यालय के मुख्य कार्यालय की विकास शाखा में पदस्थ श्री व्ही.के. विश्वकर्मा, श्री मनमोहन जी के सहयोग के लिए उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। अन्त में विभाग के संस्थापक पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय प्रो. के.डी. वाजपेयी व सागर, विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

शोध प्रबंध को अन्तिम रूप देने वाले सॉई कम्प्यूटर सेन्टर (पोद्दार कॉलोनी शिवाजी वार्ड, सागर) के संचालक श्री राजेश पाण्डेय का भी मैं हृदय से आभारी हूँ ।

शोध प्रबंध को मौलिकता प्रदान करने का यथा–शक्ति प्रयास मैने किया है। सभी रचनात्मक कार्यों में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। शोध प्रबंध में एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है किन्तु किसी भी शोध कार्य को अंतिम व पूर्ण नहीं माना जा सकता। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की परिसमाप्ति मैंने यथा–संभव ईमानदारी तथा निष्ठा के साथ की है, मेरा ज्ञान सीमित है, जबकि अध्ययन के क्षितिज व्यापक हैं। मैंने अपनी योग्यता भर कार्य करने का प्रयास किया है। इस कार्य में मैं कहा तक सफल हो सका हूँ। इसका निर्णय विद्वानों के हाथ में है। अपने श्रेद्धेय गुरू को प्रणाम करता हुआ अपना शोध प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

मोहनलाल

मोहन लाल चढार

(शोध छात्र)

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
		प्राक्कथन	i-vi
अध्याय प्रथम	:	**भौगोलिक स्थिति** एरण की प्राचीन तथा वर्तमान में भौगोलिक स्थिति, पहुँच मार्ग, नामकरण, भू–संरचना, सर्वेक्षण व उत्खनन तथा महत्व।	1 – 9
अध्याय द्वितीय	:	**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** प्राक्ऐतिहासिक काल, आद्यऐतिहासिक काल एवं ऐतिहासिक काल (महाजनपद काल, मौर्य, शुंग, सातवाहन, शक, नाग, गुप्त, हूण, पूर्व मध्यकालीन, मध्यकालीन इतिहास तथा आधुनिक इतिहास)	10–28
अध्याय तृतीय	:	**भारत की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ तथा एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का सामान्य परिचय** ताम्रपाषाण संस्कृति का प्रारंभिक परिचय, भारत के प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों का संक्षिप्त विवरण, एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता, एरण उत्खनन से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा व्यवस्था एवं पुरावशेषों की सामान्य जानकारी।	29–63
अध्याय चतुर्थ	:	**एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों का अध्ययन** एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड उद्योग,, काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड़, सफेद रंग से चित्रित काले और लाल मृद्भाण्ड, धूसर मृद्भाण्ड, मृद्भाण्ड चित्रण अभिप्राय, टोंटीदार बर्तन, साधार तश्तरियाँ, मृद्भाण्ड़ों पर उकेरी गई ग्रेफिटी की सिन्धु सभ्यता की लिपि से साम्यता।	64–80

Scanned by CamScanner

			पृष्ठ संख्या
अध्याय पंचम	:	**एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृण्मूर्तियों का अध्ययन** मृण्मूर्तिकला का परिचय एवं भारत में मृण्मूर्तियों की प्राचीनता, ताम्रपाषाणकालीन मानवीय मृण्मूर्तियाँ, पशु तथा पक्षी मृण्मूर्तियाँ।	81–110
अध्याय षष्ठ्	:	**एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का अध्ययन** ताम्रपाषाणकालीन महत्वपूर्ण पुरावशेष, धातु निर्मित वस्तुएँ, प्रस्तर निर्मित वस्तुएँ, पकी मिट्टी की वस्तुएँ, शंख तथा अस्थिनिर्मित वस्तुएँ तथा भवन अवशेष।	111–154
अध्याय सप्तम	:	**एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का भारत की अन्य समकालीन संस्कृतियों के साथ सम्पर्क एवं सह–सम्बन्ध** कायथा संस्कृति, आहाड़ संस्कृति, मालवा संस्कृति, जोर्वे संस्कृति, हड़प्पा संस्कृति से एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों का सम्पर्क।	155–179
अध्याय अष्ट्म	:	**एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का तिथि निर्धारण, महत्व तथा पतन** ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का तिथि निर्धारण, महत्व तथा ताम्रपाषाण संस्कृति का पतन	180–187
अध्याय नवम्		**निष्कर्ष**	188–200
		संदर्भ ग्रंथ सूची	201–212
		मानचित्र तथा चित्र सूची	213–216

Scanned by CamScanner

अध्याय प्रथम

भौगोलिक स्थिति

Scanned by CamScanner

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में मध्यप्रदेश का विशेष महत्व है। इस प्रदेश के अनेक पुरास्थलों के उत्खननों से प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है, कि यहाँ पर धर्म, आध्यात्म, साहित्य, कला और ललित कला का सम्यक विकास हुआ। इसमें एरण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

एरण की प्राचीन तथा वर्तमान में भौगोलिक स्थिति

एरण, मध्यप्रदेश के सागर जिला की बीना तहसील में सागर नगर से 78 कि.मी. उत्तर–पश्चिम दिशा में ($24^0 5'10''$ उत्तरी अक्षांश तथा $98^0 10'20''$ पूर्वी देशान्तर) स्थित है।[1] विदिशा से इसकी दूरी 72 कि. मी. उत्तर–पूर्व है।[2]

एरण, बेतवा (प्राचीन बेत्रवती) की सहायक बीना नदी (प्राचीन बेण्वा) के तट पर स्थित है। बीना नदी उत्तर–पश्चिम एवं पूर्व दिशा से एरण को अपने घेरे में लेकर अर्द्धचन्द्राकार रूप में प्रवाहित होती हुई, उसको स्वाभाविक सुरक्षा प्रदान करती है, (चित्र संख्या–1 व 2) दक्षिण दिशा में ताम्रपाषाणकाल में निर्मित सुरक्षा दीवार है। नदी के मोड़ से बने प्राकृतिक अर्द्धवृत्त के भीतर सुरक्षा दीवार का निर्माण किया गया था।[3] एरण से प्राप्त आहत सिक्कों के पृष्ठभाग पर निर्मित चिह्नों से भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। कनिंघम महोदय के अनुसार इन मुद्राओं पर अंकित अर्द्धवृत्त पुराने एरण नगर की स्थिति को प्रदर्शित करता है तथा नदी का चिह्न बीना नदी (प्राचीन बेण्वा) का संकेत करता है, जिसके तट पर एरण नगर बसा हुआ था।[4]

भौगोलिक दृष्टि से एरण का महत्व अधिक रहा है, क्योंकि इसके एक ओर बुन्देलखण्ड तथा दूसरी ओर मालवा का भू–भाग है अतः यह बुन्देलखण्ड तथा मालवा के मध्य एक प्रवेश–द्वार के समतुल्य था।[5] पूर्वी मालवा की सीमा रेखा पर अवस्थित होने के कारण यह दशार्ण तथा चेदि महाजनपद को जोड़ता था।[6]

पहुँच मार्ग :

एरण पहुँचने के लिए तीन मार्ग हैं, पहला मार्ग खुरई होकर जाता है। सागर–बीना सड़क मार्ग पर खुरई से 4 कि. मी. की दूरी पर निर्तला नामक ग्राम से एरण तक 16

Scanned by CamScanner

कि. मी. पक्की सड़क है, जो सिलगाँव, लेटवास, धंसरा, जाऊखेड़ी ग्राम होकर जाती है। दूसरा मार्ग बीना–भोपाल रेलमार्ग पर स्थित मण्डीबामोरा रेलवे स्टेशन से जाता है। मण्डीबामोरा रेलवे स्टेशन से एरण तक 12 कि. मी. की पक्की सड़क है। जो गौहर, धंसरा, जाऊखेड़ी ग्रामों से होकर जाती है। तीसरा मार्ग तहसील मुख्यालय बीना से नौगाँव, मेऊली, कोरजा, सतौरिया ग्रामों से होकर जाता है। सतौरिया ग्राम तक 8 कि. मी. की पक्की सड़क हैं। सतौरिया से बीना नदी तक एक किलोमीटर कच्चा मार्ग है, इसके बाद बीना नदी को नाव द्वारा पार करके एरण पहुँचा जा सकता है।

भू–सरंचना :

एरण नामक पुरास्थल लगभग 3 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में फैला हुआ हैं। प्राचीन टीलों में से मुख्य टीले पर वर्तमान एरण ग्राम स्थित है। इसी मुख्य टीले पर ताम्रपाषाणयुग के लोगों का निवास था। अन्य टीलों पर परवर्तीकालीन निवास संबंधी अवशेष मिले हैं।[7] मुख्य टीले की ऊँचाई लगभग 12.20 मीटर है, जबकि बाहरी टीले लगभग 6.10 मीटर ऊँचे हैं। निवास की अधिकतम मोटाई क्रमशः 8.84 मीटर तथा 2.44 मीटर है।[8] पुरास्थल के कुछ टीलों का नदी की बाढ़ व वर्षा के द्वारा कटाव हो जाने से प्राचीन संस्कृतियों के स्तर स्पष्ट दृष्टव्य होते हैं। यहाँ पर गुप्तकालीन लोगों ने ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों की तरह लगभग 1 कि. मी. लंबी, 4 मीटर चौड़ी, 4 मीटर ऊँची मिट्टी की सुरक्षा–प्राचीर बनाई जो मुख्य टीले से दक्षिण दिशा में लगभग 300 मीटर दूर है।[9] वर्तमान में इस सुरक्षा–प्राचीर पर मानव आवास है। इस पुरास्थल पर ताम्रपाषाणकाल से लेकर आधुनिक काल तक के पुरावशेष दृष्टव्य होते हैं।

नामकरण :

जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम ने सर्वप्रथम प्राचीन **'ऐरिकिण नगर'** की पहचान एरण से की।[10] 'ऐरिकिण' नाम इस क्षेत्र व नगर दोनों के लिए प्रयुक्त होता था। एरण की प्राचीन संज्ञा **'एरिकिण'** अथवा **'एरकण्य'**[11] अनेक अभिलिखित मुद्राओं एवं अभिलेखों में मिलती हैं। एरण की जनपदीय मुद्राओं में **'एरकण्य'**, गुप्तकालीन अभिलेखों में **'एरिकिण,'** साँची अभिलेख में **'ऐरकिन'** के रूप में एरण का उल्लेख हुआ है।[12] एरण से प्राप्त समुद्रगुप्त के अभिलेख में एरण का नाम **'ऐरिकिण'** लिखा गया है।[13] भानुगुप्त के प्रतिनिधि गोपराज का अभिलेख[14] तथा हूण शासक तोरमाण के अभिलेख में भी एरण का नाम **'ऐरिकिण'** उल्लेखित है।[15] रेप्सन महोदय ने **'एरकण्य'** को 'एरकेण' पढ़ा है।[16]

Scanned by CamScanner

एरण उत्खनन से प्राप्त गजलक्ष्मी की मुद्रा में एरण का प्राचीन नाम **'ऐरिकिण'** उल्लेखित है।[17] एरण से प्राप्त अभिलिखित ताम्र–मुद्राओं के अग्रभाग में एरण का प्राचीन नाम ब्राह्मी लिपि में **'एरकत्र्य'** मिलता है।[18] अभी हाल में एरण से प्राप्त एक पूर्वमध्यकालीन सती स्तम्भ में एरण का नाम **'ऐरनी'** लिखा मिला है। मध्यकालीन व आधुनिक काल के सती स्तम्भों में एरण का नाम 'ऐरन बत्तीसी' लिखा गया है। अतः स्पष्ट है, कि प्राचीनकालीन 'ऐरिकिन', **'एरकण्य'** का नाम गुप्तकाल में **'एरिकिण'** हुआ और पूर्व मध्यकाल में **'ऐरनी'** हुआ। उत्तरमध्यकाल व आधुनिक काल में इस ग्राम का नाम **'ऐरन बत्तीसी'** हुआ। मुगलकाल में एरण महाल (मुख्यालय) 32 ग्रामों का केन्द्र था। इस कारण ही इसे 'ऐरन बत्तीसी' कहा जाता था।[19] वर्तमान में भी अधिकांशतः लोग इस ग्राम को 'ऐरन बत्तीसी' के नाम से जानते हैं। एरण के प्राचीन नाम 'एरकण्य' 'एरिकिण' 'ऐरिकिण' 'ऐरकिन' के संबंध में विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत व्यक्त किये हैं :–

पहला मत **जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम** का है, उनके मतानुसार इस क्षेत्र में **'ईरक'** अथवा **'ऐराका'**[20] नामक घास (काँस) बहुतायत में पैदा होती थी, जिसके कारण इस भू–भाग का नाम **'ऐरिकिण'** अथवा **'एरण'** पड़ा।[21]

दूसरा मत **डॉ0 काशीप्रसाद जायसवाल** का है उनके मतानुसार 'ऐरक' नामक नाग के कारण इस नगर का नाम 'एरक' (प्राचीन) अथवा एरण (आधुनिक) पड़ा।[22] नाग वंशी शासकों का अधिकार प्राचीनकाल में इस क्षेत्र पर था। महाभारत में 'एरक' नामक नाग का उल्लेख मिलता है।[23] अतः 'एरक' नामक नाग के नाम पर ही यह क्षेत्र **'एरक–कच्छ' (एरकच्छ)** कहलाया।

तीसरा मत **प्रो0 कृष्णदत्त वाजपेयी** ने प्रतिपादित करते हुये यह संभावना व्यक्त की है, कि पौराणिक **'ऐल'** तथा **'ऐर'** वंश के नाम पर यह नगर **'एरकिण'** कहलाया। उनके मतानुसार ऐलवंशी शासकों का जब चेदि जनपद में प्रभुत्व था। तब एरण उनका महत्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा।[24]

चौथा मत प्रो.विवेकदत्त झा ने प्रतिपादित किया है, उनके मतानुसार 'थेरीगाथा' (पृ. 34) में उल्लेखित **'एरकच्छ'** तथा 'पेतवत्थु' (पृ. 161) व निशीथ भाष्य (10.03.63) तथा 'आवश्यक निर्युक्ति' का **'एरकच्छ'** वस्तुतः **'एरकण्य'** अर्थात् एरण नगर ही है। पेतवत्थु के अनुसार **'एरकच्छ'** नगर दशार्ण जनपद, धसान (प्राचीन दशार्ण) का निकटवर्ती क्षेत्र था। कतिपय विद्वानों ने झाँसी जनपद में एरच की पहचान **'एरकच्छ'** या **'एरककच्छ'** से की

Scanned by CamScanner

है किन्तु, उक्त मत इसलिए स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रथम, एरण दशार्ण जनपद के अंतर्गत नहीं था और द्वितीय, विदिशा से एरच की दूरी बहुत अधिक है तथा विदिशा और एरण की बीच स्थित प्रसिद्ध नगरों का उल्लेख आवश्यक–र्निर्युक्ति में नहीं है। वस्तुतः आर्यमहागिरी विदिशा से एरण गये थे। एरण विदिशा से अधिक दूर नहीं है।[26]

इन विभिन्न मतों में से जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम का अभिमत ठोस और प्रमाणित प्रतीत होता है। वस्तुतः कहा जा सकता है, कि एरण में ऊगने वाली प्रदाह प्रशामक तथा मन्दक गुणधर्म वाली **'ईरक'** अथवा **'ऐराका'**[22] नामक घास (काँस) अधिक मात्रा में पैदा होती थी और वर्तमान में भी यह काफी मात्रा में पैदा होती है अर्थात् 'ईरक' व **'ऐराका'** नामक घाँस से ही कालान्तर में एरण का प्राचीन नाम 'एरकत्र्य', 'एरकण्य', 'एरिकिण', 'ऐरनी' व 'एरण' पड़ा। **'एरकत्र्य,' एरकण्य'** प्राकृत भाषा के अपभ्रंश हैं, जबकि **'ऐरिकिण', 'ऐरनी'** संस्कृत भाषा के शब्द हैं। प्राचीनकाल में एरण प्रदेश में काँस अधिक मात्रा में होने के कारण इस क्षेत्र की अधिकांश भूमि बंजर थी,कृषि बहुत कम क्षेत्र में होती थी। जिस भूमि में बीज न उग सकें उसे संस्कृत में **''इरिण''** कहा जाता है। संभवतः इसी 'इरिण' से इस क्षेत्र का नाम एरकण्य, ऐरिकिण व एरण पड़ा।

प्राचीनकाल में एरण जनपद, प्रदेश तथा विषय के रूप में प्रसिद्ध था। हूण शासक तोरमाण के अभिलेख में एरण का उल्लेख 'विषय' के रूप में हुआ है।[23] नगर और प्रदेश के रूप में प्रसिद्धि का उल्लेख गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के एरण अभिलेख में **'स्वभोगनगरे एरिकिण प्रदेशे'** अभिलिखित है।[29] इतिहासकारों ने 'स्वभोगनगर' का अर्थ आमोद–प्रमोद का नगर लगाया है। इससे स्पष्ट होता है, कि समुद्रगुप्त ने इस रमणीय स्थल पर कुछ समय निवास किया होगा।[30] एरण से मिट्टी की एक मुहर मिली है, जो आकार में गोल है। उसके ऊपरी भाग पर **'गजलक्ष्मी'** का अंकन है और निचले भाग पर **'ऐरिकिणेगोमिक विषयाधिकरण'** लेख अभिलिखित है, इससे स्पष्ट होता है, कि गुप्तकाल में गौमिक नामक विषय 'एरिकिण' भुक्ति के आधीन था।[31] **बुद्धगुप्त के अभिलेख में** इस क्षेत्र का कालिन्दी–नर्मधोमध्ये अर्थात् यमुना और नर्मदा के मध्य प्रदेश के रूप में उल्लेख किया गया है।[32] एरण से प्राप्त **शक शासक श्रीधर वर्मा के अभिलेख** में एरण प्रदेश का उल्लेख **'अधिष्ठान'** के रूप में मिलता है, अधिष्ठान का आशय नगर से लिया गया है।[33] भुक्ति तथा विषय के रूप में सीमा विस्तार क्या रहा होगा, इसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होता है।

Scanned by CamScanner

बीना नदी का नामकरण

एरण ग्राम की जीवनदायिनी सरिता का उद्‌गम स्थान रायसेन जिले में स्थित बीलगढ़ की पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर बेल नामक पेड़ अधिक होते थे और वर्तमान में भी हैं, एक बेल के नीचे बने कुण्ड से यह नदी निकलती है, अतः बेल के पेड़ के नाम पर इसका प्राचीन नाम **बेण्वा** पूर्वमध्यकाल में इसका नाम **बीला** पड़ा और बीला से **बीना** नाम पड़ा। बीना नदी के नाम पर ही एरण के तहसील मुख्यालय का नाम बीना पड़ा।[34]

सर्वेक्षण व उत्खनन कार्य

सर्वप्रथम एरण को खोजने का श्रेय **ब्रिट्रिश कप्तान टी. एस. बर्ट** को जाता है। 1838 ई. में उन्होंने बुद्धगुप्त का एरण अभिलेख व तोरमाण का वराह मूर्तिलेख खोजा उसी वर्ष **जेम्स प्रिन्सेप** ने पाठ और अनुवाद सहित उसे प्रकाशित कराया।[35] तत्पश्चात् 1861 ई. में **डॉ. फिटज एडवर्ड हाल** ने इसका संशोधित पाठ प्रकाशित कराया। डॉ. हाल के बाद **जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम** और **फेथफुल फ्लीट** ने इस अभिलेख का सम्पादन किया।[36] कप्तान टी. एस. बर्ट के पूर्व सर्वेक्षण के आधार पर कनिंघम सर्वेक्षण के लिए एरण गये और भानुगुप्त के प्रतिनिधि **गोपराज का अभिलेख** व **समुद्रगुप्त का अभिलेख** सर्वप्रथम कनिंघम महोदय ने 1874–75 ई, में खोजा था और इसे आर्क्योलॉजिकल रिपोर्ट्स ऑफ इण्डिया की दसवीं जिल्द में प्रकाशित करवाया।[37] एरण से प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्री को अपने ग्रन्थ **रिपोर्ट्स ऑफ टूर्स इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा** में भी प्रकाशित करवाया।[38] 1959–60 ई. में सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग द्वारा इस क्षेत्र का सर्वेक्षण **प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी** के निर्देशन में किया गया और उत्खनन कार्य के लिए यह पुरास्थल चुना गया।

एरण में जो उत्खनन कार्य किये गये, उसका श्रेय मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय, सागर को जाता है, इस विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा 1960 ई. से 1965 ई. में **प्रो. के. डी. वाजपेयी** व **डॉ. उदयवीर सिंह** के संयुक्त निर्देशन में उत्खनन कराया गया। इस उत्खनन में 20 निखातें (खदानें) लीं गईं । इस उत्खनन से मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थल एरण प्रकाश में आया।[39] डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा ही दूसरी बार 1984–1985 ई, से 1986–87 ई. में **प्रो. सुधाकर पाण्डेय** व **डॉ. विवेकदत्त झा** के संयुक्त निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया। इस

Scanned by CamScanner

उत्खनन में लगभग 12 खदानें लीं गईं । जिससे एरण में नवपाषाण, कायथा व ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुये।[40] तीसरी बार 1998 ई. में **प्रो.विवेकदत्त झा** के निर्देशन में उत्खनन कार्य कराया गया। इन सभी उत्खननों से एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति पर विशेष प्रकाश पड़ा है।

महत्व

मध्यप्रदेश के अनेक नगरों में सांस्कृतिक विकास हुआ, इन नगरों में एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है।[41] एरण का महत्व अपने कला वैभव के कारण विशिष्ट है। एरण एक ऐसा केन्द्र है, जो अनेक काल खण्डों में सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहा है। मानवीय जीवन की निंरतर विकासशील–धारा की दृष्टि से इस प्राचीन स्थल का अध्ययन भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है।[42] डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा जो उत्खनन कार्य व सर्वेक्षण किये गये। जिनके परिणामस्वरूप एरण तथा समीपवर्ती स्थलों से प्रागैतिहासिक, आद्यैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युग के अत्यंत महत्वपूर्ण अवशेषों की प्राप्ति हुई है, जिनसे एरण का महत्व स्पष्ट होता है।

एरण से **समुद्रगुप्त का अभिलेख**[43] **बुद्धगुप्त का अभिलेख,**[44] **मानुगुप्त का अभिलेख**[45] **श्रीधर वर्मा का अभिलेख**[46], **हूण शासक तोरमाण का अभिलेख**[47] प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल के **सती स्तम्भ लेखों** से एरण का महत्व उद्घटित हुआ है।[48] गुप्तकाल में समुद्रगुप्त ने इसे अपना आमोद–प्रमोद (स्वभोग) का नगर बनाया और कुछ समय समुद्रगुप्त अपनी पत्नि, पुत्र, पौत्रों सहित एरण में रहा। इस समय एरण का विकास चरमोत्कर्ष पर था।[49] एरण को सागर जिले का प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर होने का गौरव भी प्राप्त है। यह प्राचीन काल के प्रमुख राजमार्गों से जुड़ा था। एरण से एक राजमार्ग विदिशा होकर उज्जयिनी तथा दूसरा राजमार्ग एरण से कौशाम्बी होता हुआ वाराणसी जाता था।[50] राजपथ पर स्थित होने से इस स्थल का अपना विशेष महत्व था। भारतीय कला के इतिहास में मध्यप्रदेश के सागर जनपद में स्थित एरण का विशेष महत्व है।[51]

मध्यप्रदेश के सागर जिले की वर्तमान बीना तहसील के अंतर्गत एरण ग्राम (प्राचीन ऐरिकिण) आज भले ही एक सामान्य ग्राम हो किन्तु प्राचीन काल में इसे भारत का एक

Scanned by CamScanner

संदर्भ सूची

1 दुबे, नागेश : एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 3

2 सिंह, उदयवीर : एरण ए चाल्कोलिथिक सेटलमेंट, बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1969, अंक – 1, पृ. 29

3 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 4

4 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : 'रिपोटर्स ऑफ टूर्स इन मालवा एण्ड बुन्देलखण्ड, वाराणसी, 1966, पृ. 46

5 एलन, जान : केटलॉग ऑफ द क्वायंस ऑफ ऐन्शियेंट इण्डिया, लंदन, 1891, पृ. 99

6 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1985, पृ. 99

7 दुबे, शैली : एरण के कलावशेष (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध), डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1983, पृ. 1

8 वाजपेयी, के.डी. एवं पाण्डेय, एस. के. : भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1969, इलाहाबाद, पृ. 144

9 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 20

10 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 77

11 वाजपेयी, कृष्णदत्त : सागर थ्रू द एजेज, सागर, 1964, पृ. 35

12 एपिग्राफिया इण्डिका खण्ड–2,पृ. 87, 116

13 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त, पृ. 36

14 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 77

15 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त, पृ. 30

16 रेप्सन : जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी, लंदन, 1980, पृ. 118

17 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू, 1960, पृ.17

18 एपीग्राफिया इण्डिका, खण्ड–2 पृ. 375

19 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त, पृ. 36

20 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 77

21 आर्क्योलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट नई दिल्ली, खण्ड – 9, पृ. 177

22 जायसवाल, काशीप्रसाद : हिन्दू पॉलिटी, कलकत्ता, 1924, पृ. 145

23 महाभारत आदिपर्व, : पृ. 57, 13–14

24 झा. विवेकदत्त : "रीसेण्ट एक्सवेशन्स एट एरण" आर्क्योलॉजिकल स्टडीज, बनारस, 1986, पृ. 101

25 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 6

Scanned by CamScanner

26 झा, विवेकदत्त : "एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक सांस्कृतिक केन्द्र" ईसुरी अंक–4, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, सन् 1986–87, पृ. 9

27 सागर जिला गजेटियर भोपाल,1970, पृ. 41

28 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 7

29 कार्पस इन्सक्रप्सन इण्डीकेरम,जिल्द – 3, पृ. 158

30 वाजपेयी, कृष्णदत्त : इण्डियन न्यूमिस्मेटिक स्टडीज, दिल्ली 1973, पृ. 172

31 वाजपेयी, संतोष कुमार : ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, दिल्ली,1997, पृ. 112

32 कार्पस इन्सक्रप्सन, इण्डीकेरम,जिल्द–3, पृ. 89

33 वही : भाग–4, पृ. 609

34 सागर जिला गजेटियर : पूर्वोक्त पृ. 40

35 वाजपेयी, कृष्णदत्त व अन्य : ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख, जयपुर, 1992, पृ. 185

36 वही : पृ. 185

37 कार्पस इन्सक्रप्सन, इण्डीकेरम,जिल्द–3, पृ. 88–90

38 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त पृ. 77

39 सिंह, कृष्णकुमार : उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, दिल्ली, 2001, पृ. 80

40 वही : पृ. 80

41 झा, विवेकदत्त : ईसुरी अंक–4 पूर्वोक्त, (1986–87), पृ. 9

42 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 3

43 कार्पस इन्सक्रप्सन, इण्डीकेरमभाग जिल्द–3, पृ. 31

44 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त पृ. 82

45 कार्पस इन्सक्रप्सन, इण्डीकेरम,जिल्द–4, पृ. 609

46 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 89

47 वही : पृ. 84

48 वही : पृ. 89–90

49 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 86

50 वाजपेयी, संतोष कुमार : भारतीय ऐतिहासिक सिक्के, 1997, दिल्ली, पृ. 111

51 वाजपेयी, के. डी., पाण्डेय ,एस. के. : पूर्वोक्त, पृ. 41

Scanned by CamScanner

अध्याय द्वितीय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

Scanned by CamScanner

मध्यप्रदेश के सागर जिले के प्राचीन स्थल 'एरण' में पुरातात्त्विक उत्खनन विविध सत्रों में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा कराये गये । इन उत्खननों से प्राप्त पुरावशेषों से एरण के नवपाषाणकालीन, ताम्रपाषाणकालीन, और ऐतिहासिककालीन संस्कृति की जानकारी मिली है।[1]

प्राक् ऐतिहासिक काल

एरण और उसका निकटवर्ती प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से ही मानव की क्रीडा–स्थली रहा है। एरण में बीना नदी के तट से बड़ी संख्या में पुरापाषाण, मध्यपाषाण तथा नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।[2]

पुरापाषाण काल

एरण के निकट भापसौन घाट तथा छपरेट घाट में बीना नदी के तट से पुरापाषाणकाल के उपकरण प्राप्त हुए हैं।[3] एरण के आस–पास से प्राप्त पुरापाषाण उपकरणों को लाल बलुआ, पत्थर, फ्लिंट तथा क्वार्टजाइट से बनाया गया है। इस क्षेत्र से प्राप्त उपकरणों में मुठछुरा, खुर्चन–यंत्र (स्क्रेपर), बिदारक (क्लीवर), गंडासा तथा कतरना (चॉपर–चापिंग) प्रमुख हैं। ये पुरापाषाण उपकरण विकास की तीन अवस्थाओं के द्योतक हैं।[4]

मध्यपाषाण काल

एरण, भापसौन घाट और छपरेट घाट में बीना नदी के तट से मध्यपाषाणकालीन उपकरण, ब्लेड, ब्यूरिन्स (खुरचनी) प्राप्त हुए हैं, जो चर्ट, अगेट व क्वार्टजाइट पत्थर से निर्मित हैं। ये उपकरण छोटे व सुघड़ हैं। इनके निर्माण की प्रविधि विकसित है। इस काल के उपकरणों में खुर्चन यंत्र, अग्रास्त्र, छिद्रक, बाणफलक इत्यादि प्रमुख हैं।[5]

नवपाषाण काल

एरण के सर्वेक्षण तथा उत्खनन में नवपाषाणकालीन उपकरण प्रस्तर–कुठार, बाणफलक, अग्रास्त्र इत्यादि प्राप्त हुए हैं। जो आगेट, जास्पर, क्वार्ट्ज जैसे मजबूत व चिकने पत्थर से बनाये गये हैं। इन उपकरणों को विकसित प्रविधि द्वारा बनाया गया है। उपकरणों को निश्चित आकार देने के बाद शिलाखण्ड पर घिसकर चिकनाया गया है।

Scanned by CamScanner

नवपाषाणकालीन मानव ने पशुपालन, अनाज संग्रह बड़े स्तर पर प्रारम्भ कर दिया था।[6] एरण में कायथाजनों के समकालीन नवपाषाण संस्कृति के लोग धातु से अपरिचित थे। वे केवल पत्थर की समतल चमकीली कुल्हाड़ियों और हस्तनिर्मित मिट्टी के असुघड़ बर्तनों का उपयोग करते थे। उत्खनन में इस काल के स्तरों से हस्तनिर्मित मृद्भाण्ड़ प्राप्त हुए हैं, उन पर टोकरी अथवा चटाई की छाप है। पक्की मिट्टी के मनके, चिकनी–चमकीली, कुल्हाड़ियाँ, सिलबट्टे और पत्थर के छोटे–छोटे ब्लेड भी उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। एरण उत्खनन में नवपाषाणकालीन स्तर से भारत में पहली बार घोड़े को बाकायदा दफनाने के प्रमाण मिले हैं। बीना नदी के तट पर एरण क्षेत्र से पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।

आद्यैतिहासिक काल

बर्ष 1960–65 ई. के मध्य प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी तथा डॉ. उदयवीर सिंह के संयुक्त निर्देशन में सर्वप्रथम उत्खनन किया गया। इस कालावधि में उत्खनन के लिए बीस खदाने ली गईं। परिणामस्वरुप एरण में ताम्रपाषाणकाल की जानकारी प्राप्त हुई। वर्ष 1984–1988 ई. में प्रो. सुधाकर पाण्डेय तथा डॉ. विवेकदत्त झा के निर्देशन में हुए उत्खनन में सर्वप्रथम ज्ञात हुआ, कि एरण में कायथा संस्कृति के लोग, यहाँ निवासरत नवपाषाणकालीन लोगों के साथ आकर बस गये। उक्त उत्खनन के पहले तक मध्यप्रदेश में कायथा सबसे प्राचीन नगर माना जाता था।[8]

कायथाजनों के तुंरत बाद अब से लगभग चार हजार वर्ष पहले एरण पर ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों का आधिपत्य हो गया। वे लोग पाषाण उपकरणों के साथ ताँबे की वस्तुओं का उपयोग करते थे। नदी द्वारा सुरक्षित अर्द्धचन्द्राकार भू–भाग पर उनका निवास केन्द्रित था।[9] ताम्रपाषाणकालीन मानव ने सुंदर चित्रित, मजबूत चाक द्वारा मृद्भाण्डों को बनाया। ये 'मृद्भाण्ड' कला की दृष्टि से आश्चर्यजनक हैं। यहाँ उत्खनन से भवनों के छह स्तर प्राप्त हुए हैं। जिससे ज्ञात होता है, कि भवनों का फर्श मिट्टी और बजरी (रेत) को कूटकर बनाया जाता था। कभी–कभी मृद्भाण्डों के टुकड़ों को फर्श बनाने के प्रयोग में लाया जाता था तथा भवनों की आंतरिक आर्द्रता को कम करने के लिए कोयले के टुकड़ों का भी प्रयोग किया गया है। मकान, मिट्टी बाँस और पत्तों से बनाये गये थे। मकानों में कच्ची ईटों का प्रयोग कम हुआ हैं। इस काल में मानव द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले चूल्हों की भी जानकारी प्राप्त हुई है।[10] श्रृंगार के प्रति इस काल के निवासियों का रूझान था, इसका उत्खनन में प्राप्त हाथीदाँत के लटकन, धातु की

Scanned by CamScanner

अंजन–शलाकाएं, ताम–मुद्रिका, शंख, ताँबा, पत्थर और पक्की हुई मिट्टी की चूड़ियाँ, कर्ण–आभूषण, विविध सामग्री के मनके, सुगन्धित तेल और चूर्ण रखने के लिए मुलायम पत्थर से निर्मित लघु पात्रों द्वारा पता चलता हैं। हरिण के सींग और पत्थर के अस्त्र–शस्त्रों के अलावा ताँबें की कुल्हाड़ियाँ और बाणफलक भी उन्होंने प्रयोग किये। चावल, कपास, गेहूँ, जौ, मटर तथा मूँग की खेती हरिण तथा मछलियों का शिकार, पशुपालन उदरपूर्ति के साधन थे। लोग स्वर्ण, रजत, ताम्र और काँसे से परिचित थे। लोहे का पूर्ण–ज्ञान उन्हें इस काल में नहीं हो पाया था, इसलिए वे समुन्नत शस्त्रों का निर्माण नहीं कर पाए। एरण में इस संस्कृति का अन्त सातवीं शताब्दी ई. पू. के लगभग हुआ।[11] एरण के ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से लोहे के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए है, इनका काल कार्बन 14तिथि निर्धारण विधि से 1200 ई.पू. ज्ञात हुआ है।[12]

ऐतिहासिक काल

सातवीं शताब्दी ई. पू. के लगभग लौह उपकरणों से सुसज्जित लोग एरण में जा बसे। लोहे के भाले, बाणफलक, नेजा, चाकू तथा अन्य दैनिक उपकरणों का निर्माण करने के साथ इन्होंने नवीन मृद्भाण्डों का निर्माण किया।[12] इनमें काले, उत्तरी काले औपदार (चमकदार) मृद्भाण्ड विशिष्ट हैं। वे बर्तन अत्यंत उच्चकोटि की मृद्भाण्ड कला के परिचायक हैं।[13] एरण से महाजनपद काल, मौर्यकाल, शुंग, सातवाहन, कुषाण, शक, नाग, गुप्त, हूण, पूर्वमध्यकालीन, उत्तर–मध्यकालीन तथा आधुनिक इतिहास के पुरातात्त्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इससे ज्ञात होता है, कि एरण में ऐतिहासिक काल में मानव संस्कृति का निरंतर विकास हुआ।

महाजनपद काल

महाकाव्यों और पुराणों में उल्लेखित महाजनपदों की सूची में अवन्ति, दशार्ण, विदिशा आदि के नाम मिलते हैं, किन्तु इन महाजनपदों की सीमाओं का निर्धारण नहीं किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है, कि एरण का क्षेत्र विदिशा (भेलसा) जनपद के अंतर्गत था। बौद्ध एवं जैन धर्म ग्रंथों (अगुत्तर निकाय, भगवती सूत्र) में सोलह जनपदों का उल्लेख हुआ है। इसमें केवल चेदि एवं अवन्ति का नाम है। कुछ विद्वान एरण क्षेत्र को चेदि जनपद में मानते हैं। अधिकांश विद्वानों का मानना है, कि दशार्ण तथा पूर्वी मालवा का कुछ भाग चेदि जनपद में सम्मिलित हो गया था।[14] डॉ. संतोष कुमार वाजपेयी के अनुसार छठवीं शताब्दी ई. पू. में एरण क्षेत्र अवन्ति जनपद में था।[15] छठवीं शताब्दी ई. पू.

Scanned by CamScanner

के उपरांत यह क्षेत्र 'पुलिंद' देश में सम्मिलित कर लिया गया। पुलिंद देश में बुन्देलखण्ड का पश्चिमी–भाग और सागर जिला सम्मिलित था। **'टालमी'** के अनुसार 'फुलिटों' (पुलिन्दों) का नगर **'आगर'** (सागर) ही था।[16]

मौर्यकाल

तीसरी शताब्दी ई. पू. में एरण क्षेत्र पर मौर्य सम्राट अशोक का अधिकार था। वह उज्जैन का प्रान्तपति रह चुका था। साँची के स्तूप निर्माण में एरण के निवासियों का विशेष योगदान रहा, इसके अभिलेखीय प्रमाण उपलब्ध हैं। इससे स्पष्ट है, कि अशोक का इस क्षेत्र से घनिष्ट संबंध था। सागर के आसपास रूपनाथ, जबलपुर, गुर्जरा, दतिया, पांगुरारिया (सीहोर), साँची (रायसेन) में अशोककालीन अभिलेखीय प्रमाण व कलावशेष इस क्षेत्र पर अशोक के आधिपत्य के प्रमाण हैं।[17]

एरण में तीसरी शताब्दी ई. पू. में आहत मुद्राओं का प्रचलन हो चुका था। यहाँ तीसरी शताब्दी ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई. के मध्य निर्मित सिक्के प्राप्त हुए हैं।[18] इन मुद्राओं पर स्वस्तिक, त्रिरत्न, वृक्ष, नदी, पर्वत, लक्ष्मी और हाथी जैसे चिह्न अंकित किये गये हैं। उत्खनन के दौरान एक मृद्भाण्ड के अंदर रखे **3268 आहत सिक्के** प्राप्त हुए हैं। मौर्य सत्ता कमजोर हो जाने के पश्चात् तीसरी शताब्दी ई. पू. के अंतिम चरण में एरण तथा विदिशा क्षेत्र पर कुछ समय के लिए स्थानीय शासकों का आधिपत्य हो गया था। कनिंघम महोदय को एरण से एक अभिलिखित ताम्र–मुद्रा प्राप्त हुई थी। यह मुद्रा धर्मपाल नामक शासक की है, जिसमें मौर्यकालीन ब्राह्मी में **'रञोधम्म पालस'** लेख उत्कीर्ण है। इससे स्पष्ट होता है, कि धर्मपाल नामक स्थानीय शासक ने तृतीय शताब्दी ई. पू. के अंतिम चरण में एरण पर शासन किया होगा। इस एक मात्र सिक्के के प्रमाण के अतिरिक्त हमें इस राजा के या इसके राजवंश के संबंध में कुछ ज्ञात नहीं हैं।[20] उत्खनन से प्राप्त ठप्पांकित सीसे के बाँट पर दूसरी सदी ई.पू. की ब्राह्मी में **'इदगुतस'** लेख लिखा हुआ मिला है। इससे धर्मपाल के पश्चात अथवा इससे पूर्व इस क्षेत्र पर 'इन्द्रगुप्त' नामक शासक के शासन की जानकारी मिलती है।[21] शिवगुप्त नाम के शासक का सिक्का भी एरण सें मिला है।[22] उपर्युक्त तीनों शासकों नें तीसरी शताब्दी ई. पू. में पूर्वी मालवा पर कुछ समय शासन किया। प्रतीत होता है, कि इन शासकों ने एरण–विदिशा के सम्मिलित क्षेत्र पर शासन किया होगा।[23] दूसरी शताब्दी ई. पू. में एरण और त्रिपुरी गणराज्यों की स्वतंत्र मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।[24] एरण से प्राप्त मुद्राओं पर दूसरी शताब्दी ई. पू. की ब्राह्मी

Scanned by CamScanner

लिपि में **'एरकण्य'** अथवा **'एरकत्र्य'** नाम अंकित है।[25] उक्त शब्द उस समय प्रचलित 'प्राकृत' भाषा के हैं, जो संस्कृत के अपभ्रंश है। इन मुद्राओं पर किसी शासक के नाम के स्थान पर राज्य का नाम अंकित है। संभवतः त्रिपुरी व उज्जियनी के समान ही एरण भी कुछ समय के लिए गणराज्य की राजधानी रहा होगा।[26] उत्खनन में प्राप्त बड़ी–बड़ी ईंटों से बने मकानों के फर्श, मनोरंजन प्रसाधन सामग्री, घड़ों और अनाज के गोदामों में संग्रहीत गेहूँ, चावल, जौ तथा मजबूत व सुंदर मृद्भाण्डों के उपयोग द्वारा नगर की समृध्दि का संकेत मिलता है।[27] अभी हाल में (शोधार्थी को) शोध कार्य के दौरान एरण से **460 ताम्र आहत सिक्के** एक छोटे मृद्भाण्ड में रखे हुऐ मिले है, जो लगभग प्रथम सदी ई. पू. के है।

शुंग

'दिव्यावदान' से ज्ञात होता है, कि मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् इस क्षेत्र पर शुंग वंश का अधिकार हो गया।[28] कालिदासकृत 'मालवाग्निमित्रम्' से ज्ञात होता है, कि पुष्यमित्र शुंग ने विदर्भ–युद्ध (ई. पू. 184) के बाद विदिशा (बेसनगर) के राज्यपाल के रूप में अपने पुत्र अग्निमित्र को नियुक्त किया था। उस समय पूर्वी मालवा का प्रमुख केन्द्र विदिशा ही था।[29] विदिशा से कौशाम्बी जाने वाले प्राचीन राजमार्ग पर एरण स्थित था। अतः ऐसा प्रतीत होता है, कि विदिशा के साथ ही साथ एरण पर कुछ समय शुंग वंश का आधिपत्य रहा होगा।

सातवाहन

शुंग वंश के पतन के पश्चात् आन्ध्र–सातवाहन वंश के शक्तिशाली राजा गौतमी पुत्र सातकर्णी ने पूर्वी मालवा क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। नासिक गुहा लेख से इसकी पुष्टि होती है।[30] एरण उत्खनन में पाई गयी सातवाहन राजाओं की मुद्रायें भी इस क्षेत्र पर सातवाहनों के आधिपत्य की पुष्टि करती हैं। **सातवाहनकालीन 'शालभंजिका'**[11] की अत्यंत कलात्मक प्रतिमा एरण से प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा तोरण शालभंजिका की है। जो किसी विशाल स्तूप के तोरण अथवा मंदिर में लगी थी।[31]

कुषाण

एरण से अभी हाल में एक कुषाणकालीन कला में निर्मित **मुखलिंग** मिला है। कुषाणकालीन एक मुद्रा भी एरण से प्राप्त हुई है। उल्लिखित है, कि सांची से **कुषाण**

Scanned by CamScanner

शासक वासिष्क का अभिलेख मिला है। उक्त प्रमाणों से कुषाणों का प्रभाव मध्यप्रदेश के एरण तक परिलक्षित होता है।

शक

सातवाहनों के पश्चात इस क्षेत्र पर शकों का अधिकार हो गया। इसकी पुष्टि एरण से प्राप्त शक शासक **श्रीधरवर्मा के अभिलेख,**[32] एरण उत्खनन तथा सर्वेक्षण में प्राप्त मुद्राओं से होती है। तीसरी शताब्दी ईस्वी में एरण क्षेत्र शकों का प्रमुख केन्द्र रहा। यहाँ उनकी टकसाल थी। एरण उत्खनन से प्राप्त सिक्के ढालने के साँचे इसके प्रमाण हैं। संभवतः एरण उनकी क्षेत्रीय राजधानी बनी। एरण से **जीवदामन, वीरदामन, विजयसेन, रूद्रेसन, विश्वसेन, सिंहसेन** इत्यादि शक शासकों के सिक्के प्राप्त हुए हैं।[33] विजयसेन और रूद्रसेन के साँचे तिथियुक्त हैं। महाक्षत्रप विजयसेन की तिथि शक संवत् 170 (248 ई.) लिखी हुई है। वीरदामन के पुत्र महाक्षत्रप रूद्रसेन द्वितीय के नौ साँचे मिले है। उन पर शक संवत् 180 (258 ई.), 185 (263 ई.), और 189 (267 ई.) की तिथियाँ अंकित है। रूद्रसेन द्वितीय के पुत्र विश्वसिंह के साँचे भी मिले हैं। इसनें क्षत्रप, महाक्षत्रप दोनों की उपाधियाँ धारण की थीं। इस वंश के अंतिम शासक महाक्षत्रप स्वामी रूद्रसिंह तृतीय के दो साँचे मिले हैं।[34] इसकी पक्की मिट्टी की बनी हुई गोल आकार की अभिलिखित मुद्रा भी मिली है। उसमें ब्राह्मी लिपि में **'रज्ञो ईश्वरमित्रपुत्रस्य राज्ञो सिंह श्री सेनस्य'** लेख लिखा है। ईश्वर मित्र के पुत्र सिह श्री सेन ने पूर्वी मालवा क्षेत्र में 282 ई. से 284 ई. के मध्य शासन किया था। क्षत्रप शासकों की सूची के अनुसार सिंहसेन उस वंश का छब्बीसवाँ शासक था। सिंहसेन के पिता ईश्वरमित्र का नाम सिक्कों से ज्ञात न होकर सर्वप्रथम उसी मुद्रा से ज्ञात हुआ है।[35] शकों के शासन काल में एरण नगर समुन्नत था। शकों ने अनेक भवन निर्मित कराये, गन्दे पानी के निकास की समुचित व्यवस्था की।[36] उत्खनन में इस काल के मण्डलकूप व नालियां प्राप्त हुई हैं।

नाग

एरण से नाग शासकों के छोटे गोल आकार के ताम्र–निर्मित सिक्के बड़ी संख्या में मिले हैं।[37] उन पर 'महाराज' अथवा 'महाराजश्री' उपाधि के साथ राजा का नाम लिखा हुआ है। अधिकांश सिक्कों पर राजा का नाम स्पष्ट अंकित न होने के कारण अपठनीय हैं, किन्तु सिक्कों पर प्रायः 'महाराज' की उपाधि अंकित हुई है।[38] दो सिक्कों पर **रविनाग** और **गणपति नाग** के नाम स्पष्ट अंकित हुए हैं। एक सिक्के पर गणपति नाग का नाम

Scanned by CamScanner

'महाराज श्री गणेन्द्र' मिलता है।[39] नागवंश में गणपति नाग अंतिम शासक था। जिसे समुद्रगुप्त ने पराजित किया था।[40] उक्त मुद्रा संबंधी साक्ष्यों के आधार पर स्पष्ट है, कि एरण क्षेत्र पर नागों का कुछ समय तक आधिपत्य रहा होगा।

गुप्तकाल

नागों को पराजित कर प्रांरभिक गुप्त शासकों ने एरण को फौजी छावनी का दर्जा दिया। गुप्तकालीन स्तरों से मिट्टीयुक्त पिघला कच्चा–लोहा एरण से प्राप्त हुआ है। संभवतः गुप्तकाल में यहाँ युद्ध के लिए अस्त्र–शस्त्र बनाये जाते थे। गुप्तकाल में ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा दीवार के बाहर बसे लोगों की सुरक्षा के लिए एक अतिरिक्त मिट्टी का परकोटा बनवाया गया, जो लगभग एक कि. मी. लंबा था। यह सम्भवतः शकों और हूणों के आक्रमणों से नगर को सुरक्षित रखने का प्रयास था।[41] गुप्तवंश के इतिहास में एरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समुद्रगुप्त, बुधगुप्त और भानुगुप्त के शासन काल के अभिलेखों, रामगुप्त के सिक्कों, गुप्तकालीन सुरक्षा दीवार तथा मंदिर, मूर्तियों के निर्माण द्वारा एरण का महत्व स्पष्ट हो जाता हैं। एरण से प्राप्त गुप्तकालीन मुहर पर 'सिंहनन्दी' नामक अधिकारी का नाम गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है। अभी हाल में शोधार्थी को एरण से गुप्तकालीन पक्की मिट्टी की मुहर मिलीं। जिसमें **'महादण्डनायक श्री बट्टगल्लिस्य'** लेख गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ है। उक्त मुहरों से ज्ञात होता है, कि गुप्तकाल में सुरक्षा की दृष्टि से एरण का अत्याधिक महत्व था। जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम नें 1874–75 ई. में **समुद्रगुप्त के एरण अभिलेख** की खोज की थी।[42] यह अभिलेख भारतीय संग्रहालय कलकत्ता में सुरक्षित है। इस अभिलेख के आधार पर समुद्रगुप्त के साम्राज्य को विन्ध्यक्षेत्र, महाकौशल, व पूर्वी मालवा तक माना गया है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है, कि समुद्रगुप्त अपनी पटरानी तथा परिवारजनों (पुत्र–पौत्रों) सहित 'एरिकिण' प्रदेश में स्थित अपनी भुक्ति के नगर **'एरिकिण'** में आया था। एरण के हरे–भरे प्राकृतिक सौन्दर्य ने गुप्त सम्राट को आकृष्ट किया होगा। बीना नदी के अथाह निर्मल जल तथा यहाँ की भौगोलिक स्थिति ने कवि–यौद्धा को इस स्थान पर कुछ कालावधि तक रहने को विवश किया।[43]

समुद्रगुप्त के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त मालवा क्षेत्र का शासक हुआ। उसके समकालीन विदेशी शक अत्याधिक शक्तिशाली हो गये और रामगुप्त पर आकमण कर उसे बन्दी बना लिया। शक नरेश ने रामगुप्त को मुक्त करने के लिए उसकी अत्यन्त

Scanned by CamScanner

गुप्त साम्राज्य का अस्तित्व संकट में पड़ गया था। स्कन्दगुप्त ने पुष्यमित्रों और हूणों को परास्त कर उनके सभी अधिकार क्षेत्रों को हस्तगत कर लिया था।[54] गुप्तों का एरण पर अधिकार महाराजाधिराज भानुगुप्त तक रहा। बुधगुप्त तथा भानुगुप्त के अभिलेख एरण से मिले हैं।[55] एरण से सर्वप्रथम जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम को एक **नृवराह** की विशाल प्रतिमा प्राप्त हुई। जिसमें **'श्री महेश्वरदत्तस्य व वराहदत्तस्य'** गुप्तकालीन ब्राह्मी में उत्कीर्ण हैं।[56] यह वर्तमान में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर के पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित है। एरण से गुप्तकालीन मन्दिर समूह भी मिले हैं (चित्र संख्या–3) जो अभी केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के आधीन हैं। यहाँ से प्राप्त विष्णु मंदिर में **भगवान विष्णु** की प्रतिमा 13.2 इंच ऊँची प्रतिष्ठापित हैं। (चित्र संख्या–5) इस विष्णु मंदिर का निर्माण सम्भवतः चन्द्रगुप्त द्वितीय ने करवाया था।[57] कनिंघम इस मंदिर समूह को समुद्रगुप्त के समय निर्मित मानते हैं। मन्दिर की बनावट के आधार पर अधिकांश विद्वान इसका निर्माण 500 ईस्वी के लगभग निर्धारित करते हैं।[58]

मंदिर समूह में दूसरी **पशुवराह** की (11.2 इंच ऊँची, 13.2 लम्बी, 5.2 इंच चौड़ी) मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित है ।(चित्र संख्या–4) यह मंदिर लगभग 485 ई. से 510 ईस्वी के मध्य निर्मित किया गया था।[59] यह मंदिर विष्णु मंदिर के दक्षिण दिशा में स्थित है। पशुवराह के वक्षस्थल पर हूण शासक तोरमाण का अभिलेख उत्कीर्ण है।[60] गुप्तकालीन मंदिर परिसर में नृसिंह प्रतिमा भी दृष्टव्य है। नृसिंह मंदिर नष्ट हो चुका है। नृसिंह प्रतिमा की ऊँचाई सात फुट है। मंदिर परिसर में विष्णु मंदिर के समुख 47 फुट ऊँचा गरूड़ स्तम्भ स्थित है। इस स्तम्भ पर बुधगुप्त का अभिलेख उत्कीर्ण है।एरण मंदिर परिसर से सूर्य, गणेश, गजलक्ष्मी, महिषमंर्दिनी, त्रिविक्रम, वामन अवतार, कृष्ण लीला से सम्बन्धित दृश्य भी शिलापटटों पर भव्यता से उत्कीर्ण किये गये हैं।[61] एरण की गुप्तकालीन कला में मुख्यतः विष्णु के दस अवतरों का वर्णन किया गया है।

अभी हाल में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,डॉ. हरीसिह गौर वि.वि. सागर के वरिष्ठ शिक्षक डॉ. आलोक श्रोत्रिय ने एरण से प्राप्त गुप्तकालीन कुछ नवीन अभिलेख पढ़ने में सफलता प्राप्त की है। उनमें से प्रथम लेख बुधगुप्त के स्तम्भ पर अंकित है। कुलयजगुप्त के द्वारा लेख उत्कीर्ण के सम्बंध में विवरण आया है। जिसमें **''कुलयजगुप्त बाड्डनोत्कीर्णितम्''** लिखा गया है। सम्भवतः यह बुधगुप्त के अभिलेख को उत्कीर्ण करने वाले विद्वान शिल्पी का नाम है, दूसरा लेख स्तम्भ पर ही इस

Scanned by CamScanner

प्रकार अंकित है, **''सामन्तजेषस्य नाम समान्त रणे (सर्व) रण वर्णनाशम लिखिताः''** उत्कीर्ण किया गया है।यह सम्भवतः हूण शासक मिहिरकुल का कोई सामन्त का नाम है। जो भानुगुप्त के सेनापति, गोपराज की मृत्यु के बाद एरण के सामन्त धन्यविष्णु के पश्चात एरण क्षेत्र पर शासन कर रहा था। एरण के गुप्तकालीन मंदिर परिसर से शिल्पियों व दानदाताओं के नाम के लेख कनिंघम महोदय ने पढ़े थे। जो निम्न है, प्रथम लेख **''ऐद्रमिचन्द्र''** (यह लेख नृसिंह मंदिर के पास मिला) था। वर्तमान में महाविष्णु के मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के पृष्ठ भाग में लगा हुआ है। दूसरा लेख **'इष्टहरग्रही'** (यह विष्णु मंदिर के पास मिला था।) [62]

हूण

एरण से **हूण शासक तोरमाण का अभिलेख** पशुवराह प्रतिमा के वक्ष स्थल पर प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है, कि तोरमाण के आधीन मातृविष्णु का अनुज धन्यविष्णु सामन्त के रूप में एरण पर शासन कर रहा था।[63] अभिलेख से ज्ञात होता है, कि 484 ई. के बाद कभी तोरमाण ने गुप्तों से एरण का भाग छीन लिया। इस तरह पाँचवी शताब्दी ईस्वी के अन्तिम चरण मे एरण हूणों के आधिपत्य में चला गया था। इसी समय तोरमाण ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी। अभिलेख में उसे महाराजाधिराज' कहा गया है। एरण से प्राप्त मुद्राओं के द्वारा भी हूणों का इस क्षेत्र में आधिपत्य सिद्ध होता है।[64] मातृविष्णु की मृत्यु के उपरान्त उसके अनुज धन्यविष्णु के द्वारा महाराजाधिराज तोरमाण के प्रथम वर्ष में वराह मंदिर बनवाया। इसका उल्लेख तोरमाण के अभिलेख मे किया गया है।[65]

गुप्त सम्राट भानुगुप्त के शासन काल में गुप्त सम्वत् 191 (510 ई.) में एक युद्ध हुआ। तोरमाण के उत्तराधिकारी मिहिरकुल के विरूद्ध स्वतंत्रता के युद्ध में गुप्त सम्राट भानुगुप्त के सेनापति गोपराज ने अपने प्राण गँवायें। यह युद्ध एरण के समीप ही कहीं हुआ था, इसकी पुष्टि एरण से प्राप्त गोपराज सती स्तम्भ लेख से होती है।[66] इस अभिलेख से ज्ञात होता है, कि युद्ध में गोपराज ने वीरगति पाई और उसकी पतिव्रता पत्नी उसके साथ सती हो गईं।[67] अभिलेख में गुप्तों की विजय का उल्लेख नही है, प्रतीत होता है, कि युद्ध में गुप्तो की पराजय हुई होगी । **हेमचन्द्र राय चौधरी का मत है**, कि भानुगुप्त की इस युद्ध में विजय हुई होगी, उसका इस स्थान पर उत्कीर्ण अभिलेख इस तथ्य का प्रमाण है।[68]

Scanned by CamScanner

व्हेनसांग के विवरणानुसार मिहिरकुल ने गुप्त नरेश नरसिंहगुप्त बालादित्य पर जब आक्रमण किया, तब बालादित्य अपनी सेना सहित एक टापू मे छिप गया। पीछा करते हुए टापू पर पहुँचने वाले मिहिरकुल को बालादित्य ने बन्दी बना लिया। बाद में अपनी माता के कहने पर मिहिरकुल को मुक्त कर दिया।[69] पराजित मिहिरकुल मुक्त होने पर काश्मीर की ओर चला गया। एक अन्य मत यह है, कि मध्य भारत के शासक यशोवर्मन ने मिहिरकुल को पराजित किया था।[70] हूणों को अंतिम रूप से मध्यभारत से खदेड़ने का श्रेय बालादित्य को ही है।

व्हेनसांग के अनुसार बालादित्य, बुधगुप्त का पौत्र था। सम्भवतः बालादित्य ने जिस टापू पर शरण ली थी, वह एरण ही था। तीन ओर से बीना नदी और चौथी ओर 120 फुट चौड़ी, 18 फिट गहरी खाई से आवृत्त एरण की शक्ल एक टापू जैसी थी। इस खाई में पानी भरा रहता था।[71] बालादित्य द्वारा मिहिरकुल की पराजय का समय भी लगभग छठवीं शती ईस्वी के चौथे दशक में निर्धारित किया गया ।[72]

पूर्वमध्यकालीन इतिहास

गुप्तोत्तरकाल में एरण का स्वतंत्र रूप से राजनीतिक अस्तित्व लुप्त हो गया था। तत्कालीन कतिपय चाँदी के हिन्द–सासानी सिक्के एरण व उसके आस–पास के क्षेत्र से मिले हैं।[73] सातवी शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में हर्षवर्धन ने मालवा क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया। एरण भी उसमें सम्मिलित था।[74] चीनी यात्री ह्वेनसांग ने स्पष्टतः से लिखा है, कि सातवी शताब्दी ईस्वी मे यह क्षेत्र जुझौति 'जेजाकभुक्ति' कहलाता था।[75] सागर का एरिकिण (एरण) क्षेत्र जेजाकभुक्ति क्षेत्र में ही सम्मिलित था।[76] आठवी शती ईस्वी में गुर्जर–प्रतिहारों का मालवा क्षेत्र पर आधिपत्य हो गया था।[77] इसी अवधि मे राष्ट्रकूट भी प्रबल हुए। राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने मालवा के कुछ क्षेत्र गुर्जर–प्रतिहारो से छीन लिये। नौवी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ में राष्ट्रकूट, गुर्जर–प्रतिहार तथा पाल राजवंशों के बीच सत्ता का संघर्ष चलता रहा।[78] इसी शताब्दी के अन्त में 'जेजाकभुक्ति' क्षेत्र चन्देलों के अधिकार में आ गया। पूर्व में सागर, दमोह और जबलपुर, गंगा–यमुना के दक्षिण का प्रदेश और पश्चिम में बेतवा तक के क्षेत्र इनके अधिकार में आ गये ।[79] सागर परिक्षेत्र से चन्देलों से सम्बन्धित कोई भी अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त नही हुआ है, फिर भी अनुमानतः चन्देलों के साम्राज्य, में सागर का अधिकांश क्षेत्र था। धंग चन्देलवंश का प्रमुख शासक था। उसका साम्राज्य उत्तर में यमुना तक, उत्तर–पश्चिम में ग्वालियर तक और

Scanned by CamScanner

दक्षिण–पश्चिम में वेसनगर तक फैला हुआ था।[80] अभी हाल में (शोधार्थी को) सर्वेक्षण के दौरान 10 सती स्तम्भ एरण से प्राप्त हुए हैं। उनमें से एक सती स्तम्भ में शक सम्वत 788 ईस्वी (866 ई.) का उल्लेख है, अभिलेख में चार पंक्तिया है। इसमें नागरी लिपि में एरण का नाम 'ऐरनी' लिखा हुआ है। इस सती स्तम्भ से स्पष्ट है, कि नौवी शती ईस्वी में एरण क्षेत्र में सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियाँ प्रचलित थी।

परमार नरेशों ने भी पूर्वी मालवा क्षेत्र पर लम्बे समय तक राज्य किया । विदिशा सहित सागर क्षेत्र पर भी उनका अधिकार रहा । परमार शासकों ने एरण से 10 कि.मी. दूर मंडीबामोरा नामक स्थान पर एक शिवालय बनवाया, जो आज केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग, के आधीन है। उदयपुर (विदिशा जिला) से प्राप्त अभिलेख से ज्ञात होता है कि उदयपुर में स्थित शिव मंदिर का निर्माण परमार शासक उदयादित्य ने करवाया था।[81] उदयपुर की दूरी एरण से लगभग 25 कि.मी. है। अतः उक्त साक्ष्यों से स्पष्ट है, कि एरण क्षेत्र पर भी कुछ समय परमारों का आधिपत्य रहा था। परमारों की सत्ता समाप्ति चालुक्यों तथा त्रिपुरी के कल्चुरियों के द्वारा हुई। नौवी शताब्दी ई. के उत्तरार्द्ध में कल्चुरी नरेश कौकल्यदेव प्रथम ने चन्देरी से नर्मदा व कन्नौंज तक का क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया था । सागर व जबलपुर क्षेत्र पर कल्चुरियों का अधिकार बारहवी शताब्दी ई. के उत्तरार्द्ध तक रहा।[82] सम्भवतः एरण क्षेत्र पर भी इनका आधिपत्य रहा इसकी पुष्टि सागर जनपद में प्राप्त कल्चुरि नरेश शंकरगढ के शिलालेख से होती है।[83] यह शिलालेख वर्तमान में हरीसिंह गौर पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर में संग्रहीत है। हाल ही मे सागर जिले से कल्चुरि नरेशों के समय के अवशेष मिले हैं। जिनसे प्रमाणित होता है, कि यह क्षेत्र कल्चुरियों के आधीन रहा है।[84]

मध्यकालीन इतिहास

तेरहवी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ में इस क्षेत्र पर राजपूत राजा जो डांगी वंश के थे। खुरई, खिमलासा, एरण, दुगाहा और मालथौन पर उनका आधिपत्य था।[88]

एरण में दृष्टव्य एक सती स्तम्भ में शक सम्वत् 1155 (1233 ई.) का उल्लेख है। इस अभिलेख मे "महाराजाधिराज सुजितानमहदेव" देवनागरी लिपि में लिखा हुआ है। सम्भवतः यह राजा डांगी वंश का था, जो स्वतंत्र रुप में इस क्षेत्र पर शासन कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता है, कि बाहरी आक्रमणकारियों से युद्ध में इसकी मृत्यु हो जाने के कारण उसकी पतिव्रता पत्नि सती हुई थी। तेरहवी शताब्दी ई. के उत्तरार्द्ध में मुस्लिम शासकों

Scanned by CamScanner

का इस क्षेत्र पर अधिकार हो गया । इस सम्बन्ध में बहुत कम तथ्य मिलने के कारण मात्र अनुमान के आधार पर कहा जा सकता है, कि अगली दो शताब्दीयों तक मुस्लिम शासकों ने इस क्षेत्र पर राज्य किया होगा ।[86] 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार मालवा के उज्जैन, माण्डु, धार, चन्देरी , इत्यादि पर हो गया था।[87] सम्भवतः एरण क्षेत्र भी मुहम्मद अलाउद्दीन खिलजी से अछूता न रहा होगा। दिल्ली सल्तनत के शिथिल होने पर स्थानीय शासको को अपनी शक्ति पुनः स्थापित करने का अवसर मिल गया और इस क्षेत्र पर कुछ समय के लिए गौड़ राजाओं ने अधिकार कर लिया । गौड़ राजाओं में संग्रामसिंह का नाम इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है।[88]

चन्देरी बुन्देलखण्ड में स्थित राजपूतों का गढ़ था। 1528 ई. में यहाँ का शासक मेदनीराय था। 10 जनवरी 1528 ई. को बाबर ने चन्देरी पर आक्रमण कर दिया और मेदनीराय को पराजित कर चन्देरी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया।[89] 1531 ई. मे हुमायुँ का बुन्देलखण्ड में स्थित कांलिजर पर अधिकार हो गया ।[90] 1542 ई. में शेरशाह सूरी ने मालवा पर अधिकार कर अधिकांश भाग को अपने साम्राज्य मे मिला लिया और सुजात खां को वहाँ का सूबेदार नियुक्त किया। 1542 ई. में शेरशाह सूरी ने रायसेन के किले पर वहाँ के शासक पूरनमल को पराजित कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।[91] प्रतीत होता है, कि एरण क्षेत्र पर भी शेरशाह सूरी का आधिपत्य था। अकबर के समय एरण क्षेत्र पर गौड़ राजाओं का आधिपत्य समाप्त हुआ। अकबर ने इस क्षेत्र को सीधे मुगल शासन के आधीन कर लिया। एरण को मालवा सूबा के चन्देरी सरकार के एक महाल के रूप मे रखा गया। एरण महाल का इस समय क्षेत्रफल 1759 बीघा था। यह महाल सेना के लिए 10 घुड़सवार तथा 100 पैदल सैनिक प्रदान करता था। उस समय एरण महाल में डांगियों की संख्या अधिक थी।[92]

सत्रहवीं शताब्दी ई. के उत्तरार्द्ध में बुन्देला नरेश छत्रसाल के उत्कर्ष होने पर एरण सहित सम्पूर्ण सागर क्षेत्र छत्रसाल ने मुगलों से छीन लिया व अपनी सत्ता स्थापित की ।[93] छत्रसाल ने सम्पूर्ण मालवा को रौंद डाला। 1705 ई. में औरंगजैब ने उससे सन्धि कर ली और दक्षिण की सेना में उसे 400 का मनसब दे दिया। औरंगजैब की मृत्यु के बाद छत्रसाल ने बुन्देखण्ड आकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की ।[94] इस समय एरण क्षेत्र पर डांगी शासकों का आधिपत्य था।[95] डांगी सरदारों ने प्राचीनकालीन सुरक्षा–प्राचीर पर ही पत्थर का परकोटा व एक गढ़ी का निर्माण करवाया। मुगलकाल में बत्तीस ग्रामों के

Scanned by CamScanner

प्रशासन का केन्द्र एरण **"एरण बत्तीसी"** कहलाया।[96] एरण में दृष्टव्य मध्यकालीन छः सती स्तम्भों में **"एरण बत्तीसी"** लिखा गया है।

आधुनिक काल

मुगलों के कमजोर पड़ने पर इस क्षेत्र में मराठे सक्रिय हुए 1731 ई. में छत्रसाल की मृत्यु के उपरान्त सागर क्षेत्र पूर्णतः मराठों के अधिकार में चला गया। मराठे 1761 ई. तक बालाजी बाजीराव तक प्रभावशाली रहे।[97] कालान्तर में यह क्षेत्र मराठा, मुस्लिम तथा अंग्रेजों के संघर्ष का युद्ध स्थल बना रहा। एरण पर अंग्रेजों का आधिपत्य मार्च 1818 लार्ड हेस्टिंग्स के समय स्थापित हुआ। इस समय एरण परगने का केन्द्र था। एरण परगना में 27 ग्राम थे तथा इसका क्षेत्रफल 26 वर्ग मील था।[98] उत्खनन में परवर्तीकालीन अन्तिम स्तरों से केवल भोपाल, ग्वालियर राज्य के सिक्के प्राप्त हुए हैं।[99] सन् 1961 ई. में प्रशासनिक व्यवस्था के लिए इसको नागपुर क्षेत्र में मिला दिया गया और सागर, नर्मदा प्रदेश, मध्यप्रान्त का एक भाग बन गया। यह व्यवस्था सन 1956 ई. तक नये मध्यप्रदेश राज्य का पुनर्गठन होने तक बनी रही।[100] अभी हाल में आधुनिक काल के तीन सती स्तम्भ अभिलेख मिले है, जो क्रमशः शक सम्वत् 1802 (1880 ई.), 1831(1909 ई.) 1832(1910ई.) के है।[101] इससे स्पष्ट है, कि इस समय भी एरण क्षेत्र में सती जैसी कुप्रथाए समाज में प्रचलित थी।

प्राचीनकालीन संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण व गुप्त गुप्तकालीन कला की दृष्टि से वैभवपूर्ण, अदभुत, एरकण्य, 'एरिकिण' वर्तमान समय में सागर जिले की बीना तहसील के अन्तर्गत बीना नदी के तट पर अपनी प्राचीनकालीन स्थिति पर ही एरण ग्राम के रूप में आवासित है।

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 सिंह, कृष्ण कुमार : उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, दिल्ली, 2001, पृ. 87

2 दुबे, नागेश : एरण की कला, 1997, सागर, पृ. 12

3 वाजपेयी, कृष्णदत्त : सागर थ्रू द एजेज, सागर, 1964, पृ. 11

4 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ.,12

5 वही : पृ. 12

6 अवस्थी, शैलेष : एरण उत्खनन से ज्ञात तृतीय काल का अध्ययन (आप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,1982 सागर, पृ. 7

7 झा. विवेकदत्त : ''रीसेण्ट एक्सवेशन्स एट एरण'' आर्क्योलॉजिकल स्टडीज, बनारस, 1986, पृ. 102

8 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 13

9 वही :

10 सिह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 81

11 दुबे नागेश : पूर्वोक्त, पृ., 16

12 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1984,पृ.18

13 झा, विवेकदत्त : एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक सांस्कृतिक केन्द्र : ईसुरी अंक–4, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सन् 1986–87, पृ. 10

14 अवस्थी, शैलेष : पूर्वोक्त, पृ. 7

15 वाजपेयी, संतोष कुमार : ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, दिल्ली, 1997, पृ.112

16 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : आर्क्योलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 17, पृ. 113–139

17 एपीग्राफिया इण्डिका,खण्ड 2, पृ. 375

18 वाजपेयी, के.डी. : ''क्रोनोलाजिकल सिक्वेन्श ऑफ द पंचमार्क्ड क्वांइस फ्राम 'एरण', बुलेटिन ऑफ ऐशियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी,सागर विश्वविद्यालय, सागर अंक, (1), 1967, पृ. 64

19 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : रिपोर्ट ऑफ टूर्स इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा, बनारस, 1966, पृ. 80

Scanned by CamScanner

20 सागर, जिला गजेटियर,भोपाल, 1970 पृ. 46

21 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 4

22 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ.17

23 अवस्थी, शैलेष : पूर्वोक्त ,पृ. 8

24 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 115

25 वही : पृ. 115

26 सागर जिला गजेटियर : पूर्वोक्त, पृ. 47

27 दुबे , नागेश : पूर्वोक्त, पृ.18

28 वही : पृ. 18

29 सिंह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त , पृ. 84

30 एफिग्राफिया इण्डिका : भाग –8, पृ. 71

31 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 84

32 कार्पस इन्सक्रेप्सन इण्डीकेरम,जिल्द–4,पृ. 608

33 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 116

34 वही : पृ. 116

35 वाजपेयी, कृष्णदत्त : इण्डियन न्यूमिस्मेटिक स्टडीज, दिल्ली, 1976, पृ. 7

36 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 19

37 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1984, पृ. 58–59

38 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : वही, 2697, 3005, 3006, 3417 एरण उत्खनन सें प्राप्त सिक्के पंजीयन संख्या 1221, आदि

39 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : वही ,पृ. 59 क्रमांक 1476 का सिक्का

40 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त पृ. 116

41 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 20

42 कार्पस इन्सक्रेप्सन इण्डीकेरम,जिल्द, पृ. 21

Scanned by CamScanner

43 झा, विवेकदत्त : "सागर अचल का कला वैभव" मध्यप्रदेश संदेश,भोपाल,1989,पृ.5

44 पाण्डेय, विमलचंद्र : प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक. इतिहास,भाग–2, इलाहाबाद, 1998, पृ. 95

45 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त पृ. 117

46 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 21

47 श्रीवास्तव, कृष्णचन्द्र : प्राचीन भारत का इतिहास, इलाहाबाद, 1989 पृ. 413–414

48 सिंह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 91

49 दुबे नागेश : पूर्वोक्त ,पृ. 21

50 गुप्त, परमेश्वरी लाल : क्वायन्स, दिल्ली, 1964, पृ. 213

51 वही : पृ. 214

52 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 117

53 पाण्डेय, विमलचन्द्र : पूर्वोक्त, पृ. 65

54 मुखर्जी, राधामुकुद : गुप्त साम्राज्य, नई दिल्ली, 1966, पृ. 260

55 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त , पृ. 82–90

56 वही, : पृ. 87

57 देसाई, कल्पना : आइकोनोग्राफी ऑफ, विष्णु, दिल्ली ,1973, पृ. 75

58 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त (1964),पृ. 36

59 आर्क्यालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, खण्ड–10)नई दिल्ली, पृ. 85–86

60 गुप्त,परमेश्वरी लाल : गुप्त साम्राज्य, वाराणसी, 1970, पृ. 605–622

61 जर्नल ऑफ दि बंगाल एशियाटिक सोसायटी,(जिल्द–7) कलकत्ता,पृ. 631

62 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 86

63 सरकार, दिनेशचन्द्र : सिलेक्ट इंस्क्रपशन्स, कलकत्ता ,1942

64 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 84

65 वही, : पृ. 22–23

66 अग्रवाल, पी. के : टेम्पल आर्किटेक्चर ऑफ गुप्ताज पीरियड,बनारस, 1968 ,पृ.14

Scanned by CamScanner

67 कनिंघम, अलेक्जेण्डर : पूर्वोक्त, पृ. 164

68 कृष्णचन्द्र, श्रीवास्तव : पूर्वोक्त, पृ. 547

69 राय चौधरी, हेमचन्द्र : पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1931, पृ. 96

70 झा, विवेकदत्त : पूर्वोक्त, (म. प्र. संदेश) पृ. 8

71 पटेल, राजाराम : एरकर्णिका की गोद में, खुरई ,1978 पृ. 2

72 झा, विवेकदत्त : पूर्वोक्त, ईसुरी (अंक–4), पृ. 8

73 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 24

74 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ.118

75 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ 24

76 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 118

77 थामस, वाल्टर्स : व्हेनसांग ट्रेवेल इन इंडिया, खण्ड–2 पृ –25

78 पाण्डेय, विमलचन्द्र : पूर्वोक्त, पृ. 237

79 कनिंघम. अलेक्जेण्डर : ऐनसिएन्ट जायग्राफी ऑफ इण्डिया, लन्दन, 1961 ई., पृ. 552

80 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त, (1964) पृ. 18

81 पाण्डेय विमलचन्द्र : पूर्वोक्त, पृ. 220

82 झा, विवेकदत्त : पूर्वोक्त, ईसुरी, (अंक–4) पृ. 8

83 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 24

84 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए रिव्यू,1950–59, पृ. 72

85 सागर जिला गजेटियर : पूर्वोक्त, पृ. 52

86 एपीग्राफिया इण्डिका : भाग– 12, पृ. 44

87 दुबे, सत्यनारायण : भारत का इतिहास, इन्दौर, 2004, पृ. 48

88 विन्स,सी.यू : दि राजगौड़ महाराजन् ऑफ दि सतपुड़ा हिल्स, 1979 दिल्ली पृ. 11–13

89 दुबे, सत्यनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 117

90 वही, : पृ. 114

Scanned by CamScanner

91 वही, : पृ. 125

92 आइने, अकबरी, : जिल्द – 2 – पृ. 210

93 दुबे, नागेश, : पूर्वोक्त, पृ. 25

94 दुबे, सत्यनारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 221

95 सागर, जिला गजेटियर, : पूर्वोक्त, पृ. 57

96 वाजपेयी, कृष्णदत्त : पूर्वोक्त, (1964) पृ. 36

97 सागर, जिला गजेटियर, : पूर्वोक्त, पृ. 57

98 वही : पृ. 153

99 वाजपेयी, संतोष कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 118

100 पी.,राघवन : सागर विरासत और विकास, दिल्ली, 1992, पृ. 18

101 चढार, मोहन : ''सती पिलर्स ऑफ एरण'' 'शोध समवेत' श्री कावेरी शोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.) अंक–xiv 2005-2006 पृ. 11–16

Scanned by CamScanner

अध्याय तृतीय

भारत की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ तथा एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का सामान्य परिचय

Scanned by CamScanner

ताम्रपाषाण संस्कृतियों में आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से कोई विशेष अंतर नही है, किन्तु प्रत्येक ताम्रपाषाण संस्कृति की अपनी विशिष्ट मृद्भाण्ड परम्परा है।[1] इस काल के लोग मुख्यतः ग्रामीण समुदाय के थे और देश के ऐसे भागों में फैले थे, जहाँ कृषि योग्य भूमि व नदियाँ थीं।

भारत की ताम्रपाषाण संस्कृति का परिचय

जिस काल में मनुष्य ने ताम्र (ताँबा) और पत्थर (पाषाण) के औजारों का साथ–साथ प्रयोग किया, उस काल को ताम्रपाषाणकाल कहते हैं। आंग्ल भाषा में इसे'चालकोलिथिक' कहते है, 'चैलिको' शब्द यूनानी भाषा के 'चेकोस' से बना है, जिसका तात्पर्य ताम्र व लिथिक का अर्थ पाषाण होता है।[2]

जब मनुष्य ने पाषाण उपकरणों के साथ ही ताँबे से बने उपकरणों व अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग करना आरम्भ किया, तब उसकी जीवन शैली में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। अब यह आखेट, खाद्य–संग्राहक, यायावर–पशुचारक अथवा चल–कृषक की भूमिका से ऊपर उठकर–स्थिर कृषक बन गया। इस समय तकनीकि परिवर्तनों कृषि के विधिवत् आरम्भ ने ग्रामों के विकास में योगदान दिया और भारत के विभिन्न भागों में ताम्रपाषाण बस्तियाँ स्थापित हुई। भारत की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ पूर्णतः ग्राम्य संस्कृतियाँ हैं। जिनके निवासी एक स्थान पर स्थिर रूप से रहकर कृषि एवं पशुपालन करने लगे थे। इन संस्कृतियों के निवासियों ने मृद्भाण्डों के निर्माण में अत्यन्त निपुणता एवं कल्पनाशीलता का परिचय दिया। मृद्भाण्ड परम्पराओं की विविधता के आधार पर ही विभिन्न क्षेत्रों में निवासित इन संस्कृतियों के नामकरण, विस्तार क्षेत्र, एवं आव्रजन–प्रव्रजन पर विचार किया जाता है।

मानव ने सर्वप्रथम जिस धातु को औजारों के रूप में प्रयुक्त किया वह थी ताँबा। ऐसा माना जाता है, कि ताँबे का सर्वप्रथम प्रयोग लगभग 4000 ई. पू. में किया गया। कालान्तर में मनुष्य ने अनुभव किया कि अति कठोर कार्यों के लिए ताँबा अधिक उपयोगी नही है। अतः इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु मनुष्य ने ताँबा और टिन मिलाकर काँसे का अविष्कार कर लिया। अतः यह काल 'काँस्य युग' के नाम से जाना जाता है। हड़प्पा सभ्यता काँस्ययुगीन सभ्यता मानी जाती है। हड़प्पा सभ्यता में टिन मध्य एशिया से व ताँबा राजस्थान से आता था।[3] हड़प्पा सभ्यता के साथ–साथ भारत के कुछ क्षेत्रों में

Scanned by CamScanner

धातु का उपयोग अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था। भारत के विभिन्न भागों में असमान विकास ताम्रपाषाणकाल में अधिक स्पष्टता के साथ देखने को मिलता है।

भारत में ताम्रपाषाणकालीन मुख्य क्षेत्र दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान, मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण–पूर्वी भारत में हैं। दक्षिण–पूर्वी राजस्थान में स्थित बनास–घाटी के सूखे क्षेत्रों में आहाड़ एवं गिलुण्ड, पश्चिमी मध्यप्रदेश में कायथा, मालवा (महेश्वर–नावदाटोली), एरण, वेसनगर, आवरा, पश्चिमी महाराष्ट्र में जोर्वे, नेवासा,दायमाबाद, चन्दोली, प्रकाश, नासिक, इत्यादि प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में उत्खनन कार्य हुए। उक्त स्थलों के उत्खनन से ताम्रपाषाण संस्कृति की जानकारी प्राप्त हुई है।

बीसवीं शताब्दी ई. में भारतीय पुरातत्त्व के क्षेत्र मे जो अन्वेषण तथा उत्खनन हुए हैं, उनके परिणामस्वरूप अनेक ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुई, जिनका उदय लगभग द्वितीय सहस्त्राब्दी ई. पू. में हुआ और यह संस्कृतियाँ प्रथम सहस्त्राब्दी के मध्य तक विद्यमान रहीं। ताम्रपाषाणिक पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर भारत की प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों का अनुक्रम इस प्रकार से निर्धारित किया गया है।[5]

1. कायथा की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
2. आहाड़ की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
3. मालवा की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
4. जोर्वे की ताम्रपाषाणिक संस्कृति

भारत के प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों का संक्षिप्त विवरणः–

कायथा की ताम्रपाषाणिक संस्कृति

नर्मदा और उसकी सहायक नदी चम्बल तथा बेतवा द्वारा सिंचित मालवा पठार मध्यप्रदेश के अन्तर्गत आता है। इस क्षेत्र के ताम्रपाषाणकालीन प्रमुख स्थलों में कायथा (उज्जैन) तथा एरण (सागर) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।[6] भारत की ताम्रपाषाण संस्कृतियों में कायथा संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। तिथिक्रम की दृष्टि से भारत में ताम्रपाषाण बस्तियों की कई श्रृंखलाएँ हैं। कुछ प्राक् हड़प्पाकालीन, कुछ हड़प्पा संस्कृति की समकालीन तथा कुछ हड़प्पा संस्कृति के बाद की हैं। कायथा संस्कृति (लगभग 2000–1800 ई. पू.), हड़प्पा संस्कृति (2500–1800 ई.पू.) के कनिष्ठ समकालीन

Scanned by CamScanner

है। कायथा मृद्भाण्डों पर कुछ प्राक् हड़प्पा संस्कृति के मृद्भाडों के लक्षण हैं और साथ ही इन पर हड़प्पा संस्कृति के मृद्भाडों का प्रभाव भी दिखाई देता है।[7]

कायथा (अक्षांश $20^{0}.78'$ उत्तरी, देशान्तर $78^{0}.00'$ पूर्वी) नामक पुरास्थल उज्जैन से लगभग 24 कि. मी. पूर्व में उज्जैन–मक्सी मार्ग पर चम्बल की सहायक नदी काली सिन्ध के दाहिने तट पर स्थित है। उज्जैन–भोपाल रेलमार्ग पर स्थित शिवपुरी स्टेशन से भी कायथा पहुँचा जा सकता है। कायथा का समीकरण प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर की जन्मस्थली 'कपित्थक' से किया जाता है। जिसका उल्लेख 'वृहज्जातक' नामक ग्रन्थ में मिलता है। वराहमिहिर के पिता आदित्यदास ने यहाँ सूर्य की उपासना की थी।[8]

इस पुरास्थल की खोज विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पद्मश्री प्राप्त डॉ.विष्णु श्रीधर वाकणकर ने 1964 ई. में की तथा 1964–67 ई. के मध्य यहां उत्खनन कराया। इसके पश्चात विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन और डेकन कालेज, पुणे के संयुक्त तत्वाधान में 1968 ई. में इस पुरास्थल का विस्तृत पैमाने पर उत्खनन किया गया। इस सत्र में उत्खनन कार्य डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर, जेड, ए. अंसारी और एम. के धवलीकर के निर्देशन में हुआ।[9]

कायथा के टीले पर लगभग 12 मीटर का सांस्कृतिक मानवीय जमाव मिला है, जिसमें कायथा, ताम्रपाषाणयुग से लेकर गुप्त राजवंश तक की संस्कृतियाँ प्रकाश में आयीं हैं। उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों को पांच सांस्कृतिक कालों में विभाजित किया गया। जिनमें से तीन काल लोहे के प्रचलन से पूर्व की ताम्रपाषाण संस्कृति की जानकारी देते हैं।[10] इस पुरास्थल के सबसे निचले स्तरों से उपलब्ध पुरावशेष कायथा संस्कृति से सम्बन्धित हैं। यह संस्कृति पूर्व में ज्ञात किसी अन्य ताम्रपाषाण संस्कृति से नितान्त भिन्न है ।

कायथा में ताम्रपाषाण संस्कृति से ज्ञात मृद्भाण्ड परम्पराएँ सर्वप्रथम इसी स्थल पर प्रकट हुईं जिनमें से प्रथम पात्र परम्परा चाक् पर बने हल्के लाल या गुलाबी रंग के बर्तनों की हैं। जिन पर लाल, गहरा भूरा अथवा कत्थई रंग का प्रलेप मिलता हैं, इस लेप पर बैगनी रंग से चित्रकारी की गई है। प्रमुख पात्र प्रकारों में हांड़ी, तसले, कटोरे, घड़े तथा मटके उल्लेखनीय हैं।

द्वितीय पात्र परम्परा पाण्डु रंग की है, जिन पर लाल रंग से चित्रण–अभिप्राय संजोये गये हैं। माध्यम आकार के लोटे, प्रमुख पात्र प्रकार हैं। तृतीय पात्र परम्परा अलंकृत लाल

Scanned by CamScanner

रंग की हैं। जिस पर कंघी की तरह से किसी उपकरण से आरेखण किया गया है। कटोरे व थालियाँ इस परम्परा के प्रमुख पात्र प्रकार हैं। इनके अतिरिक्त हस्तनिर्मित लाल एवं भूरे रंग के मिट्टी के बर्तन भी मिलते हैं।

कायथा के पात्रों पर प्रायः लहरदार रेखाएं, हीरक एवं यदा–कदा तारांकित अलंकरण प्राप्त होते है। कायथा संस्कृति के मृद्भाण्डों पर मिलने वाले बहुत से अलंकरण अभिप्राय आमरी, कोटदीजी और कालीबंगा के प्राक्सैंधव स्तरों से उपलब्ध पात्र परम्पराओं के चित्रण अभिप्रायों से मिलते जुलते हैं। दोनों पात्र परम्पराओं में बर्तनों पर केवल कंधे (गर्दनी) के आसपास आरेख मिलते हैं।[11] डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर के अनुसार इन पात्रों पर पाया जाने वाला लाल चित्रण, गहरे चाकलेटी रंग से किया गया हैं। चित्रण प्राक्–हड़प्पीय परम्परा से सम्बंधित है।[12]

उपकरण एवं अन्य पुरावशेष

कायथा संस्कृति के लोग ताँबे के उपकरण निर्माण में निपुण थे। उत्खनन के फलस्वरूप एक मकान से प्राप्त घड़े में ताँबे की दो कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं, जिन्हें साँचे में ढाल कर बनाया गया था।[13] इनके अतिरिक्त ताँबें की चूड़ियाँ एवं छेनी भी प्राप्त हुई हैं। आभूषणों के प्रयोग में यहाँ के लोग रूचि रखते थे। आगेट (गोमेद) और कार्नेलियन (स्फटिक) के क्रमशः 160 और 175 मनकों के बने हुए दो हार मिले हैं। एक घड़े में 40,000 छोटे–छोटे स्टियटाइट के मनके मिले हैं। घास–पूस तथा बाँस–बल्ली से रहने हेतु मकानों का निर्माण होता था। बाँस–बल्लियों की दीवार बनाकर उसे मिट्टी के लेप द्वारा पोता जाता था। संभवतः छाजन (छप्पर) घास–पूस का होता था। कायथा के लोग इस क्षेत्र के पहले निवासी थे, जिन्होंने मकान बनाकर स्थायी रूप से रहना प्रारंभ कर दिया था।[14]

डॉ. वाकणकर ने कायथा के विनाश का कारण चित्रित काले लाल पात्रों के प्रयोग करने वाली आहाड़ संस्कृति को मानकर इसमें भार्गव–हैहय संघर्ष के संकेत तलाशने का प्रयास किया था।[15] परन्तु उत्खनन से ज्ञात होता है, कि कायथा संस्कृति के लोग कायथा की भूमि पर एक अंतराल के बाद आकर बसे।

कालानुक्रम

रेडियो–कार्बन तिथि निर्धारण विधि के आधार पर कायथा के प्रथम सांस्कृतिक काल का कालानुक्रम 2000 ई. पू. से 1800 ई. पू. के मध्य निर्धारित किया गया है।[16]

Scanned by CamScanner

कायथा के पुरास्थल पर जिस दूसरी ताम्रपाषाण संस्कृति का विकास हुआ, उसे मृद्भाण्ड परम्परा के आधार पर आहाड़ संस्कृति का नाम दिया गया हैं, क्योंकि इस संस्कृति के विषय में राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित आहाड़ नामक पुरास्थल से सर्वप्रथम जानकारी प्राप्त हुई थी। श्वेत रंग से चित्रित काले एवं लाल मृद्भाण्ड आहाड़ संस्कृति की विशिष्ट मृद्भाण्ड परम्परा है। यही पात्र परम्परा कायथा से भी मिली है। लघुपाषाण उपकरण, प्राकृतिक एवं रूढ़ शैली से बनी वृषभ मृण्मूर्तियाँ, शंख की बेलनाकार गुरियों से निर्मित हार एवं मिट्टी के मनके कायथा के द्वितीय सांस्कृतिक काल के प्रमुख पुरावशेष हैं। कायथा के इस काल को रेडियो कार्बन तिथियों के आधार पर 1700–1500 ई. पू. के बीच रख सकते हैं।

कायथा के तृतीय ताम्रपाषाणिक चरण में मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति के भी पुरावशेष मिले हैं। मालवा संस्कृति की विशिष्ट पात्र परम्परा हल्के लाल अथवा गुलाबी रंग की है, जिसके ऊपर काले रंग से अलंकरण अभिप्राय किये गये हैं। कायथा में आहाड़ और मालवा संस्कृतियों में परस्पर अति–व्याप्ति दृष्टिगोचर होती है। पूर्ववर्तीकाल की वृषभ मृण्मूर्तियाँ इस काल में भी मिलीं हैं। लघुपाषाण उपकरणों में ब्लेड की अधिकता दृष्टिगोचर है। रेडियों कार्बन की तिथियों के आधार पर 1500 ई.पू. से 1200 ई. पू. इसका (मालवा ताम्रपाषाणिक संस्कृति) कालक्रम निर्धारित किया जा सकता है।[17]

आहाड़

भारत की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों में दक्षिण–पूर्वी राजस्थान से ज्ञात ताम्रपाषाण संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इस क्षेत्र में किये गये सर्वेक्षण से बनास, बेड़च, गंभीरी, कोठारी, खारी तथा इनकी सहायक नदियों की घाटियों से अनेक ताम्रपाषाणकालीन स्थलों की जानकारी प्राप्त हुई है।[18] इनमें आहाड़,[19] गिलुण्ड,[20] बालाथल[21] के उत्खनन से प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

गुजरात और राजस्थान में जब सैन्धव सभ्यता का अस्तित्व बना हुआ था, तभी दक्षिण–पूर्व राजस्थान में अरावली पर्वत–श्रृंखला के पश्चिम स्थित क्षेत्रों में एक ताम्रपाषाण संस्कृति का उदय हुआ। उसे इतिहासकारों, पुरातत्ववेत्ताओं ने आहाड़ संस्कृति का नाम दिया, क्योंकि राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित आहाड़ (अक्षांश 24^0,40' उत्तरी, देशान्तर 73^0,50^0 पूर्वी) नामक पुरास्थल में 1952–53 ई. तथा 1953–54 ई. में रतनचन्द्र अग्रवाल द्वारा उत्खनन कराया गया। जिसके परिणामस्वरूप सर्वप्रथम इस ताम्रपाषाणिक

Scanned by CamScanner

संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। यह पुरास्थल आहाड नामक नदी के तट पर स्थित है।[22]

'डेकन कालेज एण्ड पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च इंस्ट्रीट्यूट', पुणे, राजस्थान के पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग तथा आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में इस पुरास्थल का सन् 1961–62 ई. में उत्खनन कराया गया, जिससे ज्ञात हुआ कि आहाड़ की ताम्रपाषाण संस्कृति मध्यप्रदेश की मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति से प्राचीन थी। उदयपुर में स्थित आहाड नामक पुरास्थल को स्थानीय लोग 'धूलकोट' के नाम से जानते हैं। साहित्य से आहाड़ का प्राचीन नाम ताम्रवती (ताम्बवती) ज्ञात होता है।[23]

आहाड़ संस्कृति का दूसरा महत्वपूर्ण उत्खनित स्थल गिलुण्ड है, जो राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है। इस पुरास्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्त्व विभाग के महानिदेशक बी. बी. लाल महोदय ने करवाया था। आहाड़ संस्कृति को बनास नदी घाटी के नाम से 'बनास संस्कृति' भी कहा जाता है।[24] आहाड और गिलुण्ड उत्खनन के फलस्वरूप बड़ी बस्तियाँ मालूम होती हैं। आहाड़ का टीला 1500×800 फुट तथा गिलुण्ड का टीला 1500×750 फुट का है।[25] गिलुण्ड में भण्डार–गर्त मिले है। गिलुण्ड से 9 मीटर लम्बे और 9.50 मीटर चौड़े एक कमरे के अवशेष मिले हैं। 10.80 मीटर लम्बी दीवाल प्रकाश में आयीं हैं। मकानों की नींव में भट्टे में पकाई गई 35×15×125 से. मी. की ईंट गिलुण्ड से प्राप्त हुई है। उत्खनन में खेती व पशु पालन के साक्ष्य मिले हैं।

मुख्यतः मृद्भाण्ड काले और लाल रंगों के मिले हैं, जिन पर रेखीय बिन्दीदार, सफेद रंग से चित्रकारी की गई है। सूक्ष्म–पाषाण उपकरण संभवतः सीमित मात्रा में प्रयुक्त होते थे। इस संस्कृति के लोग राजस्थान के ताम्र निक्षेप (झुन–झुन जिले की पट्टी) क्षेत्र की खानों से कच्चा ताँबा एकत्र करके उसे पिघला कर साफ करते थे। अतः संभव है, कि वे तैयार किये गये ताम्र उपकरणों को मध्यप्रदेश तथा दक्कन की समकालीन ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के लोगों के पास भेजते थे। ताँबे की वस्तुओं में अगूंठियाँ, चूड़ियाँ, सुरमे की सलाइयाँ, चाकू के फाल और कुल्हाड़ियाँ मिलीं हैं। ताँबे को पिघलाने की पुष्टि गिलुण्ड के मकानों में ताँबे के पत्तर और ताँबे के अवशिष्ट (कच्चा ताँबा) की प्राप्ति से होती है।

Scanned by CamScanner

गिलुण्ड से पुशओं की मृण्मूर्तियाँ, मनके, इत्यादि हल्के रत्नों के मनके भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन से ज्ञात पुरावशेषों के आधार पर कहा जाता सकता है, कि ईसा–पूर्व तीसरी सहस्त्राब्दी और उसके बाद राजस्थान ताम्र–धातु कर्म का महत्वूपर्ण केन्द्र था।[26]

आहाड़ संस्कृति का नवीनतम उत्खनित पुरास्थल बालाथल (अक्षांश 24^0,43′ उत्तर, देशान्तर 73^0,59′ पूर्व) में स्थित है। बालाथल, उदयपुर नगर से उत्तर पूर्व दिशा में 40 कि. मी. दूरी पर स्थित है। इस पुरास्थल को खोजने का श्रेय 1993 ई. में प्रो. बी. एस. मिश्रा व उनके सहयोगियों को जाता है। डेकन कालेज पुणे एवं राजस्थान बल्लभ नगर, तहसील में स्थित ग्राम बालाथल में तीन उत्खनन सत्रों (क्रमशः 1993–94ई., 1994–45ई. एवं 1955–56 ई.) में किये गये। उत्खनन से अनेक नवीन तथ्य–प्रकाश में आये हैं। इस उत्खनन का संचालन प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् प्रो. बी. एन.. मिश्रा एवं डॉ. कोठारी के निर्देशन में डॉ. बी. ए. शिंदे, डॉ. आर. के. मोहंती, डॉ. ललित पाण्डेय व श्री जीवन सिंह खरकवाल ने किया।

उत्खनन कार्य में सर्वप्रथम 150×130 वर्ग मीटर क्षेत्र में विस्तृत पुरातात्त्विक जामाव पर निखातें लेकर लम्बवत् उत्खनन किया गया, जिससे ताम्रपाषाण संस्कृति की जानकारी प्राप्त हुई।[27] बालाथल के टीले के लगभग 500 वर्ग मीटर क्षेत्र में किये गये क्षैतिज उत्खनन से ताम्रपाषाण संस्कृति के विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त हुई। बालाथल के लोग पशुपालन एवं कृषि कार्य द्वारा अपना जीवन–यापन करते थे।[28] उत्खनन में ताँबे के कांटेदार एवं नोंकदार बाणाग्र, चाकू लघुहस्त–कुठार इत्यादि उपकरण प्राप्त हुए हैं। बालाथल उत्खनन से गेहूँ, जौ सरसों आदि फसलों को मानव द्वारा ऊगाने के साक्ष्य मिले हैं।[29]

इस संस्कृति के लोग विविध प्रकार के चाक निर्मित मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते थे। साधार व निराधार तश्तरियाँ एवं कटोरे प्रमुख पात्र प्रकार हैं। इनमें पतले लाल प्रलेप–युक्त, कृष्ण–लोहित एवं भूरी पालिसयुक्त मृद्भाण्ड प्रमुख पात्र परम्पराएँ है। भूरी पालिसयुक्त पात्रों से मिलते–जुलते कुछ पात्र कायथा[30] के प्रथम काल के पात्रों के सदृश्य है। कृष्ण–लोहित पात्रों पर श्वेत रंग से लहरदार रेखाएँ संकेन्द्रीवृत्त, बिन्दुयुक्त रेखाएँ, त्रिभुज और तारांकित अलंकरण चित्रित किये गये हैं। लाल प्रलेपयुक्त पात्र जो बालाथल से बाहुल्य मात्रा में प्राप्त हुए हैं। जबकि आहाड़[31], गिलुण्ड[32] से न्यून मात्रा में प्राप्त हुए हैं।

Scanned by CamScanner

बालाथल के निवासी अपने भवनों के निर्माण में प्रस्तर खण्ड़ों तथा मिट्टी की ईटों का प्रयोग करते थे।[33] बालाथल में भवनों का आकार पूरा मिलता है। गिलुण्ड की भाँति बालाथल में भी धूप में पकी ईंटों के भवन निर्माण में प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं। आहाड़, कायथा नामक पुरास्थलों तथा नावदाटोली (मालवा), जोर्वे, ताम्रपाषाण संस्कृतियों में विभिन्न पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त आवास के साक्ष्यों में प्रस्तर खण्ड़ों अथवा ईंटों के प्रयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। उत्खनन में चूल्हे, अनाज पीसने की सिलें इत्यादि उन्नत आधारों के साक्ष्य मिले हैं। बालाथल के निवासी ताँबे का व्यापक प्रयोग करते थे। घर पर ताम्र प्रगलन कार्य किये जाने की जानकारी बालाथल के टीले के दक्षिण–पूर्वी भाग की एक भवन संरचना के भीतर से प्राप्त हुई है।[34] ताम्रपाषाणिक स्तर से प्राप्त पकी मिट्टी, कार्नेलियन, आगेट, स्टेटाइट आदि के मनके प्राप्त हुए हैं।[35] जिनसे सम्भवतः गले में पहनने के लिए हार बनाया जाता था। यहाँ से वृषभ मृण्मूर्तियाँ भी मिली हैं।[36] जिनका प्रयोग सम्भवतः धार्मिक प्रथा अथवा मनोविनोद के प्रयोजनार्थ होता था। बालाथल के उत्खनन से आहाड़ संस्कृति के उद्‌भव की समस्या पर भी कुछ प्रकाश पड़ा है। आहाड़ से रंगपुर के समान चमकीले लाल रंग के मृद्‌भाण्ड–खण्ड एवं बालाथल में सतही सर्वेक्षण में हड़प्पीय पात्र खण्ड एवं उत्खनन से पकी ईंटों के साक्ष्य प्राप्त होने से आहाड़ संस्कृति व हड़प्पा संस्कृति के निवासियों के मध्य आपसी सम्बन्ध होने का अनुमान किया गया है। सम्भव है, कि हड़प्पीय मानव ने जलवायु परिवर्तन बाढ़ के प्रकोप अथवा अन्य कारण वश इस क्षेत्र में प्रवेश किया हो।[37]

मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले में स्थित कायथा नामक पुरास्थल से आहाड़ संस्कृति का क्रम मिला है। मध्यप्रदेश से अभी तक 50 से अधिक आहाड़ संस्कृति से संबंधित पुरास्थल ज्ञात हो चुके हैं। इस संस्कृति से सम्बन्धित प्रमुख पुरास्थल दक्षिण–पूर्व राजस्थान में बनास और उसकी सहायक नदियों की घाटियों में स्थित हैं।

आहाड़ संस्कृति के स्वरूप की जानकारी आहाड़, बालाथल, गिलुण्ड नामक पुरास्थलों से प्राप्त साक्ष्यों से हुई है। आहाड़ नामक पुरास्थल का टीला 500 मीटर लम्बा और 275 मीटर चौड़ा तथा 1250 मीटर ऊँचा है। उत्खनन के परिणामस्वरूप ताम्रपाषाण काल और प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल की दो संस्कृतियों से संबंधित पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। आहाड़ के ताम्रपाषाणिक प्रथमकाल के सम्पूर्ण निक्षेप को मृद्‌भाण्ड परम्पराओं में हुए परिवर्तन के आधार पर 'अ' 'ब' 'स' तीन उपकालों में विभाजित किया गया है।[38] श्वेत रंग

Scanned by CamScanner

से चित्रित कृष्ण–लोहित पात्र परम्परा को आहाड़ संस्कृति की विशिष्ट मृद्भाण्ड परम्परा माना जाता है। जिनमें रेखीय व ज्यामितीय अंलकरण अभिप्राय किये गये हैं। 'अ' उपकाल के स्तरों से दूधिया स्लिप वाले मृद्भाण्ड मिलते हैं। यह प्रथम 'ब' उपकाल के स्तरों से नहीं मिलते हैं।'अ' उपकाल के स्तर से पाण्डु, कृष्णलोहित चमकीले धूसर मृद्भाण्ड, लाल रंग के मृद्भाड मिलते हैं। कृष्ण–लोहित पात्रों के कटोरे अधिक मिले हैं। धूसर पात्र–परम्पराओं में गोल आकार के घड़े, साधार तश्तरियाँ प्रमुख पात्र प्रकार हैं। लाल रंग के मृद्भाण्डों में घड़े, कटोरे, साधार तश्तरियाँ मिली हैं। प्रथम 'ब' उपकाल में दूधिया प्रलेप–युक्त व पाण्डु रंग की पात्र परम्परा समाप्त हो जाती है, लेकिन अन्य परम्पराएँ चलती रहती हैं। साधार तश्तरियाँ, थालियाँ, गहरे एवं कोणाकार कटोरे, सादे खराँचेदार और खोखले साधार वाले कटोरे व गोल आकार के बर्तन 'ब' संस्कृति के द्वितीय चरण में मिलें हैं। आहाड़ संस्कृति के तृतीय चरण में प्रथम 'स' उपकाल से लाल रंग के मृद्भाण्ड चित्रित कृष्ण–लोहित, लाल रंग की चमकीली मृद्भाण्ड परम्परा मिलती है। इस काल के स्कन्धित कटोरे, उथले कटोरे, साधार तश्तरियाँ प्रमुख पात्र प्रकार हैं। अलंकरण अभिप्रायों में लहरदार रेखाएँ, बिन्दुयुक्त रेखाएँ अलंकरण बर्तनों के बाहरी हिस्से में गर्दन के आस–पास किये गये हैं।[39]

आहाड़ संस्कृति के लोग ताँबे के उपकरण बनाने की कला से परिचित थे। उत्खनन से ताम्र उपकरणों में चपटी कुल्हाड़ियाँ, छुरियाँ माणिक्य तथा सिलखड़ी के बने हुए मनके उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। जिन पर ज्यामितीय अलंकरण तथा पशु आकृतियों का अंकन किया गया है।। चाकू चूड़ियाँ, छल्ले या मुद्रिकाएँ, छड़े प्रमुख उपकरण हैं। आहाड़ संस्कृति के लोग भवनों के निर्माण में पत्थर और मिट्टी का प्रयोग करते थे। प्रस्तर–खण्डों का प्रयोग केवल नींव बनाने में किया जाता था। दीवालें सम्भवतः मिट्टी की बनाई जाती थीं। काली–मिट्टी में पीली मिट्टी, गाद का मिश्रण कर फर्श का निर्माण किया जाता था। मकानों को बाँस–बल्लियों द्वारा तथा घास–पूस की सहायता से बनाया जाता था। उत्खनन में प्राप्त स्तम्भ गर्तों से ज्ञात होता है, कि दीवाले बाँस–बल्ली की बनायी जाती थी। आहाड़ के उत्खनन में मकानों के अन्दर चूल्हों के अस्तित्व के साक्ष्य मिले हैं, कुछ चूल्हे तो काफी बड़े हैं। उत्खनन के दौरान एक कतार में छः चूल्हे मिले हैं, जो सम्भवतः संयुक्त परिवार के सूचक हैं। खादय पदार्थ पीसने के काम आने वाली सिले भी रसोई घर के समीप ही प्राप्त हुई हैं।

Scanned by CamScanner

आहाड़ के लोग खेतीहर तथा पशुपालक थे। उत्खनन से धान, चना तथा मूंग और गेहूँ के प्रत्यक्ष प्रमाण मिले हैं। आहाड़ से गाय, बैल, बकरी तथा सुअर आदि पालतू पशुओं के साक्ष्य मिले हैं। पुरातात्त्विक स्तर–विन्यास के आधार पर हम कह सकते हैं, कि आहाड़ संस्कृति मालवा संस्कृति से पूर्व की है, क्योंकि आहाड़ संस्कृति में श्वेत रंग से चित्रित कृष्ण–लोहित पात्र–खण्ड अधिक संख्या में मिले हैं। आहाड़ संस्कृति में ये पात्र–खण्ड प्रथम स्तर से लेकर अन्तिम स्तर तक मिलते हैं। मालवा की ताम्रपाषाण संस्कृति में श्वेत रंग से चित्रित कृष्ण–लोहित मृद्भाण्ड केवल निचले स्तरों तक ही सीमित दिखाई पड़ता है।[40]

आहाड़ संस्कृति की सीमा–रेखा रेडियों कार्बन तिथि के आधार पर 1700 ई. पू. से लेकर 1500 ई. पू. तक निर्धारित की जा सकती है। (बालाथल की रेडियो–कार्बन की तिथियाँ मुख्यतः 2350 ई. पू. से 2300 ई. पू. के बीच है। ताम्रपाषाणिक स्तर से प्राप्त एकमात्र तिथि के आधार पर इस संस्कृति का अंत 1800 ई. पू. में हुआ। इस प्रकार बालाथल से प्राप्त तिथि के आधार पर आहाड़ की तिथि 2550 ई. पू. से 1800 ई. पू. के मध्य निर्धारित की जा सकती है।)

मालवा संस्कृति

मालवा क्षेत्र में प्रथमतः अपनी विशेषताओं के लिए पहचाने जाने के कारण ही यह संस्कृति मालवा संस्कृति के नाम से विख्यात है, क्योंकि सर्वप्रथम मध्यप्रदेश (मालवा क्षेत्र) खरगौन जिले में स्थित महेश्वर–नावदाटोली के उत्खननों से इस संस्कृति का विशिष्ट स्वरूप ज्ञात हुआ।[41] मालवा संस्कृति के मृद्भाण्ड मुख्यतः लाल रंग के हैं, जिन पर काले रंग से चित्रकारी की गई है।[42] म.प्र. के खरगौन जिले में इन्दौर से लगभग 8 कि. मी. दक्षिण में नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर महेश्वर (22^0 11′ उत्तरी अक्षांश, 75^0 30′ पूर्व देशान्तर) नामक पुरास्थल स्थित है। महेश्वर के ठीक सामने नर्मदा नदी के दक्षिणी किनारे पर नावदाटोली नामक स्थल है। नावदाटोली नाविकों का एक छोटा सा गाँव है। नावदाटोली का यह पुरास्थल, वर्तमान गाँव से 3 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इतिहासकार प्राचीन 'महिष्मति नगरी' की यही स्थिति मानते है, जो बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अवन्ति जनपद की राजधानी थी। महिष्मती की प्राचीनता महत्ता का उल्लेख महाभारत और अन्य पुराणों में तथा कालीदास, राजशेखर आदि के ग्रन्थों में भी आया है।[44] महेश्वर–नावदाटोली उत्खनन के पश्चात् इस संस्कृति से संबंधित कई स्थलों का

Scanned by CamScanner

उत्खनन किया गया, जिससे इस संस्कृति का प्रसार मालवा एवं उत्तरी महाराष्ट्र के क्षेत्रों तक ज्ञात हुआ हैं। मध्यप्रदेश में इस संस्कृति के उत्खनित पुरास्थलों में कायथा, नागदा, एरण, आवरा, मनौटी, दंगबाड़ा, महाराष्ट्र में बहल, चन्दोली, सोनेगाँव, प्रकाश, इनामगाँव प्रमुख हैं। महाराष्ट्र में दायमाबाद के अतिरिक्त मालवा संस्कृति से सम्बन्धित स्थलों से इस संस्कृति के साथ जोर्वे संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।[45]

महेश्वर–नावदाटोली का उत्खनन डेकन, कालेज, पोस्ट ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इस्टीट्यूट, पुणे, एम. एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा तथा मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग के संयुक्त तत्वाधान में प्रो. एच. डी. सांकलिया के निर्देशन में 1952–53 ई., 1953–54 ई. एवं 1957–59 ई. के कालखण्डों में किया गया। नावदाटोली के पुरास्थल पर अलग–अलग चार टीले हैं। इन चारों टीलों पर उत्खनन कार्य हुआ है, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य महेश्वर के किले के पास स्थित 'मण्डलखो' नामक टीले के उत्खनन में मिले हैं। 1957–59 ई. में महेश्वर की ओर ज्वालेश्वर एवं धनबेड़ी टेकड़ी पर भी उत्खनन किया गया।

इन उत्खननों के परिणामस्वरूप पाषाणकाल से लेकर मध्यकाल तक के पाँच सांस्कृतिक कालों की जानकारी प्राप्त हुई हैं।[46] सहस्त्रधार, महेश्वर और मण्डलेश्वर के सर्वेक्षण में निम्नतम स्तरों से प्राप्त मध्यपाषाणयुगीन उपकरणों के आधार पर कुछ विद्वान यहाँ बसी सभ्यता को पुरापाषाणकाल से मुस्लिम मराठाकाल तक के सात कालों में विभाजित करते हैं।[47]

नावदाटोली में लगभग 90 प्रतिशत से अधिक चाक पर बनी मृद्भाण्ड परम्पराएँ ज्ञात हुई हैं। केवल कुछ पात्र जैसे आटा गूथनें की थाली, संग्रहण पात्र इत्यादि हाथ से बने हैं।[48] प्रो. एच. डी. सांकलिया के अनुसार नावदाटोली के प्रारम्भिक एवं क्रमागत निवासी दोनों ही पात्रों के आकार–प्रकार एवं चित्रण अभिप्रायों का पूर्व ज्ञान रखते थे।[49]

नावदाटोली की ताम्रपाषाण संस्कृति में मुख्यतः चार प्रकार की मृद्भाण्ड परम्पराएँ प्रचलित थी। इनमें से प्रथम हल्के लाल या गुलाबी रंग की मृद्भाण्ड परम्परा जिस पर काले रंग से चित्रण अभिप्राय है, जो इस संस्कृति की विशिष्ट–पात्र परम्परा है। उसे मालवा मृद्भाण्ड परम्परा भी कहा जाता है।

मालवा की ताम्रपाषाण संस्कृति में द्वितीय प्रकार के मृद्भाण्डों में मालवा मृद्भाण्डों के साथ अल्पमात्रा में श्वेत रंग से चित्रित काले–लाल मृद्भाण्ड भी मिले हैं। तृतीय

Scanned by CamScanner

पात्र–परम्परा दूधिया प्रलेप युक्त है। चौथी पात्र–परम्परा जोर्वे मृद्भाण्ड परम्परा है, जिसके पात्रों पर गहरे लाल रंग का प्रलेप दिखाई देता है।[50]

मालवा संस्कृति के उत्खनन से प्रमुख पात्रों में साधार तश्तरियाँ, साधार कटोरे, बड़ी तश्तरियाँ, थालियाँ, लोटे, घड़े, एवं मटके इस संस्कृति के सभी स्तरों से प्राप्त होते हैं। इन पर काले रंग से प्राकृतिक एवं ज्यामितीय आकृतियों का चित्रण है। इन चित्रण अभिप्रायों में त्रिभुज, लहरदार रेखाएँ, एक दूसरे के अन्दर वृत्त, आपस में काटती हुई रेखाएँ सूर्य, मानव पशु आकृतियाँ प्रमुख हैं।[51]

नावदाटोली के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोग ताँबे की चपटी कुल्हाड़ियाँ, मत्स्यकाटे, खंजर इत्यादी उपयोग में लाते थे। चूडियाँ, छल्ले, हार, कर्ण–कुण्डल महत्वपूर्ण पुरानिधियाँ है।[52] चूड़ियों के निर्माण में धातु ,मिट्टी, अस्थि एवं हाथीदांत का प्रयोग किया गया है। आभूषाणार्थ, आगेट, जास्पर, कार्लेनियन, शंख, सेलखड़ी, (स्टियटाईट) साभर श्रृंग आदि के मनके बनाये जाते थे। सम्भवतः इस काल के लोगों नें मणि का प्रयोग भी आरम्भ कर दिया था।[53] मालवा संस्कृति में लघुपाषाण उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इन उपकरणों के अतिरिक्त पालिश–युक्त कुल्हाड़ियाँ, बसूला, सिल, प्रस्तर गेदें उल्लेखनीय है।[54]

उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन लोगों के निवास के सम्बन्ध में जो साक्ष्य मिले हैं, उनसे ज्ञात होता है, कि लोग मकानों के निर्माण में लकड़ी के लट्ठों का प्रयोग खम्भों के रूप करते थे। मकानों की दीवाले बाँस–बल्ली की बनाई जाती थी, जिसमें अन्दर और बाहर मिट्टी का लेप किया जाता था। छत घास–पूस की होती थी। फर्श काली या पीली मिट्टी मिश्रित चूने से बनाया जाता था। मकान चौकोर, गोल अथवा वर्गाकार होते थे। उत्खनन में मकानों के भीतर खाने–पीने और अनाज भरने के लिए प्रयुक्त होने वाले मिट्टी के बर्तन, सिलबट्टे, और चूल्हे मिले हैं।

नावदाटोली की ताम्रपाषाणिक अर्थव्यवस्था कृषि एवं पशुपालन पर आधारित थी। उत्खनन में गेहूँ, जौ, उड़द, मूँग, अलसी, काले चने, मसूर, मटर इत्यादि ऊगाने के साक्ष्य मिले है। कृषि के अतिरिक्त यह लोग आखेट में मत्स्य व अन्य पशुओं का शिकार करते थे।[56] इस पुरास्थल पर चावल के साक्ष्य, द्वितीय कालखण्ड से प्राप्त होते हैं। उत्खनन से जल–जीवों में कछुए व मछली की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।[57]

Scanned by CamScanner

नावदाटोली की संस्कृति कायथा, आहाड़ संस्कृति से परवर्तीकाल में विकसित हुई प्रतीत होती हैं। इसी प्रकार दायमाबाद एवं इनामगाँव के उत्खनन से ज्ञात होता है, कि यह संस्कृति जोर्वे संस्कृति से पूर्व की है। नावदाटोली के ताम्रपाषाणिक स्तरों से आठ रेडियों कार्बन तिथियाँ प्राप्त हैं। जिनमें से अधिकांश 1600 ई. पू. के आस–पास हैं। सभी उपलब्ध साक्ष्यों के परिपेक्ष्य में विद्वानों ने मालवा संस्कृति का काल 1700 से 1200 ई. पू. के मध्य निर्धारित किया है।

एरण

एरण में ताम्रपाषाणकालीन बस्ती होने की जानकारी सर्वप्रथम प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी तथा डॉ. उदयवीर सिंह के संयुक्त निर्देशन में सम्पन्न उत्खनन (1960–65 ई.) द्वारा प्राप्त हुई। कालान्तर में प्रो. सुधाकर पाण्डेय और डॉ. विवेकदत्त झा के निर्देशन में हुए उत्खनन(1984–88 ई.) से एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के विभिन्न अज्ञात तत्वों को अनावृत करने में महत्ती भूमिका निभाई।[58]

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी की सुरक्षा प्राचीर व खाई प्रकाश में आई, मुख्य टीले पर वर्तमान समय में लोगों का निवास है। मुख्य टीले के कुछ भाग में उत्खनन कार्य किया गया। 12.20 मीटर ऊँचे टीले पर 8.84 मीटर मोटा सांस्कृतिक जमाव प्राप्त हुआ है।[59] जिसमें ताम्रपाषाणकाल से लेकर मध्यकाल तक की संस्कृतियाँ प्रकाश में आई हैं।[60]

एरण उत्खनन में सबसे निम्न स्तरों से नवपाषाण लोगों के साथ कायथा संस्कृति के लोगों के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इससे स्पष्ट होता है, कि एरण में नवपाषाणकालीन लोगों के साथ कायथा संस्कृति के लोग बस गये थे। ऐसा प्रतीत होता है, कि कायथा संस्कृति के निवासियों के साथ उनके घनिष्ट संबंध स्थापित हो गये थे।[61] यहाँ से प्राप्त कायथा संस्कृति से सम्बन्धित मृद्भाण्ड लाल रंग के हैं, जिनकी बाहरी सतह पर लाल, भूरा अथवा कत्थई प्रलेप प्राप्त हुआ है। कुछ मृद्भाण्डों की भूरी सतह पर काले रंग से रेखाओं का चित्रण किया गया है।[62] कायथाजनों के तुरंत बाद एरण से पाषाण उपकरणों के साथ ताँबे की वस्तुओं का उपयोग करने वाली संस्कृति के अवशेष मिले हैं। एरण से तीन प्रकार की मृद्भाण्ड परम्पराएँ मिलीं हैं। प्रथम, काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड द्वितीय, सफेद रंग से चित्रित काले और लाल मृद्भाण्ड तृतीय, मृद्भाण्ड परम्परा में धूसर रंग के मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं। इनके साथ एक अन्य लाल पात्र भी मिलता है, जिस पर

Scanned by CamScanner

गहरा लाल प्रलेप है।[63] मृद्भाण्डों पर हरिण समूह, हीरक, वानस्पतिकी एवं ज्यामितीय अलंकरण अभिप्राय प्रमुख हैं। बर्तनों में साधार तश्तरी, टोंटीदार कटोरे, तसले, घड़े प्रमुख हैं।

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से लघुपाषाण उपकरणों में ब्लेड, चाकू छेदक, ताम्र उपकंरणों में कुल्हाड़ियाँ, छल्ले, सुईयाँ प्राप्त हुई हैं। उत्खनन में भली–भाँति काटकर बनाया गया स्वर्ण का गोल पत्तर (व्यास 2.5 से. मी.भार 20 ग्रेन) प्राप्त हुआ है।[64] प्रो.के.डी.वाजपेयी के अनुसार यह विनिमय का माध्यम था। उत्खनन में प्राप्त हाथी दांत की लटकन, धातु की अंजन–शलाकाएं, शंख, ताँबा, व पकी हुई मिट्टी की चूड़ियाँ, कर्ण आभूषण, मिट्टी, शंख, स्टेटाइट, जास्पर, अगेट व कार्नेलियन के मनके इत्यादि प्राप्त हुए हैं। चौपड़ के पाँसे व पकी मिट्टी की शंतरंज के मुहरों से ज्ञात होता है, कि यह मनोविनोद के साधन थे।

एरण से खाना पकाने के चूल्हे व अनाज पीसने के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। एक गोल चूल्हा मिला है, जिसका फर्श पक्का है तथा किनारे ऊपर ऊठे हुए हैं। उत्खनन से दो–मुखी जुड़वा चूल्हे भी मिले हैं।[65]इनकी आर्थिक व्यवस्था कृषि, पशुपालन व आखेट पर निर्भर थी। अनाजों में गेंहू,धान,जौ,मूग,चना,इत्यादि उपजाते थे। पालतू पशुओं में गाय, बैल,भैस,हरिण,कुत्ता प्रमुख थे।

सीमित क्षेत्र में उत्खनन होने से भवनों का पूर्ण स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सका है, भवन मिट्टी बाँस–बल्लियों व घास–पूस की सहायता से ही बनाये जाते थे। मकानों का फर्श मिट्टी और बजरी को कूटकर बनाया जाता था। मजबूती और सीलन से बचाव के लिए फर्श निर्माण में लकड़ी के कोयले का भी प्रयोग हुआ है।[66] एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों ने बाहरी आक्रमण से सुरक्षा हेतु रक्षा–प्राचीर व परिखा (खाई) का निर्माण करवाया, जो उत्खनन से प्रकाश मे आई है।[67] इससे स्पष्ट होता है, कि ताम्रपाषाण संस्कृति के लोग अपनी सुरक्षा के प्रति गम्भीर थे।

कार्बन 14 तिथि निर्धारण विधि के आधार पर एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का काल 2150 ई. पू. से 700 ई. पू. के मध्य निर्धारित किया गया है।

नागदा

उज्जैन जिले के नागदा नामक स्थान पर चम्बल नदी के तट पर कई प्राचीन टीले स्थित हैं। इनमें से एक टीले का उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा डॉ. एन,

Scanned by CamScanner

आर. बनर्जी के निर्देशन में 1955–1956 ई. में कराया गया। इस टीले के उत्खनन से 22 फीट मोटा ताम्रपाषाणकालीन जमाव प्रकाश में आया।[68] इस संस्कृति के स्तरों से तीन मृद्भाण्ड परम्पराएं ज्ञात हुई हैं, इनमें प्रथम प्रकार के लाल तथा मखनिया रंग के मृद्भाण्ड जिन पर काले रंग से चित्रण अभिप्राय संजोए गये हैं। द्वितीय प्रकार के मृद्भाण्ड धब्बेदार धूसर रंग के हैं। तृतीय प्रकार के पात्र चित्रित काले–लाल रंग के प्राप्त हुए हैं। इन पात्रों पर हरिण, बैल, कुत्ता, सूर्य के अतिरिक्त लहरदार समानांतर खड़ी, आड़ी व तिरछी रेखाओं का चित्रण मिलता है।[69] डॉ. आर. के. शर्मा ने इन पात्रों को रंगपुर (सौराष्ट) के कुछ पात्रों के समरूप बताया है।[70] यहाँ से चौकोर भग्नावशेष प्राप्त हुए, जिनकी दीवारें कच्ची ईंटों की बनी थी। एक कक्ष से तीन चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं। उपकरणों के रूप में ताम्र–परशु तथा चाल्सिडोनी, क्वार्ट्ज, कार्नेलियन आदि पत्थरों से बने लघुपाषाण उपकरण मिले हैं। यहाँ ताँबे का उपयोग सीमित मात्रा में हुआ है। मिट्टी के बने मनके, खिलौने, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा वृषभ मृण्मूर्तियाँ अन्य पुरावशेष हैं।

कार्बन 14 की तिथि के आधार पर इस पुरास्थल से प्राप्त ताम्रपाषाण संस्कृति का काल 1500 ई. पू. से 800 ई. पू. निर्धारित किया गया है।

दंगबाड़ा

दंगबाड़ा उज्जैन से 32 कि. मी. दक्षिण पश्चिम में नागदा एवं इन्दौर मार्ग पर इंगोरिया ग्राम से 6 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ से गौतमपुरा रेल्वे स्टेशन 14 कि. मी. दूर है, जो इन्दौर–रतलाम मीटर गेज लाइन पर स्थित है। दंगबाड़ा ग्राम से लगभग 1 कि. मी. पश्चिम दिशा में चम्बल नदी के दाहिने तट पर 277 मीटर लम्बा 64 मीटर चौड़ा 12 मीटर ऊँचा एक टीला है।[71] यहाँ 1978–79 ई., 1979–80 ई. तथा 1982–83 ई. में संचालनालय पुरातत्त्व एवं संग्रहालय, म.प्र., भोपाल तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्वाधान में श्री माहेश्वरी दयाल खरे एवं डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के निर्देशन में उत्खनन किया गया। दंगबाड़ा उत्खनन द्वारा कायथा सभ्यता से लेकर मुस्लिम काल तक का सांस्कृतिक अनुक्रम ज्ञात हुआ है। दंगबाड़ा से ज्ञात प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सांस्कृतिक काल क्रमशः कायथा, आहाड़ एवं मालवा ताम्रपाषाण संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रथम काल के स्तरों से कायथा पात्र दो चरणों में प्राप्त हुए हैं। 1. स्वतंत्र रूप से। 2. आहाड़ पात्रों के साथ, इनके ऊपर आहाड़ एवं मालवा मृद्भाण्ड परम्पराएँ प्राप्त हुई हैं।

Scanned by CamScanner

द्वितीय काल में प्रमुखतः से आहाड़ परम्परा उपलब्ध हुई हैं। इसके अंतर्गत काले–लाल मृद्भाण्डों पर श्वेत रंग से सीधी व लहरदार रेखाओं के चित्रण अभिप्राय किये गये हैं। इस काल के स्तरों से बहुसंख्यक वृषभ मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। जानवरों की हड्डियाँ भी उत्खनन से प्राप्त हुई हैं।

प्रथम उपकाल से मालवा मृद्भाण्ड परम्परा के साथ कुछ आहाड़ खण्ड भी प्राप्त हुए हैं। लघुपाषाण उपकरण सिल, गेदें इत्यादि पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। द्वितीय उपकाल से प्रमुखतः से मालवा मृद्भाण्ड परम्परा प्राप्त हुई हैं। इस काल के स्तर से मातृदेवी प्रतिमाएँ व छोटे दीपक प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में 1.95×1.50 मीटर का आयताकार गड्ढा मिला है, जो पूर्णतः लकड़ी के कोयले से भरा था, विद्वानों ने इसे यज्ञ कुण्ड माना है।[72] तृतीय उपकाल से मालवा पात्र–परम्परा प्राप्त हुई है। प्राप्त मृद्भाण्डों पर अलंकरण अभिप्राय किया गया है। इस काल से रसोई घर की प्राप्ति हुई है। ताम्र–उपकरण, ताम्र–कुल्हाड़ियाँ ढालने के साँचे, जले अन्न के अवशेष, अस्थि उपकरण महत्वपूर्ण पुरानिधियाँ हैं। यह स्थल सभी उपकालों में अग्निकाण्ड का शिकार हुआ था। यहाँ के लोगों में शाकाहार एवं मांसाहार दोनों प्रचलित था।[73]

आवरा

मन्दसौर जिले में चन्दवासा नगर से 6 मील पश्चिम की ओर स्थित आवरा (प्राचीन अपरा) ग्राम स्थित है। इस गाँव से आधे मील की दूरी पर स्थित चम्बल नदी व ग्राम के बीच में टीलों की श्रृंखला विद्यमान थी। जो अब चम्बल बाँध बनने के कारण जलमग्न हो गई हैं। डूब में आने से पहले इस स्थल का सीमित उत्खनन म. प्र. के पुरातत्त्व विभाग द्वारा 1960–61 ईस्वी में डॉ. एच. वी. त्रिवेदी के निर्देशन में करवाया गया। उत्खनन में पाषाणयुग से लेकर मुस्लिम मराठा काल तक के अवशेष प्रकाश में आए हैं।

उत्खनन के सीमित क्षेत्र में होने के कारण इस काल से सम्बन्धित लोगों के रहन–सहन, खान–पान आदि के विषय में स्पष्ट प्रकाश नहीं पड़ सका है। कुछ मकानों की नीव तथा फर्श के अवशेष मिले हैं। चम्बल नदी द्वारा लाई गयी पीली मिट्टी के जमाव पर ताम्रपाषाणकालीन लोगों ने अपना आवास बनाया। उत्खनन में ताँबे की एक कुल्हाड़ी व लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं।[74]

उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए वह महेश्वर–नावदाटोली, त्रिपुरी, गिलुण्ड, नागदा एरण से ज्ञात पात्र परम्पराओं से साम्य रखते हैं। बनावट, रंग, आंतरिक सतह का

Scanned by CamScanner

समझने हेतु उत्खनन कार्य किया गया । यहाँ के सांस्कृतिक टीले का जमाव नदी की मूल सतह से 10 मीटर ऊँचा था। उत्खनन के द्वारा लगभग 4000 वर्ष प्राचीन सभ्यता की क्रमबद्ध जानकारी यहाँ से प्राप्त हुई है।[79] प्रो. अली के अनुसार यहाँ बसने वाले लोग सम्भवतः बनास नदी की घाटी से आये थे।[80]

महिदपुर की ताम्रपाषाणिक संस्कृति के लोग कई प्रकार की पात्र परम्पराओं का प्रयोग करते थे। महिदपुर के प्रथम काल से चतुर्थ काल तक श्वेत रंग से चित्रित काले एवं लाल मृद्भाण्डों के विभिन्न प्रकार प्राप्त हुए हैं। इसे आहाड़ पात्र परम्परा के नाम से जाना जाता है। यहाँ से प्राप्त कार्बन 14 तिथियों से ज्ञात होता है, कि आहाड़ पात्रों का प्रयोग करने वाले लोग महिदपुर में 2100 ई. पू. में बस गये थे।[81] यहाँ के द्वितीय सांस्कृतिक चरण में मालवा पात्रों की अधिकता है। इनके अतिरिक्त इस चरण से काले, लाल प्रलेप–युक्त एवं अपरिष्कृत धूसर मृदभाण्ड–खण्ड भी मिले हैं। थालियाँ, लोटे, जार, कटोरे, तबे आदि प्रमुख पात्र प्रकार हैं। तृतीय पात्र परम्परा जोर्वे मृद्भाण्डों की है। जिन पर लाल रंग एवं काला प्रलेप किया गया है। तसले व संग्रहण पात्र प्रमुख पात्र प्रकार है। महिदपुर के ताम्रपाषाणकालीन निवासी ताँबे व सोने के प्रयोग से परिचित थे। ताँबे के बने उपकरण, चूड़ियाँ, दीपक प्राप्त हुए हैं। यहाँ के प्रथम काल से सोने के पत्तर की प्राप्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह सम्भवतः गले में पहनने के आभूषण के रूप में उपयोग किया जाता होगा। कुछ विद्वानों ने इसकी तुलना वैदिक 'निष्क' से की है। वृषभ मृण्मूर्तियाँ, मिट्टी एवं पत्थरों के मनके, कर्ण, फूल, अगूठियाँ, अस्थि, हरिण के सींग एवं शंख से बने आभूषण अन्य महत्वपूर्ण पुरानिधियाँ हैं

कार्बन 14 तिथि निर्धारण की विधि के आधार पर महिदपुर की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के विभिन्न कालों की तिथियाँ निम्नानुसार निश्चित की गई।[82]

प्रथम काल 2100–1800 ई. पू.

द्वितीय काल 1800–12000 ई. पू.

मनोटी

चम्बल बाँध बनने के पूर्व में मन्दसौर जिले में मनोटी नामक ग्राम में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग द्वारा डॉ. एच. बी. त्रिवेदी एवं डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर के निर्देशन में 1959–60 ई. में उत्खनन कार्य किया गया। धन व समय की कमी के कारण यहाँ सीमित उत्खनन किया गया। यहाँ पर तीन खदाने लेकर उनमें उर्ध्वाधर उत्खनन विधि से

Scanned by CamScanner

उत्खनन कार्य हुआ। इस पुरास्थल से आद्यैतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक के अवशेष प्रकाश में आए हैं। यहाँ किये गये उत्खनन से ज्ञात हुआ है, कि इस पुरास्थल पर बसी प्रारम्भिक सभ्यता चम्बल नदी की बाढ़ से नष्ट हो गई। कालान्तर में यहाँ के निवासियों ने बाढ़ से रक्षार्थ ईंटों की मोटी सुरक्षा दीवार बनाई।[83]

मनोटी के पुरास्थल से प्राप्त परम्पराओं को निम्न समूहों में बाँटा जा सकता है।

1. काले लाल मृद्भाण्ड जिनके भीतरी भाग चित्रित है। इस प्रकार के पात्र आहाड़ एवं नागदा से मिले हैं।
2. लाल मृद्भाण्ड जिन पर काले रंग से चित्रकारी की गई है। इनमें टोंटीदार बर्तन महेश्वर के मृद्भाण्डों के समान हैं।
3. काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड जो किंचित पतले हैं। ये मृद्भाण्ड लोथल के परवर्ती स्तरों से प्राप्त पात्रों के समरूप हैं।
4. असुघड़ काले पात्र

डॉ. एच. बी. त्रिवेदी ने मनोटी की आद्यैतिहासिक संस्कृति का आरम्भिक काल आवरा के समान ही 1700 ई.पू. निर्धारित किया है, किन्तु वे इसका अन्त आवरा संस्कृति से पहले मानते हैं।[84]

रूनीजा

यह पुरास्थल उज्जैन जिले की बड़नगर तहसील में उज्जैन से दक्षिण–पश्चिम की ओर रतलाम–इन्दौर छोटी रेल लाइन पर स्थित रूनीजा रेल्वे स्टेशन से 15 कि. मी. दक्षिण दिशा में स्थित है। इस पुरास्थल का उत्खनन विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन और संचालनालय पुरातत्त्व एवं संग्रहालय,भोपाल मध्यप्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर तथा श्री एम. डी. खरे के निर्देशन में 1981 ई. में सम्पन्न हुआ। यहाँ कुल छः टीले हैं, जिनमें से टीला क्र. 1 पर उत्खनन कार्य किया गया। रूनीजा में 1981 ई. में उत्खनन कार्य हुआ। यहाँ पर सांस्कृतिक अनुक्रम ज्ञात करने के लिए 4 निखात लगाये गये, जिनमें से तीन निखातों में ताम्रपाषाणकालीन एवं शेष एक निखात से ऐतिहासिक काल के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इस उत्खनन के परिणामस्वरूप प्रथम काल से कायथा संस्कृति, द्वितीय काल से आहाड़ संस्कृति, तृतीय काल से मालवा संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। रूनीजा के उत्खनन से मालवा में ताम्रपाषाण संस्कृति के अन्त और आरम्भिक ऐतिहासिक प्राग्मौर्य काल के अन्वेषण हेतु अनेक संकेत प्राप्त हुए हैं।[85]

Scanned by CamScanner

बेसनगर

मध्यप्रदेश के प्राचीन नगरों में विदिशा का नाम उल्लेखनीय है। यहाँ से पुरातात्त्विक सामग्री भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। इस नगर की महत्ता को देखते हुए यहाँ कई बार पुरातात्त्विक उत्खनन कराये गये। आधुनिक विदिशा नगर से तीन कि. मी. उत्तर–दक्षिण में प्राचीन बेसनगर (23^0,23′ उत्तरी अक्षांश एवं 77^0,48′ पूर्वी देशान्तर) पर स्थित है।

जिसे प्राचीन साहित्य व मुद्राओं में **'बेसनगर'**,**'विश्वनगर'**,**'वैश्यनगर'**,**'वेदिसा'**, **'विदिशा'** नामों से अभिहित किया गया है।[86] यह नगर तीन ओर से बेतवा व बेस नदी द्वारा तथा शेष चौथी ओर एक सुरक्षा प्राचीर से घिरा था। बेसनगर का सर्वप्रथम उत्खनन कार्य श्री.एच. एच. लेक के नेतृत्त्व में 1910 ई. में किया गया।[87] कालान्तर में डॉ. डी. आर. भण्डारकार ने दो सत्रों 1913–14 ई. में यहाँ उत्खनन कराया।[88] उक्त दोनों उत्खननों से ताम्रपाषाण संस्कृति प्रकाश में नहीं आई। बेसनगर का पुनः उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्री एम. डी. खरे के नेतृत्व में 1963–66ई. एवं 1975–77 ई. में कराया गया। इस उत्खनन से ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए।

1963–64 ई. के उत्खनन में खदान बी. एस. न. 1 में किये गये उत्खनन से इस संस्कृति से सम्बन्धित काले–लाल एवं सादे मृद्भाण्ड प्राप्त हुए। इनके अतिरिक्त 1964–65 ई. के उत्खनन में बी. एस. न. 1 तथा बी. एस. न. 4 की खदानों में किये गये उत्खननों से यह सिद्ध हो गया कि विदिशा का प्रथम काल ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता का था। इस काल के स्तरों से लाल पर काले, लाल–और–काले तथा कुछ भूरे मृद्भाण्ड खण्डों के अतिरिक्त लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए।[89] बी. एस. न. 4 के ऊपरी स्तरों से ताम्रपाषाण सांस्कृतिक अवशेषों के साथ पी. जी. बेरपुर की प्राप्ति विशेष उपलब्धि है। बेसनगर की सुरक्षा प्राचीर की प्रकृति, तिथि व ताम्रपाषाण संस्कृति के विस्तार को जानने के लिए श्री एम. डी. खरे ने 1975–76ई. एवं 1976–77 ई. में पुनः उत्खनन कराया किन्तु इन उत्खननों से ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त नहीं हुए। श्री एम. डी. खरे ने पाँच उत्खनन सत्रों में किये गये उत्खनन के आधार पर यहाँ की ताम्रपाषाण संस्कृति का काल 1800–1300 ई. पू. निर्धारित किया। बी. एस. न. 4 से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन एवं चित्रित धूसर संस्कृति की सम्मिलित अवस्था का काल 1100 से 900 ई. पू. माना गया है।[90]

Scanned by CamScanner

त्रिपुरी

मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में जबलपुर नगर से 9 मील पश्चिम की ओर शाहपुरा व भेडाघाट जाने वाले मार्ग पर तेवर गाँव से लगे हुए प्राचीन 'त्रिपुरी नगरी' के भग्नावशेष विद्यमान है। त्रिपुरी में सर्वप्रथम उत्खनन 1952–53 ई. में सागर विश्विविद्यालय द्वारा स्व. डॉ. एम. जी. दीक्षित के निर्देशन में किया गया। हथियागढ़ टीले पर किये गये इस उत्खनन से ज्ञात हुआ है, कि इस स्थान पर सर्वप्रथम बस्ती लगभग 1000 ई. पू. में बसी थी, इस समय यहाँ के निवासी लघुपाषाण उपकरण, चित्रित मृद्भाण्ड़ों का प्रयोग करते थे।[91] 1965–66 ई. के मध्य डेकन कालेज,पुणे के पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रो.हसमुख धीरजलाल सांकलिया व सागर, विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के प्रो. के. डी. वाजपेयी के निर्देशन में यहाँ उत्खनन कार्य किया गया। इस उत्खनन के परिणामस्वरूप ताम्रपाषाणकाल से लेकर कल्चुरी नरेशों के शासनकाल तक की सांस्कृतिक अवस्था का ज्ञान हुआ।[92]

1952 ई. एवं 1966 ई. के उत्खनन में निचले स्तरों से ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड खण्ड प्राप्त हुए इनमें से कुछ बर्तन अभ्रक मिश्रित पकी मिट्टी के हैं। काले रंग से चित्रित पात्र यहाँ की प्रमुख मृद्भाण्ड परम्परा है। कुछ मात्रा में धूसर मृद्भाड़ भी प्राप्त हुए हैं। एक खदान में अप्रयुक्ता धरती के अन्दर मिले गड्ढे में पकी मिट्टी का अर्धवृत्ताकार मृद्भाण्ड मिला है। जिस पर उत्तम लाल पालिस की गई है। इस पात्र के सिरों पर धागा पिरोने के छिद्र बने हैं। मृद्भाण्डों के साथ विविध प्रकार के लघुपाषाण उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। प्रो. के. डी. वाजपेयी जी ने इस संस्कृति का काल लगभग 1000 ई. पू. से 500 ई. पू. निर्धारित किया है।[93]

मन्दसौर (दशपुर)

चम्बल की सहायक नदी शिवना के तट पर आधुनिक मन्दसौर स्थित है। 1973–74 ई. में संचालनालय पुरातत्व एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश, भोपाल तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्वाधान में यहाँ उत्खनन कार्य कराया गया। यह उत्खनन श्री वीरेन्द्र कुमार वाजपेयी एवं डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। यहाँ के निचले स्तरों से आहाड़ की ताम्रपाषाण संस्कृति से सम्बद्ध अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके ऊपर मालवा की ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेष मिले हैं। मन्दसौर से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पात्र गहरे लाल रंग के हैं, एवं प्रादेशिक अन्तर प्रदर्शित करते हैं।[94]

Scanned by CamScanner

आजादनगर

इन्दौर रेसिडेंसी जल यंत्रालय के निकट आजादनगर का पुरास्थल स्थित है। यह प्राचीन पुरास्थल खान नदी के तट पर स्थित है। सन् 1974 ई. में संचालनालय पुरातत्त्व एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश,भोपाल एवं विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन के संयुक्त तत्वाधान में श्री वीरेन्द्र कुमार व डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के निर्देशन में यहाँ उत्खनन कार्य किया गया। यहाँ से कायथा एवं मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं, किन्तु कायथा पुरास्थल की भाँति यहाँ पर कायथा व मालवा संस्कृतियों के मध्य आहाड़ संस्कृति का स्वतन्त्र स्तर विद्यमान है। यहाँ कायथा संस्कृति के दो भिन्न उपकाल ज्ञात हुए हैं। जो कायथा में उपलब्ध नहीं हुए थे। प्रथम उपकाल में चमकीले लाल पात्र प्राप्त हुए हैं। कायथा के द्वितीय उपकाल में मटमैले काले प्रलेप युक्त पात्र अधिक मिलते हैं। इन्ही स्तरों से ताँबे की त्रिकोणाकृति एवं लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। कायथा सांस्कृतिक काल के ऊपरी स्तरों से मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति की पात्र परम्पराओं के साथ लघु पाषाण उपकरण तथा सेलखड़ी के मनके प्राप्त हुए हैं।[95]

पिपलिया–लोरका

मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में बेतवा नदी के तट पर स्थित इस स्थल की खोज का श्रेय प्रो. शंकर तिवारी को है। इस पुरास्थल का उत्खनन मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग द्वारा 1978 ई. में किया गया था। यहाँ से ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए है।[96]

मध्यप्रदेश के खरगौन जिले में चिचली अदलपुर व पीतनगर का उत्खनन भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग ने 2000 ईस्वी में क्रमशः डॉ. एस.के. मिश्रा डॉ. प्रकाश माथुर के निर्देशन में करवाया उक्त उत्खननों से ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेष प्रकाश में आये है। रायसेन जिले में ही स्थित भीमबैठका से डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर महोदय को ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड खण्ड प्राप्त हुये थे।[98]

जोर्वे संस्कृति

महाराष्ट्र में स्थायी ग्राम्य जीवन का प्रारम्भ ताम्रपाषाण संस्कृतियों के साथ होता है।[99] महाराष्ट्र के अनेक स्थलों से ताम्रपाषाणयुगीन जीवन–यापन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। कुछ स्थलों में उत्खनन कार्य भी किया गया, उन स्थलों में नासिक, जोर्वे, नेवासा, दायमाबाद, चंदोली, सोनेगाँव, और इनामगाँव प्रमुख हैं। [100] जोर्वे की ताम्रपाषाण संस्कृति

Scanned by CamScanner

महाराष्ट्र की विशिष्ट संस्कृति हैं। इस संस्कृति के साथ–साथ मालवा संस्कृति के पुरावशेष भी यहाँ से प्राप्त हुए हैं।[101]

जोर्वे संस्कृति के सम्बन्ध में सर्वप्रथम जानकारी 'जोर्वे' नामक पुरास्थल के उत्खनन से हुई इसलिए इस संस्कृति को जोर्वे संस्कृति के नाम से विद्वानों ने इसका नामकरण किया। जोर्वे नामक पुरास्थल महाराष्ट्र प्रान्त के अहमदनगर जिले में गोदावरी नदी की सहायक नदी प्रवरा के बाँये तट पर स्थित है। जोर्वे संस्कृति ने मालवा संस्कृति से बहुत कुछ लिया है, किन्तु इसमें दक्षिणी नवपाषाण संस्कृति के तत्व भी विद्यमान है।[102] जोर्वे संस्कृति से सम्बन्धित अधिकांश पुरास्थल महाराष्ट्र की काली मिट्टी के क्षेत्र में स्थित हैं।

इस संस्कृति के अनेक पुरास्थलों का अभी तक उत्खनन हो चुका है। इनमें प्रकाश सावलदा, तथा कौठे महाराष्ट्र प्रान्त के धुले जिले में और बहाल, टेकबाड़ा जलगाँव जिले में स्थित है। तुलजापुर ,अमरावती जिले में, दायमाबाद, नेवासा, जोर्वे, सोनेगाँव और आपेगाँव अहमदनगर जिले में तथा इनामगाँव, चन्दोली एवं बाड़की, पुणे जिले में नासिक, पुरास्थल नासिक जिले में स्थित है।[103] अधिकांश पुरास्थलों का आकार छोटा है, एक हेक्टेयर से लेकर दो–तीन हेक्टेयर तक है, किन्तु कुछ स्थलों का क्षेत्रफल अधिक है। इनमें प्रकाश 10 हेक्टेयर, बहाल नामक पुरास्थल 15 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। 1400 ई. पू. से 700 ई. पू. के आसपास जोर्वे संस्कृति विदर्भ के कुछ भाग को छोड़कर सम्पूर्ण महाराष्ट्र में फैली हुई थी।[104]

जोर्वे संस्कृति में कई प्रकार की पात्र परम्पराएँ प्रचलित थी। उनमें से मालवा पात्र परम्परा और दूधिया स्लिप वाली पात्र परम्परा विशेष उल्लेखनीय है। मालवा पात्र परम्परा की सर्वप्रथम जानकारी नावदाटोली के उत्खनन से हुई थी, लेकिन इसका विस्तार पश्चिमी महाराष्ट्र प्रान्त में भी फैला था। प्रकाश, दायमाबाद चन्दोली, सोनगाँव, इनामगाँव के उत्खननों से जोर्वे संस्कृति के निचले स्तरों से मालवा पात्र परम्परा प्राप्त हुई है।[105] प्रकाश, नेवासा, सवलदा, दायमाबाद, से धूसर (ग्रेवेयर) मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है, जो जोर्वे संस्कृति की प्रमुख पात्र परम्परा है। जोर्वे पात्रों के निर्माण में एक विशेष प्रकार की तकनीक परिलक्षित होती है, पात्रों के ऊपर लाल रंग की स्लिप व घिसकर चमकाने के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। पात्रों का निर्माण अच्छी तरह तैयार की गई मिट्टी से किया जाता था। बर्तन पतली गढ़न के हैं, अधिकांश पात्र अच्छी तरह पके हुए व चाक पर निर्मित है। जिससे स्पष्ट होता है, कि यहाँ के कुम्हार सम्प्रदाय के लोग अच्छे पात्र बनाने व उन्हें

Scanned by CamScanner

पकाने के लिए आग के प्रयोग में दक्ष थे। उन्हें पात्रों को पकाने के लिए निश्चित तापक्रम के बारे में पूर्ण जानकारी थी। जोर्वे पात्र परम्परा में टोंटीदार बर्तन, गोल कटोरे, छोटी व बड़ी गर्दन वाले पात्र, तसले इत्यादि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त मटके तथा घड़ों की भी प्राप्ति हुई है।[107] मालवा संस्कृति के विशिष्ट पात्र साधार कटोरे इत्यादि का इस संस्कृति में पूर्णतया अभाव है। इनके अतिरिक्त थालियाँ व तश्तरियाँ भी इस संस्कृति में प्राप्त नहीं होती। जोर्वे संस्कृति से प्राप्त कुछ पात्रों पर दक्षिण भारतीय नवपाषाण संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। जोर्वे पात्रों पर काले रंग से ज्यामितीय, चतुर्भुज, त्रिभुज, आड़ी, तिरछी रेखाओं का चित्रण मिलता है।[108] अल्पमात्रा में फूल पत्तियों एवं बारहसिंगा आदि पशुओं के चित्रण भी उल्लेखनीय हैं। जोर्वे के परवर्ती चरण में कृष्णलोहित पात्र–खण्ड भी प्राप्त हुए हैं।[109] जोर्वे संस्कृति से अल्पमात्रा में ताम्र उपकरण मिले हैं। इनमें मुख्यतः कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ, चाकू, सुईयाँ, मनके, अंजन–शलाकाओं की गणना की जा सकती है। महाराष्ट्र के जोर्वे और चन्दोली में सपाट आयताकार ताम्र–कुठार पाये गये हैं। महाराष्ट्र के जोर्वे और चन्दोली में ताँबे की छेनी भी मिली है।[110] चन्दोली के उत्खनन में सात इंच लम्बी ताँबे की कटार प्राप्त हुई हैं।[111] एक किसान को दायमाबाद के टीले पर एक पेड़ की जड़ खोदते समय आकस्मिक ताँबे के बने एक गैड़ा, एक हाथी, एक भैंसा तथा दो बैलों सहित एक रथ जिसमें खड़ी मुद्रा में एक व्यक्ति सवार है, मिले हैं। इनके नीचे लगभग 1.20 मीटर मोटा जोर्वे का पुरातात्त्विक जमाव था। इनकों साँचे में ढालकर ठोस आकार में बनाया गया है। इन चारों का वजन 60 किलोग्राम है। यह खिलौने पूर्णतः शुद्ध धातु के बने हैं। नेवसा में एक बच्चे के कंकाल के गले में ताम्र मनकों का हार पड़ा मिला है। लघुपाषाण उपकरणों में चाल्सीडोनी पत्थर के बने बाण–फलक क्वार्टजाइट पत्थर की छोटी–छोटी गोलियाँ, चाल्सीडोनी पत्थर के ब्लेड, पत्थर के भारी छल्ले, डोलोमाइट पत्थर की पालिसयुक्त कुल्हाड़ी, अनाज पीसने के सिल–बट्टा इत्यादि जोर्वे संस्कृति के पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं।[112] जोर्वे संस्कृति के स्तरों से मृण्मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो कि तत्कालीन संस्कृति में मातृपूजा एवं वृषभ पूजा की परिचायक है। मिट्टी, सिलखड़ी ताम्र स्वर्ण के मनके भी उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। दायमाबाद से काफी संख्या में कांसे की वस्तुओं की प्राप्ति हुई है। जिसमें हड़प्पा संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होता है। पश्चिमी महाराष्ट्र में रहने वाले ताम्रपाषाणकालीन लोग गाय, बकरी, सुअर और भैस इत्यादि पशुओं को पालते थे। कुछ अवशेषों के आधार पर पर विद्वानों का मानना है, कि ये लोग घोड़े

Scanned by CamScanner

से भी परिचित थे, ऊट के अवशेष भी मिले है।[113] इस संस्कृति के लोग जंगली पशुओं का शिकार करते थे। कृषि कार्य में जोर्वे संस्कृति के लोग जौ, गेहूँ, मसूर, मटर, उड़द, मूँग फसलों को उगाते थे। नेवासा में पटसन का साक्ष्य मिला है।[114]

जोर्वे संस्कृति के लोग एक स्थान पर स्थायी रूप से निवास करते थे। इस संस्कृति के लोगों का निवास मिट्टी या अप्रयुक्ता धरती पर था। इन्होंने घने जंगलों को साफ कर अपने झोपड़े बनाये जो गोल, आयताकार और वर्गाकार होते थे। नेवासा में घर का सामान्य आकार 3×7 फीट था।[115] झोपड़ों में बडे और छोटे संग्राहक घड़ों के अतिरिक्त दैनिक उपयोग की वस्तुओं चूल्हा और अनाज पीसने के सिले–बट्टे प्राप्त हुए है। [116]

मकानों का निर्माण बास–बल्लियों का ढांचा बनाकर उसे मिट्टी से छाप दिया जाता था। छत सपाट या ढालू होती थी ,वह बाँस की चटाई या सूखी पत्तियों, घास–पूस की बनी होती थी, जिस पर चूने का प्लास्टर किया जाता था।[117] कुछ मकानों के बीच आँगन के भी साक्ष्य मिले हैं।[118] उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों से ज्ञात होता है, कि ग्रामों के केन्द्र भाग में प्रमुख, कुलीन व प्रभावशाली लोग निवास करते थे।[119]

जोर्वे संस्कृति में नेवासा, दायमाबाद, कौठे, चन्दोली, इनामगाँव, रेकवाड़ा, तुलजापुरगढ़ी से बच्चों के कंकाल मिले है। प्रकाश, सावलदा, बहाल, सोनगांव, जोर्वे तथा नासिक के सीमित उत्खनन में अभी तक मानव कंकाल नहीं मिले हैं। मृत शरीर को मकानों के फर्श के नीचे दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। वयस्क लोगों को कब्रों में दफनाया जाता था। कब्रों में सिर प्रायः उत्तर दिशा की ओर व पैर दक्षिण दिशा की ओर मिले है। मृतकों के साथ अन्तेष्टि सामग्री के रूप में मिट्टी के बर्तन तथा आभूषण मिले है।[120] बच्चों को चौड़े मुँह बाले घड़ों में दफनाया जाता था। इस कार्य में लाल अथवा धूसर रंग के बर्तन प्रयोग किये जाते थे। बच्चे को दफनाने के लिए दो घड़ों का प्रयोग किया जाता था। घड़ों के मुँह से मुँह आपस में मिलाकर गड्ढे में लिटाकर दफना दिये जाते थे। बच्चों का सिर उत्तर को तथा पैर दक्षिण में दफनाये जाते थे। अन्तेष्टि कलशों के साथ कटोरे तथा टोंटीदार बर्तन , मनके, ताँबे या कार्नेलियन के हार भी गड्ढों में दफनाये हुए मिले हैं। [121]जोर्वे संस्कृति से सम्बन्धित चन्दोली, सानेगांव, नेवासा तथा इनामगांव से प्राप्त पुरावशेषों की रेडियों कार्बन तिथियाँ उपलब्ध हैं। जिनके आधार पर इस संस्कृति का समय 1600 ई.पू. से 1000 ई. पू. के बीच निर्धारित किया गया है। प्रो.

Scanned by CamScanner

एच.डी. सांकलिया और डॉ. एल. के धवलीकर इनामगांव से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर जोर्वे संस्कृति का अन्तिम समय 700 ई. पू. में रखने के पक्ष में है। स्पष्टीकरण के आधार पर जोर्वे संस्कृति मालवा संस्कृति के बाद की है। प्रकाश, दायमाबाद तथा इनामगांव में जोर्वे संस्कृति, मालवा संस्कृति के ऊपरी स्तरों में मिलीं हैं। जबकि चन्दोली, सोनेगांव तथा बहाल में मालवा संस्कृति नीचे के स्तरों से प्राप्त हुई हैं। नावदाटोली में जोर्वे मृद्भाण्ड परम्परा मालवा संस्कृति के तीसरे चरण में मिलती है। उक्त साक्ष्यों से स्पष्ट है, कि जोर्वे संस्कृति,मालवा संस्कृति के बाद की है।

जोर्वे संस्कृति के निर्माण में दो विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण दिखाई देता हैं। जोर्वे की विशिष्ट मृद्भाण्ड परम्परा मालवा पात्र परम्परा से अनुप्रमाणित प्रतीत होती है। मालवा मृद्भाण्ड़ों की तरह जोर्वे मृद्भाण्ड परम्परा में लाल रंग के ऊपर काले रंग से चित्रण दोनों संस्कृतियों में समान है। यह बात कुछ पात्रों के सम्बन्ध में कहीं जा सकती है। दूसरी ओर मालवा तथा जोर्वे संस्कृतियों की विशिष्ट पात्र–परम्परा एक दूसरे से भिन्न है। प्रो. एच.डी. सांकलिया ने पश्चिमी ईरान के साथ जोर्वे संस्कृति के सम्बन्धों की ओर संकेत किया है।

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता

ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता कौन थे ? भील और मुण्डा जाति के लोग जो आर्य भाषा बोलने वाले लोगों के द्वारा जंगल की ओर खदेड़ दिये गये थे। राजपूताना मध्यभारत और दक्षिण के ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता रहे होंगे । पुराणों और अन्य साहित्य में भी भील, निषाद, कुनिन्द (मुणिन्द) आदि का उल्लेख मिलता है। [122] मालवा संस्कृति के निर्माताओं के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मत दिये है। प्रो. एच. डी. सांकलिया महोदय ने इन पात्रों की समानता ईरान के सियाल्क, गियान एव हिसार आदि से प्राप्त पात्रों से की है, परन्तु इस संस्कृति का आगमन पश्चिम एशिया से मान पाना इसलिए कठिन है, कि क्योंकि पश्चिम एशिया से आने वाले संभावित मार्ग पर स्थित स्थलों से इस संस्कृति के अवशेष प्राप्त नहीं हुए है। इस संस्कृति में क्षेत्रगत विशेषातायें अधिक परिलक्षित होती है। अतः भारतीय भू–भाग में ही इसका उद्भव राजस्थान पश्चिमी उ.प्र., मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के किसी विशेष क्षेत्र से ही होता है और इस संस्कृति का विस्तार भी सिर्फ भारतीय भू–भाग से ही प्राप्त होता है। [123]

Scanned by CamScanner

प्रो. साकलियां का मत है, कि मध्यभारत (एरण और महेश्वर) के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोग आर्य थे, किन्तु अन्य विद्वानों का कथन है, कि आर्य यदि मध्यभारत आये तो मार्ग में कुछ अवशेष मिलते, किन्तु उनके अवशेष प्राप्त नहीं हुए है, अतः ये आर्य नही हो सकते।[124]

प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि नर्मदा घाटी की इस चित्रित मृद्भाण्डों वाली संस्कृति के निवासी उत्तर–ईरान कांस्ययुगीन संस्कृति के लोगों से प्रभावित थे, ये घोड़े से भी परिचित थे। टोंटीदार बर्तन इस ताम्रपाषाण संस्कृति की प्रमुख विशेषता हैं, ईरान की कांस्ययुगीन संस्कृति में टोंटीदार बर्तन प्राप्त हुए हैं, अतः कहा जा सकता है, कि निश्चित रूप से इस संस्कृति का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में ईरान से था।कुछ विद्वानों का मत है, कि एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के निर्माता हड़प्पा संस्कृति के लोग रहे हैं, क्योंकि हड़प्पा संस्कृति में सिन्धु व उसकी सहायक नदियों की बाढ़, बाह्य आक्रमणों से परेशान लोग मध्यभारत की ओर भागे और उन्होने यहाँ हड़प्पा पुरास्थलों की भाँति सुरक्षा प्राचीर बनाकर सुरक्षित आवास बनाया । इसकी पुष्टि एरण से प्राप्त मिट्टी की सुरक्षा–प्राचीर व खाई से होती है। एरण के उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी, कूबड़दार वृषभ की मृण्मूर्तियाँ, सोने के पत्तर, मनके, मनोंरजन की वस्तुएं इत्यादि पुरावशेषों की समानता हड़प्पा संस्कृति के पुरावशेषों से होती है। उक्त प्रमाणों. के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में अवश्य ही हड़प्पा संस्कृति के लोगों से था। वास्तव में एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के निर्माता मध्य–भारत में पूर्व से रह रहे द्रविण जाति के लोग ही थे। सिंधु घाटी सभ्यता से इनका संपर्क अवश्य था, किन्तु यह नहीं कहा जा सकता, कि हड़प्पा सभ्यता के लोग एरण की संस्कृति के निर्माता थे । हाँ इतना जरूर है, कि कुछ लोग बाह्य आक्रमणों व बाढ़ इत्यादि से परेशान होकर एरण में पहले निवास कर रहे लोगों के साथ आकर रहने लगे और उन्होंने एरण में हड़प्पा की भाँति सुरक्षा प्राचीर व खाई बनवाई और मृदभाण्डों पर ग्रेफिटी व अन्य पुरावशेष हड़प्पा सभ्यता की भाँति यहाँ प्रयोग किये ।

सुरक्षा प्राचीर (सुरक्षा व्यवस्था)

लगभग चार हजार वर्ष पहले एरण पर ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों का निवास स्थापित हो गया था। लोग पाषाण उपकरणों के साथ–साथ तांबे की वस्तुओं का भी

Scanned by CamScanner

उपयोग करते थे। बीना नदी द्वारा तीन ओर से (उत्तर–पूर्व पश्चिम) सुरक्षित अर्द्ध चन्द्राकार भू–खण्ड पर ही उनका निवास केन्द्रित था। (मानचित्र क्रमांक–1)कुछ समय पश्चात लगभग 1750 ई.पू. के आस–पास उन्होने चौथी ओर दक्षिण दिशा में मिट्टी की एक विशाल सुरक्षा दीवार तथा खाई का निर्माण किया। यह सुरक्षा दीवार व खाई उत्खनन से प्रकाश में आई। इस दीवार की वर्तमान ऊँचाई अधिकतम 6.41 मीटर तथा चौड़ाई 30 मीटर तथा लम्बाई लगभग एक कि.मी. है। सुरक्षा दीवार के चारों ओर खाई थी । दीवाल तथा खाई के मध्य 16.47 मीटर का फासला मिला है।(चित्र संख्या–6) यह सुरक्षा–दीवार उस काल में एरण नगर की विशिष्ट स्थिति तथा वहाँ के निवासियों की सजगता की परिचायक हैं। इस सुरक्षा दीवार में दो प्रवेश द्वार थे। एक द्वार दक्षिण पूर्व में और दूसरा दक्षिण–पश्चिम में आज भी एरण ग्राम में प्रवेश इन्ही दोनों प्राचीन द्वार स्थलों से सम्भव है। दक्षिण–पूर्वी प्रवेश द्वार स्थल पर ही शताब्दियों के बाद दांगी राजाओं ने जो प्रवेश द्वारा निर्मित कराया, वह आज भी दृष्टव्य है। इस द्वार का प्रयोग ग्रामवासी नदी तट पर जाने के लिए करते है। यह ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा प्राचीर बाह्य आक्रमणों व नदी की बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करती थी।[125] सुरक्षा–प्राचीर के ठीक दक्षिण दिशा में एक परिखा या खाई के अवशेष मिले है इसकी चौड़ाई 36.40 मीटर तथा गहराई 5.49 मी. ज्ञात हुई है। यह खाई भी बस्ती के लिए अतिरिक्त रक्षा पंक्ती की तरह कार्य करती है।[126] सम्भवतः बीना नदी की बाढ़ का पानी निकालने के उद्देश्य से भी इसका निर्माण किया गया था।कालान्तर में यह खाई काली व पीली मिट्टी व कूड़ा–करकट से भर गयी। प्रतीत होता है, कि खाई का भरना ताम्रपाषाणकाल से ही प्रारम्भ हो गया था। दीवाल, कड़ी, चिकनी, काली व पीली मिट्टी के मिश्रण से बनाई गयी थी। इस सुरक्षा–प्राचीर में ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड खण्ड भी मिले हैं। जिनसे इस की सुरक्षा दीवाल की तिथिक्रम में सहायता मिली है। एरण नामक पुरास्थल पर ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा–प्राचीर व खाई तथा कालान्तर में बनायी गयी दांगी राजाओं द्वारा पत्थर की सुरक्षा दीवाल आज भी दृष्टव्य होती है।

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों की सामान्य जानकारी

ताम्रपाषाणकालीन निवासियों द्वारा निर्मित मृद्भाण्ड जो मजबूती और अच्छी तरह मिट्टी को गूथकर बनाये गये एरण से प्राप्त हुए हैं। इस काल से श्रृंगार प्रसाधन की सामग्री, हाथी दांत के लटकन, धातु की अंजन–शलाकाएं, ताम्र–मुद्रिका, शंख, ताँबा,

Scanned by CamScanner

पत्थर और पकी हुई मिट्टी की चूड़ियाँ, कर्ण, आभूषण, विविध सामाग्री के मनके सुगन्धित तेल और चूर्ण रखने के लिए निर्मित मुलायम पत्थर के पात्रों व अस्त्र–शस्त्रों के अलावा ताँबे की कुल्हाड़ियाँ और बाणफलक भी इस काल के निवासी प्रयोंग करते थे, वे स्वर्ण, रजत, ताम्र व कांसे से परिचित थे। भली–भांति काटकर बनाया गया, स्वर्ण पत्तर एरण उत्खनन से प्राप्त हुआ है, विद्वानों के अनुसार वह विनिमय का माध्यम था। माप–तौल की प्रणाली इस समय प्रचलित थी । जास्पर पत्थर के बने बाँट उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। सिलबट्टों पर कूटा व पीसा गया अनाज वाकायदा (व्यवस्थित) चूल्हों पर पकाया जाता था। खुदाई में दोमुखी जुड़वा चूल्हे मिले हैं। मानव, पशु, पक्षी इत्यादि की मृण्मूर्तियाँ उत्खनन से प्राप्त हुई हैं। एरण के तत्कालीन निवासी छोटे तीक्ष्ण, पाषाण उपकरणों को लकड़ी की मूठ में फंसाकर (ब्लेड़, चाकू, छेदक) प्रयोग करते थे। यह उपकरण उत्खनन से प्राप्त हुए है। हरिण के सींग व पाषाण के गोल छल्ले भी उत्खनन से प्राप्त हुए है। इनका प्रयोग लकड़ी में फंसाकर किया जाता था। गोफन में रखकर फेंकने वाले गोल पत्थर और पक़ी हुई मिट्टी की गोलियाँ उत्खनन में प्राप्त हुई हैं। शंख, पकी मिट्टी, आगेट, चाल्सीडोनी तथा क्वार्ट्जाइट जैसे पत्थरों की अनेक उपयोंगी वस्तुएँ बनायी जाती थी । बच्चों को खेलने के लिए मिट्टी के बर्तनों के मण्डलक, पकी मिट्टी की खिलौना गाडियाँ, छोटी गोलियाँ एरण उत्खनन से प्राप्त होने वाले अन्य पुरावशेष है।[128] उत्खनन में गोल चूल्हा भी मिला है, जिसके किनारे उठे हुए है, तथा मकान की फर्श पक्की बनाई गयी है।[129] उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन छह फर्शे मिली, ये फर्श कंकड मिश्रित गीली मिट्टी से बने है।[130] कभी–कभी मिट्टी के जले हुए टुकड़े भी फर्श बनाने में प्रयोग किये जाते थे। फर्श में कोयले का प्रयोग फर्श को सीलन रहित करने के लिए किया जाता था। एरण से प्राप्त फर्श की मोटाई 10 से.मी. से 20 से.मी. तक पाई गयीं है।[131] उत्खनन से शंख, हाथी दांत, ताँबा, पत्थर, पकी मिट्टी और अस्थि पर निर्मित दैनिक उपयोगी बस्तुएँ, मनोरंजन की सामग्री, शतरंज के मोहरे और पाँसा, पत्थर के उपकरण, आभूषण और अस्त्र–शस्त्र अन्य पुरावशेष है। उत्खनन से शंख, स्टियेटाइट, जास्पर, अगेट, कार्नेलियन के मनके प्राप्त हुएं है तथा जास्पर के सिलबट्टे भी प्राप्त हुए हैं।[132] एरण में नदी तट से ताम्रपाषाणकालीन पूर्ण कुल्हाड़ी प्राप्त हुई, यह व्यास में 5–8 से. मी. है।[133] एरण से ताम्रपाषाणकालीन अन्य चूल्हे भी मिले हैं।[134] चूल्हों की दीवालों मे राख तथा जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।[135]

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 पाण्डेय, जयनारायण : पुरातत्त्व विमर्श, इलाहाबाद, 2002, पृ. 466

2 शर्मा, ए. एन : भारतीय मानव विज्ञान, इलाहाबाद, 1999, पृ. 75

3 झा, द्विजेन्द्र नारायण, श्रीमाली, कृष्णमोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2002, पृ. 47

4 अंतोनोबा, को. अ., अनुवाद नरेश वेदी : भारत का इतिहास, प्रगति प्रकाशन, सोवियत संघ रूस (मास्को),1973, पृ. 40–41

5 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 446

6 वही :

7 शर्मा, रामशरण : प्राचीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1996, पृ. 51

8 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 447

9 श्रोत्रिय, आलोक : ''मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणकालीन स्थल'',मालवांचल में कूर्मांचल, श्री कावेरी रिसर्च इन्स्टीटयूट, उज्जैन, 2001, पृ. 374

10 इण्डियन आर्क्योलाजी ए,रिव्यू ,1967–68, पृ. 24–25

11 वाकणकर, वी. एस : द विक्रम जर्नल ऑफ विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन, कायथा एक्सकेवेशन, 1967,पृ.46

12 वाकणकर, वी. एस : मालवा का इतिहास, पृ. 66

13 वाकणकर, वी. एस : द विक्रम, पूर्वोक्त, पृ. 34

14 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 448, 449

15 वाकणकर, वी. एस. : पूर्वोक्त, पृ. 113

16 वाकणकर, वी. एस : द विक्रम : पूर्वोक्त, पृ. 44–45

17 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 451

18 मिश्र, बी. एन : प्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ दी बेड़च बेसीन 1967 हूजा, आर. डी. आहाड़ कल्चर एण्ड बियोन्ड 1688

19 सांकलिया,एच.डी.,व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट आहाड़ (तांबवती) डेकन कालेज, पुणे,1966, पृ. 11

20 इंडियन आर्क्योलॉजीकल ए, रिव्यू,1959–1960, पृ. 41, 46

21 श्रोत्रिय, आलोक : ''ताम्रपाषाणयुगीन बालाथल : एक विवेचन'', शोध समवेत अंक – 5, उज्जैन, जुलाई–सितम्बर , 1996, पृ. 27

22 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 52

23 शर्मा, रामशरण : पूर्वोक्त, पृ. 45

24 जैन. के. सी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 1979 पृ. 158

Scanned by CamScanner

25 झा. द्विजेन्द्र नारायण, श्रीमाली कृष्णमोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, 2002, दिल्ली, 2002, पृ. 100

26 वही, : पृ. 100–101

27 "एक्सकेवेशन्स एट बालाथल", : मेन एण्ड एन्वायरमेण्ट, जर्नल ऑफ इंडियन सोसायटी फार प्रीहिस्टोरिक एण्ड क्वार्टर्नटी स्टडीज, अहमदाबाद, 1995, पृ. 62

28 पाण्डेय, ललित खरकवाल जीवन सिंह : "बालाथल उत्खनन प्रारम्भिक रपट", शोध पत्रिका साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर 1994 अंक – 1 पृ. 68

29 एक्सकेवेशन्स एट बालाथल : पूर्वोक्त, पृ. 69

30 वाकणकर, वी. एस : कायथा उत्खनन विक्रम स्पशेल, 1967, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

31 सांकलिया,एच.डी., व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 11

32 इंडियन आर्क्योलॉजीकल ए–रिव्यू,1959–60, पृ. 41–46

33 एक्सकेवेशन एट बालाथल : पूर्वोक्त, पृ. 62

34 वही : पृ. 65

35 वही : पृ. 70

36 वही : पृ. 70

37 श्रोत्रिय, आलोक : शोध समवेत : पूर्वोक्त, पृ. 29–30

38 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 453

39 वही, : पृ. 455–56

40 वही : पृ. 459

41 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : भारतीय पुरातत्त्व, म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1996, पृ. 125

42 जैन, के.सी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री ऑफ इंडिया, दिल्ली, 1979, पृ. 163

43 श्रोत्रिय, आलोक : महेश्वर–नावदाटोली पुरातत्त्व के क्रियात्मक प्रशिक्षण का प्रतिवेदन (अप्रकाशित,लघु शोध प्रबंध) विक्रम विश्वविद्यालय , उज्जैन, 1995, पृ. 10

44 शर्मा, राजकुमार : म.प्र. के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रन्थ, म.प्र. हिन्दी अकादमी, भोपाल, 1974, पृ. 637

45 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 125

46 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 463

47 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 638

Scanned by CamScanner

48 श्रोत्रिय, आलोक : "मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणयुगीन स्थल", पूर्वोक्त, पृ. 380

49 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : चाल्कोलिथिक नावदाटोली, पुणे, 1971, पृ. 79

50 पाण्डेय, जयनारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 466

51 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 129

52 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 467

53 वाकणकर, बी. एस. : पूर्वोक्त, पृ. 95

54 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 127

55 जैन, कमलापति : पुरातत्त्व का इतिहास (प्रथम भाग),सुषमा प्रेस सतना,1971,पृ. 41

56 सांकलिया, एच.डी. : प्री हिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, बोम्बे, 1962, पृ. 200–201

57 शर्मा, ए.एन. : पूर्वोक्त, पृ. 77

58 वाजपेयी, के.डी. : सागर थ्रू दि एजेज, सागर, 1964, पृ. 26–30

59 दुबे, नागेश : एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 34

60 वाजपेयी, के.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 26

61 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 13

62 शांडिल्य, आलोक : एरण उत्खनन 1986 द्वारा ज्ञात प्रथम काल का अध्ययन (अप्रकाशित, लघु शोध प्रबंध,) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1987, पृ. 21–22

63 शर्मा, राजकुमार : "द चाल्कोलिथिक सेटलमेण्ट आफ मध्यप्रदेश", बुलेटिन ऑफ ऐंसियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ सागर, 1968, पृ. 55

64 सिंह, उदयवीर : "एरण ए चाल्कोलिथिक सेटलमेंट" बुलेटिन ऑफ ऐशियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ सागर,1968, पृ. 36

65 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 15

66 सिंह. उदयवीर : "एरण ए चाल्कोलिथिक सेट्टमेण्ट", पूर्वोक्त, पृ. 32

67 झा,. विवेकदत्त : एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक सांस्कृतिक केन्द्र : ईसुरी अंक–4, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सन् 1986–87, ईसुरी (अंक–4) पृ. 10

68 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 629

Scanned by CamScanner

69 वाकणकर, वी. एस. : पूर्वोक्त, पृ. 99

70 शर्मा, राजकुमार : ''चाल्कोथिक सेट्टलमेंन्ट ऑफ म.प्र.'', पूर्वोक्त, पृ. 53

71 चक्रवर्ती, एम.डी., वाकणकर, वी. एस. : दंगबाड़ा एक्सकेवेशन्स, राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय, भोपाल, 1989, पृ. 1

72 वही : पृ. 35

73 वही : पृ. 36

74 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 614

75 एच. बी. त्रिवेदी : ''स्टडी ऑफ आवरा पाटरी विथ रिफरेन्स टू प्रोटो–हिस्टोरिक क्रोनोलॉजी ऑफ मालवा'' इण्डियन आर्क्योलॉजी न्यू प्रास्पेटिव (संपादक – आर. के. शर्मा), आगम कला प्रकाशन दिल्ली, 1982, पृ. 246, 247

76 जर्नल ऑफ म.प्र. इतिहास परिषद, नं. 1,पृ. 25

77 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए–रिव्यू 1954–55 पृ. 14, 1955–56 पृ. 11

78 एस. बी. त्रिवेदी : पूर्वोक्त, पृ. 248

79 अली,रहमान,एवं अशोक त्रिवेदी : ''चाल्कोलिथिक महिदपुर'' प्रोसीडिग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, कलकत्ता, 1990 पृ. 796

80 अली, रहमान, : ''चाल्कोलिथिक महिदपुर'' एन एस्सेसमेण्ट, शोध समवेत (जर्नल ऑफ श्री कावेरी शोध संस्थान, उज्जैन) नं.(1) 3–4 जुलाई–दिसम्बर पृ. 33

81 वही : पृ. 36

82 वही : पृ. 34–35

83 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 636–637

84 त्रिवेदी,एच. बी. : पूर्वोक्त, पृ. 248

85 गुप्त, कौशलेन्द्र : उज्जैन जिले के ताम्राश्मयुगीन स्थल,(अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध)विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन पृ. 18

86 खरे, एम..डी. : ललितकला न. 1 , पृ. 21–27

87 जर्नल ऑफ बोम्बे ऐशियाटिक सोसायटी, भाग 23, पृ. 135–146

88 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 632

89 वाजपेयी, के.डी. : म.प्र. का पुरातत्त्व, भोपाल, 1970, पृ. 15

90 खरे, एम.डी. : चाल्कोलिथिक बेसनगर (विदिशा) इण्डियन आर्क्योलॉजी न्यू पर्सपेक्टिव (सम्पादक आर. के. शर्मा), दिल्ली, 1982, पृ. 223

Scanned by CamScanner

91 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 643

92 वही : पृ. 649

93 वाजपेयी, के.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 21

94 श्रोत्रिय, आलोक : "मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणयुगीन स्थल", पूर्वोक्त, पृ. 390

95 वही : पृ. 391

96 वही : पृ. 391

97 वही :

98 वाकणकर, बी. एस. : पूर्वोक्त, पृ. 118, 119

99 पाण्डेय, जयनारायण : पुरातत्त्व विमर्श, 2002, पृ. 471

100 झा, द्विजेन्द्र नारायण व श्रीमाली, कृष्णमोहन : पूर्वोक्त, पृ. 104

101 सांकलिया, एच.डी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान, 1962, बोम्बे, पृ. 202

102 शर्मा, रामशरण : पूर्वोक्त, पृ. 44–45

103 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 472

104 शर्मा, रामशरण : पूर्वोक्त, पृ. 45

105 जैन, के.सी. : पूर्वोक्त, पृ. 170

106 वही :

107 सांकलिया, एच.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 2004

108 वही :

109 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : भारतीय पुरातत्त्व, म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1989, पृ. 129

110 शर्मा, रामशरण : पूर्वोक्त, पृ. 45

111 जैन, कमलापति : पूर्वोक्त, 1971, पृ. 15

112 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 476–477

113 सांकलिया, एच.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 214

114 वही : पृ. 209

Scanned by CamScanner

115 झा, द्विजेन्द्र नारायण
श्रीमाली, कृष्ण मोहन : पूर्वोक्त, पृ. 105

116 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ 478

117 जैन, कमलापति : पूर्वोक्त, पृ. 14–15

118 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 478

119 शर्मा, ए.एन. : पूर्वोक्त, पृ. 77

120 जैन, कमलापति : पूर्वोक्त, पृ. 16–17

121 सांकलिया, एच.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 221

122 जैन, कमलापति : पूर्वोक्त, पृ. 42

123 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 128

124 जैन, कमलापति : पूर्वोक्त, पृ. 42

125 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 14–15

126 झा, विवेकदत्त : ईसुरी, पूर्वोक्त, अंक 4, पृ. 10

127 सिंह, उदयवीर : पूर्वोक्त, पृ. 34

128 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 14–15

129 शर्मा, राजकुमार : म.प्र. के पुरातत्त्व का सन्दर्भ ग्रन्थ पूर्वोक्त, पृ. 621

130 इण्डियन आर्क्योलॉजी,ए–रिव्यू,1969, पृ. 16

131 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1985, पृ. 17

132 इण्डियन आर्क्योलॉजी,ए–रिव्यू,1965, पृ. 12

133 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 16

134 श्रोत्रिय, आलोक : ''मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणयुगीन स्थल'', पूर्वोक्त, पृ. 378

135 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 18

Scanned by CamScanner

अध्याय चतुर्थ

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों का अध्ययन

Scanned by CamScanner

ताम्रपाषाणकाल में मानव जीवन से मृद्भाण्डों का अविछिन्न सम्बन्ध रहा है। एरण उत्खनन में इस काल के स्तरों से मृद्भाण्ड अधिक मात्रा में प्राप्त हुए हैं । मृद्भाण्ड को पुरातत्त्व की वर्णमाला कहा जाता है । आद्य ऐतिहासिक संस्कृतियों के अध्ययन में मृद्भाण्डों का योगदान सर्वोपरि है । मृद्भाण्डों के सूक्ष्म अध्ययन और विश्लेषण द्वारा किसी काल विशेष की जलवायु, पशु, पक्षी, वनस्पति, आर्थिक स्थिति और रीति–रिवाजों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता हैं। दीर्घकाल तक मिट्टी में दबे रहने के बाद भी लवण से अप्रभावित होने के फलस्वरूप मृद्भाण्डों पर लगाये गये लेप, रंग और चित्रण नष्ट नहीं होते। मृद्भाण्डों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों के पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञान भी होता हैं । मृद्भाण्डों का प्रयोग खाना पकाने, खाद्य सामग्री एकत्र करने पेय पदार्थो को संग्रहीत करने व खाने–पीने के रूप में किया जाता था। बड़े मृद्भाण्डों की अपेक्षा रसोई घर में प्रयुक्त होने वाले मृद्भाण्ड अधिक आकर्षक व सुन्दर हैं ।

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड उद्योग

एरण का ताम्रपाषाणकालीन मृतिका–शिल्प उद्योग परवर्तीकालीन मृद्भाण्ड उद्योगों से सर्वथा भिन्न है । काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड, इस काल का प्रमुख बर्तन है[1]। इसके अतिरिक्त सफेद रंग से चित्रित काले और लाल मृद्भाण्ड[2], धूसर मृद्भाण्ड[3] तथा भद्दे मृद्भाण्ड भी बड़ी मात्रा में पाये गये हैं । कुछ मृद्भाण्ड ऐसे भी हैं, जो बहुत कम मिले हैं । उनमें छेद्रित अलंकरण वाले मृद्भाण्ड, सफेद लेपयुक्त बर्तन, जिन पर काले या चाकलेटी रंग से चित्रण है, गहरे चाकलेटी लेपयुक्त बर्तन जिन पर काले या गहरे लाल रंग से चित्रण किया गया है, प्रमुखतः से मिले हैं।[4]

मृद्भाण्डों की अधिकाशतः ऊपरी सतहों पर चित्रकारी की गई है । ये सभी प्रकार के मृद्भाण्ड चाक पर बनाये गये है, केवल भद्दे मृद्भाण्ड हाथ से बनाये गये है। मृद्भाण्डों के सभी वर्गों में लेप के रंग और बर्तनों की बनावट में विभिन्नता है। जो मिट्टी के गूथने व बर्तन पकाने की विधि में असामनता के द्योतक है । पात्रों में उल्लेखनीय प्याले कटोरे तथा तश्तरियाँ व टोंटीदार कटोरे प्रमुख हैं।[5] उक्त बर्तनों को भली–भांति अग्नि में एक

Scanned by CamScanner

निश्चित तापक्रम पर पकाया गया है । इन मृद्भाण्डों को पीली मिट्टी में अभ्रक, बेल का गूदा (रस) और पेड़ों से प्राप्त गोंद को मिश्रित कर बनाया जाता था। इसी कारण इस काल के मृद्भाण्डों को जमीन पर गिराने से धातु जैसी ठनठनाहट की आवाज (ध्वनि) निकलती है । यह भी इन मृद्भाण्डों की विशिष्ट विशेषता व पहचान है। अध्ययन की सुविधा से हम इस काल के मृद्भाण्डों को निम्न भागों में विभाजित कर सकते हैं :–

(1) कायथा मृद्भाण्ड

(2) सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड

(3) काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

(4) धूसर मृद्भाण्ड

(5) अन्य मृद्भाण्ड

(1) कायथा मृद्भाण्ड

सन् 1986 ई. में सम्पन्न हुए उत्खनन में मध्यप्रदेश में पहली बार एरण से नवपाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष मिले है।[6] इसके साथ ही कायथा संस्कृति के स्वरूप पर भी यथेष्ट प्रकाश पड़ा । एरण उत्खनन खदान क्र. 1 में अप्रयुक्ता धरती (जमीन) के ऊपर कायथा संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं । खदान क्र. 3 की निम्नतम सतह से भी नवपाषाण संस्कृति के अवशेषों के साथ कायथा मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। कायथा मृद्भाण्ड के कुछ टुकड़े गढ़ी क्षेत्र की खदान क्र. 2 की ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा प्राचीर से भी प्राप्त हुए हैं ।(चित्र संख्या –7) इस संस्कृति के प्रमुख मृद्भाण्ड लाल रंग के है, जिनकी बाहरी सतह पर गहरी, भूरी या काली स्लिप है । कुछ मृद्भाण्डों की भूरी सतह पर काले रंग से रेखाओं का चित्रण किया गया है । कायथा (काम्बड वेयर) का एक टुकड़ा खदान क्र. 1 से मिला है। काले और लाल, लाल रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड, धूसर तथा मोटे काले मृद्भाण्ड भी इस काल में निर्मित किये गये थे।[7] कुछ मृद्भाण्डों पर ग्रेफिटी तथा कुछ पर मछली की रेखाओं (स्केल्स) का चित्रण हैं।[8] जो इस संस्कृति का हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। डॉ. वाकणकर महोदय ने इस संस्कृति को ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति की पूर्ववर्ती संस्कृति माना है। पूर्ववर्ती उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों की प्रारम्भिक तिथि कार्बन 14 तिथि निर्धारण विधि द्वारा 2150

Scanned by CamScanner

ई. पू. निश्चित की गई है । इस प्रकार एरण उत्खनन से प्राप्त नवपाषाण व कायथा संस्कृति का काल 2150 ई. पू. से अधिक पहले का है ।

(2) सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड

इस मृद्भाण्ड परम्परा का प्रयोग सर्वत्र ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों में किया गया है। इस प्रकार के मृद्भाण्ड आहाड़ (राजस्थान) के पुरास्थल पर काफी संख्या में मिले हैं।[9] इसलिए इसे आहाड़ मृद्भाण्ड भी कहा गया है । इन बर्तनों को भट्टी में औधें रखकर पकाया गया है । सभी ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में इन्हें बनाने की विधि एक सी है, फिर भी बर्तनों के आकारों में भिन्नता है। बर्तनों को औधे रखकर पकाने के कारण बर्तनों के अन्दर की सतह काली एवं ऊपर की लाल रहती है, इस मृद्भाण्ड परम्परा में अधिकाशतः तश्तरियाँ तथा कटोरे प्राप्त हुए हैं, जो भोजन पकाने, खाने व संग्रह करने के लिए प्रयुक्त होते थे । चौड़े मुह वाले बर्तन भी मिले है, जिन के अन्दर काली सतह पर सफेद रंग से चित्रण किया गया है ।[10] यद्यपि ये संख्या में कम हैं। एरण में हुए उत्खनन में कई थालियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो साधर थालियों एवं तश्तरियों का ही रूप प्रतीत होती है । प्रारम्भिक काल में इन बर्तनों पर काफी कम चित्रकारी की गई है, किन्तु परिपक्व व उत्तर ताम्रपाषाणयुग में इन बर्तनों पर अधिक मात्रा में चित्रकारी की गई हैं। अधिकांशतः इन बर्तनों की भीतरी काली सतह पर सफेद रंग से चित्रण किया गया है ।[11] ये बर्तन चाक पर बनाये गये और अच्छी तरह एक निश्चित तापक्रम पर पकाये गये हैं।(चित्र संख्या – 8तथा 9) कुछ बर्तनों की ऊपरी लाल सतह पर भी सफेद रंग से चित्रण किया गया है किन्तु ऐसे मृद्भाण्ड अल्प मात्रा में प्राप्त हुए हैं । साधार तश्तरी तथा टोंटीदार कटोरे इस काल की उल्लेखनीय विशेषता हैं।[12] ये दोनों विशिष्ट बर्तन काले–और–लाल मृद्भाण्डों में ही अधिक मिले हैं। इन मृद्भाण्डों में छोटे कटोरे तथा कुछ बड़े बर्तन भी प्राप्त हुए हैं । यह मृद्भाण्ड, आवरा[13], नागदा[14], कायथा[15], मनोटी[16] नावदाटोली आदि स्थलों से भी प्राप्त हुए हैं । इस उद्योग के मृद्भाण्ड एरण के ही सहवर्ती अन्य मृद्भाण्ड उद्योगों के बर्तनों से साम्य नही रखते है।[18] चित्रण अभिप्राय भी अन्य उद्योगों में प्राप्त नहीं होते। इन मृद्भाण्डों में वृत्ताकार, हीरा, हरिण इत्यादि के चित्रण किये गये है।

Scanned by CamScanner

(3) काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन सतहों से इस मृद्भाण्ड की प्राप्ति सबसे अधिक हुई है। इससे ज्ञात होता है, कि काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड इस काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मृद्भाण्ड उद्योग था।[19] ऐसे मृद्भाण्ड मालवा के सभी ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से प्राप्त हुए हैं । इसीलिए इन्हे मालवा मृद्भाण्ड नाम से भी जाना जाता है । यह लाल मृद्भाण्ड ताम्रपाषाणकाल की प्रारम्भिक बस्तियों से लेकर विकसित ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से प्राप्त हुए है, इससे प्रमाणित होता है, कि इस मृद्भाण्ड उद्योग का उपयोग प्रारम्भिक काल से प्रारम्भ हुआ और अन्त तक चला यह मृद्पात्र कायथा[20] नावदाटोली,[21] आवरा,[22] नागदा,[23] इत्यादि ताम्रपाषाणकालीन स्थलों का भी प्रमुख पात्र प्रकार रहा है । इस काल के एरण निवासियों का मुख्य उद्योग लाल मृद्भाण्डों का था।

इस श्रेणी में लाल लेपयुक्त, हल्केलाल लेपयुक्त, हल्के पीले लेपयुक्त तथा फीका पीली सतह के मृद्भाण्ड प्रमुख हैं। पतले मृद्भाण्ड तेज चाक पर निर्मित किये गये है, और मोटे बर्तन धीमें चाक पर बनाये गये हैं। बर्तनों में प्रयुक्त होने वाली मिट्टी पीली रंग की थी, जो बहुत अच्छी तरह गूँथी गई है, बर्तनों को बड़ी सावधानीपूर्वक निश्चित तापक्रम पर पकाया गया है । इसीलिए धातु के बर्तनों जैसी ध्वनि इनमें से उत्पन्न होती है। समय और मौसम के प्रभाव के कारण कुछ बर्तनों की सतह का लेप उड़ गया है, जिससे मिट्टी में मिला हुआ अभ्रक स्पष्ट दिखाई पड़ता है। बर्तनों का अनुभाग (Section) हल्के लाल या नारंगी रंग का है । जो यह संकेत करता है, कि ये बर्तन बहुत अच्छी तरह पकाये गये है ।[24] इस मृद्भाण्ड प्रकार में मुख्य रूप से तश्तरियाँ निर्मित हुई हैं । ठोस पदार्थ रखने वाली तश्तरियाँ हाथ से बनी प्रतीत होती हैं।[25]

बर्तनों की मुख्यतः बाहरी सतह को चित्रकारी द्वारा अलंकृत किया गया है । कुछ बर्तनों की भीतरी सतह भी चित्रित की गई है। यह चित्रकारी भीतर की ओर केवल ऊपरी गोलाई में है। कटोरों व तश्तरियों में बर्तनों के अन्दर मुह की गोलाई में ही नहीं बल्कि उसके नीचे एवं उसका तल भी चित्रित किया गया है । चित्रकारी मुख्य रूप से बर्तनों के बाहरी लाल भाग पर काले रंग से की गई हैं। मृद्भाण्डों की हल्की पीली सतह पर चाकलेटी रंग से चित्रण किया गया है।[26] इन मृद्भाण्डों पर दौड़ते हुए हरिणों की पक्ति

Scanned by CamScanner

तथा हीरों का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता हैं। इस प्रकार के मृद्भाण्डों में बड़े–बड़े घड़े जो पानी व खाद्य सामग्री के संग्रह के उपयोग में आते थे, पानी के लोटे, कटोरे, नांद, तश्तरियाँ इत्यादि प्रमुख है।(चित्र संख्या –10तथा11)

(4) धूसर मृद्भाण्ड

इस काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग भूरे मृद्भाण्ड का है। इसके कुछ टुकड़े हल्के रंग से चित्रित हैं। एरण में यह मोटे तथा पतले दोनों रूपों में मिला है। इस बर्तन के पतले टुकड़े अपेक्षाकृत अच्छी बनावट के हैं। दक्षिण भारत के नवप्रस्तरकालीन भूरे मृद्भाण्ड उद्योग का निर्माण, प्रकार एवं चित्रण की दृष्टि से इस मृद्भाण्ड से कोई साम्य नहीं है परन्तु दूसरी ओर इसके प्रकार एवं चित्रण के आधार पर इसी संस्कृति के एरण से ही प्राप्त लाल मृद्भाड़ से इसका साम्य प्रतीत होता है ।[27] गंगाघाटी के प्रसिद्ध धूसर मृद्भाण्ड से एरण के धूसर मृद्भाण्डों की कोई सामानता नहीं है।[28] धूसर मृद्भाण्ड एरण की ताम्रपाषाण सभ्यता का अनिवार्य अंग प्रतीत होता है । इन मृद्भाण्डों में मर्तवान, कटोरे, चौड़े मुह वाले एवं लम्बी गर्दन वाले मर्तवानों की प्रचुरता है। कुछ बर्तनों की किनारों को सफेद रंग से चित्रित किया गया है तथा कई पात्रों पर किनार चित्रित नही की गई है और अनेक बर्तन बिना चित्रों के मिले है।[29](चित्र संख्या –12तथा13) इस प्रकार के मृद्भाण्ड काले कत्थई और कुछ लाल रंग से चित्रित है। उपर्युक्त बर्तन चाक द्वारा निर्मित किये गये हैं। उदाहरणार्थ हाथ के बने बर्तन बहुत कम है । उक्त मृद्भाण्डों की भिण्ड में मिले धूसर मृद्भाण्डों से कई समानताएं है।[30] उज्जैन व आवरा[31] से प्राप्त इस प्रकार के मृद्भाण्डों के चित्र व अभिप्राय साधारणतः वे ही है, जो, लाल मृद्भाण्डों पर अंकित हैं। इन मृद्भाण्डों पर हल्के लाल या कभी–कभी चाकलेटी रंग के पौधों, पशुओं समान्तर रेखाओं, त्रिकोण, हीरा, हरिण इत्यादि का चित्रण किया गया हैं। सूर्योदय व सूर्यास्त के समान भी चित्रों का चित्रण किया गया हैं।

(5) अन्य मृद्भाण्ड

बाह्य निरूपण एवं बर्तनों को पकाते समय तापक्रम में आये अन्तर, परिवर्तनों के कारण कुछ उप–प्रकार भी मिले है एरण से प्राप्त मृद्भाण्डों के उप–प्रकारों का संक्षेप में वर्णन निम्न प्रकार है :–

Scanned by CamScanner

(1) मोटे तथा भद्दे मृद्भाण्ड (कोर्स रेड वेयर)

इस प्रकार के मृद्भाण्ड ताम्रपाषाण संस्कृति की सभी सँतहों से प्राप्त हुये है। ये मृद्भाण्ड आद्यैतिहासिक काल के प्रारम्भ से लेकर ऐतिहासिकयुग तक के सभी मृद्भाण्ड उद्योगों के साथ प्राप्त हुए हैं। ये मृद्भाण्ड हस्तनिर्मित भद्दे और मजबूत हैं। इनमें मिलाया गया भूसा व बरीक कंकड़ स्पष्ट दिखाई देते है । बर्तनों पर प्रायः लेप नहीं है। कुछ बर्तनों की बाहरी सतह पर चित्रण किया गया है । इस प्रकार के मृद्भाण्डों में बड़े संग्राहक घड़े, नाद ढ़क्कन बड़ी मात्रा में बनाये जाते थे।[32](चित्र संख्या –14)

(2) सफेद लेपयुक्त चित्रित मृद्भाण्ड

यह मृद्भाण्ड एरण उत्खनन में बहुत कम मात्रा में मिला है, प्राप्त छोटे–छोटे मृद्भाण्ड टुकड़ों के आधार पर बर्तनों के आकार को निश्चित करना कठिन हैं, किन्तु इन पर पाया जाने वाला चित्रण ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों से समानता रखता है। मिट्टी को अच्छी तरह गूथकर यह मृद्भाण्ड बनाया गया है । इन मृद्भाण्डों पर काले या चाकलेटी रंग से चित्रण किया गया है।[33]

(3) चाकलेटी लेपयुक्त मृद्भाण्ड

इस प्रकार के मृद्भाण्डों पर काले अथवा कत्थई रंग से चित्रण किया गया है । एरण में इस प्रकार के मृद्भाण्डों के 60 टुकड़े उपलब्ध हुए हैं । इन लाल मृद्भाण्डों की बाहरी सतह पर चाकलेटी रंग से लेप किया गया है । आकार तथा चित्रण काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्डों के समान है ।[34](चित्र संख्या –15)

(4) सफेद रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

एरण उत्खनन मे यह मृद्भाण्ड अल्पमात्रा में प्राप्त हुआ है । इस मृद्भाण्ड प्रकार में ऊपरी लाल सतह पर सफेद रंग से चित्रण के अतिरिक्त सभी विशेषताएं काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड जैसीं हैं।[35]

(5) मोटा भद्दा तथा रेतीला अलंकृत मृद्भाण्ड

यह मृद्भाण्ड प्रायः मोटा बनाया गया है, इस बर्तन की बाहरी सतह प्रायः लेपहीन है और भद्दा लाल रंग स्पष्ट दिखाई देता है। कुछ उदाहरणों में लाल लेप लगाया गया है। इसकी भीतरी सतह चमकदार होती है। बर्तनों का अनुभाग काला और रेतीला है।

Scanned by CamScanner

कुछ बर्तनों की बाहरी सतह गहरे भूरे रंग की है । यह सफेद रंग से चित्रित लाल और काले मृद्भाण्डों से साम्य रखता है । सम्भवत: यह काला और लाल मृद्भाण्ड का ही उप प्रकार रहा है। मृद्भाण्ड के ऊपर डिजायन भी बनाई गयी है।(चित्र संख्या –16)

(6) पतला सुगढ़ तथा कम रेतीला

इस प्रकार के मृद्भाण्ड की दोनों सतहे प्राय: चमकदार हैं। इन मृद्भाण्डों पर मुख्य चित्रण सीधी, आड़ी या खड़ी रेखाओं व पौधों का चित्रण किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है, कि यह मृद्भाण्ड भी सफेद रंग से चित्रित काले एवं लाल मृद्भाण्ड का उप प्रकार रहा होगा।(चित्र संख्या –17)

(7) छेद्रित अलंकरणयुक्त मृद्भाण्ड

इस प्रकार का मृद्भाण्ड एरण उत्खनन के प्रथमकाल के सभी उद्योगों में बड़ी मात्रा में प्राप्त हुआ है।

(8) श्रेष्ठ लाल रंग के मृद्भाण्ड

(1) लेपयुक्त हल्के रंग के मृद्भाण्ड

(2) लेपयुक्त गहरे लाल रंग के मृद्भाण्ड

(3) नारंगी–लाल रंग के मृद्भाण्ड

(4) लेपयुक्त चमकदार, गहरे लाल रंग के मृद्भाण्ड

(5) हल्के भूरे रंग के मृद्भाण्ड (चित्र संख्या –18)

(9) मोटे लाल रंग के मृद्भाण्ड

(1) लेपरहित मृद्भाण्ड

(2) लेपयुक्त मृद्भाण्ड

(3) लेपयुक्त चमकदार, लाल मृद्भाण्ड (चित्र संख्या –19)

(10) काले और लाल मृद्भाण्ड

(1) मोटे, भद्दे तथा खुरदरे मृद्भाण्ड

(2) पतले तथा कम खुरदरे मृद्भाण्ड (चित्र संख्या –20)

Scanned by CamScanner

(11) धूसर मृद्भाण्ड

(1) दोनों सतहों पर धूसर मृद्भाण्ड

(2) बाहरी सतह पर धूसर तथा भीतरी सतह पर हल्के काले रंग के मृद्भाण्ड

(3) बाहरी सतह पर धूसर तथा भीतरी सतह पर हल्के लाल या भूरे रंग के मृद्भाण्ड

(4) लेपयुक्त हल्के सफेद रंग के मृद्भाण्ड (चित्र संख्या –21)

(12) भूरे मृद्भाण्ड

(1) पतले तथा किनारे पर काले रंग से चित्रित मृद्भाण्ड

(2) भूरे व लाल रंग के सुघढ़ मृद्भाण्ड (चित्र संख्या –22)

मृद्भाण्ड चित्रण अभिप्राय

इस काल के मानव ने अपनी आत्मिक अभिव्यक्ति मृद्भाण्डों पर बनाये गये चित्रणों से की है । मृद्भाण्डों पर चित्रित और उत्खचित अभिप्रायों द्वारा पशु, पक्षी, वनस्पति, आर्थिक स्थिति और रीति–रिवाजों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।(चित्र संख्या –23,24,25) एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकाल से उपलब्ध विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्ड विविध रूपांकनों द्वारा चित्रित किये गये है। ये चित्रित रूपांकन कलाकारों की दक्षता को प्रकट करते हैं। प्रायः बर्तनों के ऊपरी भाग ही ज्यामितीय एवं अन्य अलंकरणों से चित्रित है ।[36] कुछ मृद्भाण्डों के भीतरी भाग में भी चित्रण मिलता है। अधिकांश चित्र बर्तुलाकार अथवा वक्राकार रेखाओं से युक्त हैं । प्रमुख चित्रण अभिप्राय निम्न प्रकार है :–

(1) समानांतर रेखाएं

(2) आड़ी तथा खड़ी रेखाएं

(3) गोले–छल्ले (सर्कल्स)

(4) फंदे या छल्ले (लूप्स)

(5) क्रास (क्रास)

(6) ठोस बिन्दु (सोलिड–डोट्स)

Scanned by CamScanner

(7) फीते (चेवरान्स)

(8) लहरदार पक्तियाँ (बेवी लाइन्स)

(9) त्रिभुज

(10) हरिणों की पक्तियाँ

(11) पौधे

(12) सूर्योदय–सूर्यास्त जैसे चित्र

(13) बिच्छू की आकृतियाँ

(14) ठोस हीरों की आकृति का चित्रण (हाच्ड डायमण्ड)

(15) झोलाकार अथवा लम्बाकार ठोस त्रिकोण (हेच्ड आर इलोंगेटेड सोलिड ट्रेगल्स)

(16) जाली (लेटिस)

(17) जालीदार हीरों जैसी आकृति का चित्रण (लेटिस डायमण्ड)

(18) हीरों के आकार के चित्रण (डायमण्ड)

(19) विभिन्न अन्य पशुओं के चित्रण,

(20) एक दूसरे को काटते हुए वृत्त तथा अर्द्धवृत्त

(21) मोर की आकृति

एरण से प्राप्त मृद्भाण्डों पर उक्त चित्रण अभिप्राय मिलते हैं। इन चित्रण अभिप्रायों के अतिरिक्त बर्तनों पर सभी चित्रणों के मिले–जुले रूप मिले हैं। मृद्भाण्डों पर मुख्यतः ज्यामितीय चित्रण हैं । इसके अतिरिक्त मृद्भाण्डों में वनस्पति और पशुओं को भी उकेरा गया है । बर्तनों में सबसे ज्यादा बारहसिंगा लालित्यपूर्ण ढंग से एक लाइन (कतार) में खड़े हुए चित्रित किये गये है।[37] इनके अतिरिक्त हरिण का भी चित्रण किया गया है।(चित्र संख्या –23) ऐसा प्रतीत होता है, कि पात्रों पर विभिन्न प्रकार के पशु जैसे बकरी, सदृश्य पशु मुह खोले बैठे रूप में चित्रित है।[38] कुछ अनिश्चित प्रकृति वाले जानवरों के चित्रण भी प्राप्त हुए है तथा लम्बी गर्दन एवं लटकते हुए बालों वाले एक–एक जानवर की आकृति भी प्राप्त हुई है । कुछ मृद्पात्रों पर मिश्रित शरीर वाले जानवर चित्रित है और तीन बिच्छुओं की सदृश्य आकृतियां भी प्राप्त हुई हैं, जो विशेष उल्लेखनीय हैं।[39] कुछ

Scanned by CamScanner

चित्रण अभिप्राय सूर्योदय व सूर्यास्त के समान बनाये गये हैं ये चित्रण निश्चित रूप से प्रकृति से लिये गये है। इससे ज्ञात होता है, कि लोग सूर्य की उपासना देवता के रूप में करते होगें।इन मृद्भाण्डों पर दौड़ते हुए हरिणों की पक्ति तथा हीरों का चित्रण सर्वाधिक किया गया है। हरिण इनका सर्वाधिक प्रिय पशु प्रतीत होता है। प्रारम्भिक मृद्भाण्डों पर हरिण की आकृति साधारण है किन्तु परवर्ती मृद्भाण्डों पर उसे सुरूचिपूर्ण ढंग से दर्शाया गया है । सम्भवतः ये लोग हीरे जैसे रत्न से भी परिचित थे, जो उनका प्रिय रत्न था। इसीलिए मृद्भाण्डों पर हीरे की आकृति सर्वाधिक बनाई गई है । अभी तक उत्खनन में हीरा अप्राप्य है । गोल फंदे, पाश जैसी आकृति भी मृद्भाण्डों पर बनाई गई है। जिससे ज्ञात होता है, कि इस काल के लोग पेड़ की छाल व अन्य रेशों व लकड़ी की सहायता से पशु पक्षी फंसाने के लिए फंदे (जाल) पास बनाते होगे और सफलतापूर्वक पशु–पक्षियों का शिकार करते होगे । हरिण व हीरों के चित्रण अभिप्राय में सहज स्वाभाविकता दृष्टिगोचर होती है। जो कलाकारों की कला कौशल की परिचायक है। चित्रण मुख्यतः बर्तनों के किनारे के आस–पास (गर्दन के पास) और बाहरी सतह पर तल के ऊपर बने हुए है । भीतरी सतह पर चौड़े मुह वाले बर्तनों पर चित्रण किया गया है, जिससे की चित्रण भली–भांति स्पष्ट दिखाई दे। एरण उत्खनन से प्राप्त प्रथमकाल को तीन उपकालों में (1) नवपाषाणकाल (2) कायथा संस्कृति काल और (3) ताम्रपाषाणकाल, में विभाजित किया गया है । नवपाषाणकाल के मृद्भाण्ड हस्तनिर्मित और मोटे है, उन पर कोई विशेष उत्खचन नही किया गया है, केवल चटाई जैसा चित्रण अभिप्राय है। इन मृद्भाण्डों की सतह पर भूसा जैसा पदार्थ स्पष्ट दिखाई देता है, जो इस बात का प्रमाण है, कि मिट्टी को अच्छी तरह गूंथा नही गया था । कायथा संस्कृति के मृद्भाण्डों पर विविध अभिप्राय चित्रित और उत्खचित है, जिनके द्वारा तत्कालीन कला को स्वरूप का परिचय मिलता है। ताम्रपाषाण संस्कृति के मृद्भाण्डों पर उपलब्ध चित्रण और अलंकरण उस युग की उन्नत कला के द्योतक है । एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति में निर्मित चित्रित मृद्भाण्डों से सर्वप्रथम चित्रण कला का व्यवस्थित परिचय मिलता है ।[40]

एरण से प्राप्त काले–और–लाल मृद्भाण्डों तथा काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड, धूसर मृद्भाण्ड, चमकदार लाल मृद्भाण्डों पर मयूर, बिच्छू, केकड़ा व कुत्ता इत्यादि का चित्रण किया गया है। उपर्युक्त चित्रण अभिप्रायों का विश्लेषण करने पर एरण की नवपाषाण, कायथा व ताम्रपाषाण संस्कृति के विविध पक्ष उजागर हुए है ।[41] एरण में

Scanned by CamScanner

कायथा मृद्भाण्डों के टुकड़ों की प्राप्ति दोनों केन्द्रों के निवासियों के पारस्परिक सम्बन्धों तथा कायथा मृद्भाण्डों के टुकड़ों की प्राप्ति से दोनों केन्द्रों के निवासियों के पारस्परिक सम्बन्धों तथा कायथा मृद्भाण्डों के विस्तार की जानकारी मिलती है। डॉ. वी.एस. वाकणकर ने इस संस्कृति के निर्माताओं से संबंध समस्या के निराकरण को दिशा प्रदान की है ।[42] एरण का मृद्भाण्ड उद्योग काफी समृद्ध था। मृद्भाण्डों पर किया गया चित्रण उसके अभिप्रायों से तत्कालीन सभ्यता के कई पक्षों की विस्तृत जानकारी मिलती है । चित्रण अभिप्राय से उस काल के कलाकारों की कलाप्रियता व कलात्मकता के विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त होती है ।

टोंटीदार बर्तन :– (चेनल स्पाउटेड वाउल्स)

एरण की ताम्रपाषाणकालीन परवर्तीकाल की सतहों से कुछ टोंटीदार बर्तनों के टुकड़े टोंटियां, एवं कटोरे प्राप्त हुए हैं । काले एवं लाल मृद्भाण्ड से केवल तीन टोटियाँ प्राप्त हुई हैं तथा अन्य सभी टोंटियाँ लाल मृद्भाण्ड के अन्तर्गत आती हैं। काले एवं लाल मृद्भाण्ड प्रकारों में इस प्रकार के बर्तनों का मिलना काफी महत्वपूर्ण है। टोटीयुक्त कुछ मृद्भाण्ड बाहरी एवं भीतरी सतहों पर काले रंग से चित्रित है । टोंटीदार बर्तनों में जो काले एवं लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है, भग्न रूप में पाये गये है।[43] (चित्र संख्या –26 व 27) जिससे स्पष्ट नहीं हो पाया कि इस प्रकार के मृद्भाण्ड आकस्मिक या साभिप्राय स्वाभाविक रूप से निर्मित होते रहे थे । एक बर्तन पर सफेद रंग से चित्रण किया गया है, जो निश्चित रूप से काले एवं लाल मृद्भाण्ड प्रकार का ही रूप है। जोर्वे से भी टोंटीदार बर्तन प्राप्त हुए है । डॉ. एच.डी. साकलियाँ ने ईरान एवं पश्चिम एशिया से प्राप्त टोंटीदार बर्तनों की तुलना उक्त टोंटीदार बर्तनों से की है।[44] उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक पूर्ण सुरक्षित लाल रंग का टोंटीदार पात्र मिला है। इसमें बिन्दीदार रेखा टोंटी के सामान्तर चारों ओर बनाई गई है। (चित्र संख्या –28)

ऐसा प्रतीत होता है, कि इस काल में एरण के लोग टोंटीदार बर्तन पूजा–पाठ में मूर्ति इत्यादि को जल अर्पित करने के लिए प्रयोग करते थे। आज भी इस प्रकार के टोंटीदार बर्तन एरण व उसके आस–पास के क्षेत्रों में कुम्हार जाति के लोग बनाते हैं।

Scanned by CamScanner

सपीठ थालियाँ या साधार तश्तरियाँ– (डिस ऑन स्टेण्ड)

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से सपीट थालियाँ व साधार तश्तरियाँ काफी मात्रा में प्राप्त हुई है। काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड उद्योग के छोटे–छोटे टुकड़े भग्न रूप में प्राप्त हुए हैं, जो खोखले दण्ड वाली थालियों के अंग प्रतीत होते है,।[45] एक मोटा दण्ड (स्टेम) का टुकड़ा जो दोनों ओर से टूटा हुआ है। जिसकी सतह पर हल्के सफेद रंग से चित्रण है, बर्तन का यह प्रकार काले एवं लाल मृद्भाण्ड उद्योग का प्रतीत होता है । इस प्रकार की साधार तश्तरियाँ हड़प्पाकाल में निर्मित की जातीं थीं। एरण उत्खनन में एक पूर्ण साधार तश्तरी प्राप्त हुई है। (चित्र संख्या –29) एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकाल को मृद्भाण्डों के आधार पर प्रारम्भिक, मध्य और अन्तिम अवस्थाओं में बांट सकते है, तीनों ही अवस्थाओं में काले और लाल मृद्भाण्ड तथा काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड व धूसर मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है । मध्य और अन्तिम अवस्थाओं की विशेषताएं चमकली सतह वाले मृद्भाण्ड और टोंटीयुक्त कटोरे हैं।

मृद्भाण्ड

एरण के ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक पूर्ण सुरक्षित मृद्भाण्ड कार्बन 14 विधि के अनुसार 1750 ई. पू. का प्राप्त हुआ है। जो अत्यंत कलात्मक रूप में बनाया गया है। इसकी गर्दन पर दो काली रेखाओं का चित्रण है इस पर एक मछली जैसी आकृति भी बनी है। इसका रंग लाल है। जिस पर काले रंग से चित्रकारी की गयी है।(चित्र संख्या –30)एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से दो पूर्ण सुरक्षित मृदभाण्ड प्राप्त हुए है। जो लगभग 9 वी सदी ई. पू. के है। (चित्र संख्या –31 आकृति क्र 1 व 3)

धूसर रंग का कटोरा

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से धूसर रंग का कटोरा प्राप्त हुआ है।(चित्र संख्या –31 आकृति क्र 2) एरण उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाणकालीन स्तर से धूसर रंग का पूर्ण सुरक्षित कटोरा प्राप्त हुआ है। (चित्र संख्या – 32)

Scanned by CamScanner

छोटे मृद्भाण्ड

एरण उत्खनन में लाल रंग के छोटे–छोटे दो मृद्भाण्ड मिले हैं। यह संभवतः सिंगार की वस्तुओं को रखने में उपयोग किये जाते होगें। प्रोफेसर विवेकदत्त झा के अनुसार इनका उपयोग बच्चों के खिलौनों के रूप में होता था। (चित्र संख्या – 33)

धूसर मृद्भाण्ड :

इस मृदभाण्ड ऊपरी गर्दन का भाग ही उत्खनन में प्राप्त हुआ है। इसका काल लगभग 1200 ई.पू. है। (चित्र संख्या – 34)

दैनिक उपयोग में प्रयुक्त होने वाले बर्तन

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से मानव के दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले बर्तन बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। उनमें थाली, कटोरे, लोटे प्रमुख पात्र प्रकार हैं। (चित्र संख्या – 35,36,37)

मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी की हड़प्पा सभ्यता की लिपि व ब्राह्मी लिपि से तुलनात्मक अध्ययन

एरण उत्खनन से प्राप्त कायथा मृद्भाण्डों पर ग्रेफिटी तथा कुछ पर मछली के स्केल्स का चित्रण किया गया है । जो इस संस्कृति का सम्बन्ध हड़प्पा संस्कृति से प्रदर्शित करता है ।[45] एरण से प्राप्त कायथा मृद्भाण्डों और अन्य ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी का साम्य हड़प्पा लिपि से प्रतीत हैं। हड़प्पा से प्राप्त मृद्भाण्डों पर खुरचकर बनायी गयीं सामान्तर रेखाएं, मनुष्य और पशुओं के चित्रों के साथ हड़प्पा लिपि के भी चित्र मिले है। एरण से प्राप्त लाल और काले व लाल मृद्भाण्डों पर हाथ से खुरचकर बनाये गये क्रास हीरे के चित्रण, सामान्तर रेखाएं सीडी जैसे चित्र, धनुष, त्रिशूल, आड़ी तिरछी रेखाएं, हडप्पा सभ्यता की लिपि जैसे सांकेतिक चित्रात्मक चित्र प्राप्त हुए है।[48] रंगपुर, रोजदी से भी ग्रेफिटी प्राप्त हुई है ।[49] मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा व लिपि है । भाषा, बोली (बोल–चाल) के माध्यम से उद्भाषित होती है, किन्तु लिपि लेखनकला कौशल से अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है, जो काफी समय तक व्यवस्थित व सुरक्षित रूप में बनी रहती है । पाषाणकाल में मानव अपनी लेखन (लिपि) अभिव्यक्ति को शैलचित्र कला के माध्यम से अभिव्यक्त करता था। इसी प्रकार आगे

Scanned by CamScanner

चलकर हड़प्पा सभ्यता में मनुष्य ने अपनी अभिव्यक्ति चित्रात्मक व सांकेतिक लिपि के माध्यम से की अभी तक सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि को पड़ा नहीं जा सका है, कुछ विद्वानों डॉ. एस.आर. राव, श्री एस.के. रे., डॉ. प्राणनाथ, डॉ. फतेह सिंह, श्री एम.एम. गुप्त, श्री महादेवन, विदेशी श्री फेयर सर्विस जूनियर और डॉ. आस्को पारपोला जैसे विद्वानों ने इस लिपि को पढ़ने का दावा प्रस्तुत किया किन्तु वह व्यवस्थित नही हैं।[50] वास्तव में लिपि का अविष्कार हड़प्पा सभ्यता में हुआ । इस सभ्यता के विनाश के पश्चात् कुछ लोग मध्य–भारत की ओर आये और यहाँ पहले से रह रहे लोगों के साथ सुरक्षित स्थानों में बस गये और उन्होंने अपनी पूर्ववर्ती लेखन अभिव्यक्ति को मृद्भाण्डों पर उत्कीर्ण किया व इस सांकेतिक चित्रात्मक लिपि को अपने दैनिक कार्य–कलापों में उपयोग किया। उदाहरण के लिए आज भी कुछ अशिक्षित ग्रामीण लोग सामान्तर रेखाएं खींचकर दूध का हिसाब, मजदूरी का हिसाब लिखते है। इसी प्रकार हड़प्पा संस्कृति व ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के लोग अपनी अभिव्यक्ति सामान्तर रेखाओं, चित्रों व सांकेतिक अक्षरों के माध्यम से करते थे। यही रेखाएं, चित्र व सांकेतिक अक्षर पूर्ववर्ती लेखनकला के जन्मदाता रहे। हड़प्पा से प्राप्त सीलों व मृद्भाण्डों पर उत्कीर्ण अक्षरों की तुलना डॉ. बी.बी.लाल महोदय एवं डॉ. जायसवाल महोदय ने पूर्व – ब्राह्मी से की है।[51] ऐसे ही कुछ अक्षर चित्र एरण की ग्रेफिटी में प्राप्त हुए है । हडप्पा सभ्यता की लिपि व एरण से प्राप्त ग्रेफिटी मौर्यकालीन ब्राह्मी के कई अक्षरों से समानता रखती है । अतः सम्भव है, कि हड़प्पा सभ्यता की लिपि व ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी के चित्र ही ब्राह्मी लिपि के वास्तविक जन्मदाता रहे हों । अतः कहा जा सकता है, कि हडप्पा सभ्यता में पूर्व–ब्राह्मी का उद्भव हो गया था और वैसे ही अक्षर चित्र एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों ने बनाये जो ब्राह्मी लिपि से काफी साम्य रखते हैं। (चित्र संख्या – 38,39,40,41,42,43)

Scanned by CamScanner

सन्दर्भ

1 गौर, चन्द्रभान सिंह : एरण की ताम्राश्मयुगीन संस्कृति (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध,) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर,, 1978, पृ. 40.

2 शर्मा, आर.के. व मिश्रा ओ.पी. : आर्क्योलॉजीकल एक्सकेवेशन इन सेन्ट्रल इण्डिया, दिल्ली, 2003, पृ. 105

3 वही

4 शांडिल्य, आलोक : एरण उत्खनन 1986 द्वारा ज्ञात प्रथमकाल का अध्ययन (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध) डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.). 1987, पृ. 30.

5 वही :

6 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, नई दिल्ली, 1985, पृ. 20.

7 दुबे, नागेश : एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 55

8 शाडिल्य, आलोक : पूर्वोक्त, पृ. 21, 22

9 वही :

10 सांकलिया, एच. डी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान, बोम्बे, 1962, पृ. 187

11 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 21

12 गौर, चन्द्रभान सिंह : पूर्वोक्त, पृ. 43

13 सिंह, उदयवीर : "एरण ए चालकोलिथिक सेटलमेण्ट" बुलेटिन ऑफ एन्शियेन्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी सागर वि.वि., सागर, 1967, अंक 1 पृ. 29.

14 जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद भाग– 4,पृ. 20

15 इण्डियन आर्क्योलॉजी : **ए, रिव्यू,** 1955–56, पृ. 11

16 गौर, चन्द्रभान सिंह : पूर्वोक्त, पृ. 43

17 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए–रिव्य,1959, पृ. 24

18 श्रोत्रिय, आलोक : मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणकालीन स्थल, मालवांचल में कूर्मांचल, कावेरी,शोध संस्थान, उज्जैन, 2001, पृ. 380

19 सिंह, उदयवीर : प्रोट्रोहिस्ट्रोरिक पॉटरी ऑफ ईस्टर्न मालवा, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, 1966, पृ. 102

Scanned by CamScanner

20 सिंह, उदयवीर : बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेन्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी सागर वि.वि., न. 1 पृ. 36

21 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए. रिव्यू1967 – 69, पृ. 11

22 सांकलिया, व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर और नावदाटोली, 1952–53, पूना, पृ. 83

23 **जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद खंड 4**पृ. 27

24 झा, विवेकदत्त : एरण उत्खनन से ज्ञात द्वितीय काल का अध्ययन, (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध) 1965 डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) पृ. 14–15

25 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए. रिव्यू1967, पृ. 15

26 गायकवाड़, धनीराम : एरण की सर्वेक्षित तथा उत्खनित प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक संस्कृतियों का अध्ययन, (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1886, पृ. 40

27 झा. विवेकदत्त : पूर्वोक्त, पृ. 14–15

28 सिंह, उदयवीर : प्रोटोहिस्टोरिक पॉटरी ऑफ ईस्टर्न मालवा, पीएच.डी. थिसिस डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) पृ. 103

29 वही

30 गायकवाड, धनीराम : पूर्वोक्त, पृ. 41

31 द्विवेदी, चन्द्रलेखा, : पूर्वोक्त, पृ. 23

32 गौर, चन्द्रभान सिंह : पूर्वोक्त, पृ. 45

33 वही :

34 वही :

35 वही :

36 जैन, कमलापति : पुरातत्त्व का इतिहास (प्रथम भाग), सतना, 1971, पृ. 55

37 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 24

38 वही :

39 सिंह, उदयवीर : बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेन्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी सागर, पूर्वोक्त, पृ. 36

40 दुबे नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 53

Scanned by CamScanner

41 वही : पृ. 55

42 वाकणकर, वी.एस : कायथा उत्खनन रिपोर्ट 'रिपोर्ट द विक्रम जर्नल ऑफ विक्रम यूनिवर्सिटी, 1967, पृ. 50–51

43 शर्मा आर.के. मिश्रा ओ.पी : पूर्वोक्त, पृ. 105

44 सांकलिया, एच.डी. : न्यू लाइट आन दा इण्डो, ईरानियन आर. वेस्टर्न एशियेटिक रिलेशन्स विटबीन 1700 बी.सी. – 1200 बी. सी. 2–6, 3–4, पृ. 315–317

45 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 25

46 गायकवाड़, धनीराम, : पूर्वोक्त, पृ. 44

47 शांडिल्य, आलोक : पूर्वोक्त, पृ. 12

48 सिंह, उदयवीर : प्रोट्रोहिस्टोरिक पॉटरी ऑफ ईस्टर्न मालवा,(अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ,(म.प्र.), पृ. 188

49 राव, एस.आर. : एक्सकेवेशन्स एट रंगपुर, इण्डियन आर्क्योलॉजी : ए. रिव्यू, पृ. 130–132, 1962–1963

50 शुक्ल, के.एस. : सिन्धु–लिपि का अनुशीलन, कला वैभव, संयुक्तांक XIII-XVI वर्ष 2003–04, इंदिरा, कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, (छ.ग.)

51 लाल, बी.बी. : फ्राम दा मेगालिथिक टू दा हड़प्पा : ट्रासिंग बैक द ग्रेफिटी ऑन द पॉटरी : इण्डियन आर्क्योलॉजी : ए. रिव्यू, 1960, पृ. 23

52 शुक्ल, के.एस. : पूर्वोक्त

Scanned by CamScanner

अध्याय पंचम

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृण्मूर्तियों का अध्ययन

Scanned by CamScanner

कला में मानव मन को आकृष्ट करने की अद्भुत क्षमता होती है। चाहे वह मृण्मूर्तिकला हो या चित्रकला व संगीत कला हो। सभी कलाएँ मनुष्य मन–मस्तिष्क की उपज है, पर उनका सीधा संबंध मनुष्य के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कृत्यों से होता है। मनुष्य को उन्नतिशील संस्कारवान बनाना ही कला का उद्देश्य, लक्ष्य और प्रयोजन है। कला जीवन की स्थानापन्न है, वह आस–पास की दुनिया से मनुष्य का संबंध स्थापित कराने वाला महत्वपूर्ण साधन हैं।[1]

मृण्मूर्तिकला का परिचय

भारतीय कला में मृण्मूर्तिकला अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो मनुष्य के धार्मिक, आध्यात्मिक,सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है।यह देश की सांस्कृतिक प्रगति का स्वरुप प्रस्तुत करती है।अतः भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास को जानने के लिए भारतीय कला का अध्ययन आवश्यक है। भारतीय कला में मृण्मूर्तिकला भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो ललित कलाओं के अंतर्गत आती है। ललित कलाओं में संगीत कलाएँ और नृत्य कला, वास्तुकला या स्थापत्य कला, मूर्तिकला (प्रस्तर, धातु और मृण्मूर्तिकला), चित्रकला, मृद्भाण्ड कला प्रमुख हैं।

प्रो. के.डी., वाजपेयी के अनुसार "भारत में ललित कलाओं को रस, सौन्दर्य एवं आनंद के अनुभव तथा शक्ति के सम्बर्धन का माध्यम माना गया है, न कि कुत्सित भावों और अंधविश्वासों का साधन।[2] ईश्वर संहिता में उल्लेख है, कि ऐसी मूर्ति जिसमें रूप और लावण्य होता है, दर्शक के मन में आनंद अथवा रस उत्पन्न कर देती है।[3]

"भारतीय कला निश्चित रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक है, इसलिए वह सांस्कृतिक और मानवीय भी है। मानवीय अनुभूतियों और संवेदनाओं पर उसका वास होता है।" वासुदेव शरण अग्रवाल।

कला का उद्भव हजारों वर्ष पूर्व हुआ। मनुष्य में कला के प्रति प्रेम प्राकृतिक वातावरण के नैसर्गिक सौन्दर्य और दैनिक जीवन की घटनाओं को देखकर उत्पन्न हुआ। मानव जीवन में कला का सदैव घनिष्टतम संबंध रहा है। मनुष्य ने अपने जीवन के

Scanned by CamScanner

अंतरंग अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिये कला को सहज माध्यम के रूप में अपनाया। कला में अभिरूचि होने से मनुष्य की भावना एवं प्रकृति जागृत हुई है।

मृण्मूर्तियों द्वारा प्राचीन मानव जीवन के विविध पक्ष उजागर हुए हैं। इनसे प्राचीन इतिहास का पूर्ण एवं क्रियात्मक जीवन ही मुख्य रूप से प्रतिबिम्बित होता है। प्रारंभिक मृण्मूर्तिकला में यथार्थवाद एवं लौकिकता को अभिव्यक्त किया गया है। श्री के. एम. मुन्शी के अनुसार :– "मूर्तिकला के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति की निरन्तर आत्मा की अटूट निरन्तरता का प्रदर्शन अन्यत्र कहीं नहीं हुआ है।[4] सर्वप्रथम भारत में मृण्मूर्तियाँ निर्मित किये जाने के प्रमाण मिले हैं, बाद के कालों में प्रस्तर निर्मित, हाथी–दाँत निर्मित मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। काष्ट निर्मित मूर्तियाँ नश्वर रही है, इसलिए प्राप्त नही होती हैं। कालान्तर में धातु, मोम, सीप, शंख, मसाले , गंधक आदि से मूर्तियाँ निर्मित की जाने लगी थी। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकालीन परम्परा आज भी विद्यमान है। उदाहरण के लिए आज भी हिन्दुओं के महत्वपूर्ण उत्सवों, कार्यक्रमों में गोबर के गणेश देवता की प्रतिमा बनाकर पूजा– अर्चना की जाती है।

मृण्मय वस्तुओं का शाब्दिक अर्थ है, "पकी मिट्टी की वस्तुएँ" प्राचीनकाल से चली आ रही यह परंपरा आज भी दृष्टिगोचर होती है। मिट्टी को मानव ने अपनी कला–अभिव्यक्ति का माध्यम प्राचीनकाल से बनाया था। जिनमें निर्मित पात्र मूर्तियाँ और खिलौने आदि उल्लेखनीय है, ये पके हुए भी हैं और कच्चे भी पके हुए पात्र, मूर्तियाँ और खिलौने लंबे समय तक सुरक्षित रहते हुए आज भी तत्कालीन भारतीय कला के विकास को उजागर करने में सहायक हैं, किन्तु पकाने की प्रक्रिया ज्ञात होने से पहले मृण्मूर्तियाँ विरल रूप में प्राप्त होने के कारण उनके कला रूपों की अधिक जानकारी नहीं मिल पाती है। ताम्रपाषाणकाल में पत्थर, धातु व मिट्टी का उपयोग कला वस्तुओं के निर्माण में हुआ।

प्राचीनकाल से ही मानव अपने मन में उठने वाले भावों–विचारों को कलाकृतियों के माध्यम से प्रकट करता आया है। उनमें शैलचित्र कला, मृद्भाण्ड कला, मूर्तिकला, वास्तुकला प्रमुख हैं। मूर्तिकला प्रस्तर, धातु, हड्डी, श्रृंग, मिट्टी के माध्यम से की जाती रही है। मिट्टी से बनी मूर्तियाँ ही मृण्मूर्तिकला के अंतर्गत आती है। मिट्टी से निर्मित कलाकृतियों में मृण्मूर्तियों का विशिष्ट स्थान हैं। सर्वसुलभ एवं लोचयुक्त होने के कारण

Scanned by CamScanner

मिट्टी को इच्छित आकार प्रदान करना सरल रहा है। इसी कारण मिट्टी प्राचीनकाल से कलाभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम बनी हुई है।

प्राचीनकाल के लोग प्रायः नदियों के किनारे रहते थे। इसलिए उन्हें मिट्टी व पानी सरलता से प्राप्त हो जाता था। मिट्टी से वे अपने दैनिक–जीवन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं को बनाते थे। साथ ही साथ अपने मनोरंजन की सामग्री भी तैयार करते थे। यही कारण है, कि प्राचीनकाल से मिट्टी की वस्तुओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन्हें ये लोग आग में पका लेते थे। सम्भवतः आग जब अन्य कार्यों के लिए जलती थी, तो बच्चे अपने खिलौने आग में डाल देते होगें। यही कारण है, कि कुछ खिलौने अधिक जले हुए तथा कुछ कम पके हुए प्राप्त हुए हैं, परंतु धीरे–धीरे जब मनुष्य को इन वस्तुओं का उपयोग उचित समझ में आने लगा तो उन वस्तुओं को वह सावधानी पूर्वक पकाने लगा। इसलिए कुछ मृण्मूर्तियाँ काफी सुन्दर ढंग से पकी हुई प्राप्त हुई हैं। इन मृण्मूर्तियों के अध्ययन से हमें उस काल के आर्थिक पक्ष, धार्मिक पक्ष एवं पशु–पक्षियों का अध्ययन करने में सहायता मिलती है। प्राचीनकाल में मनुष्य इन पकी मिट्टी की वस्तुओं को बनाने में दो तकनीकों का प्रयोग करता था, या तो वह इन मृण्मूर्तियों को हाथों से बनाता था अथवा साँचे का प्रयोग करता था।

ताम्रपाषाणकाल में मृण्मूर्तियाँ हस्तकला के माध्यम से बनायी गयी है। प्राचीन भारतीय इतिहास में कला की दृष्टि से मृण्मय वस्तुओं का अपना अलग महत्व हैं। मिट्टी सभी स्थलों में सुलभ रही है। इसी कारण धनी एवं निर्धन व्यक्ति इसके माध्यम से अपने मनोरंजन के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण स्वयं करता था अथवा इच्छित वस्तुओं का निर्माण अन्य निपुण कलाकारों से करवा लेता था। सम्भवतः मृण्मूर्ति निर्माण उस काल में व्यवसाय के रुप में भी प्रचलित था।

मृण्मूर्तियों की विशेषताएँ

मृण्मूर्तियाँ सर्वप्रथम नवपाषाणकाल से मिलना प्रारम्भ होती हैं। उत्खनन से जो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। उनसे स्पष्ट होता है, कि ये मृण्मूर्तियाँ देश की सांस्कृतिक विरासत और धरोहर हैं। इन मृण्मूर्तियों का देश के विभिन्न धर्मो और विचारधाराओं से सीधा सम्बन्ध है। इसलिए भारतीय मानव जीवन और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मृण्मूर्तियों की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं :–

Scanned by CamScanner

(1) मृण्मूर्तिकला का प्रगाढ़ संबंध आध्यात्मिकता से है। इसका दूसरा अनिवार्य पक्ष धर्म है। भारतीय धार्मिक विश्वासों, परंपराओं, विचारों और संस्कारों का भारतीय मृण्मूर्तिकला से प्रगाढ़ सम्बन्ध है। इन मृण्मूर्तियों का निर्माण आध्यात्मिकता–धार्मिक उद्देश्य व दर्शन से प्रभावित हैं।

(2) मृण्मूर्तिकला प्रतीकात्मकता और आदर्शवादिता से सम्बधित है। वस्तुओं और घटनाओं के मूल में जो आधारभूत तत्व हैं। जिन्हे तत्कालीन मानव ने अनुभव किया है। उसको अभिव्यक्ति करना ही मृण्मूर्तिकला का उद्देश्य रहा है।

(3) मृण्मूर्तिकला का मानवीय होना उसकी प्रमुख विशेषता है। मृण्मूर्तिकला में जब देवी–देवताओं की आकृतियों के साथ मानव पशु–पक्षी की आकृतियाँ भी निर्मित की जाने लगी तब उसका सीधा संबंध प्रकृति या भौतिक पदार्थों से हो गया।

(4) मृण्मूर्तिकला में भारतीय संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव है। यहाँ कि धार्मिक विचारधाराएँ, नैतिकमूल्य, दार्शनिक–आध्यात्मिक आदर्श, लोक विश्वास तथा भौतिक जीवन का सौन्दर्यपरक दृष्टिकोण भारतीय मूर्तिकला के विभिन्न आयामों में प्रतिबिम्बित हुआ है।

(5) मृण्मूर्तिकला में सौन्दर्यानुभूति और रसानुभूति कराने की क्षमता है। मृण्मूर्तिकला सुन्दर होने के साथ–साथ मनुष्य मन को आकर्षित भी करती है। इस कला में कलाकार पहले अपने मन में एक काल्पनिक अथवा वास्तविक चित्र तैयार कर लेता है तथा बाद में उसे मृण्मूर्ति के रूप में रूपांकित करता है।

(6) मृण्मूर्तिकला प्राचीन मानव जीवन से जुड़ी हुई कला है। वह धार्मिक, आध्यात्मिक होने के साथ–साथ लौकिक भी है। मृण्मूर्तिकला में जीवन के बाह्य रूप की अपेक्षा आंतरिक रुप को प्रतिबिम्बित किया गया है। अतः कहा जा सकता है, कि मृण्मूर्तिकला स्वयं में मानव जीवन की प्रस्तुति है।

भारतीय मृण्मूर्तियों को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है।[5] प्रथम प्रकार में वे मृण्मूर्तियाँ आती हैं। जिनके स्वरूप को हम 'आदिम' या 'प्रारंभिक' कह सकते है। ये मृण्मूर्तियाँ केवल हाथ से बनायी गयी है, और ऊपर से मिट्टी के आभूषण लगाकर इनकों अलंकृत किया गया है। इस सर्जनात्मक पद्धति को विद्वानों ने 'अपलीक' पद्धति कहा है। इस तरह की मृण्मूर्तियों में मानव तथा पशु आकृतियाँ निर्मित की गई है उक्त प्रकार की

Scanned by CamScanner

मृण्मूर्तियाँ संपूर्ण देश के गाँव–गाँव में हड़प्पा सभ्यता से लेकर आज तक निर्मित होती रही है। इसलिए इन्हें "कालातीत" भी कहा गया है।

द्वितीय प्रकार की मृण्मूर्तियाँ विभिन्न कालों में अपनी शैली, विषयवस्तु और तकनीक में भिन्न–भिन्न हैं। इनमें निरंतर विकास की धारा परिलक्षित होती है। इन मृण्मूर्तियों से परिपक्व, सुसंस्कृत सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते है।

मृण्मूर्तियों के निर्माण की प्रविधि

प्राचीनकाल में मृण्मूर्तियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की विधियों से निर्मित की गई हैं। प्रथम प्रायः हस्तनिर्मित हैं। मानव की आकृति में आँखे, वस्त्र और आभूषण अलग से चिपकाकर बनाये गये हैं। इन मृण्मूर्तियों में हाथ व पैरों की अँगुलियाँ नही बनाई गई हैं। द्वितीय विधि में मृण्मूर्तियाँ साँचा विधि से बनाई गई हैं, तथा तृतीय अलग–अलग अंगों को निर्मित कर संयुक्त करने की विधि से निर्मित हैं। ताम्रपाषाणयुग के बाद अधिकांशतः मृण्मूर्तियाँ साँचा पद्धति से बनायी जाती थीं।

भारत में मृण्मूर्तियों की प्राचीनता

मानव का प्राचीनकाल से कला सृजन व कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रारंभ में मानव फूल–वनस्पतियों से स्वयं को सजाने–संवारने तक सीमित था। इसकी जानकारी हमें शैल–चित्रकला से मिलती है। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ मानव की कलात्मक अभिव्यक्ति का क्षेत्र बढ़ा और कला–वस्तुओं के निर्माण में उसकी अभिरूचि उत्पन्न हुई। प्रस्तर, धातु के साथ मिट्टी को भी मानव ने अपनी कला को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिनमें निर्मित पात्र, मूर्तियाँ, खिलौने आदि उल्लेखनीय हैं। जो लम्बे समय तक सुरक्षित रहते हुए आज भी तत्कालीन कला को उजागर करने के प्रमुख साधन बने हुए है। मिट्टी की बनी हुई प्रतिमाएँ[6] दो प्रकार की प्राप्त हुई हैं। (1) अपक्व मृण्मूर्ति और (2) पक्व मृण्मूर्तियाँ ।

पाषाणकालीन मृण्मूर्तिकला

प्राचीन मृण्मूर्तिकला के विकासात्मक स्वरूप का पता सर्वप्रथम हमें पाषाणयुग में चलता है। भारत की प्राचीनतम पाषाण संस्कृतियाँ पुरापाषाणिक, मध्यपाषाणिक एवं नवपाषाणिक संस्कृति के रूप में विख्यात है। इनमें प्रथम शिकार आधारित या यायावरीय,

Scanned by CamScanner

द्वितीय भोजन संग्रह एवं पशुपालन तथा तृतीय कृषि व्यवस्था के परिचायक है। इस क्रम में मानव जीवन में क्रमशः स्थायित्व एवं निश्चिन्तता का भाव आया। इसके परिणामस्वरूप कलासृजन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारतीय कला का विकास उच्चपुरापाषाणकाल से देखने को मिलता है। इसके पूर्व की कला से सुस्पष्ट साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। विद्वानों के अनुसार नवपाषाणकाल से मनुष्यों ने मृण्मूर्तियों का निर्माण प्रारंभ कर दिया था। कुछ विद्वानों के अनुसार मृण्मूर्तियों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, उनकी इस प्राचीनता को मानव की प्राचीनता से जोड़ते हैं।[7] यह विद्वान मानते हैं, कि प्रारंभ में मृण्मूर्तियाँ आग में पकाई नहीं जाती थीं। जिस कारण उनके अवशेष आज प्राप्त नहीं होते हैं। भारत और उनके समीपस्थ क्षेत्रों में बलूचिस्तान में स्थित मेहरगढ़ से कुछ मृण्मूर्तियाँ प्रकाश में आई हैं, जो लगभग ई.पू. सातवीं सहस्त्राब्दी की हैं। मेहरगढ़ उत्खनन के प्रथम उपकाल से तीन स्त्री और दो पशु मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं इन्हें पकाया नहीं गया है। यह कला की दृष्टि से साधारण है, उक्त मृण्मूर्तियों से ज्ञात होता है, कि मृद्भाण्ड़ों के पूर्व से ही मृण्मूर्तियों का निर्माण मनुष्य ने प्रारंभ कर दिया था। उपर्युक्त उत्खनन से स्पष्ट होता है, कि मनुष्य व पशु की आकृतियाँ कला में प्रारंभ से बनाई जाती थीं। मेहरगढ़ के द्वितीय उपकाल से अनेक मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यह पूर्णतः पकी हुई हैं, किन्तु कला की दृष्टि से इनमें विशेष अंतर नहीं है। पूर्व के समान स्त्री मृण्मूर्तियों के सिर चपटे हैं। इन पर चिपकवाँ विधि से सामान्य अलंकरण भी किये गये हैं। इसी तरह पशु मृण्मूर्तियाँ भी बनाई गई हैं।[8]

हड़प्पाकालीन मृण्मूर्तिकला

हड़प्पा सभ्यता के उदय के पूर्व अफगानिस्तान, बलूचिस्तान एवं सिन्ध क्षेत्र में अनेक ग्रामीण संस्कृतियाँ विद्यमान थी। उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्ड़ों, मृण्मूर्तियों पर अंकित एवं चित्रित आकृतियों से उस काल की सभ्यता – संस्कृति के विकासात्मक पहलू को समझा जा सकता है। सिन्ध क्षेत्र में कोटदीजी, कालीबंगा, हड़प्पा , चहुन्दड़ों इत्यादि पुरास्थलों के निचले स्तरों से कुछ कलाकृतियाँ प्रकाश में आई हैं। जिन्हें पूर्व हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्धित माना जाता है। इस संस्कृति के अनेक केन्द्रों से मानव एवं पशु मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। जो मेहरगढ़ से प्राप्त मृण्मूर्तियों से साम्य रखती हैं। उक्त मृण्मूर्तियों से नवपाषाणिक मृण्मूर्तियों के विकसित रूप और शैली का स्पष्ट ज्ञान होता है तथा

Scanned by CamScanner

हड़प्पीय मृण्मूर्तियों की भूमिका और उनके योगदान का ज्ञान भी प्राप्त होता है। स्त्री मृण्मूर्तियों में नितम्ब और स्तनों को सुडौल बनाकर उनके मातृत्व को प्रकट करने की चेष्टा की गई है। यद्यपि उनके सिर अनुपातिक दृष्टि से छोटे बनाये गये है। जिनमें मुख व केश को दिखाने का प्रयास नहीं किया गया है। पैर नितम्ब के नीचे एकाएक पतले हो गये हैं। इस काल के अंतिम चरण में ग्रीवा में आभूषणों को चिपकवाँ विधि से सुसज्जित किया जाने लगा था। आँख के स्थान पर दो गोलाकार छिद्र बनाये गये है, नासिका को उभारने का प्रयास भी किया गया है। मुडीगांक, देवदात, रहमानटेरी पुरास्थलों से प्राप्त स्त्री मृण्मूर्तियाँ विकास की इस स्थिति को स्पष्ट करती हैं।[9] इस काल से नारी मृण्मूर्तियों का बाहुल मात्रा में मिलना मातृदेवी पूजा या मातृसत्तात्मक परिवार की ओर संकेत करता है। पशु मृण्मूर्तियों में वृषभ आकृतियों की अधिकता पशु पूजा से संबंधित हो सकती हैं। मृण्मूर्तियों के पैर दण्ड के समान और कुकुद विशाल बनाये गये है। उनका काले रंग से बनी छोटी एवं लहरियाँदार रेखाओं से श्रृंगार किया गया हैं।[10]

विकसित हड़प्पाकाल के उत्खनन से भी मृण्मूर्तियाँ प्रभूत संख्या में प्राप्त हुई हैं। इनमें मानव और पशु आकृतियाँ तथा बच्चों के खिलौने सम्मिलित हैं। इस समय के कलाकार मृण्मूर्तिकला में पहले की अपेक्षा अधिक कुशल थे, क्योंकि उन्होंने जहाँ जनसामान्य के लिए साधारण मृण्मूर्तियाँ बनाई वहीं विशिष्टजन और धार्मिक प्रयोजन के लिए आभूषणों से सजी–धजी व रंगों से चित्रित विशिष्ट आकृतियाँ भी बनाई। कुछ मानव व पशु मृण्मूर्तियों में तो आकृति की इतनी अभिव्यंजना है, कि उन्हें कुम्हार कलाकारों की अपेक्षा व्यावसायिक कलाकारों की कृति मानने को धवलीकर महोदय का सुझाव उचित ही है।[11] हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त नारी मृण्मूर्तियों को वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित किया गया है। घाघरा जैसा अधोवस्त्र, दोनों ओर प्यालेनुमा आकृतियुक्त पंखाकार शिरोभूषा, हँसली मनके सहित लड़ियों वाले लम्बे हार, भुजबन्द, कड़े कर्धनी आदि वस्त्र–आभूषण उल्लेखनीय हैं। वासुदेव शरण अग्रवाल ने पंख सदृश्य आभूषण को 'ऋग्वेद' में वर्णित 'ओपस' माना है।[12]

इस काल में पुरूष मृण्मूर्तियाँ अपेक्षाकृत कम प्राप्त हुई हैं। इन्हें प्रायः वस्त्रहीन दिखाया गया है, जो सन्यासी या त्याग का प्रतीक है। पुरूष आकृतियाँ खड़े एवं बैठे दोनों रूपों में रूपायित है। विहीन, लंबी नासिका, मांस ठुड्डी, आगे को निकली हुई है। मोहनजोदड़ों से घुटने के बल चलते हुए दो बच्चों की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो

Scanned by CamScanner

बाल–सुलभ भाव की चेष्टा को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ हैं। इसके अतिरिक्त श्रृंगयुक्त चेहरे वाले कुछ मुखौटे भी मिले हैं। इनसे मुखौटों के प्रयोग की धारणा सिद्ध होती है।[13] पशु–पक्षियों की आकृतियाँ काँचली मिट्टी की बनी है। इस काल में वृषभ, व्याघ्र, हाथी, भैंस, गैड़ा, बकरा, कुत्ता, सुअर, खरगोश, गोरिल्ला, गिलहरी, साँप, घड़ियाल, कछुआ, मछली और अनेक प्रकार के पक्षियों तथा संयुक्त मानव–पशु आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। खिलौना–गाड़ी और सीटी आदि भी मिट्टी की बनी मिलीं हैं। वृषभ छोटे सींग वाले अधिक मात्रा में मिले हैं। ककुद और बिना ककुद वाले वृषभ भी प्राप्त हुए हैं। प्रारंभिक मृण्मूर्तियों में अगले और पिछले पैर जुड़े हैं। कालीबंगा, लोथल, सुरकोटड़ा,राखीगढ़ी,रंगपुर आदि पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त वृषभ मृण्मूर्तियों में थोड़ा अंतर दिखलाई पड़ता है। किरन कुमार थपल्याल और संकटा प्रसाद शुक्ल ने इन मृण्मूर्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जो मृण्मूर्तियों के विकासात्मक इतिहास को समझने में सहायता करता है।[14]

उत्तर हड़प्पीय सभ्यता और संस्कृति का विकास प्रमुखतः से तीन पुरास्थलों से जुड़ा है। हड़प्पा में 'एच संस्कृति' का विकास इस युग की महत्वपूर्ण देन है। उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों में मानव तथा पशु और पक्षियों दोनों की साथ–साथ आकृतियाँ मिलती हैं। इस युग की दूसरी संस्कृति चहुन्दड़ों की 'झूकर' और 'झांगर' संस्कृति है। जिसमें अलंकरण द्वारा मानव और पशु–पक्षियों की आकृतियों को कुशलतापूर्वक सजाने का उपक्रम किया गया है। इस युग की तीसरी संस्कृति का संबंध लोथल और रंगपुर जैसे पुरास्थलों से है। लोथल संस्कृति के विकास के तृतीय चरण में प्राप्त घोड़े की मृण्मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है।[15] इससे स्पष्ट होता है, कि हड़प्पा सभ्यता के लोग घोड़े (सैन्धव) से परिचित थे। यहाँ की कलाकृतियों में विशेषतौर पर ककुद, वृषभ, मातृदेवी की मूर्तियाँ, खिलौना–गाड़ी तथा पिण्ड प्राप्त हुए हैं, जो उच्च कोटि की कला के माध्यम से बनाये गये हैं। जो उस काल के शिल्पकारों की कार्यकुशलता के द्योतक हैं।

ताम्रपाषाणकालीन मृण्मूर्तियाँ

हड़प्पा सभ्यता की मृण्मूर्तिकला में जिस विविधता रूप–सज्जा बहुलता के दर्शन होते है, वह ताम्रपाषाण संस्कृतियों में नही हैं। इस संस्कृति में कलाभिव्यक्ति का दायरा पुनः मृद्भाण्ड एवं मृण्मूर्तियों में सिमट गया हैं। इस काल में पाषाण मूर्तियों का अभाव मिलता है। मृद्भाण्ड़ों की रूप–सज्जा और मृण्मूर्तियों की शैली में परम्परागत विशिष्टताओं

Scanned by CamScanner

के साथ नवीन अभिप्रायों और क्षेत्रीय विशेषताओं को स्थान मिला तथा उसका एक दूसरे के क्षेत्र में प्रसार भी हुआ। कायथा संस्कृति में मानव तथा पशु मृण्मूर्तियाँ अधिक मात्रा में बनाई गयी। वह प्रतीकात्मक शैली में बनी हैं। इनमें क्षेत्रीय विशेषताएँ स्पष्ट दिखती है। इस काल में मानव, पशु–पक्षीयों की मृण्मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं।पशुओं में वृषभ,मेढा,कुत्ता प्रमुख है। वृषभ का पिछला भाग चपटा है। ऐसा प्रतीत होता है, कि चपटै पृष्ठ वाली मृण्मूर्तियाँ धार्मिक कृत्य के समय पेडेस्टल पर स्थापित करने के उद्देश्य से निर्मित की गयी थी।[17]

कायथा संस्कृति के पश्चात् 'आहाड़' संस्कृति का विकास हुआ। इस संस्कृति में मृण्मूर्तियों में लंबे सींगों वाले वृषभ, बकरे, मेढ़े की आकृतियाँ उल्लेखनीय हैं। यहाँ से प्राप्त मृण्मूर्तियों में सैन्धव परंपरा की निरंतरता स्पष्ट झलकती है। यहाँ सें प्राप्त मृण्मूर्तियों पर अलंकरण किया गया है, जो विशिष्ट है। आहाड़ संस्कृति के समांतर ही मालवा संस्कृति का विकास हुआ है।[18]

मालवा संस्कृति में कुछ स्वतंत्र आकृतियों के साथ मृद्भाण्डों पर चिपकाने के लिए भी मानव एवं पशु आकृतियाँ निर्मित हुई। इस संदर्भ में नावदाटोली के उस जार की चर्चा की जा सकती है; जिस पर पुरूष, नारी, बन्दर और छिपकली की आकृतियाँ चिपकाई गई हैं।[19]

जोर्वे–नेवासा संस्कृति के विकास में मृण्मूर्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जोर्वे संस्कृति के स्थलों से मानव एवं पशु मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस संस्कृति की पुरूष मृण्मूर्तियाँ प्रकाश, दायमाबाद, चंदौली और इनामगाँव आदि के पुरास्थलों से प्राप्त हुई हैं। इनामगाँव से एक सिर रहित स्त्री मृण्मूर्ति मिली हैं। विद्वानों के अनुसार यह मातृदेवी की प्रतिमा है और उसका वाहन वृषभ है,दोनों एक दूसरे से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं।[20] इस संस्कृति की मृण्मूर्तियाँ स्वाभाविक शैली में निर्मित हैं।

वैदिक साहित्य में मृण्मूर्तिकला का उल्लेख

वैदिक कला और मृण्मूर्तिकला के स्वरूप का निर्धारण मुख्यतः साहित्यिक साक्ष्यों पर आधारित है। मैक्समूलर और एच, विल्सन महोदय जैसे विद्वान वैदिक लोगों को मूर्तिपूजक नहीं मानते हैं, जबकि वेंकटेश्वर तथा बालेसेन वैदिक देवताओं के मानवीय तथा पशु–रूपी स्वरूपों के समर्थक हैं। उनका मानना है, कि देव माननीय गुणों से युक्त है,

Scanned by CamScanner

इसलिए उन्हे वेदों में 'दिवोनर', 'नर' और 'नृपेश' कहा गया है।[21] ऋग्वेद की एक ऋचा में रूद्र को सुदृढ़ भुजाओं वाला, बहुरूपी, उग्र, तेजोमय, स्वर्णिम आभा वाला बतलाया गया है।[22] इसी प्रकार वरूण को हिरण्यमय और वस्त्रधारी रूप में उल्लेखित किया गया है।[23] ऋग्वेद 1।25।12 एक अन्य ऋचा में इन्द्र और अग्नि को नर की भाँति अलंकृत होने का उल्लेख किया गया है – 'इन्द्राग्नी शुभतः नरः'[24] उपर्युक्त प्रमाण मानव आकृतियों की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं।

वासुदेव शरण अग्रवाल का मानना है, कि वैदिककाल में प्राप्त वैदिक प्रतीकों के भावात्मक संदर्भों के आधार पर मूर्तियाँ विकसित हुई हैं।[25] ऋग्वेद में उल्लेखित "शिश्नदेव और भूर देव"[26] शब्दों की व्याख्या कर अभिनाश चन्द्र दास और जितेन्द्र नाथ बनर्जी ने लिखा है, कि इन शब्दों में मूर्तिपूजा का भाव सन्निहित है।[27]

अतः कहा जा सकता कि भारतीय मृण्मूर्तिकला जो नवपाषाणकाल से अस्तित्व में आई, जिसके माध्यम से मानव के सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन का स्वरूप उद्घटित हो सका। यह कला जनसाधारण के सुख का साधन थी। मृण्मूर्ति का निर्माण काफी सरल, सुलभ व सस्ता था। इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित सरलतापूर्वक किया जा सकता था। यह कला निर्धनों की कला के रूप में जानी जाती थी। मृण्मूर्तियों को आग में पकाने से उनमें दृढ़ता लाई जाती थीं। मृण्मूर्तिकला साधारण कलाकारों के माध्यम से जन साधारण तक पहुँची थी। यह मृण्मूर्तिकला, निरंतर महाजनपदकाल, मौर्यकाल, शुंगकाल, सातवाहनकाल, कुषाणकाल, गुप्तकाल व बाद के कालों में पर्याप्त रूप में चलती रहीं।

एरण की मृण्मूर्तिकला

सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के तत्वावधान में जो एरण में उत्खनन कार्य किये गये, उनके परिणामस्वरूप ताम्रपाषाणकाल से लेकर मध्यकाल तक की मृण्मर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनका रंग काला, धूमिल तथा हल्का लाल है। मृण्मूतियां पूर्णपक्व व अर्धपक्व प्राप्त हुई है। एरण में पशु–पक्षियों की लघु आकृतियों का निर्माण बहुतायत में किया गया था।[28]

रचना और विकासक्रम के आधार पर ताम्रपाषाणकालीन मानव मृण्मूर्तियों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया गया है :–

Scanned by CamScanner

मानव मृण्मूर्तियाँ

(1) प्रथम श्रेणी की मृण्मूर्तियों में मानव आकृति के शारीरिक अंगों का बेडौल एव दण्डवत अंकन प्राप्त हुआ है। हाथ, पैर की अंगुलियाँ, चक्षु, नासिका, मुख को नहीं दर्शाया गया है। हाथ प्रायः शरीर के समानांतर फैले प्रदर्शित किये गये हैं।

(2) द्वितीय श्रेणी की मानव मृण्मूर्तियों में नाक हाथ से उभारकर आँखे छिद्रित कर या अलग से मिट्टी के दो बिन्दुओं को चिपकाकर[31] नाभि छिद्रित कर अंकित की गयीं हैं। हाथों की रचना शारीरिक अनुपात के आधार पर नीचे की ओर लटकते हुए अथवा कंधे के समांतर की गई है। प्राप्त मृण्मूर्तियों के पैर फैले हुए हैं।[32] एक मानव मृण्मूर्ति में पैरों की रचना बैल के उल्टे सींग के आकार की है।[33]

(3) तृतीय श्रेणी की मानव मृण्मूर्तियों में शीर्ष वक्ष और कटि आदि का अंकन आनुपातिक आधार को ध्यान में रखकर किया गया है। मनुष्य के हाथ एवं पैर की अंगुलियों को रेखांकन विधि से प्रदर्शित किया गया है।[34] ग्रीवा भाग में हार एवं कटि भाग में मेखला का अंकन मिट्टी को उभारकर किया गया है, जो साधारण है।[35]

एरण उत्खनन से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री के आधार पर प्रथमकाल को लगभग 2150 ई.पू. से 700 ई.पू. तक तीन उपकालों में बांटा गया है। प्रथम उपकाल (नवपाषाण संस्कृति) द्वितीय उपकाल (कायथा संस्कृति) तृतीय उपकाल (ताम्रपाषाण संस्कृति)।

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मानव मृण्मूर्तियों का अध्ययन

एरण में सर्वप्रथम 1960 ई. से 1965 ई. के मध्य हुए उत्खनन के दौरान तृतीय उपकाल में निर्मित मानवीय मृण्मूर्तियाँ हुई हैं। प्रथम व द्वितीय उपकाल से कोई मृण्मूर्ति प्राप्त नहीं हुई है। दूसरी बार हुए, उत्खनन से (1984 ई. से 1987–88ई.) द्वितीय उपकाल के स्तर से कायथा संस्कृति से संबंधित मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। तृतीय उपकाल से प्राप्त मृण्मूर्तियों को हस्तनिर्मित, बेडोल, मुँह मिट्टी को अंगुली से दबाकर बनाया गया है। नेत्र, कान तथा नासिका को भी इसी भाँति बनाया गया है। नाभि को छिद्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। तृतीय उपकाल से प्राप्त मृण्मूर्तियों की संख्या तेरह है।[36] इनमें स्त्री मृण्मूर्तियों की संख्या सात तथा पुरूष मृण्मूर्तियों की संख्या छःहै। इन मृण्मूर्तियों के अवलोकन से प्रतीत होता है, इनका निर्माण बच्चों के मनोरंजनार्थ अथवा धार्मिक विश्वास

Scanned by CamScanner

के लिए किया गया था। मृण्मूर्तियों को आग में ठीक तरह से नहीं पकाया गया है, क्योंकि यह मृण्मूर्तियाँ अधपकी व धूमिल रंग की है।

स्त्री मृण्मृर्तियाँ

एरण, ताम्रपाषाण संस्कृति का पूर्वी मालवा व पश्चिमी बुन्देलखण्ड का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से स्त्री मृण्मूर्तियाँ, पुरूष मृण्मूर्तियों की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुई हैं। इन्हें पुरातत्त्ववेत्ताओं ने मातृदेवी की आकृति माना है। इन मृण्मूर्तियों से स्पष्ट है, कि इस काल में नारी की स्थिति सृदृढ़ थी। स्त्री मृण्मूर्तियों का विवरण निम्नलिखित हैं :–

(1) इस नारी मृण्मूर्ति को हस्तनिर्मित चिपकवाँ पद्धति से बनाया गया है। मृण्मूर्ति का सिर गोलाकार है तथा हाथ फैले हुए है। बांया हाथ भग्नावस्था में है।स्तनों को मिट्टी के मनकों द्वारा अलग से चिपकाकर बनाया गया हैं। आकृति के अर्द्धपक्व होने के कारण उसका रंग काला है। यह आकृति संभवतः मातृदेवी की है।

माप : लंबाई 37 मिलीमीटर और चौड़ाई 19 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4044, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(2) यह मृण्मूर्ति मातृदेवी की है। इस हस्तनिर्मित, भग्न मृण्मूर्ति को चिपकवाँ पद्धति से बनाया गया है। सिर भग्नावस्था में है और ग्रीवा का आकार लंबा है। कुछ मिट्टी से हाथ दबाकर बनाया गया है।दोनों हाथ भग्नावस्था है। कटि की नीचे का भाग भग्न है। उरोज उभरे हुए हैं। उन्हें मिट्टी से बनाकर अलग से चस्पा किया गया है। उदर–भाग की अपेक्षा कटिभाग विशेष उभरा हुआ है। अर्द्धपक्व होने के कारण इस आकृति का रंग कहीं धूमिल और कहीं–कहीं हल्का लाल है।

माप : लंबाई 27 मिलीमीटर और चौड़ाई 22 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5098, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

Scanned by CamScanner

(3) यह नारी मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित है। इसका सिर खण्डित अवस्था में है। हाथ और पैर के बगल में खुरचने के निशान स्पष्ट दिखाई देते हैं। आकृति के पैर फैले हुए हैं। स्तनों को उभार कर बनाया गया है। मृण्मूर्ति अधपकी होने के कारण धूमिल रंग की है। सम्भवतः यह मातृदेवी की मृण्मूर्ति है।

माप : लंबाई 42 मिलीमीटर, चौड़ाई 30 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 1980, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(4)यह नारी मृण्मूर्ति भी हस्तनिर्मित है। इस आकृति की ग्रीवा का ऊपरी भाग भग्नावस्था में है। ग्रीवा में मूर्ति में एकावलि माला धारण की हुई है। जिसमें वक्ष पर गोल लटकन लगा हुआ है। स्तनों को उभार कर प्रदर्शित किया गया है। दाँया स्तन भग्नावस्था में है। भुजाएँ विस्तीर्ण हैं, जिसमें भुजबन्ध प्रदर्शित हैं। भुजाएँ नीचे की ओर भग्न हैं। कटि को मनकों के द्वारा सुन्दर रूप दिया गया है। आकृति के पैर फैले हुए हैं। अधपकी होने के कारण आकृति का रंग धूमिल तथा कहीं–कहीं हल्का लाल है। विद्वानों के अनुसार यह मृण्मूर्ति मातृदेवी की है।

माप : लंबाई 27 मिलीमीटर और चौड़ाई 22 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 1980, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(5) यह हस्तनिर्मित मृण्मूर्ति मातृदेवी की है। इसके हाथ व पैर चिपकवाँ पद्धति से बनाये गये है किन्तु भग्नावस्था में है। स्तनों को बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसका रंग काला है।

माप : लंबाई 26 मिलीमीटर और चौड़ाई 20 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5305 एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–5)

(6) यह मृण्मूर्ति भी विद्वानों के अनुसार मातृदेवी की है। हस्तनिर्मित इस मृण्मूर्ति को चिपकवाँ पद्धति से निर्मित किया गया है। आकृति का छोटा सा मुँह हाथ से दबाकर

Scanned by CamScanner

बनाया गया है। दोनों हाथ फैले हुए हैं। मृण्मूर्ति के पैर भग्न हैं। आकृति का रंग काला है।

माप : लंबाई 47 मिलीमीटर और चौड़ाई 27 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4647, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–6)

(7) यह मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित मातृदेवी की है। उसके सिर, मुँह, कान मस्तक तथा हाथ चिपकवा पद्धति से बनाया गया है। मृण्मूर्ति का सिर गोलाकार है। मूर्ति का बांया हाथ टूटा हुआ तथा दाहिना हाथ लंबा है। स्तन छोटे बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किये गये हैं। दाहिनी ओर का स्तन भग्न है। नाभि का अंकन छिद्र द्वारा किया गया है। मृण्मूर्ति के पैर फैले हुए हैं। अधपकी होने के कारण मृण्मूर्ति का रंग काला है।

माप : लंबाई 43 मिलीमीटर और चौड़ाई 32 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5369, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–7)

पुरूष मृण्मूर्तियाँ

एरण उत्खनन से ताम्रपाषाणकालीन छः पुरूष आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनका वर्णन निम्न प्रकार है :–

(1) प्रथम पुरूष मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित है। इसका एक हाथ पूर्ण रूप से टूटा हुआ तथा दूसरा हाथ व सिर भग्नावस्था में है। दोनों पैर फैले हुए हैं।

माप : लंबाई 36 मिलीमीटर और चौड़ाई 26 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5391, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–8)

(2) द्वितीय पुरूष मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित काले रंग की है, इसके नाक, कान, आँख को छिद्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। दोनों हाथ भग्नावस्था में है बाया पैर टूटा हुआ तथा दायां पैर फैला हुआ है।

Scanned by CamScanner

माप : लंबाई 42 मिलीमीटर और चौड़ाई 38 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 827, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–9)

(3) तृतीय पुरूष मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित काले रंग की है, इसके नाक, कान, मुंह, व आखों को हाथ से दबाकर बनाया गया है, दोनों हाथ व पैर फैले हुए है।

माप : लंबाई 35 मिलीमीटर और चौड़ाई 24 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4335, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–10)

(4) चतुर्थ पुरूष मृण्मूर्ति भग्नावस्था है। दोनों हाथ प्रदर्शित करने के लिए मिट्टी को हाथ से दबाकर फैलाया गया है। इस हस्तनिर्मित मृण्मूर्ति को चिपकवा तकनीक से निर्मित किया गया है। भली–भाँति पकी न होने के कारण इस आकृति का रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 41 मिलीमीटर और चौड़ाई 32 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3258, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–11)

(5) पंचम पुरूष मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित चिपकवाँ पद्धति से बनाई गयी है। इसका सिर नुकीला और पीछे की ओर उठा हुआ प्रदर्शित है। हाथ और पैर सीधे और नुकीले है। नाक को दबाकर निर्मित किया गया है। अर्द्धपक्व होने के कारण इस आकृति का रंग धूमिल हैं।

माप : लंबाई 37 मिलीमीटर और चौड़ाई 26 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4491, एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–12)

(6) यह पुरूष मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित तथा धूमिल रंग की है। इसका सिर खण्डित हाथ फैले हुए पैर भग्न है।

माप : लंबाई 36 मिलीमीटर और चौड़ाई 23 मिलीमीटर

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या : 1463, एरण,

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–13)

ताम्रपाषाणकालीन पशु मृण्मूर्तियाँ

ताम्रपाषाणकाल में निर्मित बड़ी संख्या में पशु मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। उनमें वृषभ, श्वान, हरिण तथा हाथी विशेष उल्लेखनीय है।

निरूढ़ वृषभ (स्टाइलाइज्डबुल)

एरण उत्खनन में निरूढ़ वृषभ एवं अन्य सुडौल वृषभ की मृण्मूर्तियाँ मिलीं हैं। कुछ मूण्मूर्तियाँ अधिक भग्नावस्था में हैं, उनका उल्लेख करना संभव नही है। निरूढ़ वृषभ ताम्रपाषाण संस्कृति के पूर्व निर्मित हुए थे। इस प्रकार की वृषभ मृण्मूर्तियाँ एरण के अतिरिक्त कायथा से भी प्राप्त हुई हैं। डॉ. वी.एस. वाकणकर ने कायथा उत्खनन रिपोर्ट में उल्लेख किया है, कि निरूढ़ वृषभ मृण्मूर्तियाँ सर्वप्रथम कायथा से प्राप्त होती है।[38] परंतु एरण उत्खनन (1960–65 ई.) में निरूढ़ वृषभ के साथ–साथ सुडौल ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो कायथा संस्कृति की भाँति ही हैं। संभव है, कि कायथा संस्कृति की मृण्मूर्तिकला के प्रभाव वश ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति में भी इसी तरह की आकृति बनायी गई हों। एरण से प्राप्त वृषभ मृण्मूर्तियों को आकार–प्रकार की दृष्टि से सुन्दर बनाया गया है जिनका विवरण अग्रलिखित है :–

(1) यह निरूढ़ वृषभ की मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित है। मूसलाधार शरीर का पिछला भाग पूंछ को प्रदर्शित करता हुआ ऊपर की ओर मुड़ा है। इस वृषभ का अंतिम सिरा अर्द्धचन्द्राकार बना है। यह भाग आगे के भाग से अधिक मोटा है। वृषभ के सींग टूटे हुए हैं तथा उनके आगे का सिरा टूटा हुआ है। इस मृण्मूर्ति को पूर्ण रूप से पकाया गया है। इसका रंग लाल है। डॉ. सुरेश चन्द्र वाजपेयी इस मूर्ति को वृश्चिक की मानते हैं।[38] डॉ. श्यामकुमार पाण्डेय तथा वाकणकर महोदय इस प्रकार की मृण्मूर्तियों को निरूढ़ वृषभ की आकृति मानते है। प्रो. विवेकदत्त झा के अनुसार यह आकृति वस्तुतः हरिण की है।[39]

माप : लंबाई 85 मिलीमीटर और चौड़ाई 13.5 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 2054, एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

Scanned by CamScanner

(2) इस निरूढ़ वृषभ मृण्मूर्ति का अर्धांश ही प्राप्त हुआ है। पृष्ठभाग खण्डित है। पूंछ ऊपर की ओर उठी हुई है। इसका रंग धूमिल है। मृण्मूर्ति पूर्णतः हस्तनिर्मित है।

माप : लंबाई 61.5 मिलीमीटर और चौड़ाई 12.1 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4187, एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(3) इस निरूढ़ वृषभ मृण्मूर्ति का भी अर्धांश ही प्राप्त हुआ है। पृष्ठभाग में पूंछ मुड़ी हुई है। इसका रंग पूर्ण पक्व लाल है। यह भी पूर्णतः हस्तनिर्मित है।

माप : लंबाई 56.5 मिलीमीटर और चौड़ाई 15.5 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3749, एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(4) यह वृषभ मृण्मूर्ति पूर्णतः हस्तनिर्मित है। वृषभ मृण्मूर्ति की पूंछ स्पष्ट दिखाई गयी है। हैं। मूर्ति की मोटाई अधिक है। आकृति को कम पकाया गया है। इस कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 81 मिलीमीटर और चौड़ाई 20.3 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3390, एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(5) यह हस्तनिर्मित वृषभ मृण्मूर्ति हैं। इस मृण्मूर्ति को पूर्ण रूप से पकाया गया है। इस कारण इसका रंग लाल है। इसके मुख, पैर भग्नावस्था में है।

माप : लंबाई 32 मिलीमीटर और ऊँचाई 14 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 326,एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–5)

(6) यह हस्तनिर्मित वृषभ मृण्मूर्ति भग्नावस्था में है। यह पूर्णपक्व लाल रंग की है। पूछ स्पष्ट दिखाई गयी है।

माप : लंबाई 22 मिलीमीटर और ऊँचाई 18 मिलीमीटर

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या : 535,एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–6)

(7) इस हस्तनिर्मित निरूढ़ वृषभ मृण्मूर्ति का मुँह पृष्ठभाग तथा पैर भग्नावस्था में है। अर्द्धपक्व होने से मृण्मूर्ति का रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 32 मिलीमीटर और ऊँचाई 12 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 406,एरण

(चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–7)

(8) यह हस्तनिर्मित निरूढ़ वृषभ की मृण्मूर्ति हैं। दो अगले पैर भग्न हैं। पूंछ नीचे की ओर स्पष्ट दिखाई गयी है। मुह भग्नावस्था में है।

माप : लंबाई 31 मिलीमीटर और ऊँचाई 18 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 430,एरण

(चित्र संख्या–44 मृण्मूर्ति क्रमांक–8)

ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक गाय की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है।यह भग्नावस्था में है। इसके सिर्फ चार स्तन व पिछले दो पैर सुरक्षित है। पंजीयन संख्या–1103 (चित्र संख्या–45 मृण्मूर्ति क्रमांक–9)

ककुदमान वृषभ

सन् 1986–88 ई. में प्रो. सुधाकर पाण्डेय और डॉ. विवेकदत्त झा के निर्देशन में एरण में हुए उत्खनन के दौरान ताम्रपाषाणकालीन ककुदमान वृषभ मृण्मूर्तियों की आकृतियाँ कायथा एवं हड़प्पा संस्कृति से मिलती–जुलती हैं। इससे एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों का संबंध कायथा एवं हड़प्पा संस्कृति से सिद्ध होता है।[40] यह मृण्मूर्तियाँ पूर्णतः हस्तनिर्मित है। इनको अच्छी तरह से पकाया गया है। ये बच्चों के खिलौने व पूजन सामग्री के रूप में प्रयुक्त होती थीं। संभवतः वृषभ उनका लोकप्रिय पशु था। आकृतियों में ककुद मिट्टी को अंगुलियों से दबाकर निर्मित किये गये हैं। कुछ आकृतियों में पूंछ को अलग से जोड़ा गया है। एरण उत्खनन से लगभग 30 ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। जिनमें तेरह मृण्मूर्तियाँ ऐसी हैं, जिन्हें स्पष्ट रूप से पहिचाना

Scanned by CamScanner

जा सकता है। शेष सभी आकृतियाँ भग्न अवस्था में है। जिनकी पहचान करना कठिन है। इन तेरह ककुदमान वृषभों की आकृतियों का विवरण निम्नलिखित है :–

(1) यह ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित है, इसके आगे का भाग टूटा हुआ है। पीठ पर आकृति के अनुपात में छोटा सा ककुद और पृष्ठभाग में पूंछ के चिह्न स्पष्टतः दृष्टिगोचर हैं। इनके पिछले पैर भग्न हैं। अधपकी होने के कारण इस आकृति का रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 43 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3678, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(2) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति है, जिसका अग्रभाग मुँह, ग्रीवा, पैर और ककुद भग्नावस्था में है। ककुद स्पष्ट दिखाया गया है। इसके पीछे का भाग समतल है, इसकी पूंछ खण्डित है। पीछे के दोनों पैर छोटे हैं। इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 55 मिलीमीटर और ऊँचाई 30 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3711, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(3) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति है। इस मृण्मूर्ति के मुँह के एक ओर का भाग भग्न है। इस आकृति का आकार आगे की ओर सकरा है। आकृति को दाब पद्धति से निर्मित किया गया है। पूंछ और पीछे के पैर भग्नावस्था में है। इसके आगे के पैर छोटे हैं। इस आकृति के दोनों सींग भग्नावस्था में है। इसकी ग्रीवा लंबी और ककुद टूटा हुआ है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 50 मिलीमीटर और ऊँचाई 37 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5263, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(4) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की इस मृण्मूर्ति का मुँह दबाकर बनाया गया है। जो आगे की ओर सकरा होता गया है। इसके दोनों सींग भग्नावस्था में हैं। परंतु दाँया सींग

Scanned by CamScanner

आधार से ही टूटा है। ककुद का अंकन सिर के पीछे की ओर किया गया है। इसका ग्रीवा भाग लंबा है। इसके पीछे का भाग समतल है। इसके पूंछ का अंकन भी स्पष्ट है। इसके पिछले पैर भग्न हैं। अर्द्धपक्व होने के कारण इस मृण्मूर्ति का रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 50 मिलीमीटर और ऊँचाई 37 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4053, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(5) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति हैं। ककुद का अंकन स्पष्ट रूप से अंकित है। इसके सींग खण्डित हैं। इसका आधा मुख भग्न है। इसकी पूंछ स्पष्ट दिखाई नहीं देती है। चारों पैर पृथक–पृथक लंबे हैं। इसका रंग हल्का लाल है।

माप : लंबाई 52 मिलीमीटर और ऊँचाई 41 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4394, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–5)

(6) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति है। जिसके मुख के आगे का भाग सकरा है। इसके दोनों सींग बाहर की ओर फैले हुए हैं। ककुद का अंकन पीठ पर न होकर सिर के पीछे की ओर ग्रीवा भाग ऊपर की ओर उठा हुआ है। इस मृण्मूर्ति के पैर अपेक्षाकृत छोटे हैं। पूंछ का अंकन स्पष्ट है। इसका रंग हल्का लाल है।

माप : लंबाई 50 मिलीमीटर और ऊँचाई 37.7 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4933, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–6)

(7) इस हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ का मुँह चिपकवाँ पद्धति से बनाया गया है। अर्द्धचन्द्राकार बनाते हुए दोनों सींग अंदर की ओर मुड़े हुए हैं। दोनों सींगों के ऊपर का भाग भग्नावस्था में है। अगले पैर छोटे–छोटे व पिछले पैर भग्न हैं। इसके पीछे का भाग समतल है। इसका ककुद शंकु आकार का स्पष्ट है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 40 मिलीमीटर और ऊँचाई 47 मिलीमीटर

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या : 3985, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–7)

(8) यह हस्तनिर्मित वृषभ मृण्मूर्ति है। इसका मुँह लंबा है सिर के पीछे उठा हुआ ककुद मिट्टी को दबाकर बनाया गया है। आधार से इनके दोनों सींग टूटे हुए हैं। उनके चिह्न स्पष्ट रूप से अंकित हैं। पूंछ और पीछे के दोनों पैर भग्नावस्था में है। इसके चारों पैर भग्नावस्था में हैं। यह मृण्मूर्ति पूर्णरूप स पकी होने के कारण हल्के लाल रंग की है।

माप : लंबाई 32.5 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 794, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–8)

(9) यह ककुदमान वृषभ की हस्तनिर्मित मृण्मूर्ति है; इस मृण्मूर्ति का सिर, ग्रीवा और पैर भग्नावस्था मे है। लंबाकार ककुद और पेट का भाग आगे की ओर निकला हुआ है। इसका मुँह दबाकर निर्मित किया गया है। इसकी पूंछ अस्पष्ट और वर्ण धूमिल है।

माप : लंबाई 62 मिलीमीटर और ऊँचाई 37 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 2016, एरण

(चित्र संख्या–46 मृण्मूर्ति क्रमांक–9)

(10) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति है। इसका मुँह दबाकर बनाया गया है। जो नीचे की ओर सकरा है। मुँह के ऊपर का भाग भग्न है। ग्रीवा के पीछे की ओर उठा ककुद है। उसके पैर मूर्ति अनुपात में छोटे हैं। इसका रंग हल्का लाल है।

माप : लंबाई 75 मिलीमीटर और ऊँचाई 55 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4434, एरण

(चित्र संख्या–47 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(11) ककुदमान वृषभ की यह मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित हैं; इसके दोनों सींग भग्नावस्था में है जो आगे की ओर झुके हुए हैं। इस मृण्मूर्ति का मुँह लंबा है। इसका ककुद खण्डित है। पैर अपेक्षाकृत नुकीले और छोटे हैं। पूंछ स्पष्टतः अंकित है। इसका रंग हल्का लाल रंग है।

Scanned by CamScanner

माप : लंबाई 40 मिलीमीटर और ऊँचाई 30 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 43815, एरण

(चित्र संख्या–47 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(12) यह हस्तनिर्मित ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्ति है। इसके सींग लंबे एवं नुकीले हैं। पूंछ पीछे की ओर चिपकी हुई है। इस आकृति में कलाकार की निपुणता स्पष्ट दिखाई देती है। इसका शेष शरीरांग खण्डित है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : भग्न होने के कारण माप लेना संभव नहीं है।

पंजीयन संख्या : 582, एरण

(चित्र संख्या–47 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(13) यह ककुदमान वृषभ की हस्तनिर्मित मृण्मूर्ति है। आकृति भग्नावस्था में है। इसके सींग और पैर खण्डित है। गर्दन ऊपर की ओर उठी हुई है। इसका ककुद शंकु आकार का है। पूर्ण रूप से पकी होने के कारण इसका रंग लाल है।

माप : भग्न होने के कारण माप लेना संभव नहीं है।

पंजीयन संख्या : 578, एरण

(चित्र संख्या–47 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

सर जान मार्शल के अनुसार पंजाब और बलूचिस्तान क्षेत्र में ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों के बीच वृषभ पूजन का स्वतंत्र अस्तित्व था,[41] किन्तु डॉ. एच.डी. सांकलिया उक्त मत को महेश्वर उत्खनन के प्रमाणों के आधार पर स्वीकार नहीं करते हैं।[42] अतएव मालवा में कायथा व एरण उत्खनन से प्राप्त ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियों से यहाँ पर वृषभ पूजा का अस्तित्व स्वीकार किया गया है।

सन् 1986–88 ई. के उत्खनन में तीन विशिष्ट मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ऐसी ही विशिष्ट पशु मृण्मूर्तियाँ 1960–1965 ई. के उत्खनन में एरण से प्राप्त हुई थीं। डॉ. वाकणकर ने उन्हें वृषभ की अलंकृत आकृतियाँ माना है, किन्तु प्रो. विवेकदत्त झा के मतानुसार यह आकृतियाँ वस्तुतः हरिण की है।[43] वास्तव में हरिण ताम्रपाषाणकाल में अत्यंत लोकप्रिय पशु था। ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर दौड़ते हुए हरिणों की कतारों

Scanned by CamScanner

के चित्र निर्मित किये गये हैं। एरण और उसका निकटवर्ती क्षेत्र उस समय मैदानी व जंगली था। इस क्षेत्र में हरिणों की संख्या बहुत अधिक थी। इसी कारण मृद्भाण्डों में चित्रण के अतिरिक्त पकी मिट्टी की हरिण आकृतियाँ इस काल के लोगों ने बनाई। हरिण मृण्मूर्तियों में शरीर के सामांतर सामने की ओर फैली हुई सींगें दिखायी गयी हैं। मृण्मूर्तियों के पीछे सीधे खड़ी छोटी पूंछ प्रदर्शित की गई है। जबकि ताम्रपाषाणकाल की मृण्मूर्तियों में वृषभ की पूंछ लंबी व नीचे लटकी हुई दिखाई गयी है। हरिण आकृतियों का वर्णन अग्रलिखित है :–

हरिण मृण्मूर्ति

(1) यह हस्तनिर्मित हरिण की मृण्मूर्ति है। इसकी गर्दन ऊँची किन्तु गर्दन के ऊपर का अंश खण्डित, लंबा शरीर, पूंछ ऊपर की ओर उठी हुई। यह पूर्णपक्व लाल रंग की मृण्मूर्ति है।

माप : लंबाई 40 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4192, एरण

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(2) यह हस्तनिर्मित हरिण की मृण्मूर्ति है, जिसकी गर्दन के ऊपर का भाग तथा आगे का एक पैर खण्डित है। पूंछ छोटी और ऊपर की ओर उठी हुई है। संपूर्ण पैरों पर नाखून से उकेर कर अलंकरण किया गया है। मृण्मूर्ति का रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 37.5 मिलीमीटर और ऊँचाई 27 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5491, एरण

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(3) यह हस्तनिर्मित हरिण की मृण्मूर्ति है। अग्रभाग भग्नावस्था में है। शरीर बेलनाकार है। पृष्ठभाग में छोटी सी पूंछ ऊपर को उठी हुई है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 25 मिलीमीटर और ऊँचाई 10 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 2269, एरण

Scanned by CamScanner

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(4) यह हस्तनिर्मित हरिण की मृण्मूर्ति है। अग्रभाग भग्नावस्था में हैं। शरीर बेलनाकार है। पूर्णपक्व होने के कारण इसका रंग लाल है।

माप : लंबाई 33 मिलीमीटर और ऊँचाई 11 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 515, एरण

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(5) यह हरिण की हस्तनिर्मित मृण्मूर्ति है। अग्रभाग भग्नावस्था में हैं। पूछ छोटी ऊपर ऊठी हुई है, शरीर बेलनाकार है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

माप : लंबाई 27 मिलीमीटर और ऊँचाई 17 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 528, एरण

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–5)

(6) यह हरिण की मृण्मूर्ति है। अग्रभाग भग्नावस्था में है। पूछ छोटी ऊपर ऊठी हुई है। रंग धूमिल है।

पंजीयन संख्या –2289

(चित्र संख्या–48 मृण्मूर्ति क्रमांक–6)

हस्थि मृण्मूर्ति

एरण उत्खनन से हस्थि की कई मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। लेकिन उनमें से केवल दो मृण्मूर्तियाँ ही वर्णन योग्य है।[44] इनका वर्णन निम्नलिखित हैं :–

(1) हस्थि की यह मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित हैं, इसे चिपकवाँ पद्धति से बनाया गया है। मृण्मूर्ति की सूँड ऊपर को उठी हुई भग्नावस्था है। एक कान पूर्ण व दूसरा कान भग्न है मस्तक मिट्टी को दबाकर बनाया गया है।अगले एक पैर को छोड़कर बाकी तीन पैर भग्नावस्था में है,पूंछ खण्डित है। इस मृण्मूर्ति का रंग हल्का लाल रंग है।

माप : लंबाई 90 मिलीमीटर और ऊँचाई 50 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 580, एरण

Scanned by CamScanner

(चित्र संख्या–49 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(2) हस्थि की यह मृण्मूर्ति हस्तनिर्मित है। इसका मुँह खुला हुआ है। सूँड ऊपर को ओर उठी हुई है। उठे हुए दोनों कर्ण इस मृण्मूर्ति की सुन्दरता को द्विगुणित करते हैं। मस्तक पर सामांतर रेखाएँ बनी हुई हैं। शरीर पर रस्सियों के निशान बने हैं। जो कि होदा कसने के प्रयोग के साक्ष्य हैं। पूंछ भग्न है। आगे के दोनों पैर सुरक्षित हैं तथा पिछलें दोनों पैर भग्नावस्था में है। आकृति का रंग हल्का लाल है।

माप : लंबाई 37 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 5296, एरण

(चित्र संख्या–49 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

एरण उत्खनन में ताम्रपाणकाल से एक अश्व मृण्मूर्ति प्राप्त हुई हैं।[45] जिसका विवरण अग्र प्रकार है :–

अश्व मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित अश्व की मृण्मूर्ति हैं। इसका मुँह छोटा किन्तु लंबा है। अयाल स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस आकृति के चारों पैर व पूंछ भग्नावस्था में है। इसके पीछे का दाहिना पैर अंदर की ओर मुड़ा हुआ है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल मटमैला है।

माप : लंबाई 42 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 4420, एरण

(चित्र संख्या–49 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

श्वान मृण्मूर्ति

एरण उत्खनन के ताम्रपाषाणकाल की से पाँच श्वान की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। दो श्वान मृण्मूर्ति सुरक्षित अवस्था में है जिनका वर्णन निम्न प्रकार है :–

(1) यह हस्तनिर्मित श्वान की मृण्मूर्ति है। मृण्मूर्ति का मुख बंद है। दायाँ कान भग्न है बायाँ कान ऊपर की ओर उठा हुआ है। मस्तक भाग भग्नावस्था मे है। इसके आगे तथा पीछे का गया पैर कुछ लंबा है। अर्द्धपक्व होने के कारण इसका रंग धूमिल है।

Scanned by CamScanner

माप : लंबाई 718 मिलीमीटर और ऊँचाई 25 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 3858, एरण

(चित्र संख्या–49 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(2) यह हस्तनिर्मित श्वान की मृण्मूर्ति है। मृण्मूर्ति का मुख बंद है। कान स्पष्ट दिखाये गये है, मस्तक भाग उठा हुआ है। आगे के पैर लम्बे है। इसका रंग धूमिल है।

पंजीयन संख्या : 603, एरण

(चित्र संख्या– 50 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

पक्षी मृण्मूर्तियाँ

सन् 1986 ई. के उत्खनन मे पक्षियों की केवल सात मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।[46] इन मृण्मूर्तियों से एरण के ताम्रपाषाणकालीन मानव एरण क्षेत्र आस–पास पाये जाने वाले पक्षियों के बारे जानकारी होती है। इन्हें संभवतः बच्चों के खिलौने मनोरंजन के उद्देश्य से निर्मित किया गया था। दोनों मृण्मूर्तियों को पूर्णतः पकाया गया है। इनमें कला का पक्ष कमजोर है। यह मृण्मूर्तियाँ असुघड़ व भग्न होने के कारण ठीक तरह से पहचानी नहीं जा सकती है। पक्षी मृण्मूर्तियों का विवरण निम्नलिखित है :–

(1) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित पक्षी की मृण्मूर्ति है। इसका अधिकांश भाग भग्नावस्था में है। इसलिए इसकी पहचान करना कठिन है। यह पूर्णपक्व होने के साथ धूमिल रंग की है।

माप : लंबाई 32 मिलीमीटर और ऊँचाई 15 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 436, एरण

(चित्र संख्या–50 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(2) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित निरूढ़ पक्षी की मृण्मूर्ति है। पक्षी का एक पंख सुस्पष्ट हैं। इसकी चोंच भग्नावस्था में है। इस पक्षी की भी पहचान करना कठिन है। पूर्णपक्व होने के कारण आकृति का रंग लाल है।

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या : 637, एरण (अ)

(चित्र संख्या–50 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

(3) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित निरूढ़ पक्षी की मृण्मूर्ति है। पक्षी के दोनों पंख सुस्पष्ट हैं। इसकी चोंच खण्डित है। मृण्मूर्ति के पैर भग्नावस्था में हैं। इस पक्षी की भी पहचान करना कठिन है। इसे पूर्णतः पकाया गया है। इसका रंग लाल है।

माप : लंबाई 32 मिलीमीटर और ऊँचाई 17 मिलीमीटर

पंजीयन संख्या : 519, एरण

(चित्र संख्या–50 मृण्मूर्ति क्रमांक–4)

(4) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित निरूढ़ पक्षी की मृण्मूर्ति है। पक्षी के दोनों पंख सुस्पष्ट हैं। इस पक्षी की भी पहचान करना कठिन है। पूर्णपक्व होने के कारण आकृति का रंग लाल है।

पंजीयन संख्या : 3664, एरण

(चित्र संख्या–50 मृण्मूर्ति क्रमांक–5)

(5) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित निरूढ़ पक्षी की मृण्मूर्ति है। सिर्फ चोंच का भाग सुरक्षित है। आकृति का रंग लाल है।

पंजीयन संख्या : 2059, एरण

(चित्र संख्या–51 मृण्मूर्ति क्रमांक–1)

(6) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित निरूढ़ पक्षी की मृण्मूर्ति है। सिर्फ चोच का भाग सुरक्षित है। सम्भवतः यह तोते की मृण्मूर्ति है। आकृति का रंग लाल है।

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या : 5154, एरण

(चित्र संख्या–51 मृण्मूर्ति क्रमांक–2)

(7) पक्षी मृण्मूर्ति

यह हस्तनिर्मित पक्षी की मृण्मूर्ति है। अर्धभाग शेष है। आकृति का रंग लाल है।

पंजीयन संख्या : 301, एरण

(चित्र संख्या–51 मृण्मूर्ति क्रमांक–3)

उक्त विवरण से स्पष्ट है, कि एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोग मानव तथा पशु, पक्षी की जो मृण्मूर्तियाँ बनाते थे। वह उनकी कलाप्रियता को उद्घटित करता है। इन मृण्मूर्तियों से इस काल के मानव की धार्मिक व पशु – पक्षियों के प्रति प्रेम–भावना की अनुभूति प्रदर्शित होती है। बच्चों के खेलने व मनोरंजन के लिए भी मृण्मूर्तियों का निर्माण किया जाता था। उक्त मृण्मूर्तियों के अध्ययन से एरण में निवासरत ताम्रपाषाणकालीन मानव के विभिन्न पक्ष उजागर हुए हैं।

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 अंर्स्टफिशर : दि नेसेसिटी ऑफ आर्टस, नई दिल्ली, 1990, पृ. 17

2 वाजपेयी,के.डी : भारतीय जीवन दर्शन और ललित कला : सरोवर, प्रवेशांक वाराणसी, अप्रैल–जून, 1987,पृ. 6

3 ईश्वर संहिता : 1/61

4 खरे ,एम. डी. : विदिशा, भोपाल, 1984, पृ. 210

5 स्टेला, क्रैमरिश : दि आर्ट ऑफ इंडिया : ट्रेडीशन ऑफ इंडियन स्कल्पचर, पेटिंग एण्ड आर्किटेक्चर, फाइडोर प्रेस, लंदन, सन् 1954 ई., पृ. 189

6 राव, टी. ए. गोपीनाथ : ऐलीमेन्ट ऑफ हिन्दू आईकोनोग्राफी वोल्यूम 1 एवं 2, मद्रास, 1914–15, पृ. 19

7 सिंह, अरविन्द कुमार : प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला, (म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी), भोपाल, 1994, पृ. 3

8 वही :

9 विजेट एण्ड रेमंड आल्चिन : दि राइज ऑफ सिविलाइजेसन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, दिल्ली 1983, पृ. 62

10 सिंह, कृष्ण कुमार : उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, दिल्ली, 2001, पृ. 62

11 एम. के, धवलिकर : मास्टर पीसेज ऑफ इडियन टेराकोटाज, बम्बई, 1977, पृ. 9

12 अग्रवाल, वासुदेव शरण : भारतीय कला, वाराणसी, 1977, पृ. 24

13 मार्शल, जान : मोहनजोदड़ों एण्ड दि इण्डस सिविलाइजेसन, लंदन, सन् 1931, पृ. 41

14 थपल्याल, किरन कुमार और शुक्ल, संकटाप्रसाद : सिन्धु सभ्यता, लखनऊ, सन् 1985, पृ. 34

15 सिंह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 46

16 पाण्डेय, जयनारायण : पुरातत्त्व विमर्श, इलाहाबाद, 1988, पृ. 398–421

17 ए, घोष : ऐन इन साइक्लोंपिडिया ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी, पटना, 1989, पृ. 338–339

18 डी. एम. गार्डन : भारतीय संस्कृति की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि, पटना, (हिन्दी अनुवाद), 1970, पृ. 60–71

19 ओ. मी.,मनचन्दा : ए स्टडी ऑफ हड़प्पन पॉटरी ,दिल्ली, 1972, पृ. 46

20 दुबे, नागेश : एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 35

21 ऋग्वेद : 3/4/5

22 ऋग्वेद, : 2/33/9

23 ऋग्वेद : सायणभाण्ड संहिता : सं. एफ मेक्समूलर : लंदन, ग्रेट ब्रिटेन : संस्कृत अनुवाद वैदिक संशोधन मंडल, पूना, महाराष्ट्र 1933–51 ई.

Scanned by CamScanner

24 ऋग्वेद : 1/25/12

25 ऋग्वेद : 1/21/2

26 अग्रवाल, वासुदेव शरण : भारतीय कला, वाराणसी, 1982, पृ. 31–36

27 ऋग्वेद : 7/21/5, 10/99/3, 10/27/19, 1/104/24, 10/87/2, 10/87/14

28 बनर्जी जितेन्द्र नाथ : दि डेवलमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, 1956, पृ. 42

29 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 36

30 एरण एण्टिक्वटी सागर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.),सन् 1980, संख्या 4044

31 वही, : संख्या 4334

32 वही, : संख्या 4040

33 वही, : संख्या 4365

34 वही, : संख्या 827

35 सिंह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त,पृ. 106

36 एरण एण्टिक्विटिज, सागर विश्वविद्यालय (म.प्र.),1980, संख्या 562

37 सिंह, कृष्णकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 109

38 वाकणकर, वी.एस. : कायथा उत्खनन रिपोर्ट दि विक्रम जर्नल ऑफ विक्रम यूनीवर्सिटी, उज्जैन, 1967, पृ. 24

39 वाजपेयी, सुरेशचन्द्र : सागर जिला की प्राचीन वास्तु एवं मूर्तिकला का अध्ययन 1978, (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध ,सागर वि. वि. सागर म. प्र.), पृ. 233

40 झा, विवेकदत्त : "पिक्यूलियर टेराकोटा फिंगराइन्स फ्राम चाल्कोलिथिक एरण " प्राच्य प्रतिभा, अंक 9–10,1981–82, पृ. 108–10

41 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 42

42 मार्शल, जान : मोहनजोदड़ो एण्ड दि इण्डसबेली सिविलाजेशन जिल्द 1, लंदन, पृ 72

43 सांकलिया, एच.डी.व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर एण्ड नावदाटोली, पूना एण्ड बड़ौदा, 1958, पृ. 203

44 झा, विवेकदत्त : प्राच्य प्रतिमा, पूर्वोक्त

45 सिंह, कृष्ण कुमार : पूर्वोक्त, पृ. 134

46 वही : पृ. 134–135

47 दुबे, नागेश : पूर्वोक्त, पृ. 52

Scanned by CamScanner

अध्याय षष्ठम्

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का अध्ययन

Scanned by CamScanner

एरण में किये गये विभिन्न उत्खननों से ताम्रपाषाण संस्कृति के विविध पक्ष उजागर हुए हैं। एरण से भारत के अन्य ताम्रपाषाणकालीन केन्द्रों की भांति मानव के दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली विविध वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। जिनसे आद्यैतिहासिक काल के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पक्षों पर विशेष प्रकाश पड़ा है।

ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेष

यहाँ के निवासियों ने जंगलों को साफ कर काली मिट्टी के ऊपर निवास किया। चित्रित मृदभाण्ड, विशिष्ट ब्लेड उद्योग, अर्द्ध–कीमती पत्थर के मनके, ताम्र–उपकरण, खेती के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थर के छल्ले, (Stone-rings) प्रस्तर कुठार तथा पकी मिट्टी की आकृतियाँ प्रायः ताम्रपाषाण संस्कृतियों की विशेषता मानी जाती है।[1] ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के अन्य केन्द्रों की तरह एरण से भी उपर्युक्त सभी वस्तुएँ उपलब्ध हुई है। एरण के प्रथमकाल से धूसर मृदभाण्डों की प्राप्ति की पुष्टि परवर्ती कायथा उत्खनन द्वारा भी होती है।[2] इस काल के अवशेषों के साथ प्रस्तर कुठारों की प्राप्ति भी मालवा क्षेत्र में नवीन उपलब्धि मानी गयी है। कालान्तर में कायथा में भी ताम्रपाषाण संस्कृति की सतह से प्रस्तर कुठार प्राप्त हुए हैं।

मिट्टी की विशाल सुरक्षा–प्राचीर और खाई तत्कालीन सुरक्षात्मक उपायों के स्वरूप को प्रदर्शित करती है। स्वर्ण के पत्तर की प्राप्ति के द्वारा ताम्रपाषाण संस्कृति में प्रचलित विनिमय की प्रथा का आभास मिलता है। भवनों की योजना का ज्ञान सीमित उत्खनन के कारण नहीं हो पाया है, किन्तु उत्खनन द्वारा ज्ञात फर्श की कई सतहें जहाँ एक ओर फर्श के स्वरूप की, वहीं दूसरी ओर दीर्घकालीन निवास की द्योतक हैं। विविध दैनिक उपयोगी वस्तुओं तथा मृद्भाण्डों के द्वारा तत्कालीन निवासियों की रूचि, आचरण व जीवन पद्धति की जानकारी प्राप्त होती हैं। प्राप्त पुरावशेषों का वर्णन अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया गया है :–

1. धातु निर्मित वस्तुएँ
2. प्रस्तर निर्मित वस्तुएँ

Scanned by CamScanner

3. पकी मिट्टी की वस्तुएँ
4. शंख तथा अस्थि निर्मित वस्तुएँ
5. मनके
6. भवन अवशेष

धातु निर्मित वस्तुएँ

उत्खनन से ज्ञात होता है, कि ताम्रपाषाणकाल के निवासियों ने प्रस्तर उपकरणों के अतिरिक्त धातुओं ताँबा, कांसा,[3] चाँदी,[4] तथा स्वर्ण का उपयोग दैनिक वस्तुओं के निर्माण हेतु किया था। वे लोहे से लगभग अपरिचित थे। यद्यपि कुछ संकेत ऐसे मिले हैं, कि ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता के अंतिम चरण में लोहे का प्रचलन हो गया था। एरण व महिदपुर,(उज्जैन) उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाणकालीन स्तर से लोहे के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए हैं।[5] एरण उत्खनन में ताँबे के साथ–साथ स्वर्ण प्रचलन की जानकारी स्वर्ण के गोलाकार पत्तर के माध्यम से होती है। महिदपुर उत्खनन से भी एक स्वर्ण पत्तर (टुकड़ा) प्राप्त हुआ है।[6]

ताम्र–उपकरण

ताम्रपाषाणकालीन सभी केन्द्रों से ताम्र–उपकरणों की प्राप्ति हुई हैं। एरण के ताम्रपाषाण काल की सतह से दो ताम्र–कुठार के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। इनमें से एक बड़ा टुकड़ा सुरक्षा प्राचीर से उपलब्ध हुआ है।[7] ताम्र–निर्मित मुद्रिकाओं टुकड़े, छल्ले, बाणफलक आदि भी उपलब्ध हुए हैं। उपलब्ध सामग्री प्रमाणित करती है, कि ताम्रपाषाणकाल के निवासियों को अस्त्र–शस्त्र तथा श्रृंगार प्रसाधन के उपकरणों की जानकारी थी। ताम्र उपकरणों को निम्नांकित श्रेणियों में विभाजित किया गया है :–

अस्त्र–शस्त्र

ताम्र कुठार

बाणफलक

आभूषण

ताम्रकुठार

(1) एरण उत्खनन से सावधानीपूर्वक निर्मित सुन्दर ताम्रकुठार का लगभग चतुर्थांश, कार्यांग का अर्धांश सुस्पष्ट, धारदार कार्यांग प्राप्त हुआ है। लंबाई 59 मिलीमीटर (चित्र संख्या–52)

Scanned by CamScanner

(2) एरण उत्खनन सें एक ताम्र–कुठार का टूटा हुआ भाग मिला है।

पंजीयन संख्या : 2221,एरण (चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 1)

बाणफलक

(1) एरण में ताम्रपाषाणकाल से एक ताम्रनिर्मित सुस्पष्ट बाणफलक प्राप्त हुआ है। स्वरूप के आधार पर इसकी पहचान छेनी, दांत खोदनी (Tooth pick) अथवा सुई से नहीं की जा सकती। मध्य–भारत के ताम्रपाषाण संस्कृति के केन्द्रों से प्राप्त यह पहला बाणफलक है। पूर्ण बाणफलक का निचला सिरा नुकीला, मध्य में चपटा, चौपहलु ऊपर का सिरा छेनी की तरह चपटा और धारदार निचला सिरा नुकीला होने के कारण इसका उपयोग छेनी की तरह संभव नहीं है। लंबाई 91 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या : 4124, एरण

(चित्र संख्या–53 आकृति क्रमांक 1)

(2) एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक पूर्ण रूप से बना हुआ, बाणफलक प्राप्त हुआ है। इसके तीनों सिरे नुकीले व काफी तीक्ष्ण बनाये गये हैं। लंबाई 52 मिमी पंजीयन संख्या – 4766, एरण (चित्र संख्या–55 आकृति क्रमांक 1)

(3) एरण उत्खनन से एक ताम्र–शलाका प्राप्त हुई है। इसका उपयोग भी संभवतःबाणफलक के रूप में किया जाता होगा। पंजीयन संख्या 2332, एरण, (चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 2)

(4) एरण उत्खनन से एक भूथरा बाणफलक प्राप्त हुआ है। इसके दोनों सिरा भोथरे बनाये गये है। लंबाई 58 मिमी, पंजीयन संख्या 2611,एरण (चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 3)

(5) एरण से एक छोटा बाणफलक प्राप्त हुआ है। जिसका सिरा काफी नुकीला बनाया गया है। प्रोफेसर विवेकदत्त झा के अनुसार इसका उपयोग सुई के रूप में होता होगा। लंबाई 26 मिमी, पंजीयन संख्या 1711,एरण (चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 4)

(6) एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक टूटा हुआ बाणफलक का अर्धांश प्राप्त हुआ है। पंजीयन संख्या 967 एरण (चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 5)

आभूषण

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से आभूषण के रूप में मुद्रिकाएं तथा चूड़ियाँ मिलीं हैं, जो निम्नलिखित है :–

1. ताम्र–निर्मित मुद्रिका का ऊपरी अर्धांश–भाग, पंजीयन संख्या 1333 एरण (चित्र संख्या–53 आकृति क्रमांक 2)

Scanned by CamScanner

2. ताम्र–निर्मित चक्राकार दूसरी मुद्रिका पंजीयन संख्या 4565 एरण
(चित्र संख्या–53 आकृति क्रमांक 3)

3. पूर्ण मुद्रिका, चक्राकार मुद्रिका मुख पर वृत्त के अंदर प्रदर्शित कमलाकृति।
एरण प्रथम काल। (चित्र संख्या–55 आकृति क्रमांक 2)

4. मुद्रिका का मुख चपटा, अंडाकार आकृति, पंजीयन संख्या 4563, एरण
(चित्र संख्या–55 आकृति क्रमांक 3)

5. ताम्र–निर्मित पूर्ण चूड़ी, दोनों किनारे अलग–अलग घुण्डी के रूप में निर्मित[8], लगभग चक्राकार, अनुभाग, अधिकतम व्यास 60 मिलीमीटर।
पंजीयन संख्या 3991, एरण (चित्र संख्या–53 आकृति क्रमांक 4)

6. उत्खनन में एक चूड़ी का टूटा हुआ भाग प्राप्त हुआ है।
पंजीयन संख्या 7074
(चित्र संख्या–54 आकृति क्रमांक 6)

अंजन–शलाकाएँ

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से दो अंजन–शलाकाएँ प्राप्त हुई है। उनका वर्णन निम्न प्रकार है :–

1. यह अंजन शलाका पूर्ण रूप में प्राप्त हुई है। इसका एक भाग नुकीला तथा दूसरा भाग मोटाई युक्त बनाया गया है। लंबाई 61 मिमी पंजीयन संख्या 1984,एरण (चित्र संख्या–56 आकृति क्रमांक 1)

2. यह अंजन–शलाका पूर्ण रुप से निर्मित है। इसके दोनों सिरे नुकीले बनाये गये हैं। पंजीयन संख्या 1711,एरण लंबाई 98 मिमी (चित्र संख्या–56 आकृति क्रमांक 2)

स्वर्ण

उत्खनन में स्वर्ण का एक पतला चक्राकार टुकड़ा प्राप्त हुआ है। इसके द्वारा जहाँ एक ओर तत्कालीन निवासियों के स्वर्ण ज्ञान की जानकारी मिलती है वहीं दूसरी ओर उनके बीच प्रचलित विनिमय प्रणाली का भी अभिज्ञान होता है।[9] इस चक्राकार टुकड़े का उपयोग आभूषण के रूप में भी किए जाने का अनुमान होता है। माप :– पूर्ण व्यास 20.5 मिलीमीटर, वजन 20 ग्रेन, एरण प्रथम काल। चित्र संख्या –57)

Scanned by CamScanner

एरण उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाणकालीन स्तर से कुछ स्वर्ण वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं,जो निम्न प्रकार से हैं :–

(1) यह चूड़ी का सोने से मढ़ा टुकड़ा है।

एरण उत्खनन,पंजीयन संख्या, 3424 एरण, प्रथम काल

(2) यह सोने का मढ़ा कान का आभूषण लगता है।

एरण उत्खनन, संख्या–3419,एरण, प्रथम काल

(3) यह सोने का पतला छोटा आयताकार पात्र है।

एरण उत्खनन, संख्या–3455 –एरण, प्रथम काल

(4) यह स्वर्ण मुद्रिका है। एरण प्रथम काल (चित्र संख्या –58)

प्रस्तर निर्मित वस्तुएँ

एरण के प्रथमकाल से नवपाषाण उपकरण तथा लघुपाषाण उपकरण उद्योग ज्ञात हुए हैं। लघुपाषाण उपकरण ताम्रपाषाण संस्कृति की सतह से महेश्वर, नावदाटोली, कायथा, नागदा, मनोटी, महिदपुर तथा आवरा से भी प्राप्त हुये हैं। ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेषों के साथ नवपाषाण उपकरणों की प्राप्ति दोनों संस्कृतियों के पारस्परिक संबंधों को प्रदर्शित करती है। एरण के प्रथमकाल से तीन नवपाषणकालीन कुठार प्राप्त हुए हैं।[10] उत्खनन में प्राप्त ये तीनों उपकरण खण्डित हैं। चौथा पूर्ण प्रस्तरयुगीन कुठार ऊपरी सतह से सर्वेक्षण में मिला था। यद्यपि इसके काल निर्धारण का यथेष्ठ प्रमाण हमारे पास नहीं है, तथापि अनुमानतः इसे ताम्रपाषाणकाल से संबंधित माना जा सकता है।(चित्र संख्या –59) उत्खनन में प्राप्त तीनों खण्डित उपकरण अच्छी तरह घिसकर चिकनाये हुए तथा ओपदार हैं। तीनों उपकरण छोटे कुठार की तरह प्रयुक्त होते होगें। इनके कार्याग के समीप का अंश भी उपलब्ध हुआ है, किन्तु संभवतः संपूर्ण उपकरण को चिकनाया और पालिश किया गया था। डॉ. सांकलिया के मतानुसार नवप्रस्तरयुगीन पालिशयुक्त उपकरण विरले और महत्वपूर्ण हैं।[11]

लघुपाषाण उपकरण (Microliths)

ताम्रपषाणकाल की सतह से कुल 583 लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं।[12] इनमें सामान्तर किनारों वाले ब्लेड़ों की संख्या अधिक हैं।(चित्र संख्या –60,61,62,63,) क्रिस्टेडरिज पद्धति से बने ये ब्लेड प्रायः चाल्सीडोनी पत्थर के है। कुछ उपकरण जास्पर

Scanned by CamScanner

तथा चर्ट पर भी बने हैं। एरण में प्राप्त लघुपाषाण उपकरणों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :–

1 समान्तर किनारों वाले ब्लेड़
2 अर्धचन्द्र (लूनेट्स)
3 अग्रास्त्र (प्वाईट्स)
4 चाकू जैसी धार वाले ब्लेड़ (पेन–नाइफ ब्लेड़)
5 फलक (फ्लेक)
6 लंबी धार वाले क्रीड़ (फ्लूटेड कीर)
7 समलंब (टेराजीस)

समानांतर किनारों वाले ब्लेड़ ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषता है। इस प्रकार के ब्लेड़ महेश्वर–नावदाटोली में बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं।[13] ताम्रपाषाणकाल में धातु का प्रयोग काफी मात्रा में आरंभ हो गया था, अतः पाषाण उपकरणों की उपयोगिता क्रमशः कम होनी शुरू हो गयी थी, किन्तु पत्थर के ब्लेड़ मानव के व्यावहारिक जीवन में काफी उपयोगी थे। इसलिए उनका प्रचलन बड़ी मात्रा में जारी रहा।

लघुपाषाण उपकरणों को लकड़ी अथवा हड्डी की मूठों या बांस की लकड़ी के बीच में फंसाकर उपयोग में लाया जाता था। इनका उपयोग आरी, हंसिया तथा बाणफलक की तरह तो होता ही था, वस्तु को छीलने, खुरचने, छेद करने तथा तराशने के काम में भी आते थे।

प्रस्तर निर्मित अन्य वस्तुएँ

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त प्रस्तर निर्मित अनेक ऐसी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। जिनसे तत्कालीन मानव जीवन के विविध पक्षों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। प्रस्तर निर्मित वस्तुओं को निम्नांकित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :–

1. पत्थर का छल्ला
2. सिल–बट्टा
3. प्रस्तर–हथौड़ा
4. पत्थर का गोला
5. धार करने का पत्थर

Scanned by CamScanner

6. छोटी गोली
7. तौल–बाँट तथा मोहरा

1. पत्थर का छल्ला (Ring Stone)

नवपाषाणकाल तथा ताम्रपाषाणकाल में कृषि की शुरूआत के द्योतक पत्थर के छल्ले विभिन्न उत्खननों से प्राप्त हुये हैं। कृषि की आरंभिक अवस्था में हल से अनभिज्ञ मानव नुकीली लकड़ी के द्वारा मिट्टी खोदकर बीज बोता था। लकड़ी से अधिक गहराई तक मिट्टी खोदी जा सके इस उद्देश्य से उसे वजनदार बनाने के लिए उसके ऊपरी सिरे पर पत्थर के छल्ले लगाये जाते थे। एरण के साथ–साथ ऐसे छल्ले, महेश्वर–नावदाटोली, कायथा, नेवासा तथा चंदोली से भी मिले हैं।

क्रमांक (1) यह पत्थर का छल्ला लगभग अर्धांश रूप में प्राप्त हुआ है। गोलाकार मध्य में लकड़ी फंसाने हेतु छिद्र किया गया है। छिद्र की दीवारें उपयोग से घिसकर चौड़ी हो गई है। छिद्र का व्यास 38 मिमी, पंजीयन संख्या 3911,एरण (चित्र संख्या–64 आकृति क्रमांक1)

क्रमांक (2) पत्थर के छल्ले का लगभग अर्धांश, लगभग आयताकार छल्ला मध्य में लकड़ी का सिरा लगाने के लिए गोलाकार छिद्र, लकड़ी के उपयोग और घर्षण से चिकनी हुई छिद्र की दीवारें, छिद्र का व्यास 30 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 3364, एरण (चित्र संख्या–64 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) यह पत्थर का छल्ला लगभग अर्धांश भाग आयताकार बलुये पत्थर पर निर्मित है। लकड़ी पिरोने हेतु छिद्र पंजीयन संख्या 4513, एरण (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक1)

2. सिल–बट्टा

एरण की भांति अन्य स्थानों महेश्वर–नावदाटोली[14], कायथा[15], नेवासा में भी ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। उत्खननों से उपलब्ध सिलबट्टों, पत्थर के छल्लों तथा अनाज के दानों के अवशेषों के द्वारा प्रमाणित होता है, कि ताम्रपाषाण संस्कृति के निवासी अन्न उत्पादन करते थे। अनाज को कूटकर तथा पीसकर भोजन के रूप में इसका उपयोग किया जाता था। कायथा में इस काल से गेहूँ तथा चावल के जले हुये दानें मिले हैं।[16]

Scanned by CamScanner

सिल

क्रमांक (1) काले पत्थर पर निर्मित घोड़े की जीन सदृश्य सिल का टूटा हुआ अर्धांश, लगभग आयताकार स्वरूप, किनारों का निर्माण सावधानी पूर्वक नहीं किया गया है। निचला सिरा समतल, उपयोग के कारण यह चिकनी तथा गहरी हो गयी है। पंजीयन संख्या 469 एरण (चित्र संख्या–64 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (2) लाल बलुये पत्थर पर निर्मित, आयताकार सिल किनारों का निर्माण सावधानीपूर्वक नहीं किया गया। निचला सिरा समतल उपयोग के कारण इसकी ऊपरी सतह चिकनी व गहरी हो गई है। पंजीयन संख्या 4936 एरण (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 2)

बट्टा

एरण उत्खनन में विभिन्न आकारों और उपयोगों वाले बट्टे उपलब्ध हुए हैं। कुछ बट्टे लगभग आयताकार हैं। कुछ बेलनाकार तो कुछ गोलाकार। इनमें कुछ कूटने के उपयोग में आते थे तथा कुछ पीसनें के, बट्टों के निर्माण में विविध प्रस्तर खण्ड़ों का उपयोग किया गया है। कुछ बट्टों की सतह को हथौड़े की सहायता से टॉक कर खुरदरा बनाया गया है, ताकि उनसे अच्छी तरह पिसाई की जा सके।

क्रमांक (1) काले पत्थर पर निर्मित लगभग आयताकार बट्टा, निचली सतह समतल, ऊपरी सतह लगभग अर्ध–गोलाकार, हथौड़े द्वारा खुरदरी की गई सतहें। गेहूँ तथा चटनी पीसने के लिए प्रयुक्त । (चित्र संख्या–64 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (2) काले पत्थर पर निर्मित बट्टा, चौड़ाई की ओर दो सतहें प्रयोग के कारण चिकनी तथा समतल, शेष दो सतहें लगभग गोलाकार, लंबाई के दोनों ओर हथौड़े की तरह प्रयुक्त सतहों पर चोटों के निशान। बट्टा तथा प्रस्तर हथौड़ा की तरह प्रयुक्त। (चित्र संख्या–64 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक(3) लाल बलुयें पत्थर पर निर्मित बट्टा चौडाई की ओर दो सतहें प्रयोग के कारण चिकनी तथा चोट के निशान।(चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 3)

3. प्रस्तर हथौड़ा

लघुपाषाण उपकरणों के निर्माण तथा ऐसे ही अन्य कार्यों में प्रस्तर के हथौड़ों का प्रयोग किया जाता था। महेश्वर–नावदाटोली तथा कायथा में भी प्रस्तर हथौड़े ताम्रपाषाण

Scanned by CamScanner

काल में पाये गये हैं। इनका उपयोग कभी–कभी लघु लोढ़ा (Small Rubber Stone) की तरह होता है।[17]

क्रमांक (1) प्राकृतिक बेलनाकार हथौड़ा, लगभग गोल अनुभाग, लंबाई के दोनों सिरों पर चोट के निशान, शेष सतहें चिकनी। (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (2) लगभग गोलाकार प्रस्तर हथौड़ा, ऊपर और नीचे की सतह छोड़कर गोलार्द्ध में चारों ओर सतहें उपयोग के कारण खुरदरी हो गई है। इसका निर्माण लाल–बलुआ पत्थर पर किया गया है। (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (3) लगभग गोलाकार प्रस्तर हथौड़ा ऊपर की सतह उपयोग के कारण खुरदरी इसका निर्माण बलुये पत्थर पर हुआ है। पंजीयन संख्या 5413 एरण (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 6)

4. पत्थर का गोला (Stone Ball)

महेश्वर–नावदाटोली[18], कायथा[19], आवरा, नेवासा, आदि स्थानों की तरह एरण में भी पत्थर के छोटे गोलों का निर्माण किया जाता था। एरण उत्खनन में ऐसे गोले काफी मात्रा में प्राप्त हुए हैं। इनमें से कुछ पूर्ण गोलाकार हैं। इनके संबंध में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। डॉ. सांकलिया इनके तौल–बाँट (Weight) होने की संभावना के साथ–साथ इनका उपयोग गोफन पत्थर के रूप में किया जाना भी बतलाते हैं।[20] डॉ. वाकणकर के अनुसार पत्थर के इन गोलों को रस्सी के सिरें में बांधकर पशु–पक्षियों को पकड़ने के उपयोग में लाया जाता था।[21] डॉ. वी.एस. वाकणकर का अनुमान अधिक सार्थक प्रतीत होता है।

क्रमांक (1) प्रस्तर का गोला, खुरदरी सतहें, काले पत्थर पर निर्मित, गोले का व्यास 171 मिलीमीटर, (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (2) प्रस्तर का गोला, खुरदरी सतहें, काले पत्थर पर निर्मित किया गया है। व्यास 160.5 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4144, एरण (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (3) प्रस्तर का गोला, उपरोक्तानुसार,व्यास 149 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3995,एरण (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (5) प्रस्तर का गोला, लगभग गोलाकार, सतहें खुरदरी काले पत्थर पर निर्मित,

Scanned by CamScanner

व्यास 124 मिलीमीटर, (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (6) प्रस्तर का छोटा गोला, लगभग गोलाकार, व्यास 124 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 716, एरण, (चित्र संख्या–65 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (7) प्रस्तर का यह बड़ा गोला लगभग गोलाकार व्यास 211 मिलीमीटर. पत्थर का रंग भूरा। (चित्र संख्या–66 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (8) इसका उपर्युक्त गोले से लगभग आधा व्यास 121 मिलीमीटर पंजीयन संख्या 117, एरण (चित्र संख्या–66 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (9) यह भूरे पत्थर का गोला व्यास 116 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 236, एरण (चित्र संख्या–66 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (10) यह गोला भूरे पत्थर पर निर्मित है व्यास 107 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–337 एरण (चित्र संख्या–66 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (11) प्रस्तर का छोटा गोला वर्ण भूरा गोला कार व्यास 99 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 739 एरण (चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (12) प्रस्तर का बड़ा गोला वर्ण भूरा गोला कार व्यास 198 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–4913 एरण (चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (13) प्रस्तर का बड़ा मनका वर्ण भूरा गोला कार व्यास 407 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–4837 एरण(चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (14) प्रस्तर का छोटा मनका वर्ण काला गोला कार व्यास 67 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–3736 एरण (चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (15) प्रस्तर का छोटा गोला वर्ण भूरा गोलाकार व्यास 98 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–3437 एरण (चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (16) प्रस्तर का छोटा गोला वर्ण काला गोला कार व्यास 104 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या–5467 एरण (चित्र संख्या–67 आकृति क्रमांक 6)

(5) धार करने व आभूषणों को घिसकर कर चमकाने का पत्थर (Sharpening Stone)

एरण उत्खनन में प्रथम काल से एक ऐसा पत्थर मिलता है जो मनकों तथा अन्य आभूषणों को घिसकर चमकाने तथा धार करने के उपयोग में आता था। इस प्रकार के

Scanned by CamScanner

धार करने के पत्थर महेश्वर–नावदाटोली[22] की ताम्रपाषाणकालीन सतह से तथा कायथा[23] में अन्य कालों से भी प्राप्त हुए हैं।

लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित लगभग त्रिकोणाकार उपकरण, ऊपर तथा नीचे की सतहें समतल, दोनों सतहों पर गोलाकार गड्ढे। एक ओर के गड्ढे का व्यास तथा गहराई क्रमशः 47.5 मिलीमीटर तथा 10.7 मिलीमीटर दूसरे तल के गड्ढे का व्यास तथा गहराई क्रमशः 40.9 मिलीटर तथा 10.6 मिलीमीटर। सावधानीपूर्वक निर्मित इस उपकरण में लंबाई की ओर सिरे पर हल्का सा चिकना गड्ढा है। गड्ढे के दोनों ओर चोट पड़ने के निशान और खुरदरापन है। यह गड्ढा वस्तुओं को चमकाने के उपयोग में आता था। पत्थर में धार करने और चमकाने के अतिरिक्त संभवतः हथौड़े की तरह भी इस उपकरण का उपयोग होता था। (चित्र संख्या–68 आकृति क्रमांक 1)

6. छोटी गोलियाँ

पत्थर की बनी गोलियों का प्रचलन सभी आद्यैतिहासिक संस्कृतियों में रहा है। एरण से छोटी गोलियाँ प्राप्त हुई हैं। संभवतः उक्त गोलियों का प्रयोग गोफन में भी किया जाता था।

क्रमांक (1) भूरे पत्थर पर निर्मित छोटी गोली सतह खुरदरी,व्यास 19.5 मिलीमीटर पंजीयन संख्या 3664,एरण(चित्र संख्या–68 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (2) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली वर्ण भूरा सतह चमकीली,व्यास 48 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 6415,एरण(चित्र संख्या–68 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (3) क्वार्टजाइट पत्थर पर बनी छोटी गोली सतह चिकनी, रंग सफेद, व्यास 22.5 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 976, एरण (चित्र संख्या–68 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (4) क्वार्टजाइट पत्थर पर बनी छोटी गोली, सतह खुरदरी, रंग सफेद। व्यास 23 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 694, एरण (चित्र संख्या–68आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (5) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली पत्थर का रंग भूरा गोलाकार व्यास 61 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 4756 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (6) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली पत्थर का रंग भूरा सतह खुरदरी, गोलाकार व्यास 63 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 627 एरण

Scanned by CamScanner

(चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (7) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली पत्थर का रंग भूरा सतह खुरदरी, गोलाकार व्यास 59 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या–1839 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (8) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली पत्थर का रंग भूरा सतह खुरदरी, गोलाकार व्यास 37 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 4486 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (9) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली पत्थर का रंग बलुआ लाल गोलाकार व्यास 65 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 4570,एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (10) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली, वर्ण बलुआ लाल सतह चिकनी गोलाकार व्यास 64 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3124,एरण(चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (11) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली वर्ण बलुआ लाल सतह चिकनी गोलाकार व्यास 61 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 3176 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (12) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली वर्ण बलुआ लाल सतह खुरदरी गोलाकार व्यास 59 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 891 (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (13) प्रस्तर निर्मित छोटी गोली, वर्ण भूरा सतह चिकनी, गोलाकार व्यास 31 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 976 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (14) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली वर्ण भूरा सतह चिकनी। 24 मिलीमीटर। पंजीयन 1840,एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (15) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली, वर्ण भूरा सतह खुरदरी गोलाकार व्यास 29 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 2624 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (16) प्रस्तर पर निर्मित छोटी गोली वर्ण भूरा सतह खुरदरी, गोलाकार व्यास 31

Scanned by CamScanner

मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 4369 एरण (चित्र संख्या–69 आकृति क्रमांक 12)

7. तौल–बाँट (Weight)

एरण के प्रथम काल की सतह से प्राप्त प्रस्तर निर्मित कुछ उपकरण मिले हैं। जिन्हें तौल या मोहरा माना जा सकता है। पत्थर के तौल (बाँट) बनाने की परंपरा प्राचीन है। हड़प्पा संस्कृति के निवासी चर्ट पत्थर के तौल बाँट निर्मित करते थे। प्रस्तर निर्मित इन तौल बाँटों से मिलते–जुलते पकी मिट्टी के उपकरणों को डॉ. सांकलिया तौल (बाँट) मानते हैं।[25] इन उपकरणों का एक संभावित उपयोग मोहरा भी माना जा सकता है।

क्रमांक (1) धारीदार सफेद अकीक पत्थर पर सावधानीपूर्वक निर्मित तौल अथवा मोहरा। ऊपरी तल तथा अद्योतल सम तथा चक्राकार। ऊँचाई 14 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4183, एरण (चित्र संख्या–70 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) धारीदार सफेद अकीक पर सावधानीपूर्वक निर्मित गोलाकार तौल। ऊँचाई 9 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3247, एरण (चित्र संख्या–70 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) धारीदार सफेद अकीक पर सावधानीपूर्वक निर्मित तौल मोहरा ऊपरी तल तथा अद्यौतल सम तथा चक्राकार। ऊँचाई 11 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 2055, एरण (चित्र संख्या–70 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (4) लाल जास्पर पत्थर पर निर्मित तौल भली–भाँति निर्मित, चिकना, दोनों तल समतल तथा चक्राकार सतहें चिकनी चमकदार। ऊँचाई 60 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4457, एरण (चित्र संख्या–71 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (5) लाल जास्पर पत्थर पर निर्मित तौल, दोनों तल समतल तथा चक्राकार सतहें चिकनी चमकदार दोनों किनारे विधिवत कटे हुए। ऊँचाई 58 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4457, एरण (चित्र संख्या–71 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (6) काले जास्पर पत्थर पर निर्मित तौल भली–भाँति दोनों तल कटे हुए, समतल तथा चक्राकार सतहें चिकनी चमकदार। ऊँचाई 30 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4457, एरण (चित्र संख्या–71 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (7) लाल जास्पर पत्थर पर निर्मित तौल भली–भाँति निर्मित और चिकना, दोनों तल समतल तथा चक्राकार सतहें चिकनी चमकदार। ऊँचाई 30 मिलीमीटर पंजीयन संख्या 4457, एरण (चित्र संख्या–71 आकृति क्रमांक 4)

Scanned by CamScanner

8. पकी मिट्टी की वस्तुएँ

नवपाषाणकाल से ही मनुष्य ने सर्वप्रथम मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग दैनिक उपयोग में करना सीखा लिया था। मनुष्य को मिट्टी के बर्तनों के निर्माण से अन्न संग्रह, पानी संग्रह, भोजन पकाने, खाने में काफी सहायता मिली। प्रारंभ में मनुष्य हाथों से मृद्पात्र बनाता था। बाद में चके की सहायता से मृत्पात्रों का निर्माण करने लगा। कालांतर में मृद्भाण्ड़ों को आग में पकाकर मजबूत बनाने की विधि मनुष्य ने सीख ली। समय के साथ धीरे–धीरे मिट्टी की विभिन्न वस्तुएँ निर्मित होने लगी। एरण में ताम्रपाषाण संस्कृति की सतहों से पकी मिट्टी की बनी अनेक दैनिक उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त हुए हैं। इन वस्तुओं का वर्णन निम्नलिखित है :–

1. मृद्भाण्ड़ों के मण्डलक
2. सछिद्र मण्डलक
3. पकी मिट्टी के मण्डलक
4. मिट्टी के खिलौना–गाड़ी का पहियाँ
5. आभूषण–कर्णाभूषण, लटकन तथा चूड़ियाँ
6. मनोरंजन के साधन – मोहरें

1. मृद्भाण्डों के मण्डलक

छिद्र रहित तथा सछिद्र मिट्टी के बर्तन के टुकड़ों को घिसकर बनाये गये कुछ सछिद्र तथा छिद्र रहित मण्डलक एरण उत्खनन के प्रथमकाल से प्राप्त हुए हैं। छिद्र रहित मण्डलकों के किनारे अच्छी तरह कटे और घिसे हुए हैं। उनके निर्माण के लिए मजबूत बनावट के मृद्भाण्डों का उपयोग किया गया है। छिद्र रहित मण्डलकों के उपयोग के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। डॉ. एच.डी. सांकलिया इन मण्डलकों को तौल (बाँट) अथवा झामा मानते हैं।[26] डॉ. बी.बी. लाल (Gaming countes) की तरह इनका उपयोग किया जाना बताते हैं।[27] एरण से उपलब्ध मण्डलक झामे का तौल के रूप में प्रयुक्त, मोहरों (Gemesman) की तरह प्रयुक्त होते थे अथवा बच्चों के खेलने के काम आते थे।[28] मण्डलक महेश्वर–नावदाटोली, नेवासा, आवरा[29], कायथा, महिदपुर[30] इत्यादि स्थानों से ताम्रपाषाण संस्कृति की सतह से प्राप्त हुए हैं।

क्रमांक (1) सावधानी–पूर्वक कटा और घिसा नियमित आकार का मण्डलक मजबूत लाल मृद्भाण्ड पर निर्मित एक किनारा टूटा हुआ। अधिकतम मोटाई तथा

Scanned by CamScanner

व्यास क्रमशः 8 और 31 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 3807, एरण (चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) ताम्रपाषाणकालीन लाल मृद्भाण्ड़ पर निर्मित नियमित आकार का मण्डलक, भली–भाँति कटा तथा दोनों ओर घिसा हुआ, एक किनारा खण्डित, अधिकतम मोटाई तथा व्यास क्रमशः 8 और17 मिलीमीटर,पंजीयन संख्या 7181,एरण (चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) ताम्रपाषाणकालीन लाल मृद्भाण्ड़ पर निर्मित गोलाकार मण्डलक।पंजीयन संख्या 1186, एरण(चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 3)

2. सछिद्र मण्डलक

सछिद्र मण्डलक न तो बहुत अच्छी तरह घिसे एव कटे हुए न ही पूर्णतः नियमित आकार के हैं। डॉ. सांकलिया के अनुसार सछिद्र मण्डलक तकली के चक्र अथवा मिट्टी की गाड़ी के पहियों के रूप में प्रयुक्त होते थे।[31] एरण से प्राप्त मण्डलक के छिद्र का व्यास इतना अधिक (13 मिलीमीटर) है, कि तकली के चक्र के रूप में उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अतएव यह खिलौना गाड़ी के पहिये की तरह प्रयुक्त होता था। सम्भवतः यह दरवाजे को खोलने–बंद करने के लिये चक्र के रूप में उपयोग में आता था।

क्रमांक (1) काले और लाल मृद्भाण्ड़ के टुकड़े पर निर्मित अनियमित गोलाई का मण्डलक, खण्डित लगभग मध्य में निर्मित छिद्र; मजबूत बनावट, चाक पर निर्मित घिसे तथा सावधानी से कटे किनारे। पंजीयन संख्या 499,एरण (चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (2) काले और लाल मृद्भाण्ड़ पर निर्मित मण्डलक, खण्डित, मध्य मे निर्मित छिद्र, चाक पर निर्मित सावधानी पूर्वक कटे हुए किनारे अनियमित गोलाई। पंजीयन संख्या 516,एरण (चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (3) काले–और–लाल मृद्भाण्ड पर निर्मित लगभग अनिश्चित गोलाई का मण्डलक, मध्य में छिद्र, किनारे बिना घिसे तथा असावधानी से कटे, मजबूत बनावट। मण्डलक का व्यास मोटाई तथा छिद्र का व्यास क्रमशः 54, एवं 13 मिलीमीटर। पंजीयन क्रमांक 4199, एरण (चित्र संख्या–72 आकृति क्रमांक 6)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (4) सावधानी–पूर्वक निर्मित पकी मिट्टी का मण्डलक पूर्णपक्व, काला–वर्ण, मोटाई तथा व्यास क्रमशः 12 और 42 मिलीमीटर, संख्या 3622 एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (5) सछिद्र मण्डलक चाक पर बने मजबूत मृद्भाण्ड़ पर निर्मित, खण्डित मध्य में निर्मित छिद्र किनारे घिसे हुए। पंजीयन संख्या 1181एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (6) काले तथा लाल मृद्भाण्ड़ पर निर्मित सछिद्र मण्डलक, खण्डित, मध्य में निर्मित छिद्र पंजीयन संख्या 5135,एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (7) सावधानी–पूर्वक निर्मित पकी मिट्टी का मण्डलक, अर्धपक्व, काला–वर्ण, मोटाई तथा व्यास, क्रमशः 10.5 और 56 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3646, एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (8) सावधानी पूर्वक निर्मित पकी मिट्टी का मण्डलक खण्डित अवस्था में अर्धपक्प काला वर्ण मोटाई तथा व्यास 11 और 62 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3203,एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (9) सावधानी पूर्वक निर्मित गोलाकार मण्डक पूर्णपक्व काला वर्ण मोटाई तथा व्यास क्रमश : 9 और 42 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3622 एरण (चित्र संख्या–73 आकृति क्रमांक 6)

पकी मिट्टी के मण्डलक विशेष रूप से निर्मित किये गये हैं। डॉ. एच.डी. सांकलिया के अनुसार ये बोतल की डांट (Stopper) की तरह प्रयुक्त होते थे।[32] किन्तु ऐसा प्रतीत होता है, कि इनका उपयोग भी मृद्भाण्डों के मण्डलकों की तरह बच्चों के खिलौने के रूप में भी होता था।

4. खिलौना गाड़ियों के पहियाँ

विभिन्न स्थलों के उत्खनन में पकी मिट्टी के बने खिलौना गाड़ियों के पहिये इस काल में प्राप्त हुए हैं। समकालीन हड़प्पा तथा परवर्ती ताम्रपाषाण संस्कृति के लोग भी बैलगाड़ियों से परिचित थे। एरण के नवपाषाणकालीन मानव को भी बैलगाड़ियों की जानकारी थी। यह उत्खनन में प्राप्त खिलौना गाड़ियों के पहियों द्वारा प्रमाणित हुआ है। बैलगाड़ी का उपयोग लकड़ी व फसल इत्यादि ढ़ोने में होता था। महेश्वर–नावदाटोली,

Scanned by CamScanner

कायथा, नेवासा आदि स्थलों से प्राप्त पहियों की संख्या अल्प है; इन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. दोनों ओर उठे हब वाला पहियाँ।
2. एक पार्श्व उन्नतोदर तथा दूसरा पार्श्व लगभग समतल।

क्रमांक (1) पकी मिट्टी का बड़ा पहिया, लगभग अर्धांश भग्न दोनों ओर उठे हुए हब सावधानी–पूर्वक निर्मित, छिद्र के समीप दो भग्न, लालवर्ण, पूर्णपक्व। पहिये की अधिकतम मोटाई तथा व्यास 29 और 100 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 2250, एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) पकी मिट्टी सछिद्र पहिया, पतला छोटा, मध्य में छिद्र, दोनों ओर उठा हुआ हब, अपूर्णपक्व, हस्तनिर्मित काला रंग, पहिये का व्यास, मोटाई तथा छिद्र का व्यास क्रमशः 20, 6.5 एवं 2 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3825,एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) पकी मिट्टी का चक्राकार पहिया वर्ण लाल मध्य में छिद्र किनारे टूटे हुए छिद्र का व्यास तथा मोटाई क्रमशः 51 मिलीमीटर 7 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 1181, एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (4) पकी मिट्टी का सछिद्र पहिया, हस्तनिर्मित, मध्य में उठा हुआ हब सावधानी पूर्वक निर्मित, हल्का लाल वर्ण, पूर्णपक्व, पहिये का व्यास मोटाई तथा छिद्र का व्यास क्रमशः 36, 11 एवं 4 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 3650, एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (5) पकी मिट्टी का पहिया, सावधानी–पूर्वक निर्मित, पूर्णपक्व, एक पार्श्व लगभग समतल, दूसरा उन्नतोदर, मध्य में अपेक्षाकृत बड़ा छिद्र, लाल वर्ण, हस्तनिर्मित। पहिये का व्यास मोटाई तथा छिद्र का व्यास क्रमशः 70, 26 एवं 12 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 3638, एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) पकी मिट्टी का पहिया, अर्द्धपक्व किनारे का खण्डित बड़ा छिद्र मोटाई मिलीमीटर व्यास 41 मिलीमीटर पंजीयन संख्या 4199 (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 6)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (7) पकी मिट्टी का सछिद्र पहिया मध्य में उठा हुआ सावधानी पूर्वक निर्मित वर्णलाल व्यास 31 मिलीमीटर मोटाई 12 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3383, एरण (चित्र संख्या–74 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (8) पकी मिट्टी का गोलाकार सछिद्र खिलौना गाड़ी का पहिया वर्ण लाल छिद्र उपयोग के कारण घिसा हुआ बड़ा मोटाई 80 मिलीमीटर व्यास 781 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 2751, एरण (चित्र संख्या 75)

5. आभूषण

एरण उत्खनन में पकी मिट्टी के आभूषणों में ताटंक चक्र, लटकन और चूड़ियाँ उपलब्ध हुई हैं। चूड़ियों के टुकड़े बहुत छोटे और अस्पष्ट हैं। आभूषणों का विवरण अग्रलिखित है :–

ताटंक चक्र

पकी मिट्टी, शीशा प्रस्तर, तथा अस्थि निर्मित चक्राकार वस्तुयें हड़प्पा संस्कृति तथा ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से उपलब्ध हुई हैं। कायथा, महेश्वर–नावदाटोली त्रिपुरी, आवरा तथा मनौटी की खुदाइयों में भी ताम्रपाषाणकालीन सतह से ये उपकरण प्राप्त हुए हैं। इन्हें कर्णाभूषणों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।[33] इन उपकरणों के मध्य में जो गहराई है उनमें डोरी फंसाकर उसके सहारे कानों में लटकाया जाता था।[34] डॉ. एम.जी. दीक्षित ने इन उपकरणों को बोतल की डांट बतलाया है।[35] इनकी पार्श्व की गहराई में कपड़ा लगाकर उनसे बोतल का मुंह मजबूती से बंद किया जाता था।

क्रमांक (1) पकी मिट्टी का बना ताटंकचक्र, डोरी फँसाने के उद्देश्य से निर्मित गहराई, पूर्णपक्व, धूमिलवर्ण, हस्तनिर्मित, लगभग डमरू के समान आकृति। मोटाई तथा व्यास क्रमशः 19 और 36 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3637, एरण (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) पकी मिट्टी का ताटंकचक्र, चक्राकार, पूर्णपक्व, हस्तनिर्मित, मोटाई तथा व्यास क्रमशः 14 और 36 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 250, (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) पकी मिट्टी का ताटंकचक्र, चक्राकार, पूर्णपक्व, हस्तनिर्मित, डोरी फँसाने की गहराई कम, मोटाई व व्यास क्रमशः 18 और 48 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 172,एरण (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 3)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (4) पकी मिट्टी का ताटंकचक्र गोलाकार, पूर्णपक्व, धूमिल वर्ण, हस्तनिर्मित, मोटाई तथा व्यास क्रमशः 19 और 32 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 3630, एरण (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (5) पकी मिट्टी का तटकचक्र चक्राकार पूर्णपक्व वर्ण काला हस्तनिर्मित डोरी फंसाने की गहराई कम मोटाई 12 मिलीमीटर व्यास 24 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4078 एरण (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) पकी मिट्टी का गोलाकार ताटंकचक्र पूर्णपक्व वर्ण धूमिल, हस्तनिर्मित मोटाई 18 मिलीमीटर व्यास 38 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3788,एरण (चित्र संख्या–76 आकृति क्रमांक 6)

लटकन

पकी मिट्टी के लटकन एरण के सभी कालों में प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार लटकन डोरी में पिरोकर ग्रीवा में पहने जाते थे। डॉ. एच.डी. सांकलिया के मतानुसार यह लटकन के साथ–साथ बोतल की डांट की तरह प्रयुक्त होते थे।[36] डॉ. वाकणकर इन्हें बोतल की डांट मानते हैं।[37]

क्रमांक (1) शकु रूप लटकन ऊपर की ओर क्रमशः सकरा, ऊपरी सिरे के समीप डोरी पिरोने के लिए निर्मित एक छिद्र अपूर्णपक्व, धूमिल वर्ण, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 4368, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक (i)

क्रमांक (2) शकु रूप लटकन ऊपर की ओर क्रमशः सकरा, ऊपरी सिरे के समीप डोरी पिरोने के लिए निर्मित एक छिद्र वर्ण काला।पंजीयन संख्या 705, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक(ii)

मिट्टी की चूड़ियाँ

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से अन्य आभूषणों के साथ पकी मिट्टी की चूड़ियों के निर्माण का साक्ष्य भी मिला, किन्तु कोई भी चूड़ी पूर्ण प्राप्त नहीं हुई है। ये सभी चूड़ियाँ हस्तनिर्मित हैं।

क्रमांक (1) पकी मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, गोलाकार, अनुभाग लालवर्ण, पूर्णपक्व अवस्था में। पंजीयन संख्या 2451,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 1)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (2) पकी मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, लगभग गोलाकार, अनुभाग लालवर्ण, पूर्णपक्व अवस्था में। पंजीयन संख्या 190,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) पकी मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, लगभग गोलाकार, अनुभाग लालवर्ण, पूर्णपक्व अवस्था में। पंजीयन संख्या 755,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (4) पकी मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, पूर्णपक्व, लालवर्ण, लगभग गोलाकार अनुभाग पंजीयन संख्या 280,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (5) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा लगभग गोलाकार वर्ण लाल पूर्णपक्व अवस्था। पंजीयन संख्या 2398,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा, गोलाकार अनुभाग वर्ण लाल पूर्ण पक्व। पंजीयन संख्या 769,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (7) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग वर्ण काला पूर्णपक्व अवस्था। पंजीयन संख्या 3548,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (8) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 2599,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (9) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 4050,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (10) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण काला। पंजीयन संख्या 798,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (11) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 4028,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (12) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 753 (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (13) पकी मिट्टी की चूडी का टुकडा गोलाकार अनुभाग, पूर्णपक्व वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 800,एरण (चित्र संख्या–77 आकृति क्रमांक 13)

एरण उत्खनन से उक्त चूड़ी के टुकड़ों के अलावा छोटे–छोटे चूड़ियों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। जिनका वर्णन करना कठिन है, क्योंकि वह बहुत छोटे व अस्पष्ट है।

Scanned by CamScanner

6. मनोरंजन के साधन

ताम्रपाषाणकाल में मनोरंजन के साधनों में आखेट, नृत्य, संगीत तथा खिलौनों के साथ–साथ शतरंज भी सम्मिलित था। ताम्रपाषाणकालीन मानव को शतरंज का ज्ञान था। उत्खनन में ताम्रपाषाण संस्कृति के लगभग सभी केन्द्रों से पकी मिट्टी के शंकु आकार की वस्तुएँ (conical) बड़ी संख्या में मिली हैं। सावधानी–पूर्वक बनायी गई ये वस्तुएँ हस्तनिर्मित हैं। इनमें से कुछ का ऊपरी सिरा हल्का सा अवतल (concave) है। कुछ विद्वानों ने इन्हें शतरंज के मोहरें माने हैं। विद्वानों के मत इस प्रकार हैं। डॉ. सांकलिया[38], डॉ. दीक्षित[39] तथा डॉ. वाकणकर[40] इन उपकरणों को बोतल की डांट मानते हैं। 1984 ई. से 1988 ई. के एरण उत्खनन के निर्देशक डॉ. विवेकदत्त झा एरण के प्रथमकाल से प्राप्त इन उपकरणों को शतरंज के मोहरें (Gameman) की तरह प्रयुक्त होना मानते हैं। कुछ मोहरों का ऊपरी सिरा इसलिए हल्का सा अवतल बनाया गया है, कि मोहरा को उठाकर अन्य स्थान में रखने में सुविधा हो। डॉ. बी.बी. लाल के अनुसार ये वस्तुएँ मोहरे ही हैं।[41] उल्लेखनीय है कि महाभारतकाल में शतरंज जैसे साधनों के प्रचलन का साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध है। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से पकी मिट्टी के बने चौपड़ खेलने के पाँसे मिले है। इन पाँसों में गोल बिन्दीयाँ बनाई गई है। जो अंक गणित के शून्य आकार की है। सम्भव है, कि शून्य का अविष्कार ताम्रपाषाणकाल में हो गया था।

पाँसा

क्रमांक (1) पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा,वर्ण काला, शून्य आकार की बिन्दियाँ बनी हुई। (चित्र संख्या–78–79)

क्रमांक (2) पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा,वर्ण धूसर, शून्य आकार की बिन्दियाँ बनीं हुई, आयताकार। (चित्र संख्या–80–81)

मोहरा

क्रमांक (1) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा वर्ण धूसर, पूर्णपक्व नीचे की सतह समतल, हस्तनिर्मित। (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) पकी मिट्टी का शंकु आकार मोहरा ऊपर की ओर सकरा वर्ण धूसर हस्तनिर्मित।पंजीयन संख्या 3762, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा नीचे की सतह समतल हस्तनिर्मित वर्ण काला। पंजीयन संख्या 4071, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 3)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (4) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा निचली सतह समतल वर्ण धूसर, हस्तनिर्मित पंजीयन संख्या 3523, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (5) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा ऊपर की ओर समतल वर्ण लाल, हस्तनिर्मित निचली सतह समतल पंजीयन संख्या 3716, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) पकी मिट्टी का शंकुकार मोहरा ऊपर की ओर क्रमशः सकरा हस्तनिर्मित वर्णलाल। पंजीयन संख्या 755, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (7) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा दोनों सतह समतल वर्ण काला, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 3066, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक7)

क्रमांक (8) पकी मिट्टी का कुरूप मोहरा, ऊपर की ओर क्रमशः सकरा, ऊपरी और निचली सतहें समतल और चक्राकार, दोनों तलों के लगभग मध्य में हल्का गड्ढा, पूर्णपक्व, लालवर्ण, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 4033, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (9) पकी मिट्टी का शुद्ध रूप मोहरा ऊपर का भाग टूटा हुआ वर्ण धूसर हस्तनिर्मित निचली सतह समतल। पंजीयन संख्या 1278, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (10) पकी मिट्टी का शुद्ध रूप मोहरा ऊपर की ओर सकरा वर्ण काला हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 2894, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक10)

क्रमांक (11) पकी मिट्टी का शंकु रूप मोहरा, ऊपर की ओर क्रमशः पतला, निचली सतह समतल और चक्राकार ऊपरी अर्धांश खण्डित, पूर्णपक्व, धूमिल वर्ण, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 191(चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (12) पकी मिट्टी का कुरूप मोहरा, ऊपर की ओर क्रमशः सकरा, ऊपरी भाग खण्डित, ऊपर और नीचे की सतहें समतल तथा चक्राकार पूर्णपक्व, लगभग लाल वर्ण, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 4392, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (13) पकी मिट्टी का शंकु रूप मोहरा, ऊपर की ओर क्रमशः सकरा, ऊपरी सतह शंकुरूप नीचे की सतह समतल, चक्राकार, पूर्णपक्व, लालवर्ण, हस्तनिर्मित,

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या 1178, एरण (चित्र संख्या–82 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (14) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा ऊपर की ओर सकरा वर्ण धूसर दोनों सतह समतल हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 1242, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (15) पकी मिट्टी का गोलाकार मोहरा, निचली सतह पूर्ण रूप से समतल वर्ण काला, हस्तनिर्मित। पंजीयन संख्या 4098, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (16) पकी मिट्टी का हस्तनिर्मित शंकुरूप का मटका ऊपर की ओर सकरा निचली सतह समतल वर्ण लाल, (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (17) पकी मिट्टी का हस्तनिर्मित मोहरा, ऊपर की ओर सकरा निचली सतह समतल वर्ण लाल। पंजीयन संख्या 4070, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (18) पकी मिट्टी का हस्तनिर्मित शंकु आकार का मोहरा ऊपर की ओर सकरा, ऊपरी सतह शंकुरूप वर्ण काला। पंजीयन संख्या 3565, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (19) पकी मिट्टी निर्मित मोहरा, वर्ण धूसर बीच का भाग खण्डित पंजीयन संख्या 4395, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (20) पकी मिट्टी का हस्तनिर्मित मोहरा, ऊपर की ओर सकरा शीर्ष भाग शंकुआकार में वर्ण धूसर। पंजीयन संख्या 3674, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (21) पकी मिट्टी का हस्तनिर्मित मोहरा ऊपर की ओर सकरा निचली सतह समतल वर्ण धूसर। पंजीयन संख्या 3778, एरण (चित्र संख्या–83 आकृति क्रमांक 8)

अनिश्चित उपयोग वाला उपकरण

उत्खनन में कुछ वस्तुएं ऐसी भी प्राप्त हुई हैं जिनका उपयोग निर्धारित करना कठिन होता है। एरण के प्रथम काल (स) में पकी मिट्टी पर निर्मित लगभग डमरू की आकृति का एक छोटा उपकरण 1986 ई. के उत्खनन में मिला है। इसका उपयोग क्या

Scanned by CamScanner

रहा होगा तय करना कठिन है। डमरू की आकृति का उपकरण लघुाकार पूर्णपक्व लगभग घूमिल वर्ण, मध्यवर्ती क्षेत्र अवतल, उपयोग अनिश्चित, पंजीयन संख्या 305।

छिद्रयुक्त गोलियाँ :–एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन बच्चों के खेलने में प्रयुक्त होने वाली छिद्रयुक्त छोटी–छोटी चकरीनुमा गोलियाँ प्राप्त हुई है। इनका उपयोग सम्भवतः चकरी के रूप में किया जाता होगा। (चित्र संख्या–84)

त्वचा–मर्दक (scan rabar) :– एरण उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाण कालीन स्तरों से दो त्वचा–मृदक प्राप्त हुये है इनका आकार लगभग आयताकार वर्ण लाला है पूर्ण पक्व हस्तनिर्मित दोनों सतह खुरदरी बनाई गई है। इनसे ज्ञात होता है कि उस काल में व्यक्ति शरीर को सुन्दर बनाने के प्रति काफी सचेत था। पंजीयन संख्या 3313,एरण, पंजीयन संख्या 1373,एरण (चित्र संख्या–85 आकृति 1 व 2)

ईंट :– एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से अधवनी हस्तनिर्मित ईंट प्राप्त हुई हैं, इसका रंग लाल है। इस प्राकार की ईटों का प्रयोग इस समय मकानों की नीव में किया जाता था। चित्रफलक 86

शंख तथा अस्थि निर्मित वस्तुएँ

दैनिक उपयोगी वस्तुओं तथा अस्त्र–शस्त्रों के निर्माण में अस्थि का उपयोग प्राचीनकाल से होता आया है। पाषाणकाल में भी पशुओं की अस्थियाँ उपकरणों की तरह प्रयुक्त होती थीं। कालांतर में हड़प्पा सभ्यता तथा अन्य समकालीन सभ्यताओं में विविध वस्तुओं का निर्माण शंख तथा अस्थि पर किया गया। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से प्रस्तर और मिट्टी के आभूषणों के साथ–साथ शंख–अस्थि के आभूषण भी मिले हैं। एरण में आभूषण प्रेमी–मानव ने हार के मध्य में पिरोने के लिए शंख के लटकन निर्मित किये थे। इनके अतिरिक्त हाथ में पहनने के लिए शंख की चूड़ियों का निर्माण भी किया। अस्थि अग्रास्त्र (Bone-points) का उपयोग बाणफलक व सुई के रूप में किया जाता था। उत्खनन में प्राप्त अस्थि तथा शंख की वस्तुएँ निम्नलिखित हैं :–

अस्थि अग्रास्त्र (Bone points)

हड़प्पा सभ्यता के काल में अस्थि अग्रास्त्रों का उपयोग होने लगा था। विद्वानों ने इनके कई उपयोग बताये हैं। डॉ. सांकलिया के अनुसार ये बाणफलक, सिलाई की सुई, अथवा आभूषण की तरह प्रयुक्त होते थे।[42] नावदाटोली में ताम्रपाषाणकाल की सतह से अस्थि अग्रास्त्र उपलब्ध हुये हैं।[43]

Scanned by CamScanner

क्रमांक (1) अस्थि अग्रास्त्र, एक ओर भग्न, दूसरा सिरा नुकीला, कार्यांग चिकना, लंबाई 47 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 3707, एरण (चित्र संख्या–87 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) अस्थि अग्रास्त्र, कार्यांग चिकना–नुकीला अग्रास्त्र को किसी लकड़ी की मूठ में फंसाने के लिए इसका निचला भाग पूर्ण अग्रास्त्र चिकना। लंबाई 63 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 5377, एरण (चित्र संख्या–87 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) अस्थि उपकरण, चपटा लगभग त्रिभुजाकार, उपयोग बाणफलक के रूप में। लंबाई 73 मिलीमीटर, एरण (चित्र संख्या–87 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (4) अस्थि अग्रास्त्र, खण्डित, इस अग्रास्त्र के एक छोर पर कार्यांग निर्मित दोनों छोर नुकीले। इसे बनाने में पूर्णतः सावधानी नहीं बरती गयी। संभवतः बाणफलक की भाँति इसका उपयोग होता था। पंजीयन क्रमांक 156, एरण, (चित्र संख्या–87 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (5) अस्थि अग्रास्त्र, सावधानी–पूर्वक निर्मित इस अग्रास्त्र के दोनों छोर नुकीले तीक्ष्ण है। यह कहना कठिन है, कि इसके एक ही छोर पर कार्यांग निर्मित था या दोनों छोरों पर था। इसका उपयोग भी संभवतः बाणफलक की भाँति होता होगा। पंजीयन संख्या 363,एरण (चित्र संख्या–87 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) अस्थिनिर्मित अग्रास्त्र इसे बनाने में पूर्णतः सावधानी नही बरती गई है। एक सिरा तीक्ष्ण उपयोग बाणफलक की भांति।पंजीयन 5290,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (7) अस्थिनिर्मित अग्रास्त्र सावधानी–पूर्वक निर्मित एक सिरा नुकीला उपयोग बाणफलक के रूप में। पंजीयन संख्या 4807,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (8) अस्थिनिर्मित अग्रास्त्र एक छोर पर कार्यांग बनाया गया है। इसका उपयोग भी बाणफलक की भांति होता होगा। पंजीयन संख्या 5991,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (9) अस्थि निर्मित अग्रास्त्र इसके दोनों सिरे नुकीले इसका उपयोग बाणफलक की भांति होता होगा। पंजीयन संख्या 4043,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 4)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (10) अस्थि निर्मित अग्रास्त्र एक सिरा टूटा हुआ दूसरे का तीक्षण उपयोग बाणफलक के रूप में पंजीयन संख्या 4345,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (11) अस्थिनिर्मित अग्रास्त्र दोनों सिरे टूटे हुए उपयोग निश्चित पंजीयन संख्या 5424,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (12) अस्थिनिर्मित इसके दोनों सिरे नुकीले उपयोग बाणफलक के रूप में इसे बनाने में सावधानी नहीं बरती गई। पंजीयन संख्या 5290,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (13) अस्थि निर्मित अग्रास्त्र इसको बनाने में सावधानी नहीं बरती गई है। दोनों सिरे टूटे हुए उपयोग अनिश्चित। पंजीयन संख्या 6768,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (14) अस्थि–निर्मित अग्रास्त्र एक सिरा काफी तीक्ष्ण बनाया गया है। इसका उपयोग सम्भवतः सूजे के रूप में किया जाता होगा। पंजीयन संख्या 4643,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (15) अस्थि–निर्मित अग्रास्त्र एक तीक्ष्ण सावधानी–पूर्वक निर्मित उपयोग बाणफलक के रूप में। पंजीयन संख्या 5291,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (16) अस्थि–निर्मित अग्रास्त्र सावधानी–पूर्वक निर्मित कार्य तीक्ष्ण दूसरे सिरे में डोरी फंसाने हेतु जगह उपयोग सुई था सुजे के रूप में। पंजीयन संख्या 4351,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (17) अस्थि–निर्मित अग्रास्त्र सावधानी–पूर्वक निर्मित उपयोग था सुई के रूप में कार्य तीक्ष्ण एक सिरा टूटा हुआ। पंजीयन संख्या 5482, एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (18) सावधानी–पूर्वक निर्मित अग्रास्त्र दोनों सिरे तीक्ष्ण उपयोग सुई व तकुये के रूप में पंजीयन संख्या 768,एरण (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (19) अस्थि–निर्मित अग्रास्त्र दोनों सिरे तीक्ष्ण सावधानी–पूर्वक निर्मित उपयोग सुई व बाणफलक दोनों के रूप में सम्भव। (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 14)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (20) सावधानी–पूर्वक निर्मित अस्थि का तकुआ कार्यांग सुन्दर तीक्ष्ण कडाई किया हुआ। उपयोग वस्त्र सिलने हेतु प्रयुक्त (चित्र संख्या–88 आकृति क्रमांक 15)

लटकन व चूड़ियाँ

क्रमांक (1) शंख निर्मित लटकन, लगभग घंटी के आकार का इसे सावधानी–पूर्वक निर्मित किया गया है। पंजीयन संख्या 296, ,एरण (चित्र संख्या–89 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) हाथी–दांत निर्मित चूड़ी का टुकड़ा, सावधानी पूर्वक निर्मित। पंजीयन संख्या 252,एरण (चित्र संख्या–89 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) अस्थि–निर्मित बड़ी चूडी का टुकडा इसके निर्माण के निपुणता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (4) शंख निर्मित लटकन, शंकु आकार, सावधानी–पूर्वक बनाया गया। ऊपरी छोर पर डोरी पिराने हेतु छिद्र। पंजीयन संख्या 252,एरण (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (5) शंख निर्मित चूडी का टुकड़ा इसके निर्माण के निपुणता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है।(चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (6) शंख निर्मित चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित।(चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (7) शंखनिर्मित चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित। (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (8) हाथीदांत की चूडी का टुकडा लगभग अर्धांश सुन्दरता पूर्ण निर्मित। (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (9) हाथीदांत की चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित ऊपरी भाग पर शिल्पकारी कडाई की गई है। (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (10) हाथीदांत चूडी का टुकडा सावधानी पूर्वक निर्मित। (चित्र संख्या–90 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (11) शंख की चूडी का टुकडा बनाने में सावधानी नही बरती गई। (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 1)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (12) शंख की चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित। पंजीयन संख्या 2775 एरण (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (13) शंख की चूडी का टुकडा इसे निर्मित करने में पूर्ण सावधानी नहीं रखी गई।(चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (14) शंख की चूडी का छोटा टुकडा अकुशल तरीके से निर्मित।(चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (15) हाथी–दांत की चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित। (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (16) हाथीं–दांत की चूडी का टुकडा लगभग अर्धाश सावधानी–पूर्वक निर्मित। पंजीयन 2847 एरण (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (17) हाथी–दांत की चूडी का टुकडा सावधानी–पूर्वक निर्मित। (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (18) शंख की चूडी का टुकडा निर्माण अकुशल तरीके से किया गया है। (चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 8)

हाथीदांत का चौपड़ का पाँसा :– एरण उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक सुन्दर हाथी–दांत से निर्मित पांसा प्राप्त हुआ है। जिसका काल लगभग 800 ई0 पू0 ज्ञात हुआ है। इससे स्पष्ट होता है, कि चौपड–पाँसे का खेल उस समय जन समुदाय में काफी लोकप्रिय था। (चित्र संख्या–92)

श्रृंगारदानी :– एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से दो श्रृंगारदानी प्राप्त हुई है। जो मुलायम पत्थर पर निर्मित की गई है।

क्रमांक (1) पूर्ण सुरक्षित मुलायम भूरे पत्थर पर निर्मित सुन्दर रूप से किनारे बने हुए। उपयोग सुरमा व अन्य श्रृंगार की सामग्री रखने में प्रयुक्त। पंजीयन संख्या 4778,एरण (चित्र संख्या–93 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) मुलायम कत्थई पत्थर पर निर्मित श्रृंगारदानी लगभग अर्धांश–भाग उपयोग श्रृंगार की वस्तुओं से सुरक्षित रखने हेतु। पंजीयन संख्या 3581 एरण (चित्र संख्या–93 आकृति क्रमांक 2)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (3) एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक बडा मुलायम पत्थर का मनका प्राप्त हुआ है। इसका रंग भूरा व छिद्र काफी बडा है।(चित्र संख्या–91 आकृति क्रमांक 3)

अनिश्चित उपयोग की वस्तु

एरण उत्खनन में एक आयताकार अस्थि उपकरण प्राप्त हुआ है। लंबाई की ओर दोनों सिरों पर गहरा चिकना कटाव तथा क्षितिजाकार समतल सतह पर गहरा गड्ढा इस बात का संकेत करता है, कि यह संभवतः अस्थि अग्रास्त्र को चिकना करने और उन पर पालिश करने के उपयोग में आता था। अग्रास्त्रों को लगातार रगड़ने के कारण दोनों सिरों पर गहरा कटाव बन गया है। क्षितिजाकार समतल सतह का गढ़ा संभवतः अग्रास्त्रों की नोंकों को घिसकर चिकना करने के काम में आता था। डॉ. सांकलिया के अनुसार अस्थि–अग्रास्त्रों को चिकना करने तथा उनमें पालिश करने का प्रयत्न प्राचीनकाल में किया जाता था।[44] यह लगभग आयताकार उपकरण, लंबाई की ओर दोनों सिरों पर स्कन्ध सदृश्य चिकना कटाव, दोनों क्षितिजाकार सतहें समतल, एक सतह पर 11 मिलीमीटर व्यास का गड्ढा, आग के संपर्क में आने के कारण चौड़ाई क्रमशः 55 और 31 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4393, एरण।

मनके (Beads)

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से बड़ी संख्या में मनके प्राप्त हुए हैं। पकी मिट्टी, पेस्ट तथा शंख के अतिरिक्त अर्धकीमती पत्थरों के मनके भी बनाये जाते थे। उत्खनन में ताँबे के मनको द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है, कि ताम्रपाषाणकालीन एरण में मनके बनाने का स्थानीय उद्योग था। प्राप्त मनकों तथा लटकनों (Pentants) से तत्कालीन निवासियों के श्रृंगार–प्रसाधन के स्वरूप तथा उनकी समृद्धि की जानकारी मिलती है। विविध सामग्री के मनकों का वर्णन अग्र प्रकार हैं :–

ताम्र–मनके

एरण उत्खनन में ताँबे के कुल चार मनके एरण 18 विस्तार से प्राप्त हुए हैं। ये सभी मनके छोटे और सावधानी–पूर्वक निर्मित हैं। प्रतीत होता है, कि ताँबे की पतली नली से काटकर ये मनके बनाये गये हैं। केवल दो मनकों का विवरण दिया जा रहा है।

क्रमांक (1) ताँबा का नलिकाकार मनका दोनों किनारे अच्छी तरह कटे हुए। पंजीयन संख्या 4786, एरण।

Scanned by CamScanner

क्रमांक (2) ताँबा का नलिकाकार मनका, क्रमांक 1 से कुछ बड़ा। पंजीयन संख्या 5387, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 1)

पत्थर के मनके

ताम्रपाषाणयुग में मानव ने शरीर को सजाने–संवारने के लिए कंठहार, तथा कर्णाभूषणों में पिरोने के लिए चाल्सीडोनी, स्विथ, स्फटिक (कार्नेलियन) अकीक, जास्पर, स्टेटाइट तथा मुलायम पत्थर, शंख पकी मिट्टी से निर्मित बहुसंख्यक मनके एरण के प्रथमकाल से प्राप्त हुए हैं। इनमें से कुछ मनकों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

क्रमांक (3) धारीदार आगेट का बेलनाकार बड़ा मनका, सछिद्र, चिकना व सुंदर, भलीभाँति निर्मित। पंजीयन संख्या 529,एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (4) त्रिभुजाकार आगेट का सछिद्र मनका व्यास 36 मिमी पंजीयन संख्या 273, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (5) धारीदार आगेट पर निर्मित बेलनाकार छोटा मनका, सछिद्र दोनों ओर भलीभाँति कटे हुए। पंजीयन संख्या 508, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (6) स्टेटाइट का ढ़ोलनाकार छोटा मनका। पंजीयन संख्या 4198, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (7) पेस्ट का मनका, उपरिवर्णित जैसा पंजीयन संख्या 310, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (8) पेस्ट का सूक्ष्म मनका, उपर्युक्तानुसार पंजीयन संख्या 544, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (9) पेस्ट का सूक्ष्म चक्राकार मनका, भलीभाँति निर्मित, मध्य में छिद्र। पंजीयन संख्या 420, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (10) सफेद पत्थर पर निर्मित चक्राकार लटकन, एक किनारे पर डोरी पिरोने के लिए छिद्र, लटकन का व्यास 38 मिलीमीटर, संख्या 5223, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (11) पेस्ट का नलिकाकार मनका, पंजीयन संख्या 4280, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 10)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (12) स्टेटाइट का चक्राकार मनका, मध्य में छिद्र, किनारे, अच्छी तरह कटे हुए।[49] मनके का व्यास 17.5 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 4126, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (13) जास्पर का लंबा नालिकाकार मनका चिकना व दोनों भाग भलीभांति निर्मित सछिद्र पंजीयन संख्या 131, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (14) मून स्टोन का सछिद्र मनका भलीभांति निर्मित पीत वर्ण पंजीयन संख्या 722, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (15) पेस्ट का सूक्ष्म मनका, उपरिवर्णित से समानता पंजीयन संख्या 543, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 14)

क्रमांक (16) पेस्ट पर निर्मित सूक्ष्म मनका, उपरिवर्णित के समान, पंजीयन संख्या 421, एरण (चित्र संख्या–94 आकृति क्रमांक 15)

क्रमांक (17) काले जास्पर का अधबना बड़ा मनका, लगभग ढ़ोलकाकार, छिद्ररहित। व्यास 35 मिलीमीटर संख्या 4601, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (18) धारीदार आगेठ का गोलाकार सछिद्र मनका भलीभांति निर्मित पंजीयन संख्या 302, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (19) कार्नेलियन का अष्टकोणीय मनका, सावधानी पूर्वक निर्मित डोरी पिरोने के लिए निर्मित छिद्र, (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (20) केलसाइन्ड पर निर्मित बेलनाकार सछिद्र मनका, दोनों किनारे भलीभाँति कटे हुए, सावधानी–पूर्वक निर्मित। पंजीयन संख्या 413, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (21) हल्के हरे जास्पर का बड़ा मनका, गोलाकार, मनके का व्यास 32 मिलीमीटर। पंजीयन संख्या 801, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (22) काला जास्पर का गोलाकार सछिद्र मनका भली–भांति निर्मित पंजीयन संख्या 603, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (23) स्टेटाइट का चकरीनुमा मनका, पंजीयन संख्या 5185, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (24) लाजवर्त का ढोलकाकार मनका दोनों किनारे विधिवत निर्मित एक किनारा टूटा हुआ पंजीयन संख्या 307, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 8)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (25) हल्के हरे से रंग का सोप स्टोन का छोटा शंकु रूप कटे किनारों वाला मनका। पंजीयन संख्या 5287, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (26) हल्के हरे से रग का सोप स्टोन का मनका,पंजीयन संख्या 5490, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (27) लाल पेस्ट पर निर्मित नालिकादार मनका, दोनों किनारे भली–भाँति कटे हुए। पंजीयन संख्या 403, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (28) कार्नेलियन का मनका,[46] दोनों ओर उत्तल तथा कटा हुआ। पंजीयन संख्या 3708, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (29) कार्नेलियन का मनका दोनों ओर उत्तल। पंजीयन संख्या 4176, एरण (चित्र संख्या–95 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (30) पेस्ट पर निर्मित, सूक्ष्म चक्राकार मनका पंजीयन संख्या 397, एरण

क्रमांक (31) स्फटिक का मनका, अष्टकोणकार, भली–भाँति, निर्मित आर–पार छिद्र पंजीयन संख्या 154, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (32) स्फटिक का सछिद्र मनका चक्राकार भली–भांति निर्मित पंजीयन संख्या 401, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (33) स्फटिक का छोटा गोलाकार सछिद्र मनका सावधानीपूर्वक निर्मित पंजीयन संख्या 434, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (34) शंख का नलिकाकार मनका, पंजीयन संख्या 3818, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (35) लगभग बेलनाकार, फिरोजी प्रस्तर पर निर्मित मनका आर–पार, छिद्र; दोनों ओर सावधानी–पूर्वक कटे हुए फिरोजी वर्ण। पंजीयन क्रमांक 189, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (36) स्फटिक का नालिकाकार सछिद्र मनका भली–भांति निर्मित दोनो किनारे कटे हुये समतल पंजीयन संख्या 267, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (37) एमेथिस्ट का चौकोर सछिद्र मनका व्यास 51 मिमी पंजीयन संख्या 169, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 7)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (38) धारीदार अकीक का छिद्र–रहित मनका, बेलनाकार निर्माण, में असावधानी परिलक्षित, प्रस्तुत मनका तथा उपरिवर्णित अधबने मनकों द्वारा सिद्ध होता है, कि स्थानीय जन मनकों का निर्माण श्रृंगार–प्रियता के लिए करते थे। पंजीयन क्रमांक 257, एरण (चित्र संख्या–96 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (39) फियांश पर निर्मित छोटा बेलनाकार मनका, सावधानी–पूर्वक काटे गये दोनों छोर, पूर्णतः निर्मित पंजीयन संख्या 378, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (40) लाजवर्त पत्थर पर निर्मित ढोलकाकार मनका भलीभांति निर्मित डोरी पिरोने हेतु दोनों ओर छिद्र पंजीयन संख्या 619,एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (41) धारीदार अकीक पत्थर पर निर्मित, छिद्र–रहित मनका बेलनाकार, सावधानी पूर्वक निर्मित। पंजीयन संख्या 197, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (42) आगेट (सुलेमानी पत्थर) पर निर्मित सछिद्र गोलाकार सुंदर मनका पंजीयन संख्या 136, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (43) आगेट पत्थर पर निर्मित गोलाकार सछिद्र मनका व्यास 47 मिमी पंजीयन संख्या 161,एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (44) कार्नेलियन का नलिकाकार मनका मध्य में खण्डित। संख्या 5155, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (45) कार्नेलियन का नलिकाकार भग्न मनका, संख्या 4203, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 7) कर्नेलियन के बेलनाकार मनके महेश्वर–नावदाटोली में ताम्रपाषाणकाल से काफी संख्या में प्राप्त हुए हैं।[45]

क्रमांक (46) धारीदार आगेट पत्थर पर निर्मित नालिकाकार मनका दोनों ओर डोरी पिरोने हेतु छिद्र पंजीयन संख्या 286, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (47) धारीदार आगेट पत्थर पर निर्मित अष्टकोणीय बड़ा मनका दोनों ओर डोरी पिरोने हेतु छिद्र भली–भांति निर्मित पंजीयन संख्या 417, एरण (चित्र संख्या–97 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (48) जास्पर पत्थर पर निर्मित नालिकाकार सछिद्र मनका भली–भांति निर्मित

Scanned by CamScanner

पंजीयन संख्या 176, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (49) काले जास्पर पत्थर पर निर्मित ढोलकाकार मनका दोनों ओर डोरी पिरोने हेतु छिद्र किनारे भली–भांति कटे हुये पंजीयन संख्या 271, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (50) काले जास्पर पर निर्मित सछिद्र मनका दोनों किनारे भलीभांति कटे हुऐ पंजीयन संख्या 274, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (51) काले जास्पर पर निर्मित गोलाकार सछिद्र मनका भलीभांति निर्मित पंजीयन संख्या 771, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (52) कार्लेनियन पत्थर से निर्मित नालिकाकार सछिद्र मनका किनारे कटे हुये पंजीयन संख्या 612, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (53) धारीदार आगेट पर निर्मित सछिद्र मनका शंखाकार सुंदर भलीभांति निर्मित पंजीयन संख्या 311, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (54) फियांस पत्थर पर निर्मित गोलाकार मनका सछिद्र दोनों किनारे भलीभांति कटे हुए पंजीयन संख्या 404, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (55) धारीदार आगेट पर निर्मित नालिकाकार सछिद्र छोटा मनका दोनों किनारे भली–भांति निर्मित पंजीयन संख्या 1801, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (56) स्फटिक का नालिकाकार लंबा सछिद्र मनका पंजीयन संख्या 1311, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (57) काला जास्पर पर निर्मित सछिद्र मनका दोनों किनारे भलीभांति कटे हुए पंजीयन संख्या 1617, एरण(चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (58) काला जास्पर का चौकार मनका डोरी पिरोने हेतु छिद्र भलीभांति निर्मित पंजीयन संख्या 1619 (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (59) कार्लेनियन का सुंदर गोलाकार सछिद्र मनका किनारे भलीभांति कटे हुए पंजीयन संख्या 1911, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (60) धारीदार आगेट पर निर्मित चौकोर सछिद्र मनका भलीभांति निर्मित पंजीयन संख्या 2122,एरण(चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 13)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (61) कैलसाइन्ड पर निर्मित नालिकाकार सछिद्र मनका दोनों किनारे विधिवत कटे हुए पंजीयन संख्या 2276, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 14)

क्रमांक (62) प्रस्तर निर्मित गोलाकार मनका, लालवर्ण भलीभाँति निर्मित, पंजीयन संख्या 382, एरण (चित्र संख्या–98 आकृति क्रमांक 15)

क्रमांक (63) अकीक का ढ़ोलनाकार मनका[47]। पंजीयन संख्या 4204, एरण 16 (अ)

क्रमांक (64) स्टेटाइट का नालिकाकार मनका।[48]

पकी मिट्टी के मनके

एरण उत्खनन में ताम्रपषाणकालीन स्तर से पकी मिट्टी की विविध आकार–प्रकार के मनके प्राप्त हुए हैं। इनमें अधिकांश सादे हैं, किन्तु कुछ पर छेद्रित (Incised) बिन्दुओं, पंक्तियों तथा नाखून की आकृतियों का अलंकरण है। प्रायः मनके अच्छी तरह पकाये गये हैं। मनकों पर किसी भी प्रकार के लेप का उपयोग नहीं किया गया है। ताम्रपाषाणयुग में पकी मिट्टी के मनके निर्धन वर्ग के लोग धारण करते थे। धातु व अर्धकीमती पत्थरों के मनके धनी (सम्पन्न वर्ग) के लोग धारण करते थे। मिट्टी के मनकों का वर्णन निम्न प्रकार हैः :–

क्रमांक (1) पकी मिट्टी का नाशपाती के आकार का बड़ा मनका, तला चक्राकार, एवं सम ऊपरी भाग अवतल तल का व्यास 38 मिलीमीटर।पंजीयन संख्या 2941, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (2) पकी मिट्टी का मनका, पूर्णपक्व, लगभग धूमिल वर्ग गोलाकार मनका, दोनो ओर शंकु रूप, मनके की बाहरी सतह पर गोलाई में नाखून से निर्मित उत्खचित अलंकरण। पंजीयन संख्या 333, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (3) पकी मिट्टी क संपूर्ण आकार का मनका, पूर्णपक्व, सुपाड़ी का आकार, चक्राकार समतल निचला तला, गोलाकार ऊपरी तल, सहिद्र। पंजीयन संख्या 194, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (4) पकी मिट्टी का मनका, धूमिल वर्ण, खण्डित अवतल चक्राकार निचला तला ऊपरी तल शंकु रूप, नाशपाती के आकार का। पंजीयन संख्या 256, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 4)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (5) पकी मिट्टी का सुपाड़ी के आकार का पूर्णपक्व मनका सछिद्र, निचला तल अवतल तथा चक्राकार ऊपरी तल कटा हुआ, धूमिल वर्ण।[50] पंजीयन संख्या 156, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (6) पकी मिट्टी पर बना लगभग चक्राकार सछिद्र मनका अनियमित गोलाई, निर्माण में सावधानी नहीं बरती गयी।[51] पंजीयन संख्या 389, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (7) पकी मिट्टी पर बना दीर्घ सछिद्र मनका, खण्डित, चर्तुर्धांश शेष लगभग चक्राकार। पंजीयन संख्या 498, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (8) पकी मिट्टी का मनका, दोनों ओर शंकुरूप, ऊपरी सिरा कटा हुआ। ऊपरी अर्धांश पर बिन्दु की तीन पंक्तियों द्वारा निर्मित त्रिभुज का केन्द्रित अलंकरण[52]। पंजीयन संख्या 564, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (9) पकी मिट्टी का बड़ा मनका, तला अधिक अवतल, उपरिभाग गोलाकार तले एवं छिद्र का व्यास क्रमशः 43 और 9.5 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3795, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (10) पकी मिट्टी का ढोलकाकार बड़ा मनका दोनों सतहें उत्तल छिद्र एवं तले का व्यास क्रमशः 9 और 30 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3990, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (11) पकी मिट्टी का भग्न मनका, दोनों ओर शंकुरूप तथा एक ओर कटा हुआ, अर्धभाग समानांतर, छेद्रित पंक्तियों तथा नाखून के निशान से अलंकृत। तला और छिद्र का व्यास 40 और 3 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4188, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 11)

क्रमांक (12) पकी मिट्टी का छोटा गोलाकार मनका भली–भांति निर्मित सछिद्र पंजीयन संख्या 807, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (13) पकी मिट्टी का गोलाकार मनका लाल रंग का सछिद्र भली–भांति निर्मित पंजीयन संख्या 3201, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (14) पकी मिट्टी का गोलाकार मनका रंग धूमिल डोरी पिरोने हेतु भलीभांति निर्मित सछिद्र, पंजीयन संख्या 406, एरण (चित्र संख्या–99 आकृति क्रमांक 14)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (15) पकी मिट्टी का मनका, तला कम अवतल उपरिभाग कटा हुआ छिद्र तथा तले का व्यास क्रमशः 6 और 41मिलीमीटर । पंजीयन संख्या 3515, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 1)

क्रमांक (16) पकी मिट्टी का चक्राकार मनका रंग धूमिल डोरी पिरोने हेतु छिद्र हस्तनिर्मित पंजीयन संख्या 823 (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 2)

क्रमांक (17) पकी मिट्टी मनका, दोनों ओर शंकु रूप, छिद्र का व्यास 3 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 422, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 3)

क्रमांक (18) पकी मिट्टी की नाशपाती के आकार का मनका, तला अवतल, तला और छिद्र का व्यास क्रमशः 20 और 2 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3498, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 4)

क्रमांक (19) पकी मिट्टी का सुपाड़ी के आकार का मनका, तला लगभग समतल। तला और छिद्र का व्यास क्रमशः 25 और 3 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 3614, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 5)

क्रमांक (20) पकी मिट्टी का लगभग गोलाकार मनका छिद्र युक्त पंजीयन संख्या 2531, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 6)

क्रमांक (21) पकी मिट्टी का लगभग गोलाकार मनका छिद्र युक्त हस्तनिर्मित पंजीयन संख्या 3498, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 7)

क्रमांक (22) पकी मिट्टी का मनका उपरिभाग कटा हुआ, तला चक्राकार सम, तला और छिद्र का व्यास क्रमशः 25 और 4 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 4120, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 8)

क्रमांक (23) पकी मिट्टी का मनका, तला चक्राकार एवं सम लगभग शंकु रूप, उपरिभाग लगभग गोलाकार तला एवं छिद्र का व्यास क्रमशः 38 और 7 मिलीमीटर, पंजीयन संख्या 766, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 9)

क्रमांक (24) पकी मिट्टी का गोलाकार छोटा सछिद्र मनका हस्तनिर्मित वर्ण धूमिल पंजीयन संख्या 1433, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 10)

क्रमांक (25) पकी मिट्टी का चक्राकार मनका सछिद्र हब उठा हुआ वर्ण काला पंजीयन संख्या 1132, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 11)

Scanned by CamScanner

क्रमांक (26) पकी मिट्टी का चक्राकार मनका वर्ण धूमिल हस्तनिर्मित सछिद्र पंजीयन संख्या 2523, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 12)

क्रमांक (27) पकी मिट्टी का भग्न मनका, दोनो ओर शंकुरूप, दोनों तले कटे हुये। अर्धांश में बिन्दु की दो–दो पंक्तियों से निर्मित त्रिभुजों का छेद्रित अलंकरण, पंजीयन संख्या 3668, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 13)

क्रमांक (28) पकी मिट्टी का चक्राकार मनका कुछ भाग खण्डित वर्ण धूसर हस्तनिर्मित सछिद्र पंजीयन संख्या 2357, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 14)

क्रमांक (29) पकी मिट्टी लगभग चक्राकार मनका वर्ण लाल सछिद्र पंजीयन संख्या 6911, एरण (चित्र संख्या–100 आकृति क्रमांक 15)

भवन अवशेष

एरण उत्खनन में प्रथमकाल से ताम्रपाषाणकालीन मानव के काफी संख्या में आवासीय साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। उनमें मकान (झोपड़ी), मकानों के फर्श, चूल्हे, अग्निकुण्ड, सुरक्षा–प्राचीर व खाई प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। उत्खनन से इस काल की सतहों से भवनों के पूर्ण अवशेष प्राप्त नहीं हुए है। महेश्वर–नावदाटोली में ताम्रपाषाणकालीन सतहों से भवनों के स्पष्ट अवशेष प्राप्त हुए हैं।[53] एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन फर्शों की प्राप्ति एवं अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में प्राप्त भवन अवशेषों के आधार पर एरण के ताम्रपाषाणकालीन निवासियों के भवनों के आकार–प्रकार का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है।

एरण उत्खनन में कायथा संस्कृति के भवनों की रूपरेखा पूर्णरूप से प्राप्त नहीं हुई है, किन्तु एक के ऊपर एक क्रमशः निर्मित मिट्टी के तीन फर्श प्रकाश में आये हैं। इनके द्वारा प्रमाणित होता है, कि एरण में कायथा संस्कृति से संबंधित तीन चरण थे। ये सभी फर्श काली अथवा पीली मिट्टी बजरी, पकी मिट्टी के गोलाकार टुकड़ों और मृद्भाण्डों को कूटकर बनाये गये थे। इस काल की ऊपरी सतह में निर्मित फर्श में काली मिट्टी बजरी, ईटों के टुकड़ों के साथ–साथ अनियमित आकार की पकी ईंटें भी लगाई गयी हैं। इस फर्श की अधिकतम मोटाई 18 से.मी. है। इस काल के मकान की दीवारें मिट्टी की बनाई जाती थी। सबसे प्रारंभिक फर्श पर एक छोटा अग्निकुण्ड प्राप्त हुआ है। इसके आस–पास राख और पशु–अस्थियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। इनके द्वारा संकेत मिलता है, कि मकानों के अंदर फर्श पर अग्निकुण्ड अथवा चूल्हे निर्मित किये जाते थे। इन चूल्हों पर अनाज के

Scanned by CamScanner

साथ–साथ मांस भी पकाकर खाया जाता था। उत्खनन में जले अन्न के दानें व हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के निवासियों के झोपड़े अनुमानतः गोल, आयताकार या वर्गाकार होते थे। मकान बनाने के लिए पहले बास–बलियों का ढाँचा बना लिया जाता था, उसके बाद उसे दोनों ओर से मिट्टी से छाप (लेप) दिया जाता था। मकान की छत सपाट अथवा ढालू रहती थी। जो बांस की चटाई या पत्तियों से बनायी जाती थी। उस पर मिट्टी की छपाई (लेप) कर दी जाती थी। महेश्वर–नावदाटोली के अतिरिक्त मकानों की कोई निश्चित योजना इस संस्कृति के आवासों के विषय में नही मिली है। मकानों में लकड़ी के मोटे खम्भे लगे रहते थे एवं गोलाकार चटाई लगायी जाती थी। इन्हें भीतर एवं से मिट्टी से लीप दिया जाता था। एरण उत्खनन से प्राप्त मिट्टी के टुकड़ों पर बांस के खांचो के चिह्न व स्तम्भ–गर्त मकान निर्माण पद्धति को स्पष्ट करते हैं।(चित्र संख्या–101) बांस के खांचों से बनी दीवालों को मिट्टी से दोनों ओर से ढक दिया जाता था। बांस के खांचों के चिह्न चूने के प्लास्टर पर भी अंकित मिले हैं। चार या पाँच मकानों के बीच एक सकरा (छोटा सा) रास्ता होता था। तीन–चार फुट व्यास की छोटी गोल झोपड़ियाँ अन्न तथा घास आदि के संग्रह हेतु बनायी जाती थी। छत बांस या सरकण्डे से बनायी जाती थी और ऊपर घास–पूस तथा पत्तों का छप्पर बनाया जाता था। मकानों की नीव में सम्भवतःअधबनी ईटों को भरा जाता था।उत्खनन में अधबनी ईटें मिलीं है। (चित्र संख्या–102)

फर्श

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन सतहों से छः फर्श मिले हैं। ये फर्श कंकड़ मिश्रित पीली या काली मिट्टी, बजरी, मृद्भाण्ड इत्यादि को कूटकर बनाये गये हैं।[54] मध्यप्रदेश में एरण के अतिरिक्त अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से भी फर्श मिले हैं। ये सभी गोबर, मिट्टी, बजरी, मृद्भाण्ड इत्यादि से बने हैं। इन्हें चिकना करके पक्का कर दिया जाता था। फर्श में उपर्युक्त वस्तुओं के अतिरिक्त कोयले को भी प्रयोग विशेष रूप से किया गया था। कोयले के टुकड़े फर्श को सीलन से बचाने के लिए मिलाये जाते थे। फर्श या चूने अथवा गोबर की पुताई की जाती थी। कभी–कभी पहले के जले हुए मलबे को फैलाकर उस पर चूना डाला गया है।[55] सीमित उत्खनन के कारण समूचे फर्श तथा नालियाँ नहीं मिलीं हैं। उत्खनन में प्राप्त फर्शों की मोटाई 100 मिलीमीटर से 200

Scanned by CamScanner

मिलीमीटर तक पायी गई है। (चित्र संख्या–103) फर्शों की प्राप्ति से भवनों के निर्माण का प्रमाण तो मिलता है, किन्तु उनकी योजना तथा स्वरूप की स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती।

चूल्हे तथा अग्निकुण्ड

उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन चूल्हे मिले हैं। एक उठी दीवालों वाला गोल अग्निकुण्ड काली मिट्टी की स्वाभाविक सतह के ऊपर प्राप्त हुआ है। इस कुण्ड का फर्श कूट कर बनाया गया है। आग जलने के कारण चूल्हे की दीवाले लाल एवं काली हो गई हैं। चूल्हें की दीवालों में राख तथा जानवरों की हड्डियाँ भी प्राप्त हुई हैं।[56](चित्र संख्या–104)

एक बड़े आकार का चूल्हा भी मिला है। जिसके चारो और दीवाले नहीं उठायी गयी हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि यह सार्वजनिक चूल्हा था। जिसका उपयोग विशेष अवसरों पर किया जाता रहा होगा। यह चूल्हा सुरक्षा–प्राचीर के बाहर प्राप्त हुआ है। उठी हुई दीवालों वाले दो अन्य चूल्हे ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से मिले हैं।[57] (चित्र संख्या–105)

इस प्रकार के चूल्हों की प्राप्ति से स्पष्ट होता है, कि उठी हुई दीवालों वाले चूल्हों का इस संस्कृति के प्रारंभिक चरण में लोगों को ज्ञान हो चुका था। चूल्हों के निकट राख के ढेर को गर्म बनाये रखने के लिए चूल्हों के पास में गरम राख पर बर्तन को रखा जाता था। उसी राख का ढेर चूल्हों के निकट पाया गया है।

सुरक्षा–प्राचीर तथा खाई

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा–प्राचीर तथा खाई के अवशेष मिले हैं। सुरक्षा–दीवाल कड़ी चिकनी काली एवं पीली मिट्टी से बनाई गई है।[58] यह सुरक्षा–प्राचीर नगर के दक्षिणी क्षेत्र में अर्धवृत्ताकार आकार में बनायी गयी थी। उत्तरी भाग बीना नदी द्वारा सुरक्षित था। सुरक्षा–प्राचीर की चौड़ाई लगभग 30 मीटर है। उसकी अधिकतम ऊँचाई 6.41 मीटर है। सुरक्षा–प्राचीर के चारों ओर खाई भी है, जिसका निर्माण सुरक्षा–प्राचीर हेतु खोदी गई मिट्टी के कारण हुआ है। इस खाई की चौड़ाई लगभग 36. 60 मीटर गहराई लगभग 5.49 मीटर है। सुरक्षा–प्राचीर तथा खाई के मध्य 16.47 मीटर का फासला है।[59] खाई का उद्देश्य संभवतः सुरक्षा–प्राचीर की भाँति ही रक्षा की द्वितीय पंक्ति के रूप में तो था ही, साथ ही नदी की बाढ़ के पानी को बाहर निकलना भी इसका उद्देश्य हो सकता है। कालांतर में यह खाई पीली मिट्टी से तथा कूड़ा पत्थर इत्यादि से

Scanned by CamScanner

भर गयी थी। ऐसा प्रतीत होता है, कि खाई का भरना ताम्रपाषाणकाल से प्रारंभ हो गया था। कार्बन 14 तिथि निर्धारण द्वारा यह स्पष्ट ज्ञात हुआ है, कि सुरक्षा दीवार का निर्माण ताम्रपाषाणकाल के मध्य में हुआ।

सुरक्षा–प्राचीर में ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी के सभी प्रकार के मृद्भाण्डों के टुकड़े प्राप्त हुये हैं। इस काल के निवासियों को किन विशेष परिस्थितियों में इस सुरक्षा–प्राचीर का निर्माण करना पड़ा, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। कुछ विद्वान मानते हैं, कि यह सुरक्षा–प्राचीर नदी की बाढ़ से रक्षा हेतु निर्मित की गयी थी। वह नगर निर्माण के उन्नत स्तर काल की हो सकती है। लेकिन उत्खनन से बाढ़ द्वारा हानि के कोई विशेष प्रमाण नहीं मिले। अतः बाढ़ से रक्षार्थ सुरक्षा–प्राचीर का निर्माण नही हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है, कि किन्ही शक्तिशाली शत्रुओं के भय से सुरक्षा–प्राचीर का निर्माण हुआ होगा। आदिकाल से ही मानव प्राकृतिक शक्तियों और आक्रमणों से भयभीत रहा है। इन दोनों आपदाओं से अपनी सुरक्षा का प्रबंध उसने पर्याप्त रूप से किया।

प्राक्–ऐतिहासिक भारत में नवपाषाणकाल मे मनुष्य ने सुरक्षा के लिए पत्थरों की बाढ़–युक्त दुर्गम स्थलों में निवास किया। भारतवर्ष के बाहर मैडन्कैसल नामक प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक दुर्ग का निर्माण भी इसी उद्देश्य को लेकर किया गया था। हड़प्पा सभ्यता तथा परवर्तीकालीन सभ्यताओं के निवासियों ने बाढ़ और बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा हेतु सुरक्षा–प्राचीर का निर्माण किया। उत्तर भारत के अनेक प्राचीन नगरों में सुरक्षा–प्राचीरों का निर्माण किया गया था। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त सुरक्षा व्यवस्था विशेष उल्लेखनीय है। एरण की सुरक्षा–प्राचीर के विशाल स्वरूप को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि ताम्रपाषाणकाल में एरण, जनंसख्या बाहुल्य था। विशाल प्राचीर के निर्माण में यथेष्ठ मानव बल की आवश्यकता पड़ी होगी। जिन आक्रमणकारियों से तत्कालीन निवासियों को भय था वे कौन थे, यह स्पष्ट कहना कठिन है।

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 सांकलिया, एच.डी. एवं अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर एण्ड नावदाटोली, पृ. 244

2 वाकणकर, वी.एस : द विक्रम, कायथा एक्सकेवेशन, 1967, पृ. 49

3 मध्यप्रदेश इतिहास परिषद अंक 4, पृ. 38

4 वाकणकर, वी.एस. : कायथा एक्सकेवेशन पूर्वोक्त, पृ. 16

5 अली, रहमान,व अन्य : चाल्कोलिथिक साइट ऑफ उज्जैन रीजन, महिदपुर एक्सकेवेशन्स रिपोर्ट, दिल्ली, 2004, पृ. 111–112

6 वही, : पृ. 113

7 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजीसागर विश्वविद्यालय, सागर, विश्वविद्यालय, 1967, पृ. 34

8 वाकणकर, वी.एस : द विक्रम, पूर्वोक्त,

9 वाजपेयी, कृष्णदत्त : सागर थ्रू दि एजेज,सागर पृ. 27

10 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू : 1969, पृ. 16, बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1967, पृ. 34

11 सांकलिया, एच.डी. : स्टोन एज टूल्स, पृ. 84

12 सिंह, उदयवीर : "एरण ए चाल्कोलिथिक सेटलमेन्ट" बुलेटिन ऑफ एन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी, सागर,1968 पूर्वोक्त, पृ. 34

13 सांकलिया एव अन्य : पूर्वोक्त,पृ. 50

14 वही, : पृ. 234, 237–38

15 वाकणकर,वी.एस : द विक्रम, पूर्वोक्त, पृ. 14

16 वही, : पृ. 44

17 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 33

18 वही, : पृ. 240

19 वाकणकर,वी.एस : द विक्रम, पूर्वोक्त,पृ. 36

20 सांकलिया एवं अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 240–42

21 वाकणकर, वी.एस : द विक्रम : पूर्वोक्त, पृ. 36

22 सांकलिया एवं अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 243

23 वाकणकर, वी.एस : द विक्रम : पूर्वोक्त, पृ. 35

24 सांकलिया एवं अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 243

25 वही : पृ. 196

Scanned by CamScanner

26 वही : पृ. 196

27 लाल, बी.बी. : हस्तिनापुर उत्खनन, ऐंशियेन्ट इंडिया, नं 10–11, 1954–55, पृ. 88

28 झा, विवेकदत्त : एरण उत्खनन से ज्ञात द्वितीय काल का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, सागर विश्वविद्यालय,1965 पृ 71–72

29 जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषदभाग 4, पृ. 35

30 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 98–99

31 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : फ्राम हिस्ट्री द प्रीहिस्ट्री एट नेवासा, 1954–56, पृ. 384–85

32 सांकलिया एव अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 194–95

33 वही : पृ. 196–97

34 वाकणकर,वी.एस. : द विक्रम : पूर्वोक्त, पृ. 35

35 दीक्षित, एम.जी. : त्रिपुरी, 1952, पृ. 84, मानचित्र 34 क्र 8

36 साकलियां, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 195

37 द विक्रम : पूर्वोक्त, पृ. 35

38 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 194–195

39 दीक्षित; एम.जी. : त्रिपुरी, 1952, पृ. 84, मानचित्र 34 क्र 3

40 वाकणकर, वी.एस. : द विक्रम पूर्वोक्त, पृ. 35

41 लाल, बी.बी. : ऐन्शियेन्ट इंडिया, नं. 10–11, 1954–55, पृ. 89, चित्र संख्या XLIX नं. 3

42 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 222

43 वही, : पृ. 233

44 वही, : पृ. 22

45 वही. : पृ. 178–179

46 सांकलिया व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर नावदाटोली, मानचित्र 101, नं. 37 उपदर्शित क्रमांक 18 व 19 के समान

47 वही, : पृ. 179, मानचित्र 101

48 सांकलिया एव अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 18

49 सांकलिया एवं अन्य : पूर्वोक्त, मानचित्र 101, नं. 31, उपरिदर्शित क्रमांक 31 के समान

50 शांडिल्य, आलोक : एरण उत्खनन 1986 द्वारा ज्ञात प्रथमकाल का अध्ययन (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.), पृ. 41

51 वही, : पृ. 58

Scanned by CamScanner

52 वही :

53 सांकलिया व अन्य : पूर्वोक्त, पृ0 52–53

54 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू,.1968, पृ. 12

55 वही : पृ. 16

56 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू,1960–61, पृ. 17

57 वही : 1969, पृ. 16

58 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर,पूर्वोक्त,पृ. 32

59 वही :

Scanned by CamScanner

अध्याय सप्तम्

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का भारत की अन्य समकालीन संस्कृतियों के साथ सम्पर्क एवं सह-सम्बन्ध

Scanned by CamScanner

एरण उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों की समानता अन्य समकालीन संस्कृतियों के पुरावशेषों से मिलती–जुलती है। उनमें से प्रमुख संस्कृतियों व पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेषों के माध्यम से उन संस्कृतियों के साथ एरण के निवासियों का संपर्क व सह–संबंध स्पष्ट हो जाता है। एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति, हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थी। जिसका प्रमाण एरण के पुरावशेषों की कार्बन 14 की विधि से प्राप्त तिथि 2150 ई.पू. से स्पष्ट होता है। काफी कुछ पुरावशेषों का साम्य दोनों संस्कृतियों में दृष्टव्य होता है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश में स्थित, कायथा संस्कृति, मालवा संस्कृति (महेश्वर–नावदाटोली, आवरा, मनोटी उज्जैन, दंगवाड़ा, महिदपुर, बेसनगर, रूनिजा, पिपलिया–लोरका), राजस्थान में स्थित आहाड़ संस्कृति एवं महाराष्ट्र से प्राप्त जोर्वे संस्कृति के पुरावशेषों का साम्य भी एरण के पुरावशेषों से मिलता है।

पुरावशेषों के तुलनात्मक अध्ययन से एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों का संपर्क व सह–संबंध उक्त संस्कृतियों से किया जा सकता है, इसका विस्तार से वर्णन निम्न प्रकार से है :–

धातु निर्मित वस्तुएँ

(1) ताम्र निर्मित वस्तुएँ

एरण के ताम्रपाषाणकालीन स्तर से ताँबे की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। उनमें दो ताम्र कुल्हाड़ियाँ, मुद्रिकाओं के टुकड़े, अंजन–शलाकाएँ, छल्ले, चूड़ियाँ, बाणफलक प्राप्त हुए हैं।[1] इसी तरह मध्यप्रदेश के प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से भी मिलती–जुलती ताम्र वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। उनमें प्रमुखतः से कायथा में दो ताम्र–कुठार घड़े में रखे हुए मिले हैं, जिन्हें साँचे मे ढालकर बनाया गया है।[2] इसके अतिरिक्त कायथा से ताम्र–चूड़ियाँ, प्राप्त हुई हैं।[3] आहाड़ (राजस्थान) से प्राप्त चपटी ताम्र कुल्हाड़ियाँ (Flat, coppes celter) के फाल, ताम्र–मुद्रिकाएँ, चूड़ियाँ, सुरमे की सलाईयाँ ताँबे के प्रस्तर, छल्ले, मुद्रिकाएँ प्रमुख

Scanned by CamScanner

हैं।[4] बालाथल राजस्थान से भी ताम्र–वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।[5] महेश्वर–नावदाटोली से एरण के समान चपटी ताम्र कुल्हाड़ियाँ, छल्ले व चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[6] आवरा से एक कांस्य व दूसरी ताम्र कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है।[7] दंगवाड़ा (उज्जैन) से ताम्र–कुल्हाड़ियाँ बनाने के साँचे, ताम्र–कुठार, व चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[8] एरण के समान, महिदपुर (उज्जैन) से ताम्र–चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[9] आजादनगर से ताम्र–बाणफलक प्राप्त हुए हैं।[10] पीतनगर (खरगौन) से ताम्र–चूड़ियाँ प्राप्त हुई है।[11] एरण के समान पिपलिया–लोरका (रायसेन) से भी ताम्र–चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[12] इसी तरह जोर्वे महाराष्ट्र से एरण के समान ताम्र उपकरणों में कुल्हाड़ियाँ, सुईयाँ, चूड़ियाँ, छल्ले व अंजन–शलाकाएँ मिलीं हैं। इनामगाँव (महाराष्ट्र) से ताम्र–चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[13] उपर्युक्त अध्ययन के बाद कहा जा सकता है, कि एरण के समान ताम्र–कुल्हाड़ियाँ अधिकांश महत्वपूर्ण पुरास्थलों से प्राप्त हुई हैं। इनका उपयोग, शिकार व जंगलों को साफ (काटने) करने में किया जाता था। ताम्र–चूड़ियाँ, अंजन–शलाकाएँ, छल्ले, ताम्र–मुद्रिकाएँ अधिकांशतः पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट है, कि लोग श्रृंगार–प्रसाधान हेतु ताम्र–आभूषणों का प्रयोग काफी मात्रा में करते थे और संभवतः यह लोग इनका एक–दूसरे को आयात–निर्यात व्यापारियों की तरह करते थे। एरण व अन्य स्थानों से भी बाणफलक प्राप्त हुए हैं। इनका उपयोग शिकारी लोग धनुष के बाण के रूप में करते थे। ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों से लगभग एक जैसे ताम्र उपकरण व आभूषणों में उपयोग होने वाली वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। इससे स्पष्ट है कि इस काल के लोगों के एक दूसरे से कुछ न कुछ सम्बन्ध थे।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण पुरास्थलों (हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, चन्हुदड़ों, रंगपुर, लोथल, कालीबंगा, रोपड़) से भी ताम्र–वस्तुओं की प्राप्ति हुई हैं।[14] हड़प्पाकालीन स्तर गनेश्वर (Ganeshwar) राजस्थान से चपटी ताम्र–कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[15] लोथल से भी काफी मात्रा में ताम्र–वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं, उनमें ताम्र–पशु–पक्षियों की मूर्तियाँ, धातु पिण्ड, कच्ची ताम्र–धातु व ताम्र–भट्टी प्रमुख हैं।[16] रोहिरा (Rohira) पंजाब से ताम्र सीलें व अन्य वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। अभी हाल में नई दिल्ली से लगभग 75 कि.मी. दूर स्थित बागपत जनपद के सनौली गांव के उत्खनन में पुरातत्त्वविदों को तीन नर–कंकाल मिले उनके हाथों में ताँबे के कड़े (चूड़ियाँ) प्राप्त हुए हैं। सनौली उत्खनन परियोजना के निर्देशक डॉ. धर्मवीर शर्मा के अनुसार अभी तक माना जाता था कि ताम्रयुग की शुरूआत 3000 हजार वर्ष पुरानी कांस्ययुगीन हड़प्पा सभ्यता के बाद मानी जाती थी, किन्तु खुदाई में मिले ताँबे के

Scanned by CamScanner

कड़ों (चूड़ियों) से स्पष्ट है, कि उस समय ताँबे का चलन काफी मात्रा में हो चुका था।[17] इसकी पुष्टि हड़प्पा सभ्यता के अन्य स्थलों, लोथल (गुजरात) गनेश्वर (राजस्थान) हड़प्पा, मोहनजोदड़ों से प्राप्त ताम्र–वस्तुओं से भी होती है। डॉ. शर्मा के अनुसार हड़प्पा सभ्यता और ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता प्रारंभ से ही समकालीन थीं। एरण से प्राप्त पुरावशेषों (ग्रेफिटी, मृद्भाण्ड, मृण्मूर्तियों, मनकों, स्वर्ण पत्तर) की समानता भी हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त पुरावशेषों से होती है, जिससे स्पष्ट है, कि ताम्रपाषाणकालीन लोगों व हड़प्पा के लोगों मे आपसी मेल–जोल व वस्तुओं का आदान–प्रदान (व्यापार) होता था। उल्लेखनीय है, कि एरण की ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता की तिथि 2150 ई.पू. निर्धारित की गई है।

उपुर्यक्त पुरास्थलों से प्राप्त ताम्र–पुरावशेषों के अध्ययन से स्पष्ट है, कि हड़प्पा सभ्यता व ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों में ताँबे का प्रचलन था। लोग दैनिक जीवन में शिकार, आभूषणों व मनोरंजनों के साधनों में व्यापक रूप से ताम्र–धातु का उपयोग करते थे।

(2) **स्वर्ण**

एरण उत्खनन में स्वर्ण का चक्राकार टुकड़ा प्राप्त हुआ है। जिससे ज्ञात होता है कि एरण के ताम्रषाणकालीन लोगों को स्वर्ण की जानकारी थी। इससे विनिमय प्रणाली का अभिज्ञान भी होता है।[18] इसका व्यास 2.5 से.मी. तथा वजन 20 ग्रेन है। इसका वास्तविक उपयोग क्या था। विद्वानों मे मतभेद हैं। इसमें छिद्र होने के चिन्ह भी दिखाई देते हैं। कुछ विद्वान इसे 'निष्क' मानते हैं। एरण से प्राप्त स्वर्ण–पत्तर की कार्बन डेटिंग 10 वीं सदी ई.पू. है। एरण के उत्तर ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से स्वर्णाभूषणों के कुछ टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं।[19] उनसे प्रतीत होता है, कि अलंकारों के रूप में इस समय सोने का प्रयोग होता था। एरण उत्खनन में परवर्ती ताम्रपाषाणयुग मे तीन सोने के टुकड़े प्राप्त हुए हैं।[20]

एरण के समान ही भारत के कुछ ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से भी स्वर्णाभूषण मिले हैं। उनमें महिदपुर (उज्जैन) 1989–90 ई. में एक अण्डाकार स्वर्ण पत्तर प्राप्त हुआ है। इसका वजन 5 ग्राम 3.50 मि.ली. ग्राम है, इसकी माप (5×4 से.मी.अकार 12 से.मी.) है। यह रसोई घर के पास प्राप्त हुआ है।[21] (महिदपुर उत्खनन पंजीयन संख्या 5/23/4) **चित्रफलक** (106) अध्ययन से संकेत मिलता है, कि यह संभवतः निष्क है।[22] महिदपुर से प्राप्त स्वर्ण–पत्तर की कार्बन डेटिंग 11वीं, 12वीं शती ई.पू. निकलती है। एरण से प्राप्त

Scanned by CamScanner

स्वर्ण पत्तर की तिथि 10 वीं शती ई.पू. प्राप्त हुई है। महिदपुर से प्राप्त यह स्वर्ण पत्तर लाल–काले चित्रित पात्र के साथ सुरक्षित रखा गया था। आकार–प्रकार व बनावट में यह हार में पिरोने के आकार में है। विद्वानों के अनुसार यह निःसंदेश निष्क का ही भाग था। माप–तौल के आधार पर इसे मुद्रा के स्थान पर लेन–देन व दान–दक्षिणा में प्रयोग में लाया जाता रहा होगा।[23] एरण व महिदपुर से प्राप्त स्वर्ण–पत्तरों के अध्ययन से पता चलता है, कि यह दोनों वैदिक निष्क हो सकते हैं :–

अर्हन विभर्षि सायकानि ध्न्याहर्न निष्कं यजनं विश्वरूपम्।

उक्त सूक्त में रूद्र को निष्क या स्वर्ण श्रृंखला पहने हुए बताया गया है। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 33वें सूक्त में रूद्र के गले में निष्क के हार का उल्लेख है। ऋग्वेद का काल विद्वानों के अनुसार 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. माना गया है। महिदपुर व एरण से प्राप्त स्वर्ण–पत्तर की कार्बन डेंटिंग – ग्यारहवीं–बारहवीं व दसवीं शती ई.पू. है। इस तरह दोनों ऋग्वैदिक काल में प्रचलित माने जा सकते हैं। पाणिनि ने सात प्रकार की मुद्राओं की चर्चा अपने ग्रंथ अष्टाध्यायी में की है। जिनमें कार्षापण के अतिरिक्त, निष्क, शतमान आदि का वर्णन किया है। अगर पाणिनि का काल छठी शती ई.पू. रखा जाता है। (बी.एस. अग्रवाल छठी सदी ई.पू. पाणिनि का काल मानते हैं) तो इस समय कम से कम सात प्रकार की मुद्राएँ धातु से निर्मित भारत के बाजार में प्रचलित थीं। उक्त पत्तरों की तुलना शतमान व निष्क से 'पाणिनी' के आधार पर की जा सकती है। संभवतः यह स्वर्णपत्र उस समय मुद्रा के रूप में प्रचलित रहे होगें।

बौद्ध साहित्य, जातक कथाओं जैसे कुद्रक जातक तथा वैसन्तर जातक में निष्क को मुद्रा के रूप में प्रयोग किया गया है। इसका प्रयोग सिर्फ स्वर्ण (सुवर्ण और हिरण्य) के साथ प्रयोग किया गया है। विषन्तर जातक मे स्वर्ण तौल सिक्के के रूप में बताया गया है। भूरीदत्त जातक में यह स्वर्ण वस्त्र व हिरण्य के साथ बताया गया है। अब प्रश्न उठता है, कि यह क्या आभूषण था या स्वर्ण मुद्रा थी। भण्डारकर महोदय के आधार पर निष्क दो अर्थों में प्रयोग होता था। एक मुद्रा दूसरा हार अगर यह हार था, तो इसमें निष्क लगे होते थे, या ऐसा हार जिसमें निष्क लगा होता था। भारत में आज भी मुद्रायुक्त हार बनाने का प्रचलन बंगाल, महाराष्ट्र, बिहार व मध्यप्रदेश की पिछड़ी बंजरा जाति में है। यह लोग सिक्कों में छिद्र करके हार बनाकर पहनते हैं। यह परंपरा मध्यप्रदेश में मध्यकाल (1206–1707ई.) में भी प्रचलित थी। आज भी एरण के

Scanned by CamScanner

मध्यकालीन स्तर से छिद्रयुक्त रजत सिक्के मिलते हैं। इससे सिद्ध होता है, कि ताम्रपाषाणकालीन यह परंपरा भारत में बाद के कालों में भी जारी रही। जैन ग्रंथ कल्पसूत्र में भी श्रीदेवी को सजाने के लिए 24वें तीर्थांकर महावीर–स्वामी की माँ ने इसी प्रकार की माला (हार) का स्वप्न देखा था। जो उसके गले में लटक रहा था। इसे यहां दीनार कहा गया है, जो रोमन शब्द है। लेकिन प्राचीन भारत में इसका प्रचलन था। वैदिक संदर्भ में कुछ स्थानों पर हार को 'निष्क' कहा जाता था। लेकिन भण्डारकर महोदय ने इसे मुद्रा से पिरोया गया हार बताया है। ऋग्वेद में एक अन्य संदर्भ में निष्क को गायों के सींग में बांधने वाला आभूषण बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान पर राजा जनक के दान में 'निष्क' की चर्चा की गई है। छान्दोग्योपनिषद में इसे हार कहा गया है। एरण–महिदपुर के अतिरिक्त ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में पिपलिया–लोरका से भी एक स्वर्ण–मनका प्राप्त हुआ है।[24] जो संभवतः हार इत्यादि में पिरोने हेतु बनाया गया था। हल्लूर (HALLUR) (जिला धारवाड़, कर्नाटक) के राज्य सरकार के पुरातत्त्व संग्रहालय के सानिध्य (1971) में हुए उत्खनन के फलस्वरूप ताम्रपाषाणकालीन स्तर से स्वर्ण आभूषण (Ornaments) मिले हैं।[25] दक्षिण भारत में ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों से स्वर्ण वस्तुओं की प्राप्ति की जानकारी डॉ. एल.पी. साही के लेख में दी गई है। दक्षिण भारत में ताम्रपाषाणकालीन स्थलों, टेक्कलकोटा, ब्रह्मगिरि, नरसीपुर से स्वर्ण आभूषण व स्वर्ण मनके प्राप्त हुए हैं। इनका वजन 7.94 ग्राम से 5.37 ग्राम तक है। इनकी तिथि 2000 ई.पू. है।[26] लोथल (गुजरात) के उत्खनन (1955–50 ई.) एस.आर. राव महोदय को 10 स्वर्ण पत्तर, (महिदपुर व एरण के पत्तरो जैसे) 2 स्वर्ण मनके प्राप्त हुए हैं।[27] उपर्युक्त अध्ययन के बाद कहा जा सकता है कि एरण से प्राप्त स्वर्णपत्र, वास्तव में एक मुद्रा थी और धनी संपन्न लोग अपनी संपन्नता दिखाने के लिए इसमें छिद्र करवाकर हार में पहनते थे। (साहित्य से ज्ञात होता है, कि स्वर्ण पहनने से शरीर स्वस्थ्य बना रहता है) इसकी पुष्टि महिदपुर से प्राप्त स्वर्णपत्र से भी होती है, जिसमें हार की डोरी पिरोने हेतु छिद्र किया गया है। इसमें सौन्दर्य के लिए बीचों–बीच एक उठी सी रेखा भी बनाई गयी है जो बिल्कुल लोथल से प्राप्त स्वर्ण पत्तरों जैसी है। संभवतः हार के बीचों–बीच इसे मुख्य लटकन हेतु प्रयोग किया जाता होगा और सहायक छोटे मनकों को हार में पिरोते होगें, उनमें छोटे–छोटे स्वर्ण, रजत अर्धकीमती पत्थरों में जास्पर, चाल्सीडोनी, अकीक के मनके उपयोग किए जाते होगें जो उत्खनन में काफी संख्या में प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार कहा

Scanned by CamScanner

जा सकता है, कि ताम्रपाषाणकाल में स्वर्ण, मुद्रा के रूप में लेन–देन, दान–दक्षिण व आभूषणों के रूप में भी प्रयुक्त होता था। हड़प्पा सभ्यता में लोथल, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चहुन्दड़ों, कालीबंगा इत्यादि स्थानों से स्वर्ण आभूषणों की प्राप्ति हुई है। लोथल से बहुसंख्यक स्वर्ण के मनके (Neklas) प्राप्त हुए हैं।[28]

मनके

एरण उत्खनन में ताँबे के मनके, अर्धकीमती पत्थरों में चाल्सीडोनी, स्फटिक, कार्नेलियन, अकीक, जास्पर, स्टेयटाइट, मुलायम पत्थर से बने मनके, मिट्टी के मनके काफी संख्या में प्राप्त हुए हैं। जो हार बनाने में प्रयुक्त होते थे। एरण के समान ही भारत के अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से भी उपर्युक्त प्रकार के मनके प्राप्त हुए हैं

(1) **ताँबा** का नालिकाकार (Tobular) मनका पजीयन संख्या 4786 एरण, (2) **ताँबा** का नालिकाकार मनका पंजीयन संख्या 5387, एरण, इसी तरह के ताम्र–मनके कायथा,[28] महेश्वर–नावदाटोली[29] जोर्वे संस्कृति में जोर्वे,[30] इनामगाँव,[31] नेवासा[32] से भी मिले है तथा नेवासा से एक बच्चे के कंकाल के गले में ताम्र–मनकों का हार पड़ा मिला है।[33] इससे स्पष्ट होता है, कि ताम्र–मनकों का उपयोग ताम्रपाषाणकाल में हार के रूप में होता था। हड़प्पा सभ्यता से भी स्वर्ण व ताम्र–मनके प्राप्त हुए हैं। अतः स्पष्ट है, कि संपन्न लोग स्वर्ण, ताम्र जैसी धातुओं के हार पहनते थे।

अर्धकीमती पत्थरों व मिट्टी के मनके

एरण उत्खनन मे ताम्रपाषाणकालीन स्तर से जास्पर,कार्लेलियन,अकीक, सीप,स्टोन,स्टेयटाइट,शंख,कैलसाइन्ड,आगेट, फियांस पत्थर, स्फटिक, पेस्ट के 63 मनके प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में इस काल से पकी मिट्टी के विविध आकार के 29 मनके प्राप्त हुए हैं। उक्त प्रकार के मनके अन्य स्थलों में कायथा से आगेट (गोमेद) कार्नेलियन, क्रिस्टल के क्रमशः 160 और 175 मनकों वाले दो हार, और 40,000 स्टेयटाइट (Statite) के छोटे–छोटे मनके प्राप्त हुए हैं।[34] कायथा से उक्त मनकों के अलावा एरण की भाँति मिट्टी के मनके भी प्राप्त हुए हैं।[35]

आहाड़ से माणिक्य तथा सिलखड़ी के मनके प्राप्त हुए हैं। इन पर ज्यामितीय अलंकरण तथा पशु आकृतियों का अंकन किया गया है।[36] महेश्वर–नावदाटोली से आगेट, कार्नेलियन, चाल्सीडोनी, क्रिस्टल, जास्पर, स्टेयटाइट व मिट्टी के मनके प्राप्त हुए हैं।[37] जो एरण से प्राप्त मनकों से साम्य रखते हैं। एरण से प्राप्त स्टेटाइट के चक्राकार मनकों

Scanned by CamScanner

के समान नावदाटोली से भी मनके प्राप्त हुए हैं। महिदपुर,[38] नागदा[39] (उज्जैन) से एरण के समान मिट्टी के मनके मिले हैं। गनगाखेड़ी (बैरसिया, भोपाल),[40] पीतनगर[41] (खरगौन), पिपलिया–लोरका[42] , बेसनगर[43] (विदिशा), से स्टेटाइट व मिट्टी के मनके मिले है, जो एरण के मनकों से साम्य रखते है।

जोर्वे संस्कृति में प्रकाश, दायमाबाद, चन्दोली, इनामगाँव, नेवासा से अर्धकीमती पत्थरों व पकी मिट्टी के मनके प्राप्त हुए हैं।[44] उल्लेखनीय है, कि हड़प्पा सभ्यता से भी अर्धकीमती पत्थरों व पकी मिट्टी के मनके प्राप्त हुए हैं। उपर्युक्त वर्णन के बाद कहा जा सकता है, कि ताम्रपाषाणकालीन लगभग सभी स्थलों से मनकों की प्राप्ति से स्पष्ट है, कि इस काल के लोग मनकों के हार बनाकर पहनते थे। जो उनकी श्रृंगार–प्रियता के सूचक है। हार में स्वर्ण, ताम्र, अर्धकीमती पत्थरों व पकी मिट्टी के मनकों का प्रयोग किया जाता था। अतः कहा जा सकता है, कि उच्च व माध्यम वर्ग के लोग स्वर्ण, ताम्र तथा अर्धकीमती पत्थरों के बने हार बनवाकर पहनते थे। जो उनकी संपन्नता के सूचक हैं। और निम्नवर्ग के लोग पकी मिट्टी से बने हारों को पहनते थे। जो उस समय की निर्धनता के सूचक हैं स्पष्ट होता है,कि शरीर की सुन्दरता के प्रति इस काल के लोग काफी जागृत हो गये थे। हड़प्पा सभ्यता से मनके (आभूषण) बनाने के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। संभवतः हड़प्पा सभ्यता के लोगों से ही यह परंपरा ताम्रपाषाणकालीन लोगों ने सीखी थी। इस काल में मनकों का एक बड़ा व्यवसाय था और उनका आयात–निर्यात भी होता था।

पाषाण उपकरण

एरण उत्खनन के कायथाकालीन स्तर से प्रस्तर कुठारों की प्राप्ति हुई है। जो मालवा क्षेत्र की नवीन उपलब्धि है। कालान्तर में कायथा से भी ताम्रपाषाण संस्कृति की सतह से प्रस्तर–कुठार प्राप्त हुए हैं। एरण के प्रथमकाल से संबंधित दो पाषाण–उपकरण उद्योग, नवपाषाण उपकरण, ताम्रपाषण संस्कृति की सतह से कायथा, महेश्वर–नावदाटोली, नागदा, मनोटी, आवरा, पिपलिया–लोरका से भी प्राप्त हुए हैं। एरण के ताम्रपाषाणकालीन स्तर तीन नवप्रस्तरयुगीन कुठार प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में प्राप्त ये तीनों उपकरण खण्डित हैं। यद्यपि इनके काल निर्धारण के यथेष्ट प्रमाण हमारे पास नहीं है। तथापि अनुमानतः यह उपकरण ताम्रपाषाणकाल से संबंधित भी हो सकते हैं। डॉ. सांकलिया के अनुसार नवप्रस्तरयुगीन पालिशयुक्त उपकरण विरले व महत्वपूर्ण हैं।[45] इनका कार्यांग चौड़ा तथा धारदार है। बेसाल्ट पर निर्मित उपकरण की लंबाई 194 मिलीमीटर है। इनका उपयोग

Scanned by CamScanner

लकड़ी में बाँधकर जंगल काटने व आखेट में किया जाता था। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकाल से घोड़े को विधिवत् दफनाने के प्रमाण मिले हैं। सुरकोतड़ा से भी घोड़े के हड्डी के प्रमाण मिलने की सूचना है। प्रोफेसर विवेकदत्त झा के अनुसार स्तर विन्यास के आधार पर इसका कार्यक्रम 2100 ई.पू. निर्धारित किया जा सकता है। एरण उत्खनन में प्रभूत संख्या में लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। इनमें समांतर किनारों वाले ब्लेड की संख्या अधिक है। ये चाल्सीडोनी पत्थर पर केस्टेडरिज पद्धति से निर्मित किये गये हैं। कुछ उपकरण, अकीक, जास्पर तथा चर्ट से बने हैं। एरण से प्राप्त लघुपाषाण उपकरणों में समांतर किनारों वाले ब्लेड, अर्धचन्द्र, (लूनेट्स) अग्रास्त्र (प्वाईट्स) समलंब (ट्रेथेजीस), चाकू जैसी धार वाले ब्लेड (पेन–नाइफ ब्लेड) फ्लक (फ्लेक) तथा लंबी धार वाले क्रोड (फ्लुटैड कोर) समांतर किनारों वाले ब्लेड ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषता है।

इस प्रकार के ब्लेड्स, महेश्वर–नावदाटोली में बड़ी संख्या में मिले हैं।[46] इन छोटे–छोटे ब्लेड़ों को लकड़ी में फंसाकर उपयोग में लाते थे। इनका उपयोग आरी, हँसिया, बाणफलक की भाँति किया जाता था, इसके साथ–साथ इनका उपयोग छीलने, खुरचने व छेद करने तथा तराशने में भी से किया जाता था। एरण के प्रथमकाल से पाषाणकालीन उपकरणों के अतिरिक्त प्रस्तर निर्मित वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। उनमें पत्थर का छल्ला, सिलबट्टा, प्रस्तर हथौड़ा, पत्थर का गोला, धार करने वाले पत्थर, छोटी, गोलियाँ, तौल–बाट, तथा मोहरें इत्यादि पाषाण–वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। एरण के समान ही ताम्रपाषाणकालीन अन्य पुरास्थलों से पाषाण उपकरण व अन्य वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं उनमें कायथा से 436 ब्लेड, 40 क्रोड प्राप्त हुए हैं।[47] ब्लेड अधिकांशतः चाल्सीडोनी पत्थर पर बनाये गये हैं। चाकू जैसी ब्लेड (पेन–नाइफ) यह एरण से प्राप्त (पेन–नाइफ) चाकू जैसी ब्लेड से साम्य रखती है। कायथा से गोल पत्थर (रिंग स्टोन), ब्लेड, बेधक, चन्द्रिक, एरण के समान पत्थर की छोटी–छोटी गोलियाँ (जो गोफन से फेंककर पक्षियों के शिकार करने के काम आती थीं), उपकरणों में धार करने के उपकरण तौल–बाँट प्राप्त हुए हैं।[48] इस प्रकार के उपकरण एरण से भी मिले हैं। आहाड़ नामक पुरास्थल पर लघुपाषाण उपकरणों का अभाव है। जबकि गिलुण्ड एवं कायथा के आहाड़कालीन स्तरों से लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं।[49] नावदाटोली से खुरचनी, ब्लेड, क्रोड (core) वसूला, सिलबट्ट, प्रस्तर की छोटी–छोटी गोलियाँ प्राप्त हुई हैं।[50] जो एरण से प्राप्त उपकरणों से साम्य रखती है। नावदाटोली से नवपाषाणकालीन प्रस्तर कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।[51] महिदपुर से जास्पर,

Scanned by CamScanner

अगेट, चाल्सीडोनी की क्रोड (core) अग्रास्त्र, ब्लेड्स प्राप्त हुई है।[52] महिदपुर से भी काफी संख्या में ब्लेड्स प्राप्त हुई हैं। वह एरण व नावदाटोली से प्राप्त ब्लेड्स से साम्य रखती है। महिदपुर से गोफलन में प्रयुक्त होने वाली छोटी–छोटी पत्थर की गोलियाँ पत्थर के हथौड़े, सिलबट्टे व गोल पत्थर प्राप्त हुये हैं।[53] आवरा से ताम्रपाषाणकालीन चाकू आकार ब्लेड्स, पेन नाइफ ब्लेड्स, कोर, बाणफलक प्राप्त हुए हैं जो एरण से प्राप्त ब्लेड्स व बाणफलकों से समानता रखते हैं।[54] आजादनगर के कायथाकालीन स्तर से जो ब्लेड्स प्राप्त हुई हैं वह एरण के ब्लेड़ो से समानता रखती है।[55] एरण के समान दंगबड़ा से ब्लेड्स, छोटी–छोटी गेदें, सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं।[56] नागदा से भी एरण के समान ब्लेड्स व छोटी–छोटी पत्थर की गोलियाँ मिली हैं।[57] पिपलिया–लोरका से चार्ट व चाल्सीडोनी के बने ब्लेड्स व स्क्रेपर, क्रोड प्राप्त हुए हैं।[58] बेसनगर विदिशा से भी छोटे–छोटे ब्लेड प्राप्त हुए हैं जो एरण से प्राप्त ब्लेड्स से साम्य रखते हैं।[59] पीतनगर (उज्जैन) से भी चाल्सीडोनी, आगेट व क्वार्टज के बने ब्लेड्स प्राप्त हुए हैं।[60] जोर्वे संस्कृति से जो ब्लेड्स, कुल्हाड़ियाँ, छोटी–छोटी पत्थर की गोलियाँ, सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं।[61] जोर्वे संस्कृति से प्राप्त उपकरण मध्यप्रदेश से प्राप्त मालवा संस्कृति के उपकरणों से साम्य रखते हैं। हड़प्पा सभ्यता से रोपड़[62] (पंजाब), रंगपुर,[63] कालीबंगा,[64] लोथल,[65] से जास्पर व आगेट के ब्लेड्स प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा सभ्यता के स्थलों से भी इस प्रकार के ब्लेड्स की उपलब्धि हुई है।

अस्थि निर्मित वस्तुएँ

दैनिक मानवीय जीवन में अस्थि से निर्मित वस्तुओं का उपयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता आया है। पाषाणयुग तथा हड़प्पा सभ्यता में अस्त्र–शस्त्र, आभूषण, अस्थि पर निर्मित किये जाते थे। ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में भी अस्थि, हाथीदाँत, शंख के आभूषण व अस्त्र–शस्त्र काफी मात्रा में बनाये गये जो उत्खनन के फलस्वरूप प्राप्त हुए हैं। एरण के प्रथम काल की सतहों से प्राप्त अस्थि निर्मित वस्तुओं में अग्रास्त्र, प्रमुखता से मिले हैं। अस्थि अग्रास्त्र को चिकना, पालिश व धार करने का अस्थि उपकरण भी उत्खनन में प्राप्त हुआ है। डॉ. सांकलिया महोदय के अनुसार अस्थि अग्रास्त्रों को चिकना करने तथा उनमें पालिश करने का प्रयत्न प्राचीन काल में किया जाता था।[66] हड़प्पा सभ्यता के स्थलों से भी अस्थि अग्रास्त्रों के उपयोग की जानकारी प्राप्त होती हैं। इन अग्रास्त्रों के विद्वानों ने कई उपयोग सुझाये हैं। डॉ. सांकलिया के अनुसार ये बाणफलक,

Scanned by CamScanner

सिलाई की सुई अथवा आभूषण की तरह भी प्रयुक्त होते थे।[67] नावदाटोली में एरण के समान अग्रास्त्र मिले हैं।[68] एरण उत्खनन से आभूषणों में अस्थि निर्मित चक्राकार (Pully Shaped) वस्तुएँ (कर्णाभूषणों के रूप में प्रयुक्त) प्राप्त हुए हैं। इनका उपयोग डॉ. एम.जी. दीक्षित के अनुसार बोतल की डाँट की तरह किया जाता था। इनके पार्श्व की गहराई में कपड़ा लगाकर, उनसे बोतल का मुँह मजबूती से बंद किया जाता था।[64] वाकणकर महोदय के अनुसार यह कर्णाभूषण ही थे।[70] एरण उत्खनन के हरिण की सींग (श्रृंग) की प्राप्ति भी हुई है। एरण से हाथीदाँत, शंख की चूड़ियों के छोटे–छोटे टुकड़े भी उत्खनन में प्राप्त हुये हैं।[71] कायथा से भी एरण के समान चक्राकार आभूषण प्राप्त हुए हैं।[72] कायथा से हाथीदाँत, शंख की चूड़ियों के टुकड़े भी प्राप्त हुये हैं।[73] एरण के समान नावदाटोली से भी चक्राकार वस्तुएँ व अग्रास्त्र, शंख, हाथीदाँत की चूड़ियों के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं।[74] महिदपुर (उज्जैन) से भी अग्रास्त्र व हाथीदाँत व शंख की चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। जो एरण के अस्थि अवशेषों से साम्य रखती है।[75] दंगवाड़ा,[76] नागदा[77] से भी अस्थि उपकरण प्राप्त हुए हैं। पीतनगर (उज्जैन) से भी ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से शंख व हाथीदाँत की चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। जोर्वे संस्कृति में भी शंख, हाथीदाँत की चूड़ियाँ व अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थलों से भी अस्थियों के आभूषण व हाथीदाँत, शंख की चूड़ियाँ व अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इन स्थलों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, कालीबंगा, आलमगीरपुर, रोपड़, लोथल, रंगपुर, रोजदी, चन्हुदड़ों इत्यादि प्रमुख हैं। उपर्युक्त स्थानों से हाथीदाँत, शंख व अन्य अस्थि पुरावशेषों से इस काल की श्रृंगार प्रसाधन की जानकारी प्राप्त होती है, उल्लेखनीय है कि हाथीदाँत की वस्तुएँ काफी महंगी होती होंगी। इनका उपयोग उच्च वर्ग के लोग करते होगें। शंख इत्यादि की वस्तुओं का उपयोग माध्यम व निम्न–वर्ग के लोग करते होगें। इसके अतिरिक्त अस्थि उपकरणों हरिण के सींग व अग्रास्त्रों की प्राप्ति से स्पष्ट है कि इस काल के लोग अस्थि उपकरणों का प्रयोग आखेट इत्यादि में भी करते थे।

पकी मिट्टी की वस्तुएँ

पाषाणकाल के बढ़ते चरण में मनुष्य ने सर्वप्रथम मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करना सीखा। कालांतर मे धीरे–धीरे मिट्टी की विविध वस्तुएँ भी मनुष्य निर्मित करने लगा। एरण में ताम्रपाषाणकालीन सतहों से पकी मिट्टी की बनी अनेक उपयोगी वस्तुए प्राप्त हुई हैं। उनमें प्रमुख से मानवीय मृण्मूर्तियाँ, पाश्विक मृण्मूर्तियाँ, पक्षी मृण्मूर्तियाँ, मृद्भाण्ड़ों के

Scanned by CamScanner

मण्डलक सछिद्र मण्डलक, पकी मिट्टी सके मण्डलक, पकी मिट्टी के खिलौने, गाड़ी के पहिये, आभूषण–कर्णाभूषण, लटकन, मनके तथा चूड़ियाँ व मनोरंजन के साधनों में मोहरें इत्यादि प्रमुख हैं। ताम्रपाषाणकालीन लगभग समस्त स्थलों से पकी मिट्टी की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। कायथा से भी ककुदमान वृषभ, कर्ण–आभूषण, लटकन, पकी मिट्टी की चूड़ियाँ, पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ व मानव मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।[83] उपर्युक्त वस्तुओं एरण से प्राप्त मृण्मण्य वस्तुओं के लगभग समान है। बेसनगर से पकी मिट्टी के मनके प्राप्त हुए हैं, जो एरण से प्राप्त मनकों के समान है।[84] आजादनगर (उज्जैन) से ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं,[85] जो एरण से प्राप्त ककुदमान वृषभ मृण्मूर्तियों से साम्य रखती है।

दंगवाड़ा से साधारण वृषभ व ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई,[86] यह भी एरण से प्राप्त मृण्मूर्तियों से साम्य रखती है। दंगवाड़ा, से मिट्टी के मनके व अन्य वस्तुएँ भी प्राप्त हुई है। मनकों की आकृति एरण से प्राप्त मनकों से मेल रखती है। ताम्रपाषाणकालीन नवीन उत्खनित स्थल महिदपुर से भी अनेक मृण्मय वस्तुओं की प्राप्ति हुई उनमें से ककुदमान वृषभ, साधारण वृषभ, सछिद्र मण्डलक, खिलौना, गाड़ी के पहिये लटकन, मनके प्रमुख हैं।[87] नागदा से मिट्टी के मनके खिलौने, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ व वृषभ मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।[88] पीतनगर (उज्जैन) से पकी मिट्टी के मनके,सछिद्र मण्डलक, बच्चों के खिलौने, पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।[89] पिपरिया–लोरका से भी एरण के समान मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।[90] दक्षिण भारत में जोर्वे संस्कृति से मध्यभारत की ताम्रापाषाण संस्कृतियों की भाँति पकी मिट्टी की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं, उनमें मनके,[91] वृषभ व मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ विशेष है, जिनसे तत्कालीन संस्कृति में मातृ–पूजा व पशु–पूजा की जानकारी मिलती है।[92] एरण से भी पशु–पूजा के संकेत मिलते हैं। हड़प्पा सभ्यता से भी मृण्मय वस्तुओं की प्राप्ति हुई है, जिनसे इस समय की पशु–पूजा के प्रमाण मिलते हैं। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त वृषभ मृण्मूर्तियों का आकार–प्रकार ताम्रपाषाण संस्कृति में संभवतः हड़प्पा संस्कृति के लोगों से प्रभावित होकर पकाया गया था। जिससे ताम्रपाषाण संस्कृति का संपर्क हड़प्पा सभ्यता के लोगों से स्थापित होता है। हड़प्पा सभ्यता से पकी मिट्टी की चूड़ियाँ, मृत्पिण्ड (Terracotta Cakes), हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, कालीबंगा, कोटदीजी, रोपड़, राखीगढ़ी, लोथल इत्यादि से प्राप्त हुये हैं।[93] हड़प्पा सभ्यता से पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ, मानवीय मृण्मूर्तियाँ बहुसंख्यक प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा सभ्यता के सभी स्थलों से यह मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यह मृण्मूर्तियाँ साँचे मे ढालकर बनाई गई

Scanned by CamScanner

हैं। मानव मृण्मूर्तियाँ ठोस हैं जबकि पशु–पक्षियो की मृण्मूर्तियाँ खोखली हैं। एरण से प्राप्त सभी मृण्मूर्तियाँ ठोस हैं। हड़प्पा से नारी मृण्मूर्तियाँ अधिक प्राप्त हुई हैं, जो मातृपूजा की सूचक हैं। हड़प्पा सभ्यता से पकी मिट्टी के आभूषण, खिलौना गाड़ियों के पहिये व अन्य मृण्मय वस्तुओं की प्राप्ति हुई है।[94] उक्त मृण्मय वस्तुओं की बनावट ताम्रपाषाण संस्कृतियों की वस्तुओं से भिन्न है क्योंकि उस समय हड़प्पा नगर विकसित थे और ताम्रपाषाणकालीन क्षेत्र ग्राम्य प्रधान थे। हड़प्पा से प्राप्त वस्तुओं में सुन्दरता व स्पष्टता के दर्शन होते हैं जबकि ताम्रपाषाण संस्कृति की वस्तुओं में इतनी स्पष्टता व सुन्दरता दिखाई नहीं देती हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है, कि पकी मिट्टी की वस्तुओं में मानवीय व पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ अधिक मात्रा में प्राप्त हुई हैं। जो संभवतः बच्चों के खिलौनों के रूप में व धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु बनाई जाती थीं और पकी मिट्टी के मनके, हार इत्यादि बनाने में प्रयुक्त होते थे। संभव है, कि निम्न वर्ग के लोग मिट्टी के आभूषणों का प्रयोग करते होगें। बच्चों के खेलने के लिए खिलौना गाड़ी व अन्य वस्तुएँ भी मिट्टी की बनाई जाती थी। मनोरंजन हेतु शंतरज के मोहरे भी बनाये जाते थे, जो एरण उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। उक्त वस्तुओं के अतिरिक्त दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली अन्य मृण्मण्य वस्तुओं का निर्माण भी इस काल के मानव ने सीख लिया था। ताम्रपाषाणकाल में मृण्मय वस्तुएँ बनाने के लिए बड़े स्तर पर उद्योग–व्यवसाय के रुप में कार्य किया जाता था, जो रोजगार का माध्यम भी था। ताम्रपाषाकालीन लगभग स्थलों से पकी मिट्टी की वस्तुओं में काफी साम्य दिखाई देता है।

मृद्भाण्ड

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के अध्ययन में मृद्भाण्डों का विशेष महत्व है। मानव जीवन से मृद्भाण्डों का अविछिन्न संबंध रहा है। एरण उत्खनन में इस काल के जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। वह के मानवीय जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। मृद्भाण्डों का उपयोग दैनिक जीवन में खाना पकाने, अन्न संग्रहित करने एवं पेय पदार्थों को रखने के लिए बनाये जाते थे। मृद्भाण्डों के द्वारा तत्कालीन जलवायु पशु–पक्षी, वनस्पति, आर्थिक स्थिति व मृद्भाण्ड कला की जानकारी प्राप्त होती है।

एरण से तीन प्रकार के मृद्भाण्ड प्रमुख रूप से मिले हैं, उनमें प्रथम, काले रंग के चित्रित लाल मृद्भाण्ड, द्वितीय काले और लाल मृद्भाण्ड, तृतीय धूसर मृद्भाण्ड, कुछ

Scanned by CamScanner

अन्य मृद्भाण्ड़ ऐसे भी हैं जो बहुत कम मिले हैं; जैसे (1) छेद्रित अलंकरण वाले मृद्भाण्ड (2) सफेद रंग से चित्रित मृद्भाण्ड (3) सफेद लेपयुक्त बर्तन जिन पर काले या गहरे लाल रंग से चित्रण किया गया है। उक्त सभी बर्तन चाक पर बनाये गये हैं। केवल भद्दे मृद्भाण्ड़ (Coarce ware) हाथ से बनाये गये हैं। एरण से प्राप्त इस काल के मृद्भाण्डों पर विविध प्रकार के अलंकरण अभिप्राय मिलते हैं उनमें समांतर रेखाएँ, आड़ी तथा खड़ी रेखाएँ, फन्दे लूप्स, ठोस तथा खोखले हीरे, जालीदार तला, झोलाकार हीरे (Etched and latnic Diamond) त्रिभुज बिन्दु, लहरदार पंक्तियाँ, हरिणों की पंक्तियाँ, पौधे सूर्यास्त अथवा सूर्योदय बिच्छू की आकृतियाँ प्रमुख हैं।

एरण से प्राप्त मृद्भाण्डों पर चित्रण प्रायः ज्यामितीय ही प्राप्त होता है। पशुओं में हरिण का चित्रण अधिक मिलता है संभवतः यह उन लोगों का प्रिय पशु था। जिसे वह पालते थे और उसका शिकार भी करते थे। लंबी गर्दन एवं लटकते बाल वाले एक जानवर का भी कुछ मृद्भाण्डों पर चित्रण किया गया है संभवतः यह भालू बनाया गया होगा। एरण से टोंटीदार बर्तनों की प्राप्ति विशेष उल्लेखनीय है। इनके अलावा घड़े, लोटे, थाली इत्यादि प्राप्त होते हैं। एरण से प्राप्त मृद्भाण्ड़ पर ग्रेफिटी के चित्र प्राप्त हुए हैं। जिसकी तुलना प्रो. के.डी. वाजपेयी, प्रो. विवेकदत्त झा ने हड़प्पा सभ्यता की लिपि से की है।

काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

एरण से इस मृद्भाण्ड की प्राप्ति सर्वाधिक हुई है। इससे प्रमाणित होता है, कि काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड एरण में ताम्रपाषाणकाल का महत्वपूर्ण उद्योग था। मध्य भारत तथा दक्षिण भारत की ताम्रपाषाण संस्कृतियों में भी लाल मृद्भाण्डों की प्रमुखतः है। ऐसे मृद्भाण्ड मालवा के समस्त स्थलों से प्राप्त हुए हैं। अतः इन्हें मालवा मृद्भाण्ड के नाम से भी जाना जाता है। काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड, महेश्वर नावदाटोली[95], नागदा[96], कायथा[97], आवरा[98], बेसनगर[99], दंगवाड़ा[100], महिदपुर[101], मनोटी[102], पिपरिया–लोरका[103], त्रिपुरी[104] से प्राप्त हुए हैं। जोर्वे संस्कृति में प्रकाश, बहावल, दायमाबाद, चन्दोली, सोनगाँव, इनामगाँव से प्राप्त इस मृद्भाण्ड की प्राप्ति हुई है[105] किन्तु यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्ड कुछ मालवा संस्कृति के मृद्भाण्डों की अपेक्षा मटमैलापन स्थानीय प्रभाव के कारण लिये हुये हैं, इसलिए इन्हें जोर्वे नाम से भी जाना जाता है। हड़प्पा के स्थलों में रानागुँड़ई, मुगल–गुड़ई, पेरिआनो गुड़ई, डाबरकोट, कौदानी, गुल मुहम्मद

Scanned by CamScanner

इत्यादि हड़प्पा संस्कृति के स्थलों से भी काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं,[106] किन्तु यह बर्तन बनावट के आधार पर एरण के मृद्भाण्ड से साम्य नहीं रखते हैं। यह बर्तन एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति के बर्तनों की अपेक्षा मोटे हैं। पतले बर्तन तेज चाक पर बनाये गये हैं जबकि मोटे बर्तन धीमी चाक पर बनाये गये हैं। एरण से प्राप्त बर्तनों में उपयोग की गई मिट्टी अच्छी तरह गूंथी गई है। जमीन पर गिराने से धातु पर बर्तन जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है। यह बर्तन अच्छी तरह पकाये गये हैं, किन्तु हड़प्पा के बर्तनों में यह समानता दिखाई नहीं देती सिर्फ रंग व चित्रण अभिप्रायों में हड़प्पा सभ्यता के बर्तनों में कुछ साम्य दिखाई देता है। चित्रण अभिप्रायों मे मत्स्य शल्क[107], सीधी रेखाएँ[108], पौधे[109], आड़ी तिरछी रेखाएँ एक दूसरे को काटते वृत्त[110], हीरों की आकृति[111], गोलवृत्त[112] दौड़ते हुए हरिण[113], प्रमुखतः से मिलते हैं। जो एरण से प्राप्त बर्तनों पर चित्रित किये गये हैं। हीरे की आकृति हड़प्पा व एरण के मृद्भाण्ड़ों पर बनाई गयी है। इससे स्पष्ट होता है, कि इस समय के लोगों को हीरे जैसी बहुमूल्य वस्तु की जानकारी थी। चित्रण अभिप्रायों के आधार पर विशेष रूप से कहा जा सकता है,कि हड़प्पा संस्कृति के लोगों से ताम्रपाषाणकालीन लोगों का संपर्क रहा होगा, क्योंकि यह लोग एक–दूसरे की कला का आपस में आदान–प्रदान करते होंगे। एरण के समान चित्रण, अभिप्राय महेश्वर–नावदाटोली, कायथा, आवरा, बेसनगर, महिदपुर, नागदा, जोर्वे इत्यादि स्थानों की मृद्भाण्ड़ परंपराओं पर भी किया गया है।

काले और लाल मृद्भाण्ड

एरण के ताम्रपाषाणकाल से ज्ञात दूसरा मृद्भाण्ड उद्योग सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड हैं। ये बर्तन मिट्टी के औंधे रखकर पकाये जाते थे। जिससे अंदर की सतह काली और बाहर की सतह लाल होती थी। इन बर्तनों की भीतरी काली सतह पर सफेद रंग से चित्रण किया गया है। जबकि अन्य अधिकांश पुरास्थलों में मृद्भाण्ड की बाहरी सतह पर तथा किनारों के ऊपर व नीचे भी चित्रण किया गया है, ये बर्तन चाक पर बने व अच्छी तरह पकाये गये हैं। इन बर्तनों में तश्तरियाँ सर्वाधिक पाई गयी है। छोटे कटोरे और कुछ बड़े बर्तन तथा टोंटीदार बर्तन भी प्राप्त हुए हैं। साधार तश्तरी तथा टोंटीदार कटोरे इस काल की उल्लेखनीय विशेषता है।[114] इस काल की तश्तरियाँ व कटोरे अन्य समकालीन उद्योगों के बर्तनों से साम्य नहीं रखते हैं । इस मृद्भाण्ड उद्योग को दो भागों में बाँटा गया है। (1) मोटा, भद्दा तथा रेतीला (2) पतला,

Scanned by CamScanner

सुगढ़ तथा रेतीला। उक्त मृद्भाण्डों पर चित्रण अभिप्राय में सीधी, आड़ी या खड़ी रेखाओं तथा पौधों का भी चित्रण मिलता है। बिन्दुओं का भी चित्रण मिलता है। समांतर रेखाएँ न्यून हैं। हड़प्पा सभ्यता के मृद्भाण्डों पर भी उक्त प्रकार के चित्रण मिलते हैं।[115] यह मृद्भाण्ड कायथा[116] से भी प्राप्त हुआ है। जो आकार–प्रकार व चित्रण अभिप्रायों में एरण के मृद्भाण्ड से साम्य रखता है। आहाड़ से यह मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं, इस मृद्भाण्ड परंपरा को आहाड़ संस्कृति की विशिष्ट मृद्भाण्ड परंपरा माना गया है। इस प्रकार के पात्रों में ज्यामितीय आकृतियों के अलंकरण संजोये गये हैं। वह चित्रण अभिप्राय एरण के मृद्भाण्डों से साम्य रखते हैं।[117] मालवा–संस्कृति में आवरा,[118] नागदा,[119] मनोटी,[120] (मनोटी से एरण के समान इस मृद्भाण्ड का भीतरी काला भाग सफेद रंग से चित्रित है) महिदपुर,[121] बेसनगर,[122] दंगवाड़ा,[123] पिपरिया–लोरका,[124] इत्यादि से भी यह मृद्भाण्ड प्राप्त होता है। नावदाटोली से इस मृद्भाण्ड के कटोरे तथा प्याले बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। यह कटोरे व प्याले एरण से भी प्राप्त हुए हैं। दोनों मृद्भाण्डों की तुलना करने पर एरण से प्राप्त मृद्भाण्ड अधिक मोटा तथा मजबूत प्रतीत होता है।[125] महाराष्ट्र में जोर्वे संस्कृति के स्तरों से कृष्णलोहित पात्र खण्ड मिलने लगते हैं।[126]

धूसर मृद्भाण्ड (ग्रेवेयर)

इस काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग भूरे मृद्भाण्ड़ का है, इसके कुछ टुकड़े हल्के लाल रंग से चित्रित है। एरण में यह मोटे तथा पतले दोनों रूपों में मिलता है। दक्षिण भारत के नवप्रस्तरकालीन घोटित भूरे मृद्भाण्ड़ (वारिनश्ड ग्रेवेयर) से इस मृद्भाण्ड़ उद्योग का निर्माण एवं चित्रण की दृष्टि से कोई साम्य नहीं है। गंगाघाटी के प्रसिद्ध धूसर मृद्भाण्ड से भी एरण से प्राप्त इस मृद्भाण्ड का कोई साम्य नहीं है।[127] यह मृद्भाण्ड उद्योग प्रकार एवं चित्रण के आधार पर ताम्रपाषाण संस्कृति के एरण से ही प्राप्त लाल मृद्भाण्ड से ही साम्य रखता है। यह इस स्थान की ताम्रपाषाण सभ्यता का अनिवार्य अंग प्रतीत होता है। इन मृद्भाण्डों में हल्के लाल या कभी–कभी चाकलेटी रंग के पौधों, पशुओं, सामांतर रेखाओं, त्रिकोण, हीरा इत्यादि का चित्रण किया गया है। हरिण का चित्रण इस मृद्भाण्ड पर अन्य मृद्भाण्डों की तुलना में अधिक किया गया है। कुछ चित्रण अभिप्राय सूर्योदय व सूर्यास्त के समान ही दृष्टिगत होते हैं ये निश्चित ही प्रकृति से लिये गये चित्रण अभिप्राय है। यह मृद्भाण्ड कायथा,[128] आहाड़,[129] महेश्वर–नावदाटोली,[130] महिदपुर[131], नागदा,[132] बेसनगर,[133] से भी प्राप्त होते हैं। जो एरण से प्राप्त

Scanned by CamScanner

मृद्भाण्डों से साम्य रखते हैं। यह मृद्भाण्ड जोर्वे संस्कृति से भी प्राप्त हुए हैं।[134] किन्तु इनका साम्य एरण से प्राप्त धूसर मृद्भाण्डों से नहीं होता है।

एरण से प्राप्त साधार तश्तरी काफी मात्रा में प्राप्त हुई हैं, साधार तश्तरियाँ हड़प्पा सभ्यता में भी निर्मित की जाती थी।[135]

टोंटीदार बर्तन (चेनल स्पाउडटेड वाउल्स)

एरण की ताम्रपाषाणकालीन परवर्तीकाल की सतहों से कुछ टोंटीदार बर्तन के टुकड़े, टोंटीयों, बर्तन कटोरे प्राप्त हुए हैं। जिनमें तीन टोंटियाँ, काले–एवं–लाल मृद्भाण्ड से मिली है व अन्य टोटियां लाल मृद्भाण्डों की है। टोंटीयुक्त बर्तनों पर भीतरी व बाहरी दोनों सतहों पर काले रंग से चित्रण किया गया है। डॉ. सांकलिया ने टोंटी वाले मृद्भाण्डों की तुलना ईरान एवं पश्चिम एशिया से प्राप्त ऐसे ही मृद्भाण्डों से की है।

इस प्रकार की टोटियाँ नावदाटोली से भी प्राप्त हुई है।[136] जोर्वे संस्कृति से भी टोंटीदार बर्तन प्राप्त हुए हैं। जो इस संस्कृति में विशेष रूप से मिलते हैं।[137] मालवा की तिथि जोर्वे संस्कृति से पूर्व की है संभव है, कि एरण व नावदाटोली के लोगों का संपर्क जोर्वे संस्कृति के लोगों से हुआ हो और उन्होंने इनकी नकल कर टोंटीदार बर्तनों का निर्माण किया हो।

ग्रेफिटी

एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर ग्रेफिटी के चिह्न मिलते हैं, जो मृद्भाण्ड़ों पर हाथ से खुरचकर लिपि जैसी आकृति उत्खचित की गई है। यह एरण से प्राप्त कायथा मृद्भाण्ड व प्रथम काल के तृतीय उपकाल के मृद्भाण्डों पर उकेरी गई हैं।[138] इस प्रकार की ग्रेफिटी के चिह्न महेश्वर–नावदाटोली से प्राप्त मृद्भाण्डों पर भी मिलते हैं।[139] प्रो. के.डी. वाजपेयी व प्रो.उदवीर सिंह के अनुसार हड़प्पा से प्राप्त सिन्धु लिपि के काफी अक्षर एरण से प्राप्त ग्रेफिटी से साम्य रखते हैं। पूर्ववर्ती ब्राह्मी से भी इनकी तुलना की जा सकती है, क्योंकि मृद्भाण्डों पर उत्खचित चित्र मौर्यकालीन ब्राह्मी के कई अक्षरों से साम्य रखते हैं।

भवन अवशेष

एरण उत्खनन में भवन अवशेषों के स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए किन्तु ताम्रपाषाणकालीन स्तंभ गर्त (Post Hol), फर्श, चूल्हे, अग्निकुण्ड, रक्षा–प्राचीर व खाई के अवशेष प्राप्त हुए हैं, उनके आकार–प्रकार के आधार पर एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों

Scanned by CamScanner

के भवनों का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। इस संस्कृति के निवासियों ने झोपड़े (मकान) अनुमानतः गोले, आयताकार या वर्गाकार होते थे। मकानों में लकड़ी के मोटे खंभे लगे रहते थे। उनमें गोलाकार बाँस की चट्टाईयाँ लगाई जाती थीं। इन्हें भीतर व बाहर से मिट्टी से लीप दिया जाता था। तीन चार मकानों के बीच एक सकरा रास्ता होता था। मकाने के छप्पर के रूप में घास–पूस तथा पत्तों का उपयोग किया जाता था। मकानों के फर्श मिश्रित पीली या काली मिट्टी, बजरी व मृद्भाण्डों को कूटकर बनाया जाता था। एरण उत्खनन में इस काल के छः फर्श मिले हैं।[140] एरण की ताम्रपाषाणकालीन फर्शों की मोटाई100 मिलीमीटर से 200 मिलीमीटर तक पाई गयी है।[141]उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन चूल्हे मिले हैं।[142] एक उठी दीवालों वाला गोल अग्निकुण्ड काली मिट्टी की स्वाभाविक सतह के ऊपर प्राप्त हुआ है।[143] एरण में ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा–प्राचीर व खाई के अवशेष प्राप्त हुये हैं। सुरक्षा दीवाल कड़ी चिकनी काली एवं पीली मिट्टी से बनाई गयी है। इसकी चौड़ाई 30 मीटर ऊँचाई 6.41 मीटर है तथा खाई की चौड़ाई, 36. 60 मीटर, गहराई 50.49 मीटर है। सुरक्षा प्राचीर व खाई के मध्य 16.47 मीटर का फासला है।[144] भारत मे नवपाषाण काल से सुरक्षा व्यवस्था के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। भारत वर्ष के बाहर मैडन्कैसल नामक प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक दुर्ग का निर्माण इसी उद्देश्य को लेकर किया गया था। हड़प्पा सभ्यता तथा परवर्तीकालीन सभ्यताओं के निवासियों नें बाढ़ और बाह्य आक्रमणों से रक्षा हेतु सुरक्षा–प्राचीर का निर्माण किया गया। कायथा इनामगांव से भी सुरक्षा–प्राचीर के प्रमाण मिले हैं। महिदपुर उत्खनन के निर्देशक रहे प्रो. रहमान अली के अनुसार महिदपुर पुरास्थल पर भी सुरक्षा प्राचीर का निर्माण करवाया गया था। हड़प्पा नगर से प्राप्त सुरक्षा व्यवस्था विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

उत्खनन में मनोटी से कच्ची ईटों की एक मोटी दीवाल प्राप्त हुई है। जो चम्बल की बाढ़ से रक्षार्थ हेतु बनाई गयी थी।[145] यह घटना आद्यैतिहासिक काल की है। संभवतः यहाँ बसी प्रारंभिक सभ्यता बाढ़ से नष्ट हो गई थी। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा सभ्यता में, धौलावीरा, सुरकोतड़ा, राखीगढ़ी, हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, लोथल, कालीबंगा इत्यादि से सुरक्षा–प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं। इनामगाँव में भी रक्षा–प्राचीर के साक्ष्य मिलें है।

कायथा से भी एरण के समान भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ से स्तंभगर्त प्राप्त हुए हैं। जिनसे स्पष्ट है, कि कायथा संस्कृति के लोग लकड़ी, बाँस, बल्ली से अपने मकान बनाते थे। इनका आकार गोल व चौकोर होता था। इन्हें लीप–पोत कर अभीष्ट स्वरूप

Scanned by CamScanner

दिया जाता था। छाजन संभवतः घास–पूस का होता था।[146] कायथा से ताम्रपाषाणकालीन फर्श व चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं।[147] आहाड़ संस्कृति के मकानों की नींव पत्थरों से भरी जाती थी। उत्खनन मे स्तंभगर्त (Post Hole) मिले हैं जिनसे स्पष्ट होता है, कि एरण के समान लकड़ी व बाँस–बल्ली का प्रयोग भी एरण के लोग भी करते थे। मकान आयताकार व वर्गाकार बनाये जाते थे।[148] आहाड़ से मकानों के अंदर फर्श भी मिले हैं, जो काली व पीली मिट्टी में गाद का मिश्रण कर बनाये जाते थे। आहाड़ में मकानों के अंदर चूल्हों के अस्तित्व के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से एक मकान में एक ही कतार में छः चूल्हे मिले हैं।[149] एरण से भी दो जुड़वा चूल्हे मिले हैं। जो संयुक्त परिवार के सूचक हैं। महेश्वर–नावदाटोली में ताम्रपाषाणकालीन सतहों से भवनों के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। ये लोग अपने मकानों के निर्माण में लकड़ी के लट्ठों का प्रयोग खंभों के रूप में करते थे। मकानों की दीवालें बाँस–बल्ली की बनाई जाती थी। दीवालों को अंदर–बाहर से गोबर व मिट्टी से लेप किया जाता था। मकानों की औसत माप 3×3.40 मीटर है यहाँ से फर्श के अवशेष भी मिले हैं।[150] एरण उत्खनन के निर्देशक प्रो. के.डी. वाजपेयी व डॉ. उदयवीर सिंह के अनुसार नावदाटोली के समान ही एरण के ताम्रपाषाणकालीन मकान बने थे। नावदाटोली से फर्श भी प्राप्त हुए हैं। जो काली मिट्टी व चूना का प्रयोग कर बनाये गये थे। यहाँ से चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं।[151] डॉ. वी. एस. वाकणकर ने ग्राम के मध्य में एक आयताकार यज्ञशाला की सूचना दी है। जिसके मध्य में यज्ञकुण्ड प्राप्त हुए हैं। एरण से भी अग्निकुण्ड मिला है।[152] नागदा से चौकोर भवनावशेष प्राप्त हुए हैं, जिनकी दीवालें कच्ची ईंटों से बनी थी, यहाँ से एक कमरे से तीन चूल्हे प्राप्त हुए हैं।[153] एरण से भी संयुक्त चूल्हों के प्रमाण मिले हैं। दंगबाड़ा से भवनावशेष व अग्निकुण्ड (यज्ञकुण्ड) के अवशेष प्राप्त हुए हैं।[154] एरण के समान महिदपुर से भी भग्नावशेष, फर्श व चूल्हे प्राप्त हुए हैं।[155] आवरा से फर्श मिला जो एरण के फर्शों से काफी साम्य रखता है।[156] जोर्वे संस्कृति में दायमाबाद, चन्दोली, इनामगाँव, नेवासा, सोनगाँव, प्रकाश, बहावल से भवनों के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में स्तंभगर्त मिले हैं। मिट्टी की दीवालों को इस संस्कृति के लोग ज्यादा ऊँचा नहीं बनाते थे। बाँस–बल्ली का उपयोग कर मकानों को ऊँचा बनाया जाता था। मकानों की दीवालों के कोने गोल बनाये जाते थे। छप्पर घास–पूस कर होता था। यहाँ से मकानों के बीचों–बीच आगन के भी साक्ष्य मिले हैं। मकान आयताकार, वर्गाकार, वृत्ताकार, बनाये जाते थे। आयतकार मकान 8×5 मीटर आकार के

Scanned by CamScanner

मिले हैं। मकानों के अंदर फर्श बनाया गया था।[157] मकानों के अंदर चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं।[158] जिनसे स्पष्ट होता है कि मकानों के अंदर ही रसोई पकाने का कार्य किया जाता था। एरण उत्खनन में जले मूंग के दाने प्राप्त हुये हैं। (चित्र संख्या 107)। ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों से प्राप्त भवनावशेषों के आधार पर कहा जा सकता कि इस काल के लोगों का एक दूसरे से संपर्क था। आहाड़ व जोर्वे के मकानों में कुछ भिन्नता दिखाई देती है। सुरक्षा व्यवस्था ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में एरण व मनोटी से प्राप्त होती है जिससे स्पष्ट होता है, कि यह लोग अपनी सुरक्षा के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, संभव है कि हड़प्पा सभ्यता के लोगों के संपर्क में आकर ही एरण में ताम्रपाषाणकालीन लोगों नें सुरक्षा व्यवस्था की प्ररेणा प्राप्त की थी। एरण में विशाल सुरक्षा–प्राचीर के निर्माण में काफी जनशक्ति लगाई गई होगीं। अतः स्पष्ट है कि इस काल में एरण में काफी जन–समुदाय निवास करता होगा।

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर :1967, पृ. 34

2 वी.एस.,वाकणकर : ''कायथा एक्सकेवेशन्स'' विक्रम, जर्नल ऑफ विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन, 1967, पृ. 46

3 अन्सारी, जेड.डी. एवं अन्य : एक्सकेवेशन्स एट कायथा, पुणे 1975, पृ. 145

4 सांकलिया,एच.डी.,व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट आहाड़ (तांबवती) डेकन, कालेज पुणे, 1969,

5 एक्सकेवेशन्स एट बालाथल, मेन एण्ड एन्वायर्नमेण्ट, जर्नल ऑफ इण्डियन ऑफ सोसायटी फार, प्रिहिस्टोरिक एण्ड क्वाटर्नरी स्टडीज, अहमदाबाद, 1965, पृ. 62

6 साकलिया, एच.डी. व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर–नावदाटोली, पूना, 1958, पृ. 206–207

7 शर्मा, राजकुमार : मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रंथ, 1974, पृ. 629

8 श्रोत्रिय, आलोक : ''मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणकालीन स्थल मालवांचल में कूर्मांचल'', श्री कावेरी रिसर्च, इन्स्टीट्यूट, उज्जैन, 2001, पृ. 383

9 अली, रहमान व अन्य : चाल्कोलिथिक साइट ऑफ उज्जैन रीजन : महिदपुर एक्सकेवेशन रिपोर्ट 2004, पृ. 111

10 शर्मा, आर.के. मिश्रा ओ.पी. : आर्क्योलॉजीकल एक्सकेवेशन्स इन सेन्ट्रल इंडिया, नई दिल्ली, 2003, पृ. 89

11 वही : पृ. 148

12 वही : पृ. 151

13 पुरातत्त्व : बुलेटिन ऑफ द इण्डियन आर्क्योलॉजीकल सोसाइटी नं. 18, नई दिल्ली, 1987–88,पृ. 136

14 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : भारतीय पुरातत्त्व, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1996, पृ. 105

15 पुरातत्त्व : बुलेटिन ऑफ द इण्डियन आर्क्योलोजीकल सोसाइटी, पूर्वोक्त,पृ.130

16 ललितकला : ए जर्नल ऑफ ओरियेन्टल, आर्ट चीफली इण्डिया, नई दिल्ली, अंक 10, अक्टूबर 1961–62, पृ. 15 व पुरातत्त्व, पूर्वोक्त, पृ. 145–146

17 दैनिक समाचार पत्र, राज एक्सप्रेस (म.प्र.), राज विविध 20 सितम्बर 2005, पृ. 12 (ताम्रयुगकालीन थी, हड़प्पा सभ्यता)

18 वाजपेयी, कृष्णदत्त : सागर थ्रू दि एजेज, पृ. 27

19 (अ) पंजीयन संख्या, 3424 एरण,(ब) पंजीयन संख्या, 3419, एरण,(स) पंजीयन संख्या, 3455, एरण (2)

20 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, नई दिल्ली, 1985, पृ. 26

21 अली, रहमान व अन्य : चाल्कोलिथिक साइट ऑफ, उज्जैन, रीजन : महिदपुर, एक्सकेवेशन रिपोर्ट नई दिल्ली, पृ. 112–13

Scanned by CamScanner

22 ऋग्वेद : 5/19/3, 2/33/10, 8/47/15, 1/126/2
शतपथ ब्राह्मण 13/4/11/1, 14/4/1/1 व रामायण 1/6/11

23 सोलंकी, धीरेन्द्र : "ताम्राश्मीय संस्कृति के संदर्भ में निष्क का वैदिक आधार" वैदिक इतिहास एवं पुरातत्त्व की अद्यतन प्रवृत्तियाँ, दिल्ली 2003, पृ. 188

24 शर्मा, आर.के., मिश्रा ओ.पी. : एक्सकेवेशन्स इन सेन्ट्रल इण्डिया, दिल्ली, पृ. 2003, पृ. 150

25 पुरातत्त्व : बुलेटिन ऑफ इण्डियन आर्क्योलॉजिकल सोसाइटी नं 18, 1987–88, पृ. 133 व ए रिपोर्ट ऑन हल्लूर एक्सकेवेशन, बंगलौर, 1971

26 जैन, के.सी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1979, पृ. 175

27 ललितकला : पूर्वोक्त, पृ. 126

28 पाण्डेय, राकेश प्रकाश, : पूर्वोक्त, पृ. 221

29 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 210, (चित्र क्र. 11)

30 शर्मा, राजकुमार : मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रंन्थ, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 45

31 पुरातत्त्व : बुलेटिन ऑफ द इण्डियन आर्क्योलॉजी, नई दिल्ली, 1987–88, पृ. 136

32 पाण्डेय, जय नारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 478

33 वही, :

34 अन्सारी, जेड.डी. व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट कायथा, 1975, पृ. 115

35 वही, : चित्रफलक क्र. 122

36 पाण्डेय : जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 457

37 सांकलिया एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 178

38 अली, रहमान व अन्य : चाल्कोलिथिक साइट ऑफ उज्जैन रीजन महिदपुर, पूर्वोक्त, पृ. 99

39 नागदा एक्सकेवेशन रिपोर्ट : 1956, पृ. 47

40 शर्मा, आर. के व मिश्रा ओ. पी. : आर्क्योलॉजीकल एक्सेवेशन्स इन सेन्ट्रल इंडिया, 2003, पृ. 106

41 वही : पृ. 148

42 वही : पृ. 150

43 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू,, 1964, पृ. 19

44 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1967, पृ. 34

45 सांकलिया, एच.डी. : स्टोन ऐज टूल्स, पूना, 1964 पृ. 84

46 सांकलिया व अन्य : एक्सकेवेशन्स एट महेश्वर एण्ड नावदाटोली, पूर्वोक्त, पृ. 50

47 अन्सारी, जेड.डी. : एक्सकेवेशन्स एट कायथा, 1975, पृ. 111

48 वही, : पृ. 139–140

Scanned by CamScanner

49 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 124

50 वही : पृ. 127

51 पाण्डेय, जय नारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 467

52 अली, रहमान, व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 70–74

53 वही : पृ. 108–110

54 शर्मा, आर.के. मिश्रा, ओ.पी. : आर्क्योलॉजीकल एक्सकेवेशन्स इन सेन्ट्रल इंडिया, पूर्वोक्त, पृ. 86

55 वही : पृ. 90

56 वही : पृ. 99

57 वही : पृ. 137

58 वही : पृ. 151

59 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू,. 1964, पृ. 19

60 श्रोत्रिय, आलोक : "मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणकालीन स्थल" पूर्वोक्त, पृ. 392

61 सांकलियां, एच.डी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री इंण्डिया एण्ड पाकिस्तान, बोम्बे, 1962, पृ. 215 से 220 (चित्र क्र. 102 से 108)

62 वही : पृ. 157

63 वही : पृ. 159

64 वही : पृ. 161

65 वही : पृ. 168

66 सांकलिया व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 22

67 वही : पृ. 222

68 वही : पृ. 223

69 दीक्षित,एम.जी. : त्रिपुरी उत्खनन रिपोर्ट, पृ. 84, मानचित्र फलक क्रमांक 34, नं. 8

70 वाकणकर ,वी.एस : द विक्रम, पूर्वोक्त, पृ. 35

71 गौर, चन्द्रभान सिंह : एरण की ताम्राश्मयुगीन संस्कृति, (लघु शोध प्रबंध, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर) 1978 म.प्र., पृ. 67

72 वाकणकर, वी.एस. : पूर्वोक्त, पृ. 35

73 अन्सारी, जे.डी. व एम.के. धवलीकर : पूर्वोक्त पृ. 137

74 सांकलिया व अन्य : पूर्वोक्त प्र. 223, 224, 227

75 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 103–104

76 शर्मा, आर.के. मिश्रा ओ.पी. : पूर्वोक्त, पृ. 100

77 वही : पृ. 138

78 वही : पृ. 147

79 सांकलिया, : एच.डी. पूर्वोक्त, पृ. 209

Scanned by CamScanner

80 अन्सारी,जे.डी.,एम.के धवलीकर : पूर्वोक्त, पृ. 224–227

81 वही : पृ. 133–236

82 सांकलिया, एच.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 190 व 196

83 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त (चित्र क्र. 103, 104, 105, 106)

84 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 633

85 शर्मा,आर.के. व मिश्रा ओ.पी. : पूर्वोक्त, पृ. 90

86 वही : पृ. 99

87 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 81 से 99

88 श्रोत्रिय, आलोक : पूर्वोक्त, पृ. 382

89 शर्मा, आर.के., मिश्रा, ओ.पी. : पूर्वोक्त, पृ. 148

90 वही : पृ. 150

91 सांकलिया, एच.डी. : पूर्वोक्त, पृ. 209

92 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 130

93 पाण्डेय, जय नारायण : पूर्वोक्त, पृ. 373

94 वही : पृ. 392–394

95 सांकलिया व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 83

96 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू, 1955–56, पृ. 11

97 वही : 1967–68, पृ. 11

98 जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद,पूर्वोक्त, पृ. 27

99 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 633

100 श्रोत्रिय, आलोक : पूर्वोक्त, पृ. 383

101 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 47

102 शर्मा, आर.के. मिश्रा, ओ.पी. : पूर्वोक्त, पृ. 136

103 वही, : पृ. 151

104 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 644

105 पाण्डेय, जय नारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 473

106 वही : पृ. 371

107 रिचर्ड, एफ.एस. स्टाटर : इण्डस वेली पेन्टैड पॉटरी (ए काम्परिटिव स्टडी ऑफ द डिजाइनस आन द पेन्टेड ऑफ द हड़प्पा कल्चर) लंदन, आक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी, प्रेस 1941, पृ. 27–28

108 वही : पृ. 37–39

109 वही : पृ. 60

110 वही : पृ. 61

Scanned by CamScanner

111 वही : पृ. 63

112 वही : पृ. 66–67

113 वही : पृ. 70

114 सिंह, उदयवीर : प्रोटोहिस्टारिक पॉटरी ऑफ द ईस्टर्न मालवा, (अप्रकाशित, शोध प्रबंध) सागर विश्वविद्यालय,सागर, 1967, पृ. 102

115 रिचर्ड, एफ.एस. स्टारर : पूर्वोक्त, पृ. 35–95

116 जेड.डी.,अन्सारी,एम.के. धवलीकर : पूर्वोक्त, पृ. 96

117 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 453

118 जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद, खण्ड 4, पृ. 20

119 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू: 1955–56, पृ. 11

120 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, 32

121 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 336

122 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, 633

123 शर्मा, आर.के., मिश्रा, ओ.पी : पूर्वोक्त, पृ. 99

124 वही : पृ. 151

125 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 86

126 पाण्डेय, जय नारायण, : पूर्वोक्त, पृ. 475

127 सिंह, उदयवीर : पूर्वोक्त, पृ. 103

128 जेड.डी., अन्सारी, व एम.के. धवलीकर : पूर्वोक्त, पृ. 105

129 पाण्डेय, राकेश प्रकाश : पूर्वोक्त, पृ. 124

130 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 138

131 अली, रहमान व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 137

132 शर्मा, आर.के. मिश्रा, ओ.पी. : पूर्वोक्त, पृ. 137

133 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 633

134 शर्मा, राजकुमार : इंण्डियन आर्क्योलॉजी न्यू पर्सपेक्टिव प्रोसोडिग्स आफ द XI एन्यूयल कांग्रेस ऑफ द इण्डियन आर्क्योलॉजी सोसायटी, आगमकला, प्रकाशन दिल्ली, 1982

135 गौर, चन्द्रभान : पूर्वोक्त, पृ. 46

136 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 114 (चित्र क्रमांक 72–73)

137 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त, पृ. 114 (चित्र क्रमांक 1, 2, 3)

138 दुबे, नागेश, : एरण की कला, सागर,1997, पृ. 55

139 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 131

Scanned by CamScanner

140 आई.ए.आर. : 1965, पृ. 12
141 गौर, चन्द्रभान सिंह, : पूर्वोक्त, पृ. 74
142 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए, रिव्यू : 1960–61, पृ. 17
143 गौर, चन्द्रभान सिंह, : पूर्वोक्त, पृ. 75
144 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, पूर्वोक्त, पृ. 32
145 शर्मा, राजकुमार : पूर्वोक्त, पृ. 636
146 अन्सारी, जेड.डी.व अन्य. : पूर्वोक्त, पृ. 6
147 वही : पृ. 15
148 सांकलिया, : एच.डी. पूर्वोक्त, पृ. 188
149 जैन, के.सी. : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री , पूर्वोक्त, पृ. 158–159
150 सांकलिया, एच.डी. व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 34
151 पाण्डेय, जय नारायण : पूर्वोक्त, पृ. 468
152 श्रोत्रिय, आलोक : पूर्वोक्त, पृ. 381
153 वही : पृ. 382
154 वही : पृ. 382
155 अली, रहमान, व अन्य : पूर्वोक्त पृ. 26, 27
156 जर्नल आफ मध्यप्रदेश इतिहास परिषद. 1969, पृ. 16
157 जैन, के.सी. : पूर्वोक्त पृ. 169–170
158 पाण्डेय, जयनारायण : पूर्वोक्त, पृ. 469

Scanned by CamScanner

अध्याय अष्टम्

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का तिथि निर्धारण, महत्व तथा पतन

Scanned by CamScanner

एरण उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों की तिथि निर्धारण के लिए 'कार्बन–14 तिथि निर्धारण की विधि' के आधार पर व स्तर–विन्यास से प्राप्त पुरावशेषों के अध्ययन के पश्चात इसका काल 2150 ई.पू. से 700 ई.पू. निर्धारित किया गया है।[1]

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का तिथि निर्धारण

एरण में लगभग 2150 ई.पू. से 700 ई.पू. के बीच पल्लवित, इस सभ्यता को मृद्भाण्ड़ों के आधार पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम 2150 ई. से 1750 ई.पू., द्वितीय, 1750 ई.पू. से 1000 ई.पू., तृतीय 1000 ई.पू. से 700 ई.पू. । एरण में 1750 ई.पू. के लगभग द्वितीय चरण में सुरक्षा–प्राचीर व खाई का निर्माण किया गया। इस प्राचीर का उपयोग इस काल के अन्तिम चरण 700 ई.पू. तक होता रहा । ताम्रपाषाणकाल के अन्तिम चरण के एक नमूने की तिथि **'कार्बन–14 तिथि निर्धारण विधि'** द्वारा पेन्सिलवानियाँ विश्वविद्यालय ने 700 ई.पू. निर्धारित की है। आहाड़, चन्दोली, नेवासा, नावदाटोली एवं एरण में ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति की तिथि 1750 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक निश्चित की गई है।[2] आलचिन द्वारा एरण नावदाटोली आदि के सम्बन्ध में कार्बन 14 परीक्षण विधि के अनुसार तिथि 1280 ई.पू. उल्लिखित की गई है।[3]

एरण के ताम्रपाषाणकाल की तिथि 1750 ई.पू. निम्नतम सीमा के बारे में स्वीकार्य हो सकती है, परन्तु ऊपरी सीमा के सम्बन्ध में विद्वानों में मदभेद है। ताम्रपाषाणकाल की तिथि कार्बन–14 विधि द्वारा 1700 ई. पू. निर्धारित की गई है। यदि यह स्वीकार्य होती है, तो ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के बीच अन्तर कम हो जाता है।[4] इस बारे में आधुनिक खोजों से यह ज्ञात होता है, कि लगभग 1000 ई.पू. के बाद सभी ताम्रपाषाणकालीन क्षेत्रों की संस्कृति को लोहा उपयोग करने वाली संस्कृति ने प्रभावित किया।[5] हाल ही में महिदपुर (उज्जैन) के पुरास्थल से ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से लोहा प्राप्त हुआ है।[6] एरण उत्खनन में भी ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से लोहा मिला है। इसका काल लगभग 1200 ई. पू. निर्धारित किया गया है। 1960–65 ई. के उत्खनन द्वारा एरण के प्रथमकाल की ताम्रपाषाण संस्कृति का प्रारम्भ **'कार्बन–14 तिथि निर्धारण विधि'** द्वारा 2150 ई.पू.के लगभग माना गया है, किन्तु 1984–88 ई. के मध्य हुए उत्खनन के दौरान ताम्रपाषाण संस्कृति की पूर्ववर्ती कायथा तथा नवपाषाण संस्कृतियों के अवशेष भी प्रकाश में आये है।

Scanned by CamScanner

अब तक कार्बन–14 तिथि निर्धारण विधि द्वारा इसका काल निर्धारित नहीं हो सका है, किन्तु स्तर विन्यास के आधार पर ये दोनों संस्कृतियाँ ताम्रपाषाण संस्कृति की पूर्ववर्ती है। इसलिए ये संस्कृतियाँ 2150 ई.पू. से कहीं अधिक प्राचीन है।[7] प्रो. विवेकदत्त झा एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति को हड़प्पा सभ्यता के समकालीन मानते है। एरण व अन्य ताम्रपाषाण संस्कृतियों की कार्बन–4 विधि से निकाली गई तिथियों से एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति की तिथि का तुलनात्मक अध्ययन इस प्रकार है :–

एरण

★(1)	★(2)	★(3)
पी. 527 ताम्रपाषाण काल	2515±58	2590±60
पी. 528 ताम्रपाषाण काल	2878±85	2964±67
टी.एफ. 326 द्वितीय (अ) काल	2905±105	2990±110
टी.एफ. 324 वही	3131±105	3220±110
पी. 526 ताम्रपाषाण काल	3136±68	3230±70
पी. 525 द्वितीय काल	3193±69	3289±71
टी.एफ. 330 प्रथम काल	3220±100	3375±105
टी.एफ. 327 वही	3280±100	3375±105
टी.एफ. 329 वहीं	3300±105	3395±110

★(1) प्रयोगशाला क्रमांक :– पी = पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय (संयुक्त राष्ट, अमेरिका) प्रयोगशाला टी. एफ. – टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्डल रिसर्च प्रयोगशाला, बम्बई।

★(2) रेडियो कार्बन की 5568±30 के अर्ध–जीवन की रीति के अनुसार निर्धारित तिथि। इन तिथियों की गणना वर्तमान काल से की गई है, अर्थात वर्तमान की ईस्वी सन् की 1950 की तिथि को इन तिथियों से घटाने से ई.पू. की तिथि प्राप्त की जा सकती है।

Scanned by CamScanner

★(3) e-14 डेट्स वेस्टड ऑन आफ–लाइफ – 5730 ईयर इन हेयर्स वी.सी.

कार्बन–14 तिथि निर्धारण विधि के अनुसार भारत के कुछ महत्वपूर्ण स्थलों का तिथि निर्धारण निम्न प्रकार है :–

कायथा

प्रथम काल

4.	KTH-A (7) TF 779	3685±105 (3790±115)	1735 B.C 1605 B.C.
5.	KTH-A (8) TF 780	3680±95 (3785±100)	1730 B.C. 1735 B.C.
6.	KTH-A (9) TF 781	3720±105	1870 B.C.
7.	KTH-A (10) TF 474	3485±45 (3885±100)	1535 B.C. 1636 B.C.

द्वितीय काल

1.	KTH-A (4) TF 776	3455±100 (3555±115)	1505 B.C 1605 B.C.
2.	KTH-A (5) TF 777	3625±95 (3730±100)	1675 B.C. 1780 B.C.
3.	KTH-A (6) TF 778	3550±95 (3655±95)	1600 B.C. 1705 B.C.

आहाड : (राजस्थान)

TF-31	1270±110
TF-32	1550±110
TF-34	1725±140
TF-37	1305±115
V-56	1875±100
V-55	1990±125
V-54	2000±100
V-58	2055±105

Scanned by CamScanner

V-57	2145±100

नावदाटोली

P-205	1445±130
TF—59	1525±100
P-200	1600±130
P-200	1610±130
P-475	1645±70
P-201	1645±130
P-202	1660±130
P-476	2300±70

इनामगाँव (महाराष्ट्र)

TF-923	1025±170
TF-996	1070±185
TF-922	1345±100
TF-1085	1440±110
TF-924	1370±200
TF-1087	1405±105
TF-1086	1535±155
TF-1000	1375±85
TF-1001	1565±95
PRL-59	1350±110
PRL-77	1450±115

एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का महत्व

एरण के समान ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता के अवशेष मध्यप्रदेश के अन्य स्थानों से भी प्राप्त हुए उनमें महेश्वर–नावदाटोली, आवरा, कायथा, नागदा, मनोटी, महिदपुर, बेसनगर, इत्यादि प्रमुख हैं। इन उत्खननों से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों से यह भ्रांति पूर्णतः समाप्त हो गई है, कि अशोक के पूर्व एरण व मध्यप्रदेश का इतिहास अंधकारमय था। एरण उत्खनन से मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति का प्रसार बुन्देलखण्ड क्षेत्र

Scanned by CamScanner

में भी देखने को मिला। यहाँ से धूसर मृद्भाण्ड की प्राप्ति ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेष उपलब्धि है।[7] एरण में सर्वप्रथम ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुये हैं, जो दोनों संस्कृतियों का घनिष्ट संबंध प्रदर्शित करते हैं,[8] यहाँ से प्राप्त मिट्टी की सुरक्षा–प्राचीर व खाई[9] से यहाँ निवासरत लोगों की जनसंख्या व जागरूकता की जानकारी मिलती है। इस काल के अन्य स्थलों से भी इतनी सृदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था प्राप्त नहीं हुई है। एरण से ताँबे की कुल्हाड़ियाँ व अन्य उपकरणों का प्राप्त होना इस क्षेत्र की उन्नति का परिचायक है। एरण उत्खनन में पहली बार ककुदमान वृषभ की प्राप्ति विशेष उपलब्धि है।[10] मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में सर्वप्रथम एरण से स्वर्ण का गोल पत्तर (2.5 cms. 20 ग्रेन) का प्राप्त होना व स्वर्ण अंगूठी एवं अन्य आभूषण अर्धकीमती पत्थरों के मनके, हांथी दांत की चूड़ियां आर्थिक सृदृढ़ता के सूचक है।[11] एरण से ताम्र अंजन–शालाकाएँ, सुरमा रखने के पात्र, मनके चूड़ियाँ इत्यादि की प्राप्ति से इस काल में श्रृंगार प्रसाधन की जानकारी मिलती है। एरण से प्राप्त खिलौना–गाड़ी के पहिये व अन्य पुरावशेष बच्चों के मनोरंजन हेतु निर्मित किये जाते थे। पशु व मानव मृण्मूर्तियाँ भी एरण से प्राप्त हुई हैं। जो बच्चों के मनोरंजन व धार्मिक विश्वास को आधार मानकर ही बनाई गयी थीं। यहाँ लोग, आखेट, नृत्य, संगीत के साथ मनोरंजन में शतरंज व चौपड़ का खेल भी खेलते थे। संभवतः यहाँ का उच्च वर्ग इसको जुआँ के रूप में भी खेलता होगा। इसकी जानकारी उत्खनन में प्राप्त शतरंज के मिट्टी से बने मुहरों से होती है। हाथी–दाँत से बना चौपड़ का पाँसा भी एरण से प्राप्त हुआ हैं।[13]

एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुये हैं। उन्हें मिट्टी को अच्छी तरह गूथकर चाक पर बनाया गया है और उनको एक निश्चित तापमान पर पकाया गया है, इसी कारण इनकों जमीन पर गिराने पर धातु जैसी ठनठनाहट की आवाज आती है। इस मृद्भाण्ड की मजबूती व कला को देखकर इस काल के कुम्हारों के ज्ञान व कार्य–कुशलता की जानकारी प्राप्त होती है। मृद्भाण्डों पर उकेरे गये चित्रण अभिप्राय भी प्रकृति व मानव के आम–जीवन की जानकारी देते हैं। एरण के मृद्भाण्ड़ों पर उकेरी गई ग्रेफिटी हड़प्पा सभ्यता की लिपि से साम्य रखती है।[14] इस ग्रेफिटी के कुछ चित्र मौर्यकालीन ब्राह्मी के अक्षरों से भी मिलते हैं, जो विशेष उपलब्धि है। एरण उत्खनन से पाषाण–उपकरणों में हस्तकुठार ब्लेड, खुरचनी व शिकार में प्रयुक्त होने वाले गोल पत्थरों से ज्ञात होता है, कि लोगों को पाषाण–उद्योग की भी अच्छी जानकारी थी।[15] अतः

Scanned by CamScanner

कहा जा सकता है, कि समाज में कुशल कारीगर रहा करते थे। एरण से प्राप्त सिलबट्टे, चूल्हे, अग्निकुण्ड से उस काल की सामाजिक गतिविधियों की भी जानकारी मिलती है। वृषभ मृण्मूर्तियों की प्राप्ति से ज्ञात होता है, कि मानव कृषि कार्य में वृषभ का प्रयोग करता था। विद्वानों के अनुसार उक्त मृण्मूर्तियों का निमार्ण धार्मिक उद्देश्य से किया गया था। साहित्य के अनुसार शैव धर्म के प्रमुख देवता शिव के वाहन के रूप में वृषभ की पूजा प्राचीन काल में की जाती थी। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक गाय की मृण्मूर्ति भी प्राप्त हुई है जिससे ज्ञात होता है कि गाय को इस काल के लोग दूध प्राप्ति के लिये पालते थे और गाय को माता लक्ष्मी के रूप में मानते थे क्योंकि उच्च कोटि की वृषभ की वह जन्मदात्री थी। ताम्रपाषाणकालीन स्तर से त्वचा–मर्दक (Skin Rubbuer) भी प्राप्त हुए है। जो शरीर को सुन्दर रखने की जानकारी देते हैं। उक्त पुरावशेषों की प्राप्ति से एरण का ताम्रपाषाणकालीन महत्व स्पष्ट हो जाता है।

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का पतन

ताम्रपाषाण संस्कृति का अन्त किस प्रकार हुआ कौन सी परिस्थितियाँ इसके पतन में सहायक थी इसके बारे में कोई स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। इस संबंध में सिर्फ अनुमान के आधारों पर ही कुछ कारण निर्धारित किये जा सकते है।

मध्य–प्रांत में एरण व अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों में इस संस्कृति के पतन मे लोहा उपयोग करने वाले मानव समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कुछ विद्वानों[16] का मत है, कि उज्जैन व नागदा के समूह(अपने हथियारों व उपकरणों से सज्जित) इन सभी स्थानों में ताम्रपाषाण संस्कृति के विनाश का कारण बने। डॉ. सांकलिया[17] के अनुसार इन निवासियों को कई बार आग लगने के खतरे उठाने पड़े। बाद में लोहा उपयोग करने वाले मानव का वहाँ आगमन हुआ। जो शायद उज्जैन या उत्तरी भागों में कहीं से आये थे। लोहे की जानकारी रखने वाले मानव ने एक नवीन संस्कृति को ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के पतन के बाद जन्म दिया।

उज्जैन में लोहा, चित्रित भूरे मृद्भाण्डों के साथ मिला है।[18] बी.बी. लाल[19] व अन्य विद्वानों द्वारा यह मत व्यक्त किया गया है,कि गंगाघाटी से दक्षिण की ओर आर्यों के बढ़ने के दौरान इस संस्कृति का पतन हुआ था। अंतरंजीखेड़ा के उत्खनन में प्राप्त पुरावशेषों की कार्बन 14 विधि द्वारा 1000 ई.पू. इनका काल ज्ञात हुआ है।[20] यहाँ से चित्रित भूरे मृद्भाण्ड वाली सतह की अवस्था से पूर्णरुप से बने लौह उपकरण मिले है। चित्रित धूसर

Scanned by CamScanner

मृद्भाड वाली प्रारंभिक सतह के साथ ही परवर्तीकाल की सतह से भी काले एवं लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं, लौह उपकरण भी मिले हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि 1200 ई.पू. के लगभग अंतरंजीखेड़ा निवासियों को लोहे का ज्ञान था। अंतरंजीखेड़ा के नवीन उत्खनन से भी भूरे मृद्भाण्ड वाली सतह से लोहे की प्राप्ति हुई है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मध्य भारत की अपेक्षा गंगाघाटी के लोगों को लोहे का ज्ञान सर्वप्रथम हुआ। मध्यभारत के लोगों को लोहे का ज्ञान बाद में हुआ।[21] यह संभव है, कि प्रारंभिक ऐतिहासिकयुग के लौह उपकरणों से सुसज्जित लोग मध्य भारत की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के विनाश के लिए जिम्मेदार हों। एरण की विशाल सुरक्षा प्राचीर तथा खाई से यह आभास मिलता है, कि इस संस्कृति के लोगों को नदी की बाढ़ अथवा बाह्य आक्रमण का भय था, किन्तु उत्खनन में बाढ़ के प्रमाण उपलब्ध नहीं हुए, तब यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि उन्हें बाह्य आक्रमण का भय था। आक्रमणकारी कौन थे, यह विवादास्पद है। प्रतीत होता है, कि गंगाघाटी की लौह संस्कृति के निर्माताओं से उन्हें भय था। सुरक्षा–प्राचीर के निर्माणकाल (लगभग 1750 ई.पू.) के लगभग गंगाघाटी में लोग लोहे का उपयोग करने लगे थे। यह अतरंजीखेड़ा उत्खनन से स्पष्ट हो जाता हैं।[22] अतः प्रतीत होता है, कि भयभीत ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के निर्माताओं से अंततः लौह संस्कृ ति के लोग आ मिले थे। विंध्वस के प्रमाण ताम्रपाषाणकालीन स्तरों से नहीं मिले हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ताम्रपाषाण सभ्यता का अंत एरण में नहीं हुआ बल्कि परवर्ती संस्कृति से प्रभावित होकर धीरे–धीरे उसका स्वरूप परिवर्तित हो गया। प्रो. विवेकदत्त झा, जो 1984–88 ई. के मध्य एरण उत्खनन के निदेशक रहे उनके अनुसार एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के पतन में आग लगने का भी कारण हो सकता है, किन्तु इसके स्पष्ट प्रमाण नहीं मिले हैं। एरण की जीवनदायिनी बीना नदी (प्राचीन बेण्वा) की बाढ़ के भय से इस संस्कृति के लोग संभवतः कोई दूसरी अन्य जगह चले गये हो यह भी संभव हो सकता है। प्रो. के.डी. वाजपेयी जी के अनुसार एरण की ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता समय के साथ धीरे–धीरे स्वाभाविक ढंग से आगामी संस्कृति में विलीन हो गई और लौहयुगीन संस्कृति के लोगों के प्रभाव में आने से यह सभ्यता धीरे–धीरे नष्ट गई।

Scanned by CamScanner

संदर्भ

1 शांडिल्य, आलोक : एरण उत्खनन 1986 द्वारा ज्ञात प्रथम काल का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध), डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय. सागर म.प्र, 1987, पृ. 62

2 डी.पी., अग्रवाल : कार्बन – 14, डेट्स बन्नास कल्चर एण्ड आर्यन्स करन्ट साइंस।

3 आलचिन, रेमण्ड : द बर्थ आफ इण्डियन सिविलाइजेशन,1966,पृ.215

4 बुलेटिन ऑफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1969, , अंक –1, पृ. 37

5 द्विवेदी, चन्द्रलेखा, : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, नई दिल्ली, 1985, पृ. 28

6 अली, रहमान व अन्य : चाल्कोलिथिक साइट ऑफ उज्जैन रीजन, महिदपुर एक्सकेवेशन्स रिपोर्ट 2004, पृ. 111–112

7 शांडिल्य, आलोक : एरण उत्खनन 1986 द्वारा ज्ञात प्रथमकाल का अध्याय (अप्रकाशित, लघु शोध प्रबंध, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर म. प्र), 1987, पृ. 62

8 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 23

9 बुलेटिन आफ ऐन्शियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी, पूर्वोक्त, पृ. 32

10 वही : पृ. 37

11 वही : पृ. 34

12 वही : पृ. 37

13 दुबे, नागेश : एरण की कला,सागर,1998, पृ. 14

14 वही : पृ. 55

15 वही : पृ. 14

16 के.सी., जैन : मालवा थ्रू द एजेज, नई दिल्ली, पृ. 86

17 द्विवेदी, चन्द्रलेखा : पूर्वोक्त, पृ. 28

18 बनर्जी, एन,आर, : "भारत में लौह–काल" पुरातात्विक सेमीनार पूना में प्रस्तुत शोध पत्र, 1963–64

19 इण्डियन आर्क्योलॉजी ए रिव्यू,1954–55, पृ. 150

20 लाल, बी.बी. : इण्डियन आर्क्योलॉजी सिन्स इन्डीपेन्डेन्स, दिल्ली 1966, पृ. 19

21 आलचिन रेमण्ड : दी बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन, ग्रेट ब्रिटेन, 1968, पृ. 252

22 गौड़, आर.सी. : प्रोस्टोहिस्टारिक कल्चर्स ऑफ अतरंजीखेड़ा, पुरातात्विक सेमीनार, पूना, 1964 में प्रस्तुत शोध पत्र

Scanned by CamScanner

अध्याय नवम्

निष्कर्ष

Scanned by CamScanner

बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम सांस्कृतिक एवं सामरिक केन्द्र एरण का भारतीय पुरातत्त्व व संस्कृति में विशिष्ट योगदान है। 'एरण' नाम की व्यत्पत्ति संबंधी एकाधिक मत है, मेरी धारणा है, कि जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम महोदय का मत सार्थक है, क्योंकि इस क्षेत्र मे 'ईरक' अथवा 'ईरण' नामक घास (काँस) बहुतायत में पैदा होती थी, जिसके कारण इस भू–भाग का नाम ऐरिकिण अथवा एरण पड़ा। उक्त मत की पुष्टि एरण में उत्पन्न होने वाली काँस नामक घास से होती है। यह ऐसी घास है, जिसको उखाड़ फेकनें पर भी पुनः पैदा हो जाती है। संभवतः गुप्तकाल व पूर्ववर्तीकाल में यह घास इस क्षेत्र में काफी मात्रा में पैदा होती थी, इसी के परिणामस्वरूप इस भू–भाग का नाम 'ऐरिकिण' व 'एरकण्य' या 'एरण' पड़ा। 'एरकण्य' लेखयुक्त (तीसरी–दूसरी शताब्दी ई.पू. की) मुद्राएँ एरण उत्खनन में प्राप्त हुई हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबंध में एरण उत्खनन से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का अध्ययन किया गया है। उन पुरावशेषों के आधार पर एरण की प्राचीनता लगभग 2150 ई.पू. तक जाती है, जो हड़प्पा सभ्यता के समकालीन है। यहाँ से कुछ ऐसे पुरावशेष भी प्राप्त हुए हैं। जिनका साम्य हड़प्पा सभ्यता के पुरावशेषों से होता है। इस आधार पर एरण की ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता का संबंध व संपर्क हड़प्पा सभ्यता के लोगों से भी ज्ञात होता है। एरण के मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी हड़प्पन लिपि से साम्य रखती है। एरण से प्राप्त ककुदमान वृषभ, हड़प्पा सभ्यता के ककुदमान वृषभ जैसे हैं। मृद्भाण्डों पर उत्कीर्ण चित्रण अभिप्राय भी हड़प्पा मृद्भाण्डों के चित्रण अभिप्रायों से साम्य रखते हैं। मनके, स्वर्ण आभूषण, चूड़ियों का साम्य भी हड़प्पा से प्राप्त पुरावशेषों से होता है। उनमें मत्स्य शल्क, हरिण, हीरे, गोल छल्ले नदी में मछली, वृक्ष, पौधे इत्यादि महत्वपूर्ण हैं। एरण से प्राप्त अन्य पुरावशेषों में श्रृंगार प्रसाधन की सामग्री व अन्य पुरावशेषों का साम्य भी हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त वस्तुओं से होता है। एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों का साम्य मध्यप्रदेश व भारत के अन्य ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेषों से होता है। इसके साथ–साथ एरण से प्राप्त सुदृढ़ सुरक्षा–व्यवस्था इस संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। यहाँ से प्राप्त

Scanned by CamScanner

स्वर्ण–पत्तर, हाथी–दाँत की चूड़ियाँ, अर्धकीमती पत्थरों के मनके व अन्य वस्तुएँ आर्थिक दृष्टि से सपंन्नता की सूचक हैं।

एरण उत्खनन द्वारा ताम्रपाषाण संस्कृति के स्वरूप पर यथेष्ठ प्रकाश पड़ा है। कायथा के प्रथमकाल में उपलब्ध कायथा मृद्भाण्ड के टुकड़ों की प्राप्ति से दोनों केन्द्रों के निवासियों के पारस्परिक संबंधों तथा कायथा मृद्भाण्ड के विस्तार क्षेत्र की जानकारी मिलती है। एरण में ताम्रपाषाण संस्कृति के मालवा मृद्भाण्डों को आधार बनाकर डॉ. वी. एस. वाकणकर ने इस सभ्यता के निर्माताओं से संबंधित समस्या के निराकरण को एक दिशा प्रदान की है। एरण उत्खनन के प्रथमकाल में ताम्रपाषाण संस्कृति के साथ नवपाषाण संस्कृति के अवशेषों का प्राप्त होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। एरण उत्खनन में नवपाषाण संस्कृति के विशिष्ट मृद्भाण्डों, नवप्रस्तर कुठार, लघुपाषाण–उपकरण, सिलबट्टे की प्राप्ति हुई है। इसके अतिरिक्त एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण पशु के शव विर्सजन का है। एरण के नवपाषाणकाल लगभग 2100 ई.पू. में अप्रयुक्ता धरती पर गड्ढ़ा खोदकर विधिवत घोड़े को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं, घोड़े का सिर, पसलियाँ, पैर उत्खनन में मिले हैं। (चित्र संख्या 108–109) नवपाषाण संस्कृति के संदर्भ में इसके पूर्व घोड़े की अस्थियाँ भारत में कहीं से प्राप्त नहीं हुई हैं। बुर्जाहोम में कुत्ता व लोमड़ी को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं। एरण से प्राप्त उक्त साक्ष्य द्वारा प्रमाणित होता है, कि नवपाषाण संस्कृति के लोग न केवल घोड़े से परिचित थे, बल्कि उसके साथ किसी तरह का धार्मिक विश्वास भी जुड़ा हुआ था। बट्टे की प्राप्ति से संकेत मिलता है, कि वे लोग अनाज को पकाने के पहले कूट–पीस लिया करते थे। पकी मिट्टी, शंख तथा प्रस्तर के मनकों और लटकनों की प्राप्ति से स्पष्ट होता है, कि श्रृंगार–प्रसाधन के प्रति उनका विशेष झुकाव था। आखेट, कृषि, पशुपालन, प्रस्तर–कुठार, मृद्भाण्ड तथा मनके उद्योग इनके जीविकोपार्जन के साधन थे। इस काल से संबंधित जास्पर पत्थर व मिट्टी, अकीक के उपकरण तौल प्रतीत होते हैं। इनसे इस काल में माप–तौल की प्रणाली के संकेत मिलते हैं। एरण से नवपाषाण संस्कृति के पुरावशेष, ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेषों के साथ–साथ मिलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। एरण के नवपाषाणकालीन मानव को चूँकि घोड़े का ज्ञान था। वह लोग घोड़े का प्रयोग सवारी करने, सामान लाने ले जाने में करते होगें। अतः संभव है, कि एरण के ताम्रपाषाणकालीन लोगों ने भी इस काल के लोगों से घोड़े के बारे ज्ञान प्राप्त किया हो और उसका उपयोग वह दैनिक जीवन में करते रहे हो, एरण उत्खनन में

Scanned by CamScanner

ताम्रपाषाणकालीन स्तर से घोड़े की मृण्मूर्ति मिली हैं। एरण से मुख्यतः मालवा मृद्भाण्ड प्राप्त हुये हैं। इसके अतिरिक्त अल्प–मात्रा में अन्य मृद्भाण्डों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। एरण से प्राप्त ताम्रपाषाणकालीन पुरावशेषों के माध्यम से उस काल के शिल्पियों, कलाकारों, कला–मर्मज्ञों की निपुणता, दक्षता, मौलिक सूझ–बूझ, शास्त्र–मर्मज्ञों व श्रृंगार–प्रियता का परिचय तो मिलता ही है, साथ ही उस काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक,सांस्कृ –तिक व धार्मिक अवस्था की भी जानकारी मिलती है :–

सामाजिक व्यवस्था

वर्ग

समाज में जाति व्यवस्था नहीं थी, किन्तु इस समय आर्थिक संपन्नता के आधार पर अलग–अलग वर्ग थे। उनमें उच्चवर्ग, माध्यमवर्ग व निम्नवर्ग प्रमुख थे। उत्खनन में प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर इनका अनुमान लगाया जा सकता है, उच्चवर्ग, के लोग(स्वर्ण,ताम्र,अर्ध–कीमती,पत्थरों के आभूषणों) बहुमूल्य वस्तुओं का उपयोग करते थे। जबकि निम्नवर्ग के लोग (मिट्टी इत्यादि के आभूषणों) कम मूल्य की वस्तुओं का प्रयोग करते थे। माध्यम वर्ग के लोग निम्न वर्गों के उन्नतिशील लोग हुआ करते थे।

गृह निर्माण नगर योजना

बीना नदी द्वारा निर्मित अर्द्ध–चन्द्राकार वृत्त के अंदर एक ओर अर्धवृत्त बनाकर ताम्रपाषाणकाल के लोग रहते थे। निवास का अधिकांश भाग सुरक्षा–प्राचीर के अंदर 2×1 फर्लांग क्षेत्र में सीमित था। सीमित उत्खनन (वर्तमान एरण ग्राम ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेषों के ऊपर बने टीलों पर विद्यमान है) कारण आकार–प्रकार का अभिज्ञान नहीं हुआ है। केवल फर्श की छः सतहें उत्खनन में प्राप्त हुई है। मकानों के फर्शों में चूल्हों का पाया जाना प्रमाणित करता है, कि लोग चूल्हों व जुड़वा चूल्हों से परिचित थे। जुड़वा चूल्हे संगठित परिवार के सूचक है। इस काल में निर्मित सुरक्षा–प्राचीर तथा खाई के द्वारा ज्ञात होता है, कि यहाँ के निवासियों ने बाढ़ तथा बाह्य आक्रमणों की रक्षा हेतु सुरक्षा–व्यवस्था सुदृढ़ कर रखी थी। कायथा संस्कृति के अवशेष 1984–88 ई. के बीच उत्खनन में मुख्य टीले पर स्थित खदान (एरण क्रमांक–1) में अप्रयुक्ता धरती के ऊपर प्राप्त हुए हैं। इस काल में फर्श निर्माण के तीन चरण उजागर हुए हैं – मिट्टी, बजरी, मृद्भाण्ड और पकी मिट्टी के गोल टुकड़ों को कूटकर बनाये गये फर्श से सम्पृक्त अनियमित आकार की ईटें भी प्राप्त हुई हैं। यह एक महत्वपूर्ण साक्ष्य है ,कि भवन मिट्टी

Scanned by CamScanner

व कच्ची ईटों के बने होते थे। फर्श पर अग्निकुण्ड के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसमें जली हुई पशु–अस्थियाँ पाई गई हैं। यह अग्निकुण्ड वर्तमान ग्रामीण परिवेश की भाँति सर्दियों में ठंड से बचने हेतु बनाया गया होगा। इसके चारों ओर लोग ठंड से बचने हेतु बैठते होगें और शिकार किये हुए, माँस को साथ में भूनकर खाते होगें। कुछ विद्वानों ने इसके निर्माण का उद्देश्य धार्मिक बताया है।

भोजन

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का निर्माता मुख्यरूप से शाकाहार के साथ माँसाहार भी करता था। एरण व समकालीन विभिन्न केन्द्रों से उपलब्ध अनाज के दाने व उसके द्वारा उपजाई गयी फसले इसके प्रमाण हैं। एरण से प्राप्त जीन के आकार की सिल (Saddle quern) बट्टे तथा लोढ़े तत्कालीन निवासियों द्वारा अनाज कूट–पीस कर उपभोग करने के परिचायक हैं। एरण के ताम्रपाषाणकाल में निर्मित अग्निकुण्ड (Fire-Pit) में प्राप्त पशुओं की जली अस्थियाँ, मृद्भाण्डों पर चित्रित हरिण, पक्षी आकृतियाँ तथा पत्थर के गोलों द्वारा प्रमाणित होता है, कि यहाँ के निवासी शिकार कर माँसाहार भी करते थे। हरिण संभवतः इसलिए अधिक प्रिय था, क्योकि इस क्षेत्र में यह बहुतायत से मिलता था और उसका माँस खाने में अधिक स्वादिष्ट था। पत्थर के गोलों को गोफन में प्रयुक्त कर अथवा रस्सी के दोनों सिरों में बाँधकर, पशु–पक्षियों का शिकार किया जाता था। एरण में प्राप्त ताम्र–निर्मित बाणफलक तथा हड्डी के बाणफलक, ताम्र–कुल्हाड़ियाँ, आखेटक मनुष्य के सूचक हैं।

वेशभूषा तथा श्रृंगार प्रसाधन

ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता के निवासियों की वेशभूषा के संबंध में निश्चित रूप से तो कोई मत व्यक्त नहीं किया जा सकता है, किन्तु डॉ. सांकलिया के इस मत को स्वीकार किया जाए कि पकी मिट्टी के सछिद्र मण्डलकों का उपयोग तकली के चक्र के रूप में होता था। तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि एरण के तत्कालीन निवासी तकली द्वारा सूत कातकर सूत्री–वस्त्रों का निर्माण करते थे। एरण से सछिद्र–मण्डलक बहुल्य मात्रा में मिले हैं। अन्य केन्द्रों से प्राप्त भग्न मानवीय आकृतियों के आधार पर पहनावे की कल्पना नहीं की जा सकती केवल अनुमानतः यह कहा जा सकता है, कि यह लोग सूती और रेशमी वस्त्र धारण करते थे। एरण के समकालीन हड़प्पा सभ्यता से कपास की खेती व वस्त्रों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। महेश्वर–नावदाटोली से सूती व रेशमी

Scanned by CamScanner

वस्त्रों के साक्ष्य मिले हैं। एरण से प्राप्त कुछ मानवीय आकृतियाँ अधोवस्त्र धारण किये हुए है एक मृण्मूर्ति को पगड़ी पहने दिखलाया गया है। ताम्रपाषाणकाल की अधिकांश मृण्मूर्तियाँ नग्न हैं। एरण उत्खनन में अस्थियों के बने वस्त्र बुनने के तकुए प्राप्त हुए है।

स्वर्ण–अगूठी, स्वर्ण–मड़ी चूड़ी का टुकड़ा,स्वर्ण पत्तर तथा हाथीदाँत, शंख पकी मिट्टी व प्रस्तर की चूड़ियों, ताम्र–मुद्रिकाओं, ताम्र–मनके, पकी मिट्टी व शंख के मनकों, लटकनों, पकी मिट्टी के ताटंक–चक्रों आदि के द्वारा तत्कालीन आभूषणों की जानकारी मिली है। एरण से प्राप्त अंजन–शलाकाओं द्वारा इस काल में आँख में आजने के लिए प्रयुक्त काजल अथवा सुरमा जैसी किसी वस्तु का आभास मिलता है। सुरमा व काजल रखने के पात्र भी उत्खनन में प्राप्त हुये है।

आर्थिक स्थिति

कृषि व पशुपालन

ताम्रपाषाणकालीन कृषि के परिचायक पत्थर के गोल छल्ले (Stone ring) सामांतर किनारों वाले पत्थर के विशिष्ट ब्लेड, पालिशयुक्त प्रस्तर–कुठार एरण में प्राप्त हुये हैं। एरण से सिर्फ जले चावलों के दाने प्राप्त हुए हैं, किन्तु कायथा, महेश्वर तथा अन्य केन्द्रों से मिले गेहूँ, चना, मटर, मसूर, मूँग और चावल के जले हुए दाने उस काल में उपजाने वाले अनाज के सूचक हैं। पत्थर के गोल छल्ले उन नुकीली लकड़ियों के सिरों पर लगाये जाते थे, जिनसे मिट्टी खोदी जाती थी। इस प्रकार नुकीली लकड़ियों से मिट्टी खोदकर आज भी उड़ीसा के आदिवासी कृषि करते हैं। पालिशयुक्त प्रस्तर–कुठारों से जंगलों को साफकर जमीन को कृषि योग्य बनाया जाता था। लघुपाषाण उपकरणों को लकड़ी अथवा हड्डी की मूठों में फंसाकर बनाये गये हंसियों से फसलें काटी जाती थी। उपलब्ध मिट्टी की खिलौना गाड़ियों के पहिये संकेत करते हैं, कि तत्कालीन निवासी बैलगाड़ियों से परिचित थे। कटी हुई फसलों को बैलगाड़ियों में लाया जाता था।बैल कृषि कार्य में काफी उपयोगी थे। इसकी जानकारी उत्खनन में प्राप्त बहुसंख्यक सामान्य वृषभ, ककुदमान वृषभ की मृण्मूर्तियों से होती है। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से एक गाय की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई हैं सम्भवतः लोग इसको वृषभ जन्मदात्री के रूप में पूजते थे। यह परम्परा आज भी हिन्दुओं में देखने को मिलती है।

गाय–बैल, हाथी, हरिण, मयूर व कुत्ता से एरण के ताम्रपाषाणकाल के निवासी निश्चित रूप से परिचित थे। एरण उत्खनन मे नवपाषाणकालीन अश्व को दफनाने के

Scanned by CamScanner

साक्ष्य प्राप्त हुए हैं इससे यह सम्भवना व्यक्त की जा सकती है, कि नवपाषाणकालीन सभ्यता (2150 ई.पू.) के लोगों से ताम्रपाषाण सभ्यता के लोगों ने अश्व का ज्ञान प्राप्त किया होगा। अभी तक विद्वानों के अनुसार भारत में 2000 ई.पू. के पहले घोड़े के साक्ष्य नही मिले है। मृद्भाण्डों में मयूर, बिच्छू, केकड़ा, कुत्ता इत्यादि का चित्रण किया गया है। कायथा उत्खनन में बकरा तथा भालू की हड्डियाँ पाई गई उक्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है, कि उक्त पशुओं से इस काल के लोग भली–भाँति परिचित थे।

उद्योग–धंधे

कृषि के अतिरिक्त एरण के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों की आर्थिक व्यवस्था उद्योग धंधों पर भी आश्रित थी। उद्योग धंधों में पाषाण उपकरण उद्योग, धातु उपकरण उद्योग, वस्त्र–उद्योग, मृद्भाण्ड–उद्योग, मृण्मूर्ति–उद्योग, आभूषण–उद्योग, कष्ठ उपकरण –उद्योग इत्यादि प्रमुख थे। इस समय पाषाण–उद्योग में ब्लेड, खुरचनी इत्यादि बनाये जाते थे। धातु–उद्योग में आभूषण व अस्त्र–शस्त्र बनाये जाते थे। मृद्भाण्ड–उद्योग (लाल–और–काल मृद्भाण्डों का) बड़ा उद्योग था। मृद्भाण्डों पर पशु–पक्षियों, आभूषणों, वनस्पतियों के चित्रण से उस काल की अर्थव्यवस्था की जानकारी भी मिलती है। मृद्भाण्डों पर मत्स्य शल्क, मछली की आकृति से सिद्ध होता है, कि मछली का आखेट एक बड़े वर्ग का उदरपूर्ति का साधन था। मृद्भाण्डों पर हीरों का चित्रण, हीरा जैसे बहुमूल्य रत्न से एरण के निवासियों का परिचय होना सिद्ध करता है। अभी तक उत्खनन में हीरा अप्राप्त है। एरण की आर्थिक व्यवस्था में यहाँ की जीवनदायिनी नदी बेण्वा(बीना) का भी महत्वपूर्ण योगदान था। यहाँ रहने वाले कुम्भकार कुशल कारीगर थे। वह मृद्भाण्डों की मिट्टी को अच्छी तरह गूंथकर मजबूत, सुन्दर बनाने के पश्चात् निश्चित तापक्रम पर पकाते थे। कुछ मृद्भाण्डों पर पकाने के पूर्व व कुछ पर पकाने के बाद चित्रण किया जाता था। इस समय मृद्भाण्ड मानव जीवन के अभिन्न अंग थे। मृण्मूर्तियों का उद्योग भी इस काल में काफी विकसित था। मानव, पशु, पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ इस समय एरण से बहुल्य संख्या में मिली है। आभूषण–उद्योग में अर्धकीमती पत्थरों के ताम्र–मनके, पाषाण–मनके, धातु व शंख के मनके, पकी मिट्टी के मनके, लटकन, अंजन–शालाकाएँ, सुरमा इत्यादि रखने के पात्र प्रमुखतः से बनाये जाते थे। लकड़ी का कार्य करने वाले (बढ़ई) बैल–गाड़ियों का निर्माण करते थे। मनोरंजन हेतु शतरंज के मोहरे व चौपड़ के पाँसे भी इस काल में बनाये जाते थे। एरण मनकों के निर्माण का एक

Scanned by CamScanner

बड़ा केन्द्र था। अनुमानतः इन मनकों का निर्यात होता था। सम्भवतः एरण के निवासियों ने मनका निर्माण की जानकारी हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त की थी। एरण में वस्त्र–उद्योग रहा होगा, उत्खनन में सलाईयाँ व तकुये प्राप्त हुये हैं। नेवासा, महेश्वर–नावदाटोली, कायथा आदि स्थानों से सूती व रेशमी वस्त्रों के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ से सूत कातने के तकली चक्र प्राप्त हुए हैं। जो हड्डी अथवा पकी मिट्टी से बनाये जाते थे। डॉ सांकलिया महोदय, सछिद्र मण्डलकों का एक उपयोग तकली के चक्र के रूप में मानते हैं। सिलबट्टे और अस्थि उपकरणों का निर्माण भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग था। लघुपाषाण उपकरणों के निर्माण द्वारा भी समाज का एक वर्ग अपना उदर–पोषण करता था। ताँबा और पत्थर के बाँट–बटखरों व मनोरंजन की सामग्री को बनाकर भी कुछ लोग अपनी जीविका चलाते थे।

धातु ज्ञान

एरण उत्खनन से ज्ञात होता है, कि यहाँ के निवासी ताँबे व सोने का उपयोग करने लगे थे। एरण से प्राप्त सुस्पष्ट ताम्र–कुठार तथा ताम्रनिर्मित आभूषण इसके प्रमाण हैं। एरण उत्खनन में ताम्रपाषाणकालीन स्तर से स्वर्ण का एक गोलाकार पत्तर मिला है जिसका उपयोग संभवतः विनिमय के रूप में होता था। कुछ विद्वान इसे ऋग्वेद में उल्लेखित 'निष्क' व 'हिरण्यपिण्ड' मानते हैं। स्वर्ण पत्तर में छिद्र होने के चिन्ह दिखाई देता है अतः संभव है कि इसको लोग गले में पहनने थे। स्वर्ण मण्डित चूडी का एक टुकड़ा व एक अंगूठी भी एरण उत्खनन में ताम्रपाषाण कालीन स्तर से प्राप्त हुई है। इस प्रकार कहा जा सकता हैं, कि इस काल में स्वर्ण के सीमित उपयोग के साथ–साथ ताम्र वस्तुओं का निर्माण बड़े पैमाने पर किया जाता था। भारत के अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से भी स्वर्ण प्राप्ति के साक्ष्य मिले है। एरण के ताम्रपाषाणकाल में नवपाषाण उपकरण भी प्रयुक्त होते थे। एरण के प्रथम काल तथा द्वितीय काल के बीच कोई वीरान–पर्त प्राप्त नहीं हुई। दोनों के बीच एक ऐसा स्तर मिला है, जिसमें दोनों कालों के विशिष्ट मृद्भाण्ड एक साथ मिले हैं। अतः कहा जा सकता है, कि दोनों संस्कृतियों के लोग कुछ समय तक साथ–साथ रहे थे। ताम्रपाषाणकाल के स्तरों से लोहे का कोई प्रमाण नहीं मिला। अनुमानतः एरण के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोग संस्कृति के अवसान काल में लोहे से परिचित हो चुके थे। एरण व महिदपुर से ताम्रपाषाण संस्कृति के स्तरों

Scanned by CamScanner

से लोहे के प्रमाण मिले हैं। जिससे ज्ञात होता है, कि परवर्ती ताम्रपाषाणकाल के लोगों को लोहे की जानकारी हो गई थी।

माप–तौल प्रणाली

माप–तौल प्रणाली का ज्ञान ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता के निवासियों को था। अर्ध कीमती पत्थरों तथा पकी मिट्टी के बने तौल, एरण उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा सभ्यता के काल में तौल तथा माप की प्रणाली प्रचलित थी। इसके परिचायक ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थलों से प्राप्त बाँट–बटखरे हैं। पत्थर के गोलों और पकी मिट्टी के मण्डलकों का उपयोग भी संभवतः ताम्रपाषाणकाल में तौल की तरह होता था।

राजनीतिक व्यवस्था

एरण उत्खनन से राजनीतिक व्यवस्था की स्पष्ट जानकारी तो प्राप्त नहीं होती किन्तु यहाँ से प्राप्त विशाल ताम्रपाषाणकालीन सुरक्षा–दीवार व खाई के आधार पर कहा जा सकता है, कि यहाँ कोई नेतृत्व करने वाला मुखिया अवश्य ही रहा होगा। यह भी संभव है, कि उद्योग धंधों के आधार पर प्रत्येक व्यवसाय वर्ग का एक मुखिया था और यही सभी मिलकर एक प्रमुख का चुनाव करते थे। इस प्रकार एक 'समिति' संपूर्ण कबीले या ग्राम्य बस्ती का संचालन करती थी। उनकी सलाह पर ग्राम्य के समस्त कार्य किये जाते थे। अतः सम्भावना व्यक्त की जा सकती है, कि यहाँ की शासन प्रणाली का स्वरूप गणतंत्रात्मक था। इन लोगों को बाह्य आक्रमण का भय था। इसी कारण इन्होंने अपनी सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ की और सुरक्षा–प्राचीर व खाई का निर्माण किया। युद्ध व शिकार में प्रयुक्त करने के लिए इन्होंने पत्थर, हड्डी तथा ताँबे के बाणफलक, पालिशयुक्त प्रस्तर कुठार, ताम्रकुठार, गोफन में प्रयुक्त होने वाले पत्थर के गोले व लघुपाषाण उपकरण निर्मित किये। बाणफलकों का उपयोग बाँस के धनुष बनाकर उनमें बाण की तरह करते थे। चन्दोली से प्राप्त छोटी तलवार से प्रमाणित होता, कि इस संस्कृति के लोग तलवारों का निर्माण भी करते थे। जो युद्ध इत्यादि में विशेष उपयोगी शस्त्र था। उपर्युक्त उपकरणों की प्राप्ति से इस काल की राजनीतिक अवस्था की जानकारी भी प्राप्त होती है। एरण की सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है, कि इस समय लोग एक–दूसरे पर आक्रमण करते थे और इन आक्रमणों का नेतृत्त्व जरूर कोई एक व्यक्ति व मुखिया करता था। जो ग्राम्य प्रधान था। अतः इस समय यहाँ गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था रही होगी।

Scanned by CamScanner

सांस्कृतिक व्यवस्था

ताम्रपाषाणकाल में मनुष्य सांस्कृतिक गतिविधियों में भी विशेष रूचि रखता था। इसकी जानकारी उत्खनन में प्राप्त मनोरंजन की वस्तुएँ व लिपि इत्यादि के अवशेष देते हैं।

मनोरंजन का स्वरूप

एरण उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर निर्मित छोटी गोलियाँ, खिलौना–गाड़ी के पहिये, पकी मिट्टी तथा प्रस्तर निर्मित मोहरे, चौपड़ का पाँसा, पकी मिट्टी तथा मृद्भाण्डों के मण्डलक, पशु–पक्षियों व मानवीय मृण्मूर्तियाँ तत्कालीन मनोरंजन के स्वरूप के परिचायक हैं। शतरंज के मोहरे अथवा चौपड़ के पाँसे खेल में प्रयुक्त होते थे। प्राचीन सभ्यता के अनेक केन्द्रों से भी शतरंज के मुहरें व चौपड़ के पाँसे इसके प्रमाण हैं। गोलियाँ, पशु–पक्षियों वे मानवीय मृण्मूर्तियाँ, खिलौना गाड़ी तथा मृद्भाण्डों के मण्डलक शिशुओं की क्रीड़ार्थ प्रयुक्त होते थे। शिकार भी वयस्कों के मनोरंजन का एक बड़ा साधन था। हरिण व मछली इत्यादि का शिकार भी किया जाता था। नावदाटोली से मछली पकड़ने के काँटे मिले हैं। यह एरण उत्खनन के फलस्वरूप अप्राप्त हैं। शिकार में पत्थर के गोले (Stone Balls) तथा धनुष–बाण प्रयुक्त होते थे। इस काल में संभवतः नृत्य भी मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण अंग था।

लिपि

इस काल में कुछ लोग लेखन–कार्य के प्रति भी रूचि रखते थे एरण से प्राप्त कुछ मृद्भाण्डों पर ग्रेफिटी के चिह्न मिलते हैं। इस प्रकार के चिह्न महेश्वर–नावदाटोली, नागदा,नेवासा तथा कायथा के मृद्भाण्डों पर भी प्राप्त हुये हैं। ऐसे चिह्न परवर्तीकालीन महापाषाण संस्कृति (Megatlitnic Culture) के बर्तनों पर भी प्राप्त हुए हैं। अनुमानतः यह चिह्न मृद्भाण्ड निर्माताओं की पहचान के द्योतक हैं। डॉ. वाकणकर के अनुसार इन चिह्नों का साम्य हड़प्पा सभ्यता की लिपि से मिलता है, उनका मानना है, कि हड़प्पा लिपि का सर्वथा लोप नहीं हुआ, बल्कि वह परवर्ती हड़प्पा सभ्यता में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही। एरण से प्राप्त ग्रेफिटी के चिह्न मौर्यकालीन ब्राह्मी के अक्षरों से भी साम्य रखते हैं, अतः सम्भव हैं कि यह ब्राह्मी के पूर्ववर्ती अक्षर ही थे।

धार्मिक व्यवस्था

इस सभ्यता के धर्म का कोई निश्चित स्वरूप निर्धारित नहीं किया जा सका है। उत्खनन में प्राप्त वृषभ मृण्मूर्तियाँ के बाहुल्य के आधार पर सर जान मार्शल ने यह

Scanned by CamScanner

अनुमान लगाया था, कि इस सभ्यता के निवासियों में वृषभ–पूजन का स्वतंत्र अस्तित्व था। एरण उत्खनन में गाय की मृण्मूर्ति से स्पष्ट है कि इस काल के लोग गाय को पूज्य मानते थ। कालांतर में वृषभ पूजन शैव–धर्म में समाहित हो गया। एरण उत्खनन व अन्य समकालीन केन्द्रों से प्राप्त मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ मातृ–पूजा का संकेत देती हैं। इससे ज्ञात होता है, कि देवी की पूजा, उपासना प्राचीनकाल में भी की जाती थी। वृषभ की कलात्मक मृण्मूर्तियाँ एरण उत्खनन में प्राप्त हुई हैं। मृण्मूर्तियों के निर्माण का प्रयोजन धार्मिक है। ऋग्वेद से लेकर उत्तरवैदिक साहित्य में 'वृष' या 'वृषभ' शब्द का उल्लेख मिलता है, महाकाव्य व पौराणिक साहित्य में वृषभ को शिव के वाहन के रूप में वर्णित किया गया। एरण उत्खनन में प्राप्त कुछ वृषभ आकृतियाँ यद्यपि शिशुओं के क्रीड़ार्थ निर्मित की गई थी, परंतु शेष प्रतिमाओं का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में होता था। एरण से प्राप्त वृषभ मृण्मूर्तियों से ज्ञात होता है, कि इस समय यहाँ शैव धर्म स्थापित था। हड़प्पा सभ्यता से लिंग–योनी जैसी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं, जिन्हें विद्वान शिवलिंग मानते हैं। हड़प्पा से योगी मूर्ति को भी कुछ विद्वान शैव–धर्म से सम्बन्धित मानते हैं। इस प्रकार प्राप्त मृण्मूर्तियों से पूजा, उपासना का स्वरूप ज्ञात होता है। सम्भवतः इस काल के लोग प्राकृतिक शक्तियों में सूर्य,नदी,अग्नि,इत्यादि की पूजा करते थे।यज्ञ–कुण्ड(अग्नि–कुण्ड) के प्रमाण एरण व अन्य ताम्रपाषाणकालीन स्थलों से मिले हैं।

कला पक्ष

कला के स्वरूप और उसके क्रमिक विकास के अध्ययन हेतु दीर्घ समयावधि एरण ने प्रदान की है। ताम्रपाषाणकाल के प्रारंभिक चरण से लेकर 18वीं सदी ईस्वी तक के कलावशेष एरण से ज्ञात हुए हैं। कला का प्रारंभिक स्वरूप उत्खनन में प्राप्त मृण्मूर्तियों द्वारा उजागर हुआ है। ताम्रपाषाण मृण्मूर्तियाँ हस्त–निर्मित तथा बेडौल हैं। विशेषतः मानव आकृतियाँ बड़ी बेडौल हैं। मातृदेवी प्रतिमाओं में सिर, नाक और वक्ष के प्रदर्शन हेतु गीली मिट्टी को अंगुलियों से दबाकर रूपांकित किया गया है। हाथ, पैर और धड़ भी बेडौल है इसके विपरीत वृषभ आकृतियों के निर्माण में विशेष दक्षता प्रदर्शित है। शरीर के अनुपात में निर्मित पशुओं के अंग प्रत्यंग कला के विकसित रूप के परिचायक हैं। ताम्रपाषाणकालीन वृषभ आकृतियों में प्रदर्शित श्रृंग और ककुद हड़प्पा संस्कृति के वृषभ का स्मरण कराते हैं। अलंकृत हरिणों की मृण्मय आकृतियों तथा मृद्भाण्डों पर चित्रित आकृतियों द्वारा इस तथ्य की पुष्टि होती है। इस काल के मृद्भाण्डों पर चित्रित अभिप्रायों

Scanned by CamScanner

में खड़ी, आड़ी, सामांतर रेखायें, त्रिभुज, फंदे, मछली, मत्स्य शल्क, सीढ़ी, पौधे, हरिण, वृषभ, हीरों की पंक्तियाँ, बिच्छू, कुत्ता के चित्रण में पतला ब्रश, गाढ़ा रंग और साधा हुआ हाथ प्रयुक्त हुआ है। मृद्भाण्डों पर चित्रण के आस–पास रंग का न फैलना, ज्यामितीय, वानस्पतिक तथा प्राकृतिक आभिप्रायों का कलात्मक व वास्तविक चित्रण और रंग योजना से ज्ञात होता है, कि चित्रण–कला विकास के कई चरण तय कर यहाँ तक पहुँची थी। उक्त चित्रण अभिप्रायों से उस काल के कलाकारों की कार्यकुशलता की जानकारी भी प्राप्त होती है। इसके साथ–साथ आभूषण, पाषाण व धातु उपकरण, मनोरंजन की वस्तुओं, सिलबट्टों में भी इस काल की कला के स्पष्ट दर्शन होते हैं

एरण से प्राप्त पुरावशेषों से ज्ञात होता है, कि हड़प्पा सभ्यता से एरण के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों का संपर्क व सह संबंध दृष्टिगत होता हैं। एरण से प्राप्त विशाल सुरक्षा दीवार व खाई का निर्माण हड़प्पा सभ्यता के नगरो की सुरक्षा व्यवस्था से ही प्रभावित होकर यहाँ के लोगों ने किया होगा। एरण से प्राप्त ककुदमान वृषभ व आभूषणों का साम्य हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त पुरावशेषों से होता है। एरण व महिदपुर से प्राप्त स्वर्ण पत्तर व स्वर्ण आभूषण लोथल से प्राप्त स्वर्ण वस्तुओं से मेल रखते हैं। हाथीदाँत की चूड़ियाँ, शंख व मिट्टी की चूड़ियाँ, अंजन–शालाकाओं का कुछ साम्य हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त पुरावशेषों से होता है। मोहरे, शतरंज की गोटियाँ (Gamesmun),चौपड़ के पाँसा एरण से प्राप्त हुए हैं। ऐसे मोहरे व पांसे हड़प्पा सभ्यता के कई नगरों से भी प्राप्त हुए हैं। मृद्भाण्ड चित्रण अभिप्राय में मत्स्य शल्क, मछली, हरिण, हीरे, वृत्त के चित्र व एरण के मृद्भाण्डों पर उकेरी गई ग्रेफिटी के चिह्न हड़प्पन लिपि से साम्य रखते हैं। उक्त आधार पर हम कह सकते हैं, कि एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति का हड़प्पा से कुछ न कुछ तो सह–संबंध व संपर्क था। एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति की कार्बन 14 विधि द्वारा तिथि 2150 ई.पू. निर्धारित की गई है। अतः स्पष्ट, कि हड़प्पा सभ्यता व एरण की ताम्रपाषाण सभ्यता व अन्य ताम्रपाषाणकालीन सभ्यताएँ साथ–साथ चल रही थी सिर्फ अंतर इतना था, कि हड़प्पा सभ्यता नगरीय सभ्यता थी और ताम्रपाषाणकालीन सभ्यताएँ ग्राम्य सभ्यताएँ थीं। एरण के समकालीन अन्य ग्राम्य संस्कृतियाँ भी भारत में पुष्पित, पल्लवित हो रही थीं। उनके आधार पर कई विद्वानों ने हड़प्पा सभ्यता का संपर्क इन ग्राम्य संस्कृतियों से किया है। उदाहरण के लिए गंगा–यमुना के दो–आब क्षेत्र में ताम्र निधि संस्कृति (गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति) राजपुर, परसू, चिसौली, लालकिला,

Scanned by CamScanner

अतरंजीखेड़ा, बड़ागाँव, आमखेड़ी, बहरियाँ सेफई, नसीरपुर, हस्तिनापुर अहिच्छत्रा तथा ऋंगबेरपुर के उत्खननों में गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति प्राप्त हुई है। अधिकांश विद्वानों के अनुसार ताम्र निधि व गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति एक ही संस्कृति है। इस संस्कृति में ताँबे की दोधारी तलवार, कुल्हाड़ियाँ, श्रृंगिका, तलवारें, चूड़ियाँ, कांटेदार भाले, मानवाकृति, मत्स्य भाले, मत्स्य शल्क भाले, कड़े, छल्ले, दोधारी कुल्हाड़ियाँ, परशु, स्कंधित कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। ताम्र निधि सभ्यता का काल बी.बी. लाल महोदय 1100 ई.पू. चित्रित धूसर पात्र परंपरा का आरंभ मानते हैं। अभी तक गैरिक मृद्भाण्डों की कार्बन तिथियाँ उपलब्ध नहीं है। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला के हक्सटेबल ने उत्तरप्रदेश में स्थित गैरिक मृद्भाण्डों की ऊष्मादीप्ति तिथियाँ निर्धारित की हैं। जयपुर के जोधपुरा नामक पुरास्थल के गैरिक मृद्भाण्डों की दो तिथियाँ प्राप्त हुई हैं। पहली 2600 ई.पू. दूसरी 2200 ई.पू. इस आधार पर ताम्र निधि सभ्यता को स्टुअर्ट पिग्गट हड़प्पा सभ्यता से इसका संबंध जोड़ते हैं। कुछ पुराविद् ताम्रनिधियों के निर्माणकर्त्ता उत्तरकालीन (परवर्ती हड़प्पा संस्कृति) के लोगों को मानते है। इनमें यज्ञदत्त शर्मा, कृष्णदेव तथा विद्याधर मिश्र प्रभुति विद्वानों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, अगर उक्त विद्वानों के मतों को माना जाए, तो यह भी सिद्ध होता है, कि ताम्रनिधि सभ्यता, ताम्रपाषाण संस्कृति के समकालीन सभ्यता थी, इस संस्कृ ति में पाषाण उपकरणों का अभाव है, सिर्फ ताम्र उपकरण प्राप्त होते अतः संभव है, कि यह संस्कृतियाँ ताम्रपाषाण संस्कृति से अधिक विकसित रही होगी। अतः हम कह सकते हैं कि हड़प्पा सभ्यता को विकसित नगरीय सभ्यता, ताम्र–निधि सभ्यता और ताम्रपाषाणकालीन सभ्यताओं को उस काल की विकासशील सभ्यताएँ माना जा सकता है।

भगवानपुरा (हरियाणा) से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड और हड़प्पा मृद्भाण्डों में अतिव्याप्ति (सत्तत्व) (Over leping) स्पष्ट दिखाई देती है। चित्रित धूसर संस्कृति का काल अधिकांश विद्वान 1200 ई.पू. मानते हैं। उक्त आधार पर कहा जा सकता है, कि इस समय तक हड़प्पा संस्कृति भी विद्यमान थी, किन्तु वह अवनति की ओर जा रही थी। अतः हम कह सकते हैं। चित्रित धूसर मृद्भाण्डों से संबंधित लोग भी ताम्रपाषाण संस्कृतियों के समकालीन थे। एरण से भी चित्रित धूसर मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं, किन्तु इनका साम्य भगवानपुरा के मृद्भाण्डों से नहीं होता है। हड़प्पा सभ्यता, ताम्र–निधि सभ्यता, ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता में देखा जाए तो वही अंतर है। जो आज के महानगरों कस्बों व ग्रामों में है। कुछ विद्वान ग्राम्य सभ्यता को आदिवासियों, भीलों, शवरों की संस्कृतियाँ

Scanned by CamScanner

मानते हैं। तो वह आदिम (पिछड़ी) जातियाँ आज भी भारत के लगभग प्रत्येक प्रदेश में आवासित हैं, जो आज के युग के आधार पर काफी पिछड़ी हैं। आज भी वह ताम्रपाषाणकालीन जैसा जीवन व्यतीत कर रही है और धीरे–धीरे महानगरों, कस्बों के संपर्क में रहकर विकसित हो रही है। अतः स्पष्ट है, कि प्राचीन भारत में विद्यमान अलग–अलग संस्कृतियाँ, हड़प्पा सभ्यता के समकालीन पिछड़ी संस्कृतियाँ थीं तथा हड़प्पा जैसी संस्कृति के लोगों के सम्पर्क में रहकर धीरे–धीरे विकास कर रहीं थीं।

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ सूची

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ सूची

मूल स्त्रोत

अथर्ववेद (सं.) : आचार्य श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली

अष्टाध्यायी : चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

आदिपुराण : (अनु.) पं. पन्ना लाल, दिल्ली

ईश्वर संहिता : खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई

ऋग्वेद : वैदिक संशोधन मण्डल, पूना

छांदोग्य उपनिषद : आनंदाश्रम प्रेस, पूना

तैत्तिरीय ब्राह्मण : आनंदाश्रम प्रेस पूना

पद्म पुराण (सं.) : श्रीराम शर्मा, बेरली

बौधायन गृह्यसूत्र (सं.) : आर. रामशास्त्री, मैसूर

ब्रह्मपुराण : आनंदाश्रम प्रेस, पूना

भगवत गीता : गीता प्रेस, गोरखपुर

भागवत पुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर

महाभारत : गीता प्रेस, गोरखपुर

यजुर्वेद (सं.) : श्रीराम शर्मा, बरेली

लिंग पुराण : वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

वराह पुराण : वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

वामन पुराण (सं.) : श्रीराम शर्मा, बरेली

वाल्मीकि रामायण : गीता प्रेस, गोरखपुर

विष्णु पुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर

वायु पुराण : आनंदाश्रम, प्रेस पूना

शतपथ ब्राह्मण : अच्युत ग्रंथ माला, काशी

स्कन्द पुराण : वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

आधुनिक ग्रंथ

अली, रहमान. : युगयुगीन महिदपुर, प्रेस फोरम, महिदपुर, 1993

: चाल्कोलिथिक साइट ऑफ उज्जैन रीजन, महिदपुर एक्सकेवेशन्स रिपोर्ट , दिल्ली, 1971

अग्रवाल, पी. के. : टेम्पल आर्कीटेक्चर ऑफ गुप्ताज पीरियड, वाराणसी, 1968

अग्रवाल, वासुदेवशरण : भारतीय कला, वाराणसी, 1996

: प्राचीन भारतीय लोकधर्म, अहमदाबाद, 1964

अग्रवाल, डी.पी. : द कापर ब्रोन एज इन इण्डिया, नई दिल्ली, 1971

Scanned by CamScanner

	:	ईरा ए इन इण्डियन प्रोट्रो हिस्ट्री, 1979
	:	रेडियोकार्बन एण्ड इण्डियन आर्क्योलॉजी, बोम्बे, 1973
	:	ऐसेज इन द प्रोटोहिस्ट्री, नई दिल्ली, 1979
अंसारी, जेड.,डी. एवं	:	एक्सकेवेशन्स एट कायथा, पूना, 1975
अन्य	:	एक्सकेवेशंस एट संगनकल्लू, 1964–65
	:	एक्सकेवेशन्स ऑफ संगनकल्ली, डेकन कालेज, पूना 1964–65
उपाध्याय,भगवतशरण	:	भारतीय कला का इतिहास,नई दिल्ली,1981
	:	प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, वाराणसी, 1970
	:	प्राचीन भारतीय स्तूप,गुहा एवं मन्दिर,विहार हिन्दी अकादमी, पटना,1989
	:	भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका, दिल्ली पृ. 1965
उपाध्याय, वासुदेव	:	प्राचीन भारतीय अभिलेख, भाग प्रथम, पटना, 1970
उपाध्याय, रामजी	:	भारतीय धर्म और संस्कृति, इलाहाबाद, 1995
कनिंघम, अलेक्जेण्डर	:	ऐंशियेंट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया, लंदन, 1871
	:	आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, रिपोर्टस, 9, 10, 13
	:	रिपोर्ट ऑफ टूर इन मालवा एण्ड बुन्देलखण्ड,वाराणसी, 1966
काला, सतीशचन्द्र	:	टेरेकोटा फिंगटाइन्स फ्राम कौशाम्बी, इलाहाबाद, 1950
	:	भारतीय मृत्तिका कला, इलाहाबाद, 1972
कानूनो, सुभाष	:	उज्जियनी का सांस्कृतिक इतिहास,प्रयाग,1962
कुमार, स्वामी, ए.के.	:	हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट, लंदन, 1927
कौशाम्बी, डी.डी.	:	द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन आफ ऐंसीयेन्ट इंडिया इन हिस्टोरीकल आउट लाइन, लंदन, 1965
खरे, एम.डी.	:	विदिशा, भोपाल 1984
गार्डन, डी. एच.	:	प्रिहिस्टोरिक बैक ग्राउंड आफ इडियन कल्चर बम्बई,1958
	:	भारतीय संस्कृति की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1992,
गुप्त, परमेश्वरी लाल	:	गुप्त साम्राज्य, वाराणसी, 1970
	:	क्वायन्स, दिल्ली 1964
	:	भारतीय वास्तुकला,वाराणसी,1989
गुप्त, आर.एस.	:	आइकोन्स ऑफ हिन्दू, बुद्धिस्ट एण्ड जैन्स, बम्बई, 1972

Scanned by CamScanner

घोष, ए. : ऐन इन साइक्लोपिडिया ऑफ इण्डियन आर्क्योलॉजी, पटना, 1989

चक्रवर्ती,, एम.डी. एवं : दंगवाड़ा एक्सकेवेशन्स,आर्क्योलॉजी एण्ड म्यूजियम, भोपाल, 1989

चाकणकर, वी. एस. : हिन्दू पालिटी,कलकत्ता,1924

जायसवाल, काशीप्रसाद : एन एथनों आर्क्योलॉजीकल व्यू ऑफ इण्डियन टेराकोटाज, नई दिल्ली, 1986

जायसवाल, विदुला और कल्याण कृष्ण : मालवा थ्रू दि एजेज, नई दिल्ली

जैन, के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास, नई दिल्ली, 1996

: प्रोहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 1979

जैन, कमलापति : पुरातत्त्व का इतिहास भाग 1, सतना, 1971

झा, द्विजेन्द्र, नारायण, श्रीमाली, कृष्णमोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली 2002

झा, डी. एन. : प्राचीन भारत एक रूपरेखा, नई दिल्ली, 2000

थपल्याल, किरण कुमार और शुक्ल संकटाप्रसाद : सिन्धु सभ्यता, लखनऊ, 1985

थापर, बी. के. : रीसेन्ट आर्क्योलाजीकल डिसकवरीस इन इंडिया, यूनेस्को, टोक्यो, 1985

: ए. चाल्कोलिथिक साइट इन द ताप्ती बेली ऐंसीऐन्ट इंडिया, 1964–65

: ए चाल्कोलिथिक साइट ऑफ साउथरन डेकन, ऐंसीयेन्ट इण्डिया, 1957

थापर, रोमिला : भारत का इतिहास, नई दिल्ली, 1975

दास, रामकृष्ण : भारतीय मूर्तिकला, वाराणसी, 1954

दास, गुप्ता, चारूचन्द्र : ओरिजन एण्ड एव्येलुशन ऑफ इण्डियन क्ले स्कल्पचर, दिल्ली, 1969

दानी, ए. एच. : प्रिहिस्ट्री एंड प्रोटो हिस्ट्री ऑफ ईस्टर्न इण्डिया, 1960

द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1985

दिनकर, रामधारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय, नई दिल्ली, 1992,

दीक्षित, एम.जी. : इच्ड बीड्स इन इंडिया, पूना, 1949

: मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा, सागर, 1954,

Scanned by CamScanner

	:	त्रिपुरी, 1952
दुबे, जगदीश नारायण,	:	इतिहास विज्ञान, वाराणसी, 1988,
दुबे, नागेश	:	एरण की कला, सागर, 1997
दुबे, श्यामाचरण	:	समय और संस्कृति, नई दिल्ली, 1996,
दुबे, सत्यनारायण	:	भारत का इतिहास, इन्दौर, 2004
	:	भारतीय सभ्यता और संस्कृति, नई दिल्ली, 1996,
देसाई, कल्पना	:	आइकोनोग्राफी ऑफ विष्णु, दिल्ली, 1973
देव, एस.बी. तथा अंसारी, जेड. डी.	:	चाल्कोलिथिक चंदोली, पूना, 1965
नंदि, रमेन्द्रनाथ	:	प्राचीन भारत में धर्म के सामाजिक आधार, नई दिल्ली, 1998
निगम, एस.एस.	:	मालवा की हृदय स्थली, अवंतिका, उज्जैन, 1988
नेगी, सुरेन्द्र सिंह	:	महाभारत, समाज संस्कृति और दर्शन, गाजियाबाद 1997,
धवलीकर, एम.के.	:	मास्टर पीसेज ऑफ इण्डियन टेराकोटा, बम्बई, 1977
पटेल, राजाराम	:	एरकर्णिका की गोद में, खुरई, 1978
पारोचे, शिवकुमार	:	मध्यकालीनयुग में सागर जिले में जैन धर्म, सागर, 2001
पाण्डेय, विमलचन्द्र	:	प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास भाग–1 व 2, इलाहाबाद, 1998
पाण्डेय, जय नारायण	:	भारतीय कला एवं पुरातत्त्व, 1992
	:	पुरातत्त्व विमर्श, इलाहाबाद, 2002
पाण्डेय, राकेश प्रकाश	:	भारतीय पुरातत्त्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,1996
पाण्डेय,एस.के.	:	एक्सकेवेशन्स एट नान्दूर, भोपाल, 2004
पाण्डेय, ओमप्रकाश तथा निगम, श्याम सुन्दर	:	वैदिक इतिहास एवं पुरातत्त्व की अद्यतन प्रवृत्तियां, दिल्ली, 2003
पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र	:	इतिहास स्वरूप और सिद्धान्त, जयपुर, 1997
फॉरवेस, आर. टी.	:	स्टडीज इन ऐंशियेन्ट टैक्नोलाजी लीडन, 1964
बनर्जी, जितेन्द्र नाथ	:	दि डेवलपेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, कलकत्ता,1956, पृ. 42
बनर्जी, एन.आर.	:	नागदा एक्सकेवेशन्स, रिपोर्ट, नई दिल्ली, 1986
	:	दि आयरन एज इन इंडिया, दिल्ली 1964
बाशम, ए.एल.	:	अदभुत भारत, आगरा, 1967
ब्राउन, पार्सी	:	इण्डियन आर्किटेकचर (बुद्धिस्ट एण्ड हिन्दू पीरियड) भाग 1, बम्बई, 1965

Scanned by CamScanner

ब्रजेट, एण्ड आल्चिन,रेमण्ड : दि राइज ऑफ सिविलाइजेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, नई दिल्ली, 1982

बोस, हीरेन्द्र नाथ : मृत्तिका उद्योग, प्रकाशन शाखा सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश, 1958

ब्यौहार, राजेन्द्र सिंह : त्रिपुरी का इतिहास, जबलपुर, 1939,

भण्डारकर, आर.जी. : वैष्णविज्म, शैविज्म एण्ड अदर माइनर रिलिजियस सिस्टम, पूना, 1928

भण्डारी, एस.एस. : हिस्ट्री ऑफ मालवा, खण्ड प्रथम, मालवा प्रकाशन, अजमेर

भट्टाचार्य, बी.के. : भारतीय प्रागैइतिहास की रूपरेखा, दिल्ली, 1999

मनचन्दा, ओ.मी. : ए स्टडी ऑफ हड़प्पन पॉटरी, दिल्ली, 1972

महेशचन्द्र,जोशी : युगयुगीन कला,जोधपुर,1995

मजूमदार, रमेशचन्द्र : प्राचीन भारत में संगठित जीवन, सागर, 1966

मालवीय, बद्रीनाथ : विष्णु धर्मोत्तर में मूर्तिकला, प्रयाग, 1960

मार्शल, सर जान : मोहनजोदड़ो एण्ड इण्डस सिविलाइजेशन भाग 1,2,3 लंदन, 1931

मिश्र, इन्दुमति, : प्रतिमा विज्ञान, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ, अकादमी, भोपाल, 2000

मिश्र, रमानाथ : भारतीय मूर्तिकला, दिल्ली, 1978

मिश्र, द्वारका प्रसाद : भारतीय आद्यैतिहास का अध्ययन, 1932 (अनु., वाजपेयी, के.डी.)

मिश्र, जनार्दन : भारतीय प्रतीक विद्या, 1958

मिश्रा, देवला : साँची, दिल्ली, 1965

मिश्र,भास्करनाथ : साँची, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ, अकादमी, भोपाल,1982

मिश्र,रतन लाल : स्मारकों का इतिहास एवं स्थापत्य कला,जयपुर,1999

मिश्र, बी.एन. : प्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इण्डिया, बेसीन, 1967

मिश्र, सुधाकर नाथ : पुरातत्त्व तकनीक, जबलपुर, 2003

मिश्र, सुधाकर नाथ व मिश्र, नीरजा : प्रायोगिक पुरातत्त्व जबलपुर, 2003

मुखर्जी,, राधाकुमुद : हिन्दू सभ्यता, 1955

मूर्ति, शिवराम : इण्डियन स्कल्पचर, दिल्ली, 1961

मूर्ति, शिवराम : आर्ट ऑफ इण्डिया, न्यूयार्क; 1977

मुखर्जी,, राधाकमल : भारतीय संस्कृति एंव कला, दिल्ली, 1959

मैके, ई.जे.एच. : चहुंदड़ो एक्सकेवेशन्स, न्यू हेवेन, 1943

Scanned by CamScanner

रजा, आर : दी आहाड़ कल्चर एण्ड वियोण्ड, 1988

राय, चौधरी, हेमचन्द्र : पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐंशियेंट इण्डिया कलकत्ता, 1931

राव, टी.ए. गोपीनाथ : ऐलिमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी खण्ड 2 ब 4, दिल्ली, 1985

राघवन, पी : सागर विरासत और विकास, दिल्ली, 1992

राय, चौधरी, हेमचन्द्र : प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, इलाहाबाद, 1971,

राय, गोविन्द्रचन्द्र : प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन, वाराणसी, 1960

राय, निहार रंजन : भारतीय कला का अध्ययन, दिल्ली, 1972

राव, एस.आर. : लोथल एण्ड द इण्डस सिविलाइजेशन, बोम्बे, 1973

: एक्सकेवेशन्स एट रंगपुर, 1962, 63

रिचर्ड, एफ.एस स्टाटर : इण्डस वेली पेन्टेड पॉटरी (ए काम्परिटिव स्टडी ऑफ द डिजाइनस ऑन द पेन्टैड वेयर ऑफ द हडप्पन कल्चर) लंदन, 1941

रोलेट, बेजामिन : आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ इण्डिया, लंदन, 1953

लाल, बी.बी. : इण्डियन आर्क्योलॉजी सिन्स इन्डीपेन्डेन्स, दिल्ली, 1966

: एक्सकेवेशन्स एट कालीबंगन, 1967

लुनिया, बी.एन. : प्राचीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1990

वाजपेयी, कृष्णदत्त : सागर थ्रू द एजेज, दिल्ली, 1967

: मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व, भोपाल, 1970

: भारतीय कला, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,1997

: इण्डियन न्यूमिसमेटिक स्टडीज]दिल्ली, 1973

: कल्चरल हिस्ट्री ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया, कानपुर, 1985

: प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 1972

: भारतीय वास्तुकला, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ, अकादमी, भोपाल, 1972

: मल्हार, सागर, 1978

: भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, इलाहाबाद, 1967

: प्राचीन भारत का इतिहास कलकत्ता, आदर्श प्रकाशन, 1963,

: प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध, कमल प्रकाशन, इन्दौर,1973

वाजपेयी, कृष्णदत्त व अन्य : ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख,जयपुर, 1992

वाजपेयी, संतोष कुमार : गुप्तकालीन मूर्तिकला का सौंदर्यात्मक अध्ययन,

Scanned by CamScanner

		दिल्ली, 1972
	:	ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, दिल्ली, 1997
वाचपति, गैरोला	:	भारतीय संस्कृति और कला,उ.प्र हिन्दी संस्थान,लखनऊ,1985
वाकणकर, वी.एस.	:	कायथा एक्सकेवेशन रिपोर्ट, 1967
	:	मालवा का इतिहास, श्री मुरलीधर अभिनन्दन ग्रंथ उज्जैन, 1977
वत्स, माधोस्वरूप	:	एक्सकेवेशंस एट हड़प्पा, दिल्ली, 1940
	:	एक्सकेवशन एट हड़प्पा, खण्ड 5, दिल्ली, 1941
व्हीलर, मार्टीमर	:	पृथ्वी से पुरातत्त्व, 1968 (अनुवाद : हरिहर त्रिवेदी)
	:	सिविलाइजेशन आफ दि इंडस वेली एंड विओंड, 1966
	:	दि इंडस सिविलिाइजेशन, कैम्ब्रिज, 1968
शर्मा, राजकुमार	:	म.प्र. के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रंथ, भोपाल, 1971
शर्मा, राम शरण	:	आर्य संस्कृति की खोज, नई दिल्ली, 1995
	:	प्राचीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1996
	:	शूद्रों का प्राचीन इतिहास, दिल्ली, 1992,
	:	प्रारंम्भिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, नई दिल्ली, 1996,
	:	प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति और सामाजिक संरचाएँ, नई दिल्ली, 2001,
	:	मध्य गंगा क्षेत्र में राज्य की संरचना, नई दिल्ली, 1998,
शर्मा, विजयेन्द्र	:	प्राचीन भारत में जनमत, दिल्ली, 1991,
शर्मा, जी.आर व बी.बी. मिश्रा	:	एक्सकेवेशन्स एट चोपानी मांडो, इलाहाबाद, 1980
शर्मा. एल. पी.	:	प्राचीन भारत, आगरा, 1985,
शर्मा, रामविलास	:	पश्चिम एशिया और ऋग्वेद, नई दिल्ली, 1996,
शर्मा, आर. के. व मिश्रा, ओ. पी.	:	आर्क्योलॉजिकल एक्सकेवेशन्स इन मध्यप्रदेश, राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय, भोपाल, 2001,
	:	आर्क्योलॉजी एक्सकेवेशन इन सेन्ट्रल इण्डिया, दिल्ली 2003
शर्मा, ए. एन.	:	भारतीय मानव विज्ञान, इलाहाबाद, 1999
शास्त्री, अजयमित्र	:	त्रिपुरी, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
सांकलिया, एच.डी.	:	प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान,

Scanned by CamScanner

बाम्बे, 1952

: त्रिपुरी एक्केवेशन्स शार्ट रिपोर्ट एण्ड एग्जिविशन, पूना, 1974

: चाल्कोलिथिक, नावदाटोली, पुणे (1957, 59)

: एक्सकेवेशन्स एट आहाड़ (ताँबवती) देकन कालेज, पुणे, 1966

: इन्वेस्टीगेशन्स इन प्रीहिस्ट्रोरिक आर्क्योलॉजी इन गुजरात, बम्बई, 1941

: भारत में प्रागैतिहासिक प्रौद्योगिकी, नई दिल्ली, 1991

सम्पूर्णानन्द : हिन्दू देव परिवार का विकास, इलाहाबाद, 1964

सिंह, शांति देवी : उत्तर भारत की संस्कृति, वाराणसी, 1981

सिह, कृष्णकुमार : उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, दिल्ली, 2001

सिंह, भगवान : हडप्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य, दिल्ली, 1990,

: गुप्तकालीन हिन्दु देव प्रतिमाएँ, नई दिल्ली, 1982

सिन्हा, विन्धेश्वरी प्रसाद : आर्क्योलॉजी एण्ड आर्ट ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 1979

सिन्हा, बी.पी. : पॉटरीज इन ऐन्सियेन्ट इण्डिया, पटना, 1969

सुन्दर, ए : चाल्कोलिथिक फेश आफ द अपर कृष्णा वेली इन स्टीटीज इन इंडिया हिस्ट्री एण्ड कल्चर, धारवाड़

सोमपुरा, प्रभाशंकर : भारतीय शिल्प संहिता, नई दिल्ली, 1975

हीरा,मानिक,व अन्य : मास्टर पीसेस ऑफ ऐंश्येंट इण्डियन स्कल्पचर, यूनाइटेड, स्टेट, 1979

त्रिपाठी, रामनरेश : प्राचीन भारतीय आर्थिक विचार, इलाहाबाद, 1981

त्रिपाठी, रमाशंकर : प्राचीन भारत का इतिहास, 1971

श्रीवास्तव, बलराम : प्रतिमा विज्ञान, भोपाल 1902

श्रीवास्तव, कृष्णदत्त : प्राचीन भारत का इतिहास, इलाहाबाद, 1990

श्रीवास्तव, ब्रजभूषण : टेक्नीक एण्ड आर्ट ऑफ गुप्ता टेराकोटा, वाराणसी, 1976

: प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी, 1990

शोध प्रबंध

हेज, के. के. : टेक्निकल स्टडीज इन चैल्कोलिथिक पीरियड कापर मैटलर्जी, (पी.एच.डी. थीसिस) एम.एस. बड़ौदा, 1965

सिंह, उदयवीर : प्रोटोहिस्टारिक पॉटरी ऑफ ईस्टर्न मालवा, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1966

Scanned by CamScanner

राव, एस., नागराज : चाल्कोलिथिक कल्चर्स ऑफ डेकन विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टू नार्थ कर्नाटका, पूना,1966

द्विवेदी, चन्द्रलेखा : एरण का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर 1974,

वाजपेयी, सुरेशचन्द्र : सागर जिले का प्राचीन वास्तु एवं मूर्तिकला का अध्ययन, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1978

पाण्डे, प्रभाशंकर : उत्तर भारतीय प्राचीनकाल में प्रतीकों का विवेचन, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1981

जैन,रजनीस : मध्यप्रदेश का राजनैतिक इतिहास, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.),1994

मिश्रा, मनीष : सागर जिले का सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.),1995

दुबे,नागेश : एरण की कला, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), 1995

प्रफुल्ल, हल्वे : एरण उत्खनन में प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन, (प्रारम्भ से लेकर गुप्तकाल तक) डॉ, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 2006

लघु शोध प्रबन्ध

झा, विवेकदत्त : एरण उत्खनन से ज्ञात द्वितीय काल का अध्ययन , सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1965

दुबे, वर्षा : हरीसिंह गौर संग्रहालय में संग्रहीत मूर्तियों का अध्ययन, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1976

राव, व्ही., नरेन्द्र : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोट्रोहिस्ट्री ऑफ आन्ध्रप्रदेश, विक्रम वि.वि. उज्जैन, 1976–77

रमन,वेंकट, पी : चाल्कोलिथिक कल्चर ऑफ साउथ इण्डिया, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, 1978

शुक्ला, रूपनारायण : एरण उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, सागर, विश्वविद्यालय, सागर 1980

दीक्षित, वीरेन्द्र कुमार : दशार्ण जनपद का आद्यैतिहास सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1981

दुबे, शैली : एरण के कलावशेष, सागर विश्वविद्यालय, सागर,1983

Scanned by CamScanner

मधुसूदन, व्ही., : प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ कर्नाटक, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.

गुप्ता, के. : उज्जैन जिले के ताम्राश्मयुगीन स्थल, विक्रम वि.वि., उज्जैन, 1994.

श्रोत्रिय,आलोक : महेश्वर–नावदाटोली पुरातत्त्व के क्रियात्मक प्रशिक्षिण का प्रतिवेदन, विक्रम वि.वि., उज्जैन, 1995

मालवीय, श्याम लाल : महिदपुर एवं कायथा संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन (मृद्माण्डों के आधार पर) विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, 2000–2001

गुप्ता, रोहित : एरण उत्खनन एवं सर्वेक्षण से ज्ञात मुद्राशास्त्रीय अवशेषों का अध्ययन, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.), 2003–2004

शोध एवं लेख

सिंह, उदयवीर : **''एरण ए चाल्कोलिथिक सेटलमेंट''** बुलेटिन ऑफ ऐंशियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी,यूनिवर्सिटी ऑफ सागर, अंक–i 1967

: **''एक्सकेवेशन्स एट एरण''** जर्नल ऑफ म.प्र. इतिहास परिषद अंक, 4

वाकणकर, वी.एस. : **''कायथा उत्खनन रिपोर्ट''** दि विक्रम जर्नल ऑफ विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन, 1967

वाजयेपी, के.डी. : **''न्यू लाईट ऑफ दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ एरण''** जर्नल ऑफ यू.पी.एच.एस, खण्ड 8, भाग 2

शर्मा, आर.के. : **''द चाल्कोलिथिक सेटलमेंट इन मध्यप्रदेश''** बुलेटिन ऑफ ऐशियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्क्योलॉजी,यूनिवर्सिटी ऑफ सागर, अंक–ii 1968

झा. विवेकदत्त : **''सागर अंचल का कला वैभव''**, मध्यप्रदेश संदेश, अप्रैल, 1989

: **''रीसेन्ट एक्सकेवेशन्स एट एरण''** आर्क्योलॉजीकल स्टडीज, बनारस, 1986

: **''पिक्यूलियर टेरीकोटा फिंग राइन्स फ्राम चाल्कोलिथिक एरण''** प्राच्य प्रतिभा, अंक–9, 1981–82

अली, रहमान एवं अशोक त्रिवेदी : **''चाल्कोलिथिक महिदपुर''** प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, कलकत्ता, 1990

Scanned by CamScanner

पाण्डेय, ललित एवं खरकवाल जीवन सिंह : **"बालाथल उत्खनन प्रारंभिक रिपोर्ट",** शोध पत्रिका साहित्य संस्थान, राजस्थान, विद्यापीठ उदयपुर, अंक 1,1994,

दुबे, नागेश : **'एरण की ताम्रपाषाणयुगीन मृद्भाण्ड़ चित्रण कला'** 'एरण की मुद्राओं पर अंकित कला पक्ष' शोध समवेत अंक–ix, 2001, पृ.44–48

: **"एरण की मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ"** मध्यभारती अंक 41,शोध पत्रिका, डॉ. हरी सिह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1996, पृ. 66–71

: **"बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम् सांस्कृतिक एंव राजनीतिक केन्द्र एरण का प्राक् एवं आद्य इतिहास",** रचना,पत्रिका,अंक–54, 2005

श्रोत्रिय, आलोक : **'ताम्रपाषाणयुगीन बालाथल'** एक विवेचन शोध" समवेत, अंक–3, जुलाई–सितम्बर, 1996

: **'मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणयुगीन स्थल'** मालवाचंल में कूर्मांचल" कावेरी रिसर्च शोध संस्थान, उज्जैन, 2001,

सोलंकी, धीरेन्द्र : **"ताम्राश्मीय संस्कृति के संदर्भ में निष्क का वैदिक आधार",**(पाण्डेय, ओमप्रकाश तथा निगम, श्यामसुन्दर, वैदिक इतिहास एवं पुरातत्त्व की अद्यतन प्रवृत्तियाँ, दिल्ली, 2003

शुक्ल, के.एस. : **"सिन्धु लिपि का अनुशीलन",** कला वैभव, संयुक्ताक, 13–14, इंदिरा कला संगीत वि.वि. खैरागढ़ (छ.ग.) 2003–04

चढ़ार, मोहन लाल : **"सती प्लर्स आफ एरण"** शोध समवेत श्री कावेरी शोध संस्थान उज्जैन, म.प्र. अंक–XIV 2005–2006, पृ. 11–16

प्रतिवेदन तथा शोध पत्रिकाएँ

ऑर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एन्युअल रिपोर्ट , नई दिल्ली

इण्डियन ऑक्योलॉजी : ए रिव्यू (सं. महानिदेशक पुरातत्त्व विभाग, नई दिल्ली)

इण्डियन एन्टीक्वेरी, बम्बई,

कार्पस इन्सक्रप्सन, इण्डीकेरम

ईसुरी, जर्नल ऑफ बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

एरण एण्टिक्विटीज, सागर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

बुलेटिन ऑफ ऐंसियेंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्योलॉजी, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
जर्नल ऑफ मध्यप्रदेश इतिहास, परिषद, भोपाल (म.प्र.)
जर्नल ऑफ न्यूमिसमेटिक सोसायटी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली
जर्नल ऑफ दि बंगाल : ऐशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता
जर्नल ऑफ दि आन्ध्र हिस्टारिक रिसर्च सोसायटी हैदराबाद, (आन्ध्रप्रदेश)
जर्नल ऑफ दि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उ.प्र.)
जर्नल ऑफ दि गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद, (उ.प्र.)
जर्नल ऑफ दि रायल ऐशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड
जर्नल ऑफ दि बाम्बे कलकत्ता ब्राँच ऑफ रायल एशियाटिक सोसल सोसायटी बम्बई, कलकत्ता
जर्नल ऑफ दि ओरियन्टल रिसर्च बड़ौदा, (गुजरात)
जर्नल ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, पेरिस, (फ्रांस)
जर्नल ऑफ इंडिया सोसायटी फार प्रिहिस्टोरिक एण्ड क्वाटर्नरी स्टडीज, अहमदाबाद
मध्यभारती जर्नल ऑफ आर्टस्, सोशल साइन्स और वाणिज्य, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (
मध्यप्रदेश संदेश, पुरातत्त्व विशेषांक, भोपाल, (म.प्र.)
शोध समवेत, कावेरी रिसर्च शोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.)
पुरातत्त्व, इण्डियन आर्क्योलॉजी सोसायटी, नई दिल्ली
प्राच्य प्रतिभा : जर्नल ऑफ आर्ट्स हिस्ट्री एण्ड कल्चर प्राच्य निकेतन, प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)
रचना (द्विमासिक पत्रिका) संस्कृति विभाग एवं म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, (म.प्र.)
प्राची ज्योति : जर्नल ऑफ कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा
कला सरोवर : खंड 1, 1978, वाराणसी, (उ.प्र.)
इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टली
जवारा (बुन्देली मेला,सागर के संदर्भ) भोपाल (म.प्र.)
संस्कृति, जर्नल ऑफ संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
दैनिक समाचार पत्र राज एक्सप्रेस, भोपाल (म.प्र.)
दैनिक समाचार पत्र दैनिक भास्कर, भोपाल (म.प्र.)
साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
इण्डियन हिस्ट्री, कांग्रेस, प्रोसीडिंग रिपोर्ट,
जिला सागर गजेटियर,भोपाल, (म.प्र.) 1970

Scanned by CamScanner

मानचित्र तथा चित्र सूची

Scanned by CamScanner

मानचित्र तथा चित्र सूची

मानचित्र संख्या (i) एरण पुरास्थल का सामान्य दृश्य
मानचित्र संख्या (ii) भारत में एरण की स्थिति
मानचित्र संख्या (iii) सागर जिले में एरण की स्थिति
चित्र संख्या (1) बीना नदी का ग्राम के पूर्वी भाग का चित्र
चित्र संख्या (2) बीना नदी का ग्राम के पश्चिमी भाग का चित्र
चित्र संख्या (3) एरण के गुप्तकालीन मन्दिर का सामान्य दृश्य
चित्र संख्या (4) वराह प्रतिमा का सामान्य दृश्य
चित्र संख्याा (5) महाविष्णु प्रतिमा का सामान्य दृश्य
चित्र संख्या (6) ताम्रपाषाणकालीन रक्षा–प्राचीर व खाई का चित्र
चित्र संख्या (7) ताम्रपाषाणकालीन कायथा मृद्भाण्ड का चित्र
चित्र संख्या (8) ताम्रपाषाणकालीन सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (9) ताम्रपाषाणकालीन सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (10) ताम्रपाषाणकालीन काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (11) ताम्रपाषाणकालीन काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (12) ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (13) ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (14) ताम्रपाषाणकालीन मोटे तथा भद्दे मृद्भाण्ड(कोर्स रेड वेयर)
चित्र संख्या (15) ताम्रपाषाणकालीन चाकलेटी लेपयुक्त मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (16) ताम्रपाषाणकालीन मोटा,भद्दा व रेतीला अलंकृत मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (17) ताम्रपाषाणकालीन पतला सुगढ़ तथा कम रेतीला मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (18) ताम्रपाषाणकालीन श्रेष्ठ लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (19) ताम्रपाषाणकालीन मोटे लाल रंग के मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (20) ताम्रपाषाणकालीन काले और लाल मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (21) ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (22) ताम्रपाषाणकालीन भूरे रंग के मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (23) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर किये गये चित्रांकन
चित्र संख्या (24) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर उत्खचित चित्रण अभिप्राय
चित्र संख्या (25) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर उत्खचित चित्रण अभिप्राय

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या (26) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों की चित्रित टोंटियाँ
चित्र संख्या (27) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों की टोंटियाँ
चित्र संख्या (28) ताम्रपाषाणकालीन टोंटीदार मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (29) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड व साधार तस्तरी
चित्र संख्या (30) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (31) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड व धूसर रंग का कटोरा
चित्र संख्या (32) ताम्रपाषाणकालीन धूसर रंग का कटोरा
चित्र संख्या (33) ताम्रपाषाणकालीन बच्चों के खेलने में प्रयुक्त होने वाले छोटे मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (34) ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (35) ताम्रपाषाणकालीन कटोरे, थाली, लोटे
चित्र संख्या (36) ताम्रपाषाणकालीन कटोरे व लोटा
चित्र संख्या (37) ताम्रपाषाणकालीन खदान में प्राप्त मृद्भाण्ड
चित्र संख्या (38) ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों के टुकड़ों पर उत्खचित ग्रेफिटी
चित्र संख्या (39) ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी
चित्र संख्या (40) ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी
चित्र संख्या (41) ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी
चित्र संख्या (42) ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी
चित्र संख्या (43) ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी
चित्र संख्या (44) ताम्रपाषाणकालीन मानव मृण्मूर्तियाँ
चित्र संख्या (45) ताम्रपाषाणकालीन निरूढ वृषभ
चित्र संख्या (46) ताम्रपाषाणकालीन ककुदमान वृषभ
चित्र संख्या (47) ताम्रपाषाणकालीन ककुदमान वृषभ
चित्र संख्या (48) ताम्रपाषाणकालीन हरिण मृण्मूर्तियाँ
चित्र संख्या (49) ताम्रपाषाणकालीन पशु मृण्मूर्तियाँ
चित्र संख्या (50) ताम्रपाषाणकालीन पक्षी मृण्मूर्तियाँ
चित्र संख्या (51) ताम्रपाषाणकालीन पक्षी मृण्मूर्तियाँ
चित्र संख्या (52) ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–कुठार
चित्र संख्या (53) ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ
चित्र संख्या (54) ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ
चित्र संख्या (55) ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या (56) ताम्रपाषाणकालीन ताम्र अंजन–शलाकाएँ
चित्र संख्या (57) ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण–पत्तर
चित्र संख्या (58) ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण अंगूठी
चित्र संख्या (59) ताम्रपाषाणकालीन स्तर से प्राप्त नवपाषाणकालीन कुल्हाडी
चित्र संख्या (60) ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण
चित्र संख्या (61) ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण
चित्र संख्या (62) ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण
चित्र संख्या (63) ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण
चित्र संख्या (64) ताम्रपाषाणकालीन सिल व गदाशीर्ष
चित्र संख्या (65) ताम्रपाषाणकालीन सिलबट्टा व गोलियाँ
चित्र संख्या (66) ताम्रपाषाणकालीन शिकार में प्रयुक्त होने वाली गोलियाँ
चित्र संख्या (67) ताम्रपाषाणकालीन शिकार में प्रयुक्त होने वाली गोलियाँ
चित्र संख्या (68) ताम्रपाषाणकालीन मनके व छोटी गोलियां बनाने वाला उपकरण
चित्र संख्या (69) ताम्रपाषाणकालीन गोफन में प्रयुक्त होने वाली गोलियां
चित्र संख्या (70) ताम्रपाषाणकालीन तौल–बाँट
चित्र संख्या (71) ताम्रपाषाणकालीन तौल–बाँट
चित्र संख्या (72) ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी की विविध वस्तुएँ
चित्र संख्या (73) ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी की विविध वस्तुएँ
चित्र संख्या (74) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी के खिलौना गाड़ी के पहिया
चित्र संख्या (75) ताम्रपाषाणकालीन खिलौना गाड़ी का पहिया
चित्र संख्या (76) ताम्रपाषाणकालीन कान में पहनने के आभूषण
चित्र संख्या (77) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी की चूडियाँ
चित्र संख्या (78) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा अग्रभाग
चित्र संख्या (79) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा पृष्ठभाग
चित्र संख्या (80) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौकोर पाँसा अग्रभाग
चित्र संख्या (81) ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौकोर पाँसा पृष्ठभाग
चित्र संख्या (82) ताम्रपाषाणकालीन शतरंज के मोहरें
चित्र संख्या (83) ताम्रपाषाणकालीन शतरंज के मोहरें
चित्र संख्या (84) ताम्रपाषाणकालीन बच्चों के खेलने वाली छिद्रयुक्त गोलियाँ
चित्र संख्या (85) ताम्रपाषाणकालीन त्वचा–मर्दक

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या (86) ताम्रपाषाणकालीन ईंट
चित्र संख्या (87) ताम्रपाषाणकालीन अग्रास्त्र हड्डी के बाणफलक
चित्र संख्या (88) ताम्रपाषाणकालीन अस्थि बाणफलक
चित्र संख्या (89) ताम्रपाषाणकालीन हाथी–दांत की चूड़ी व लटकन
चित्र संख्या (90) ताम्रपाषाणकालीन शंख हाथी–दांत की चूडियों के टुकड़े
चित्र संख्या (91) ताम्रपाषाणकालीन शंख हाथी–दांत की चूडियों के टुकड़े
चित्र संख्या (92) ताम्रपाषाणकालीन हाथी–दांत का चौपड का पाँसा
चित्र संख्या (93) ताम्रपाषाणकालीन श्रृंगारदानी व मनका
चित्र संख्या (94) ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके
चित्र संख्या (95) ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके
चित्र संख्या (96) ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके
चित्र संख्या (97) ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके
चित्र संख्या (98) ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके
चित्र संख्या (99) ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी के मनके
चित्र संख्या (100) ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी के मनके
चित्र संख्या (101) ताम्रपाषाणकालीन स्तम्भगर्त
चित्र संख्या (102) ताम्रपाषाणकालीन ईंटे (उत्खनन में प्राप्त)
चित्र संख्या (103) ताम्रपाषाणकालीन फर्श
चित्र संख्या (104) ताम्रपाषाणकालीन अग्निकुण्ड
चित्र संख्या (105) ताम्रपाषाणकालीन जुड़वा चुल्हे
चित्र संख्या (106) ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण पत्तर
चित्र संख्या (107) ताम्रपाषाणकालीन जले अनाज के दानें
चित्र संख्या (108) नवपाषाणकालीन घोड़े को दफनाने के साक्ष्य
चित्र संख्या (109) नवपाषाणकालीन घोडे को दफनाने के साक्ष्य
चित्र संख्या (110) एरण उत्खनन का सामान्य दृश्य

Scanned by CamScanner

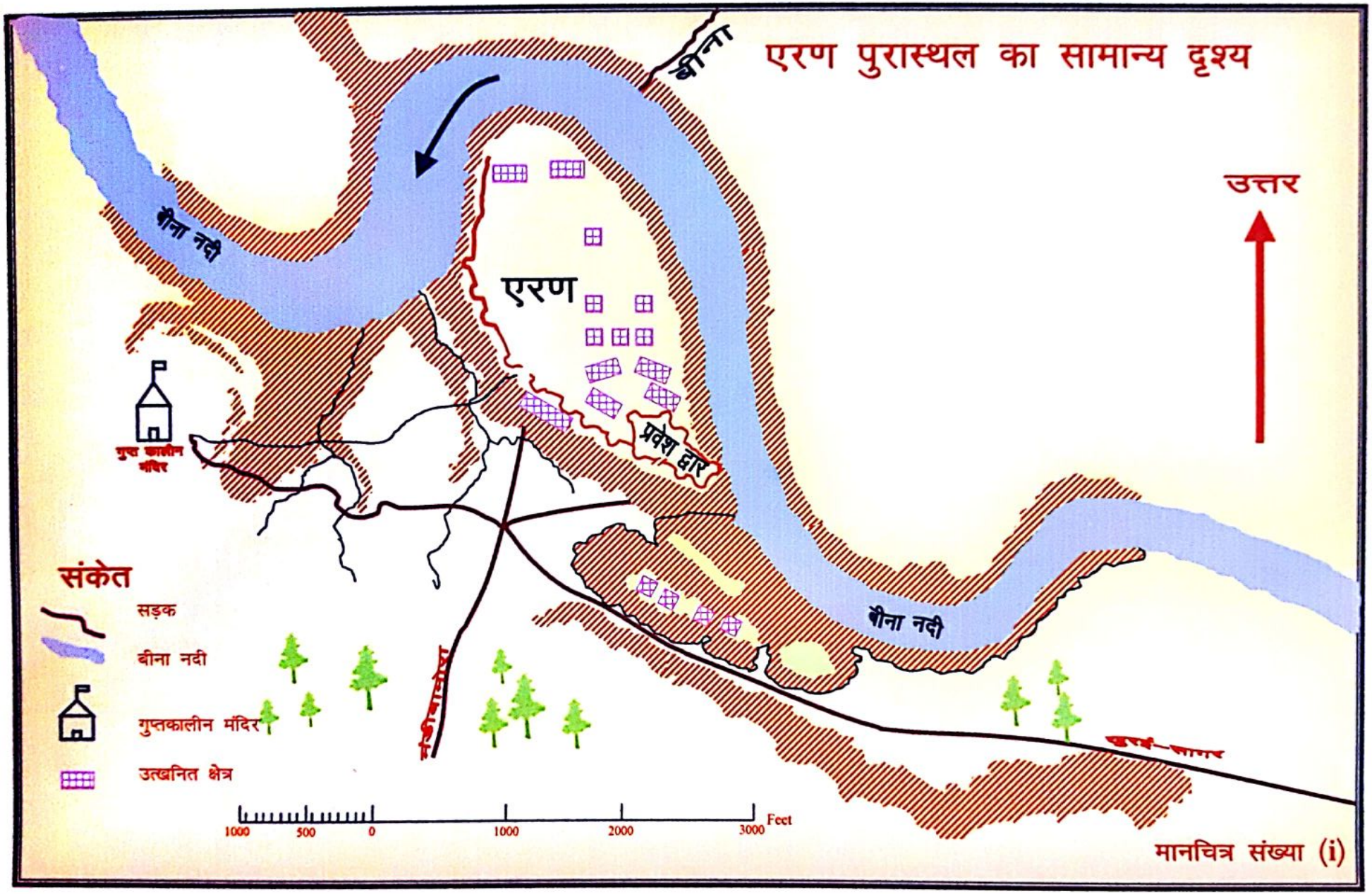

Scanned by CamScanner

भारत में एरण की स्थिति

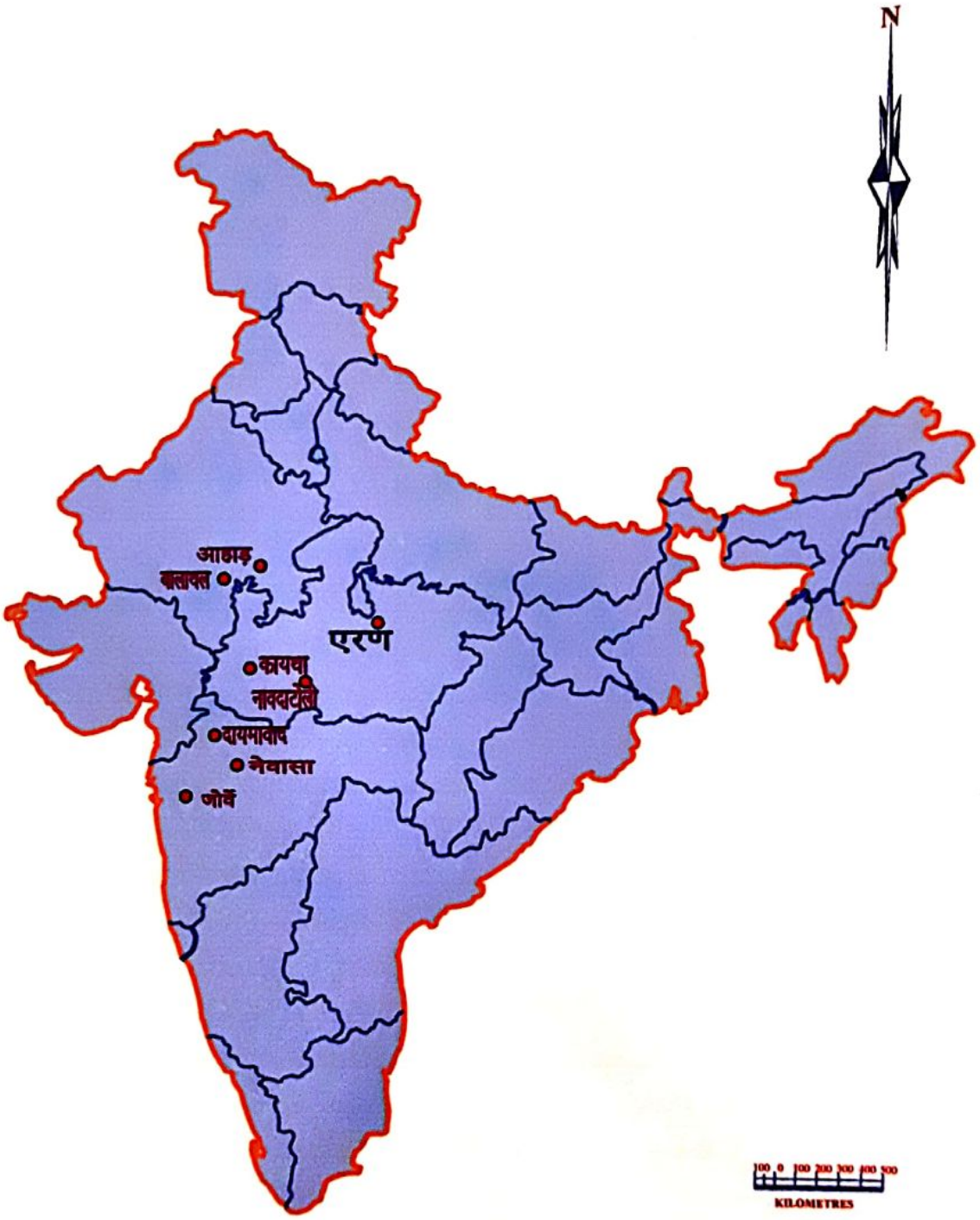

मानचित्र संख्या (ii)

Scanned by CamScanner

सागर जिले में एरण की स्थिति

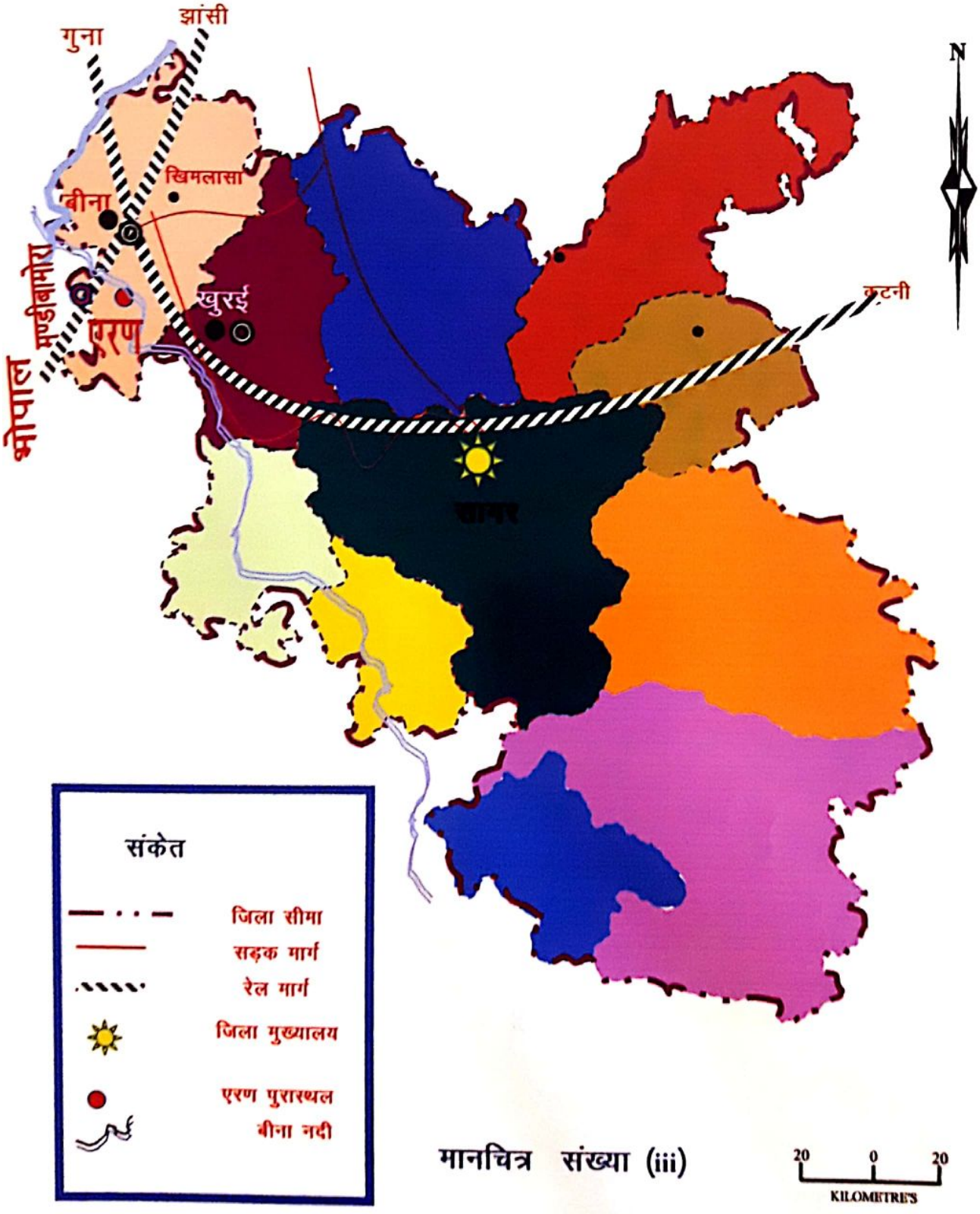

मानचित्र संख्या (iii)

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–1 : बीना नदी का ग्राम के पूर्वी भाग का चित्र

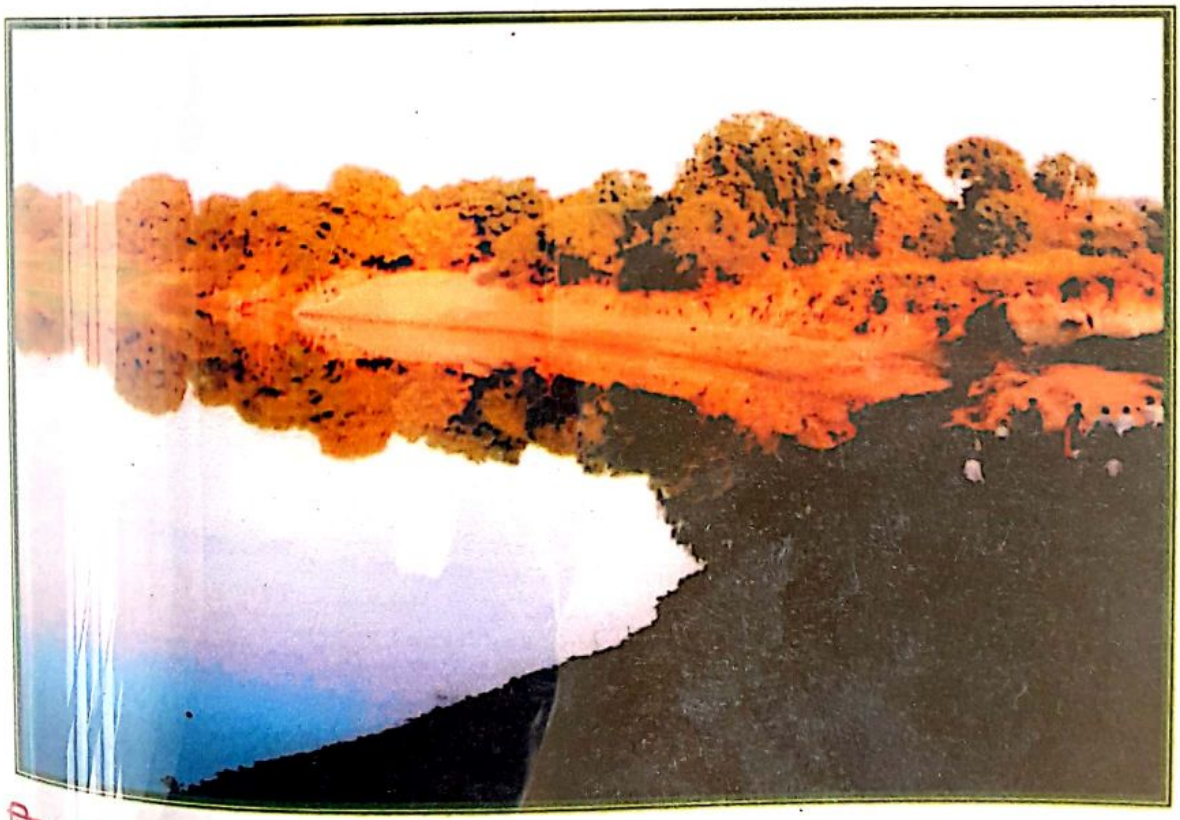

चित्र संख्या–2 : बीना नदी का ग्राम के पश्चिमी भाग का चित्र

Scanned by CamScanner

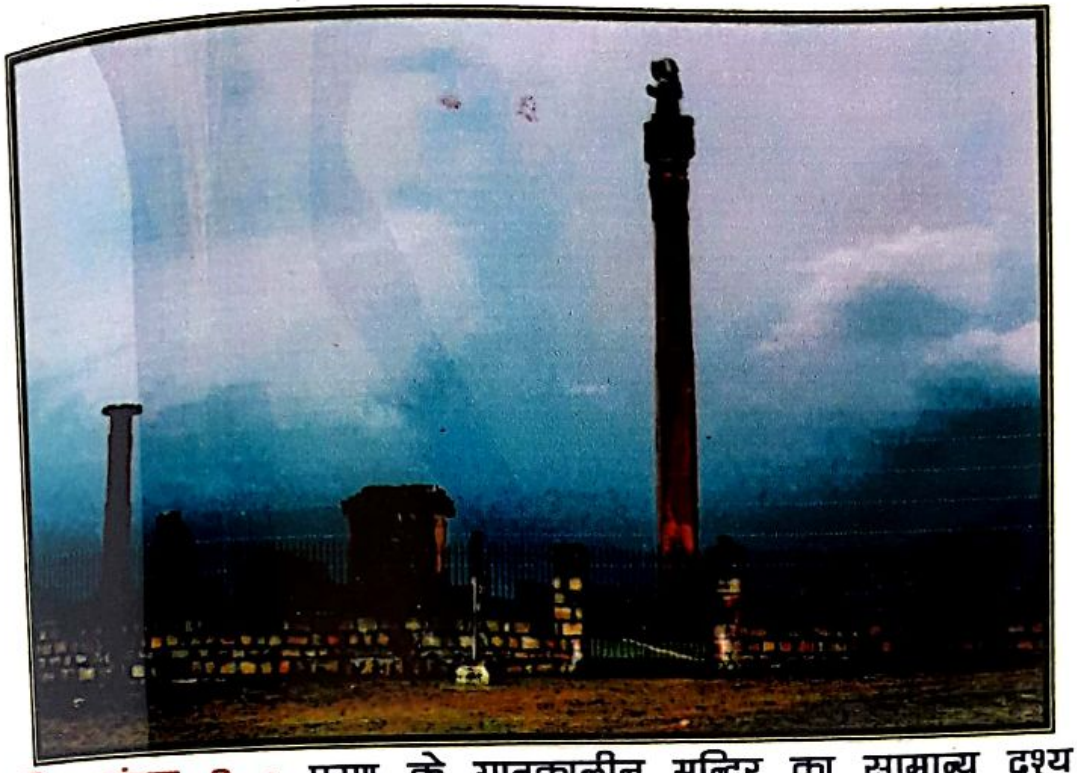

चित्र संख्या–3 : एरण के गुप्तकालीन मन्दिर का सामान्य दृश्य

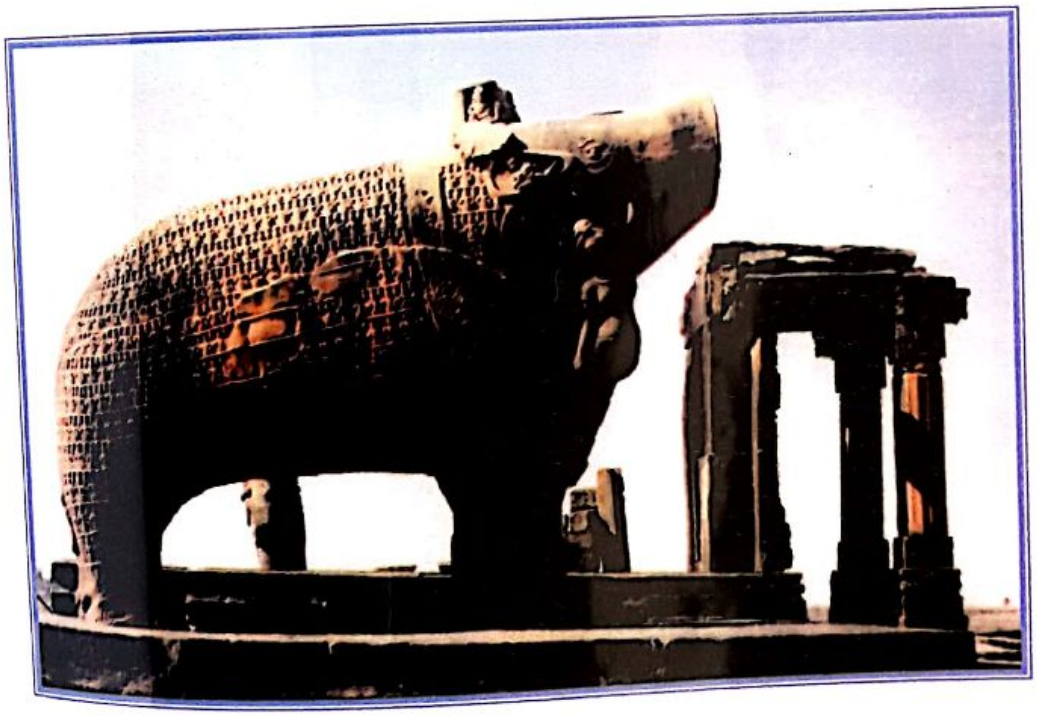

चित्र संख्या–4 : वराह प्रतिमा का सामान्य दृश्य

Scanned by CamScanner

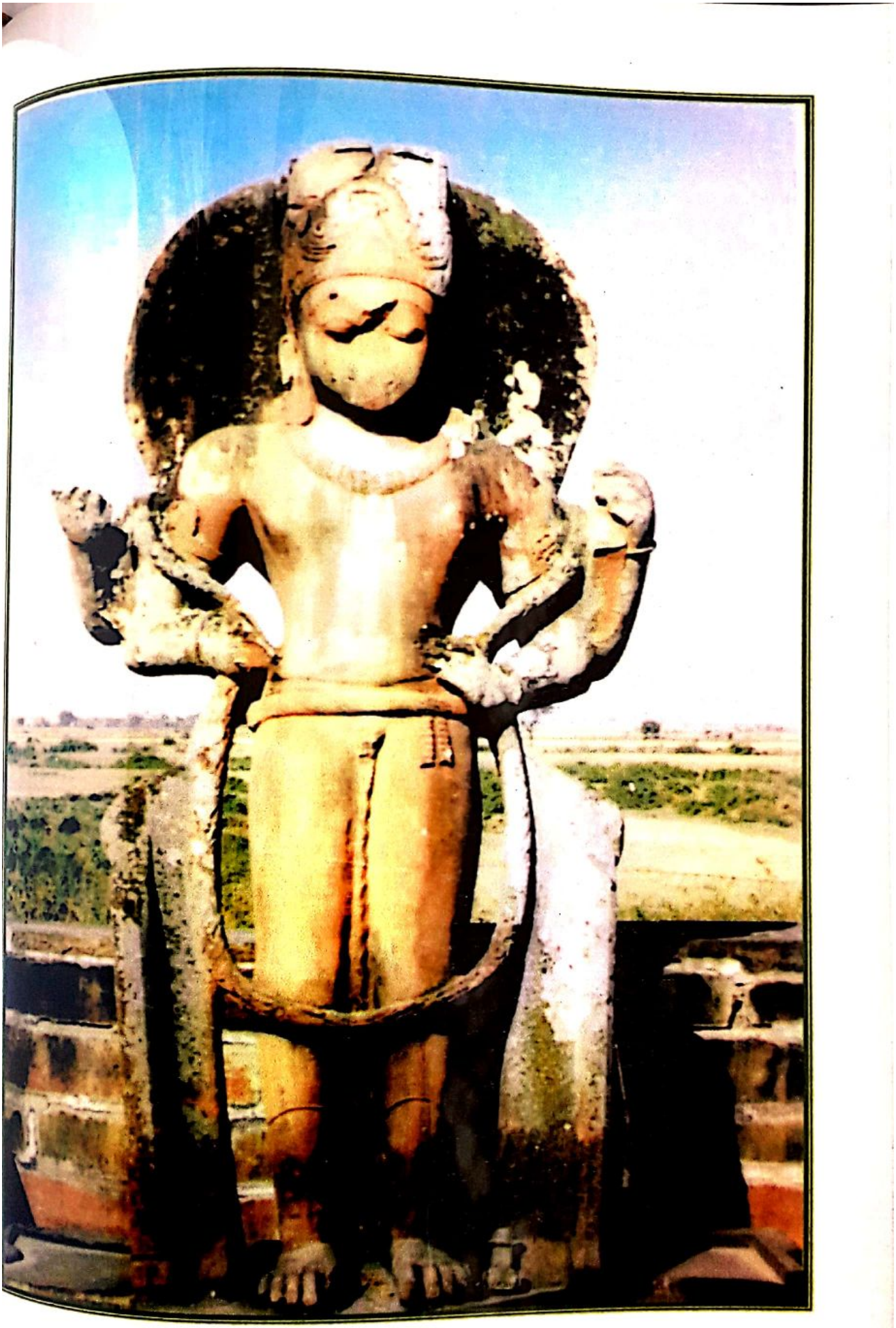

चित्र संख्या–5 : महाविष्णु प्रतिमा का सामान्य दृश्य

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–6 : ताम्रपाषाणकालीन रक्षा–प्राचीर व खाई

चित्र संख्या–7 : ताम्रपाषाणकालीन कायथा मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

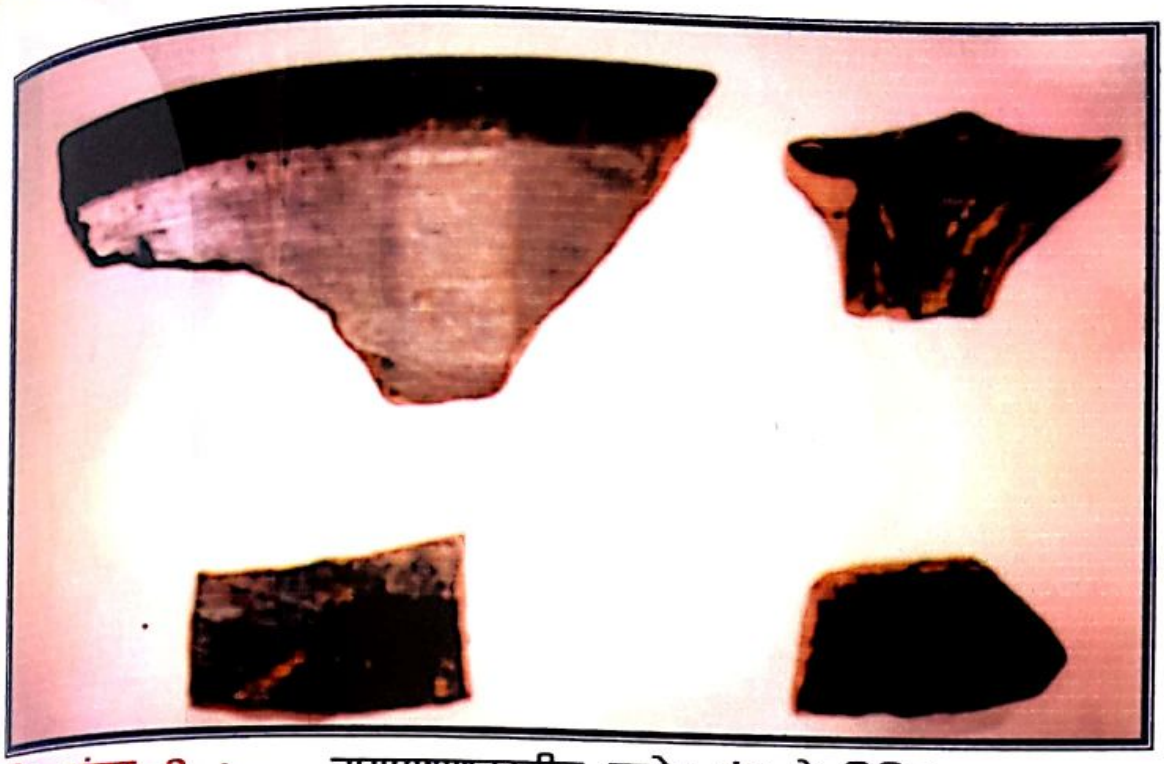

चित्र संख्या–8 : ताम्रपाषाणकालीन सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–9 : ताम्रपाषाणकालीन सफेद रंग से चित्रित काले–और–लाल मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

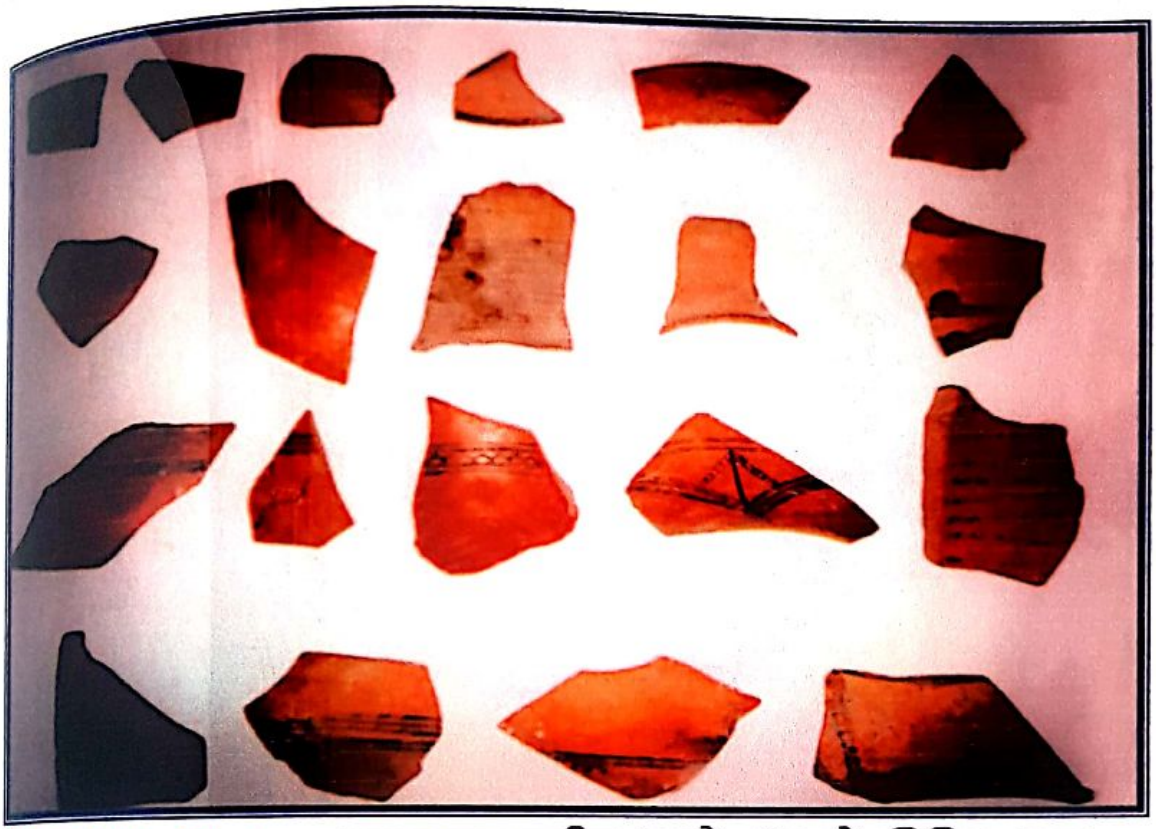

चित्र संख्या–10 : ताम्रपाषाणकालीन काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

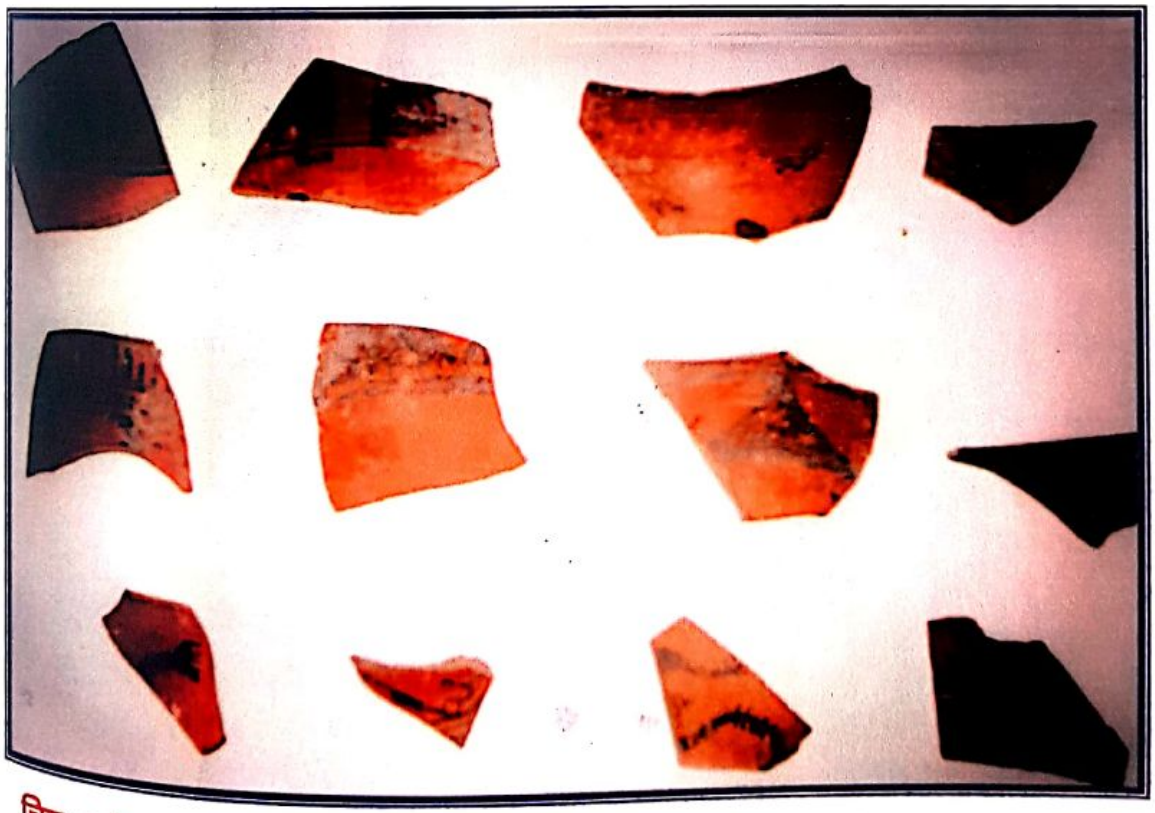

चित्र संख्या–11 : ताम्रपाषाणकालीन काले रंग से चित्रित लाल मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–12 : ताम्रपाषाणकालीन चित्रित धूसर मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–13 : ताम्रपाषाणकालीन चित्रित धूसर मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–14 : ताम्रपाषाणकालीन मोटे तथा भद्दे मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–15 : ताम्रपाषाणकालीन चाकलेटी लेपयुक्त मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

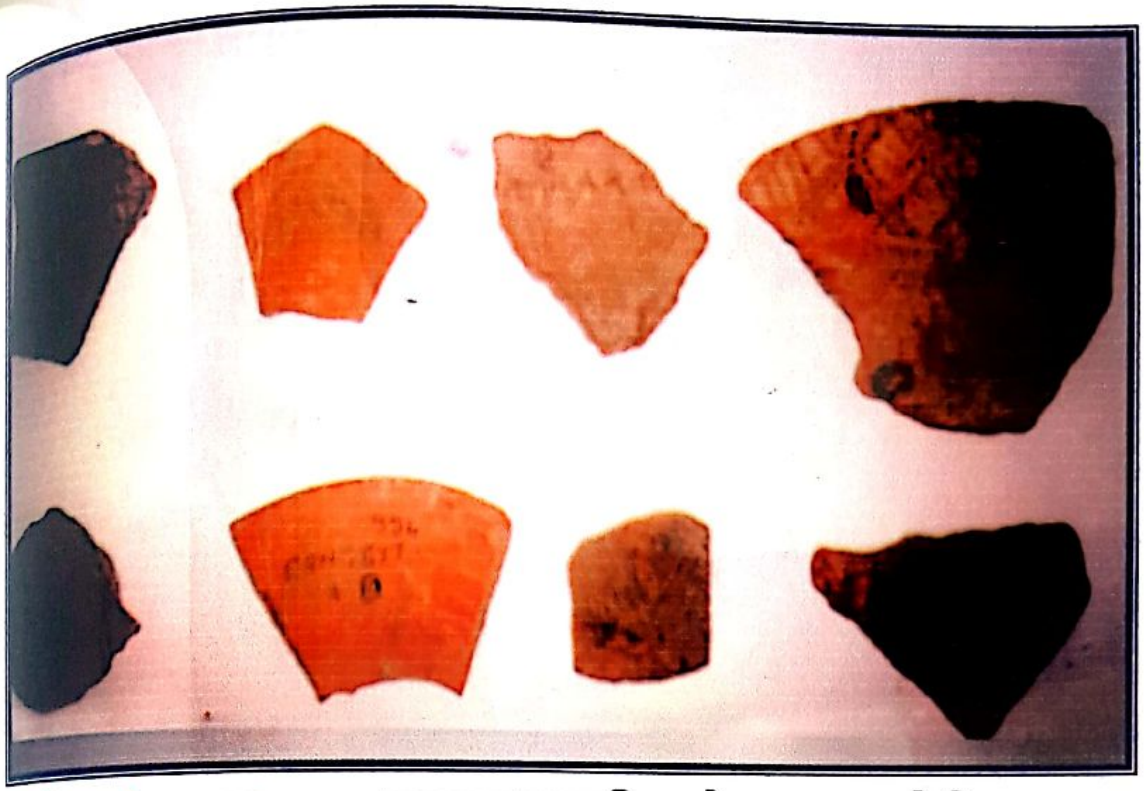

चित्र संख्या–16 : ताम्रपाषाणकालीन मोटा,भद्दा व रेतीला अलंकृत मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–17 : ताम्रपाषाणकालीन पतला सुगढ़ तथा कम रेतीला मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–18 : ताम्रपाषाणकालीन श्रेष्ठ लाल मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–19 : ताम्रपाषाणकालीन मोटे लाल रंग के मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–20 : ताम्रपाषाणकालीन काले और लाल मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–21 : ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

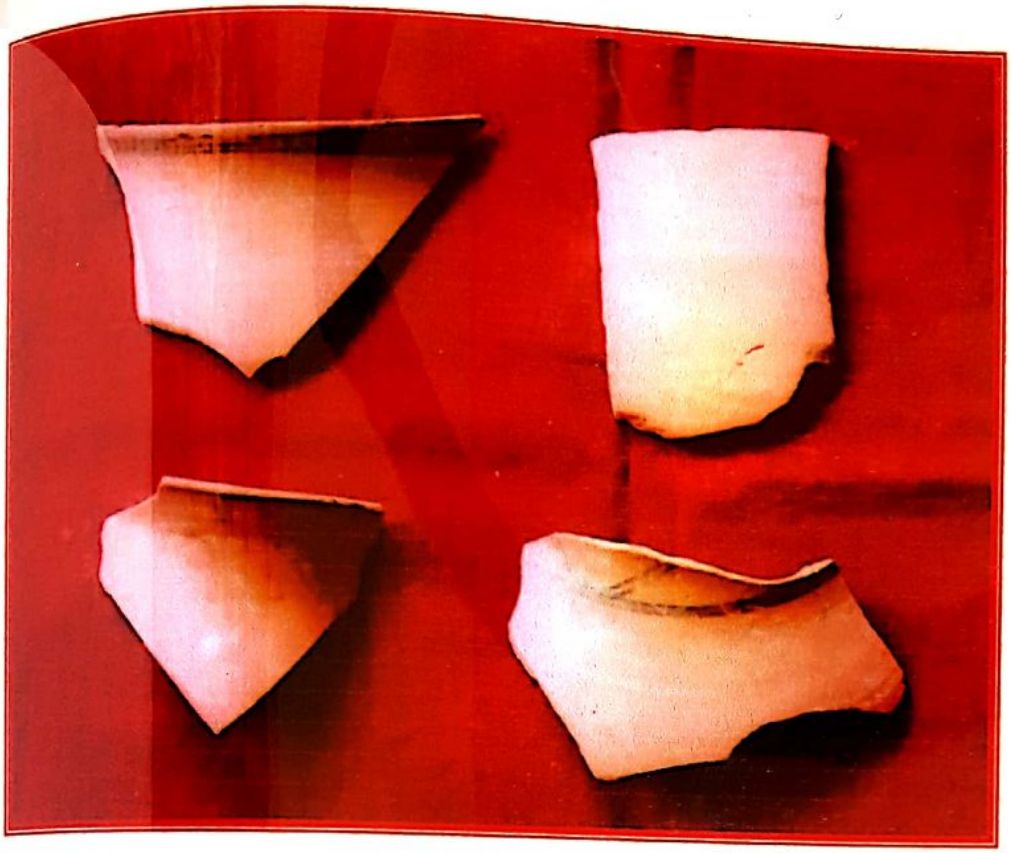

चित्र संख्या–22 : ताम्रपाषाणकालीन भूरे रंग के मृद्भाण्ड

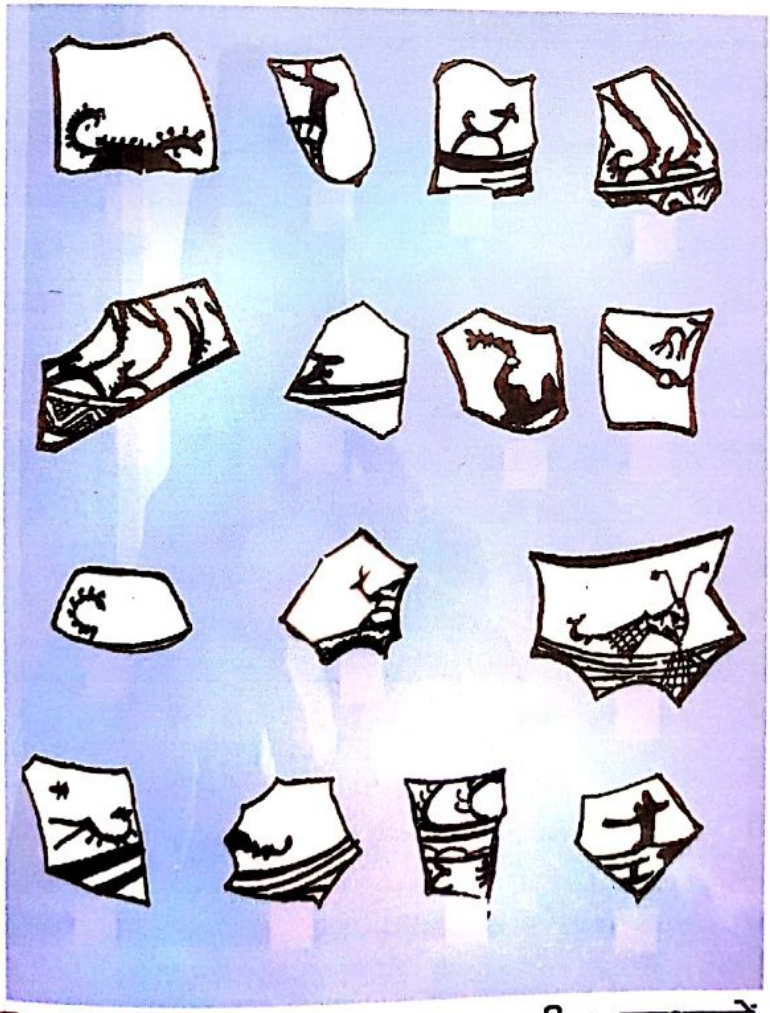

चित्र संख्या–23 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर किये गये चित्रांकन

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–24 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर उत्खचित चित्रण अभिप्राय

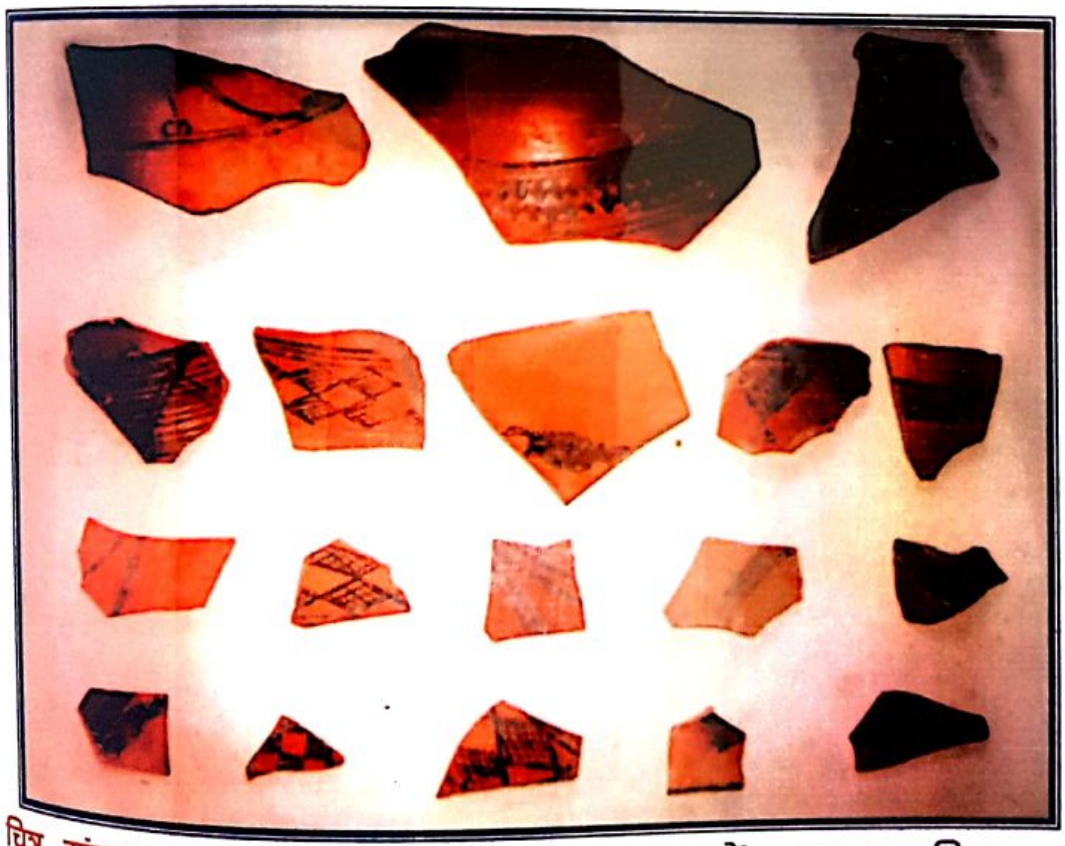

चित्र संख्या–25 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों पर उत्खचित चित्रण अभिप्राय

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–26 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों की चित्रित टोंटियाँ

चित्र संख्या–27 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों की टोंटियाँ

Scanned by CamScanner

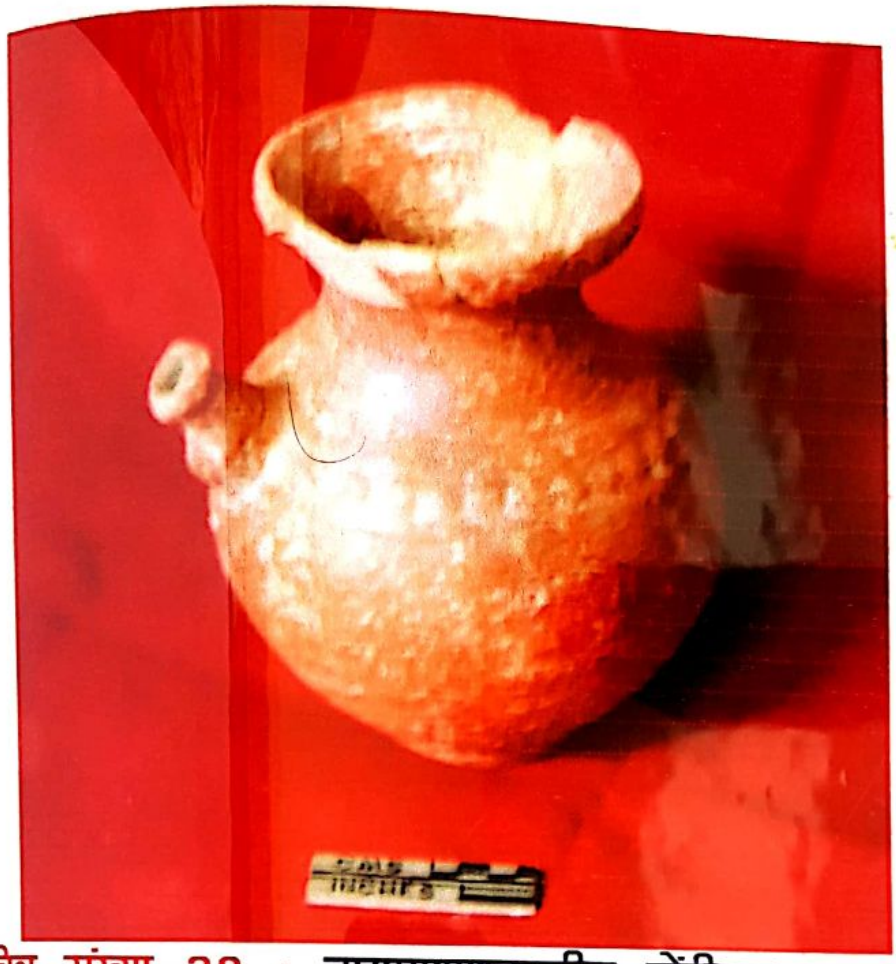

चित्र संख्या–28 : ताम्रपाषाणकालीन टोंटीदार मृद्भाण्ड

चित्र संख्या–29 : ताम्रपाषाणकालीन साधार तश्तरी

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–30 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड

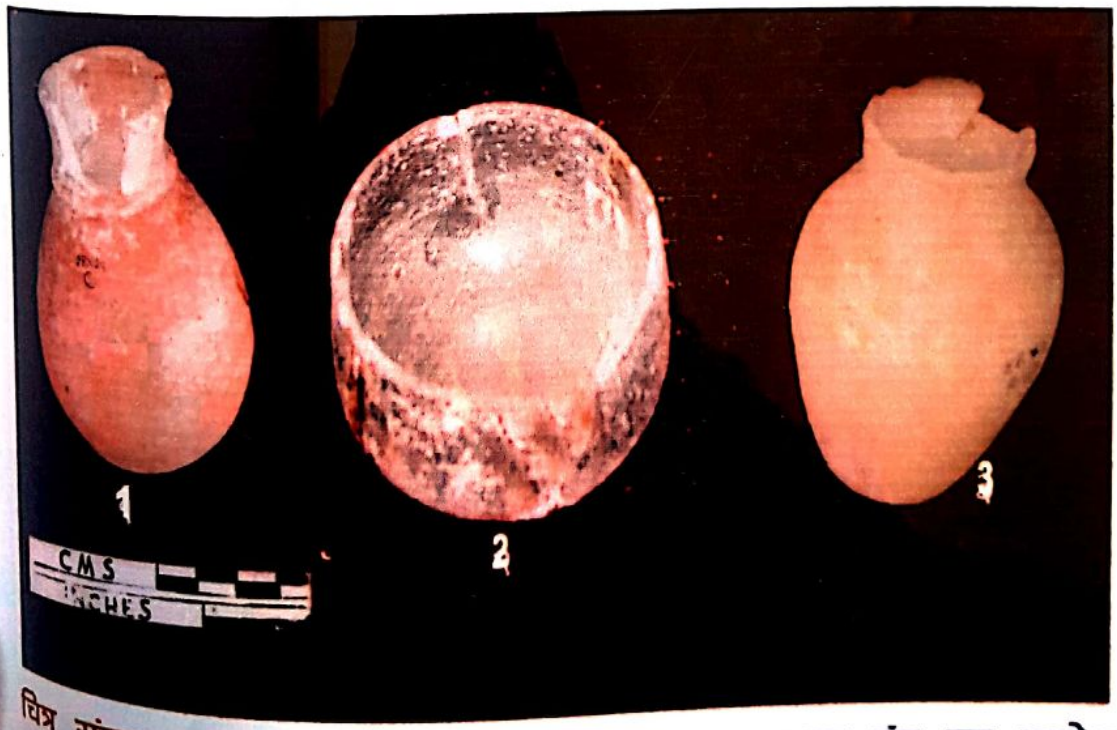

चित्र संख्या–31 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्ड व धूसर रंग का कटोरा

Scanned by CamScanner

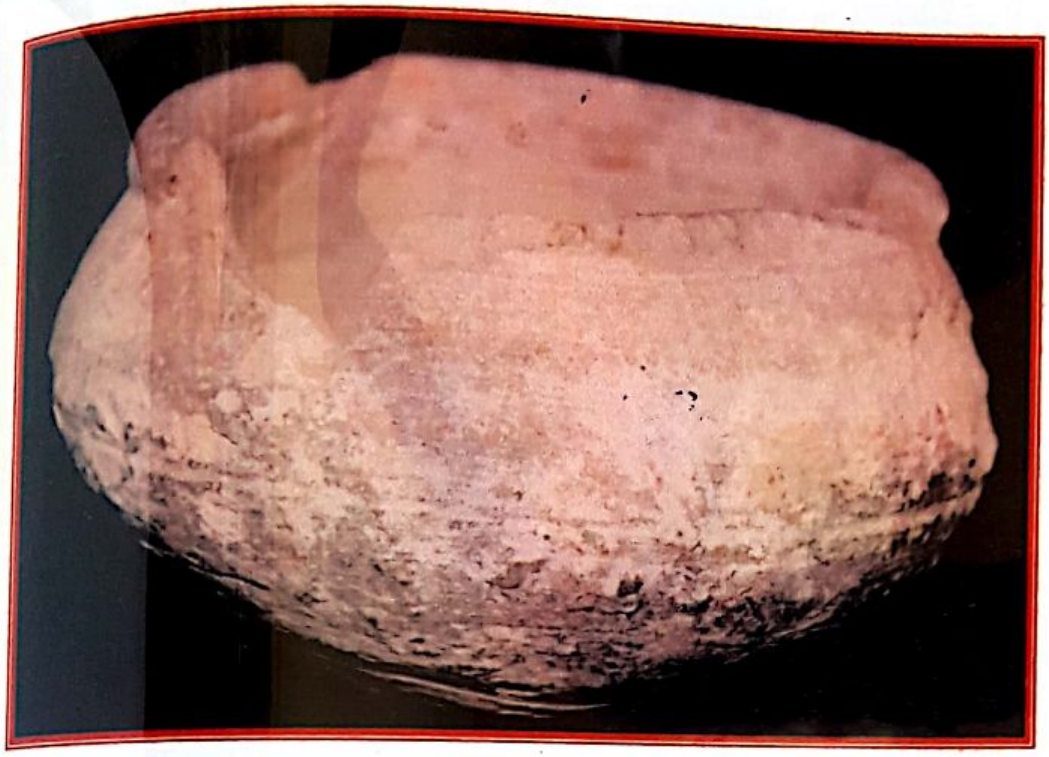

चित्र संख्या–32 : ताम्रपाषाणकालीन धूसर रंग का कटोरा

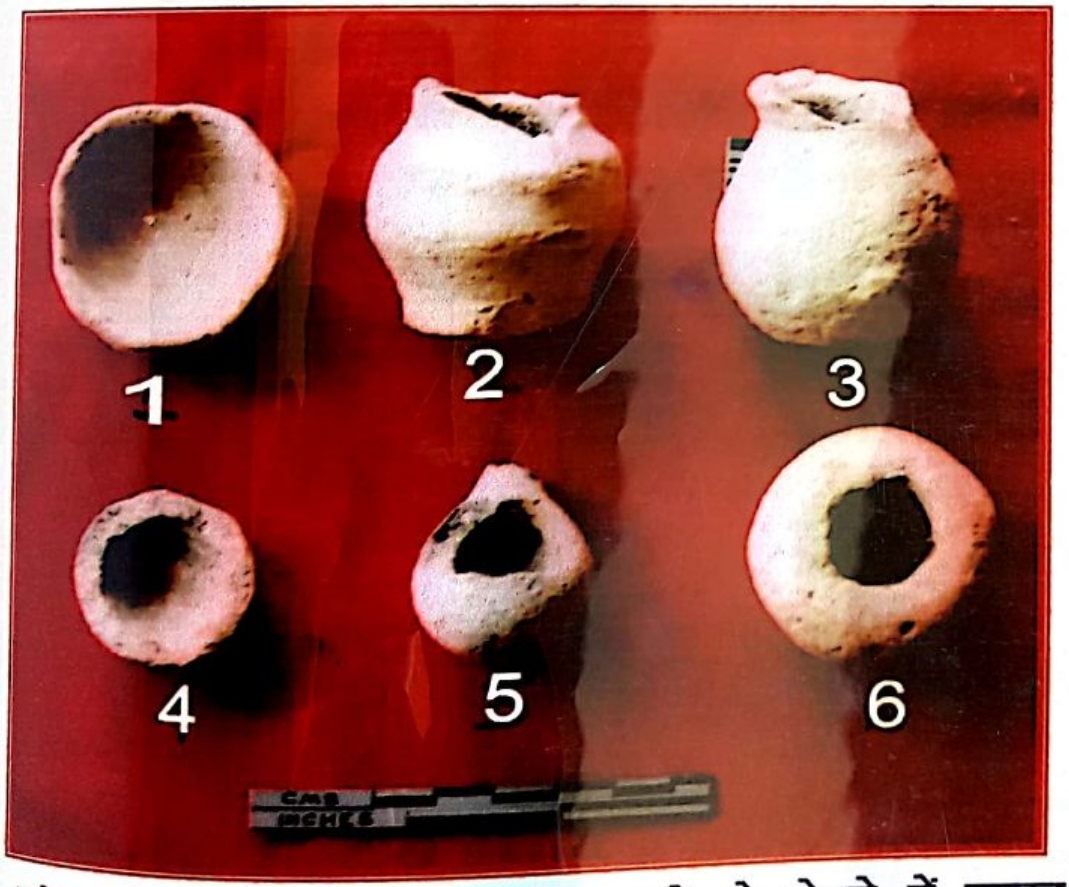

चित्र संख्या–33 : ताम्रपाषाणकालीन बच्चों के खेलने में प्रयुक्त होने वाले छोटे मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–34 : ताम्रपाषाणकालीन धूसर मृद्भाण्ड का भाग

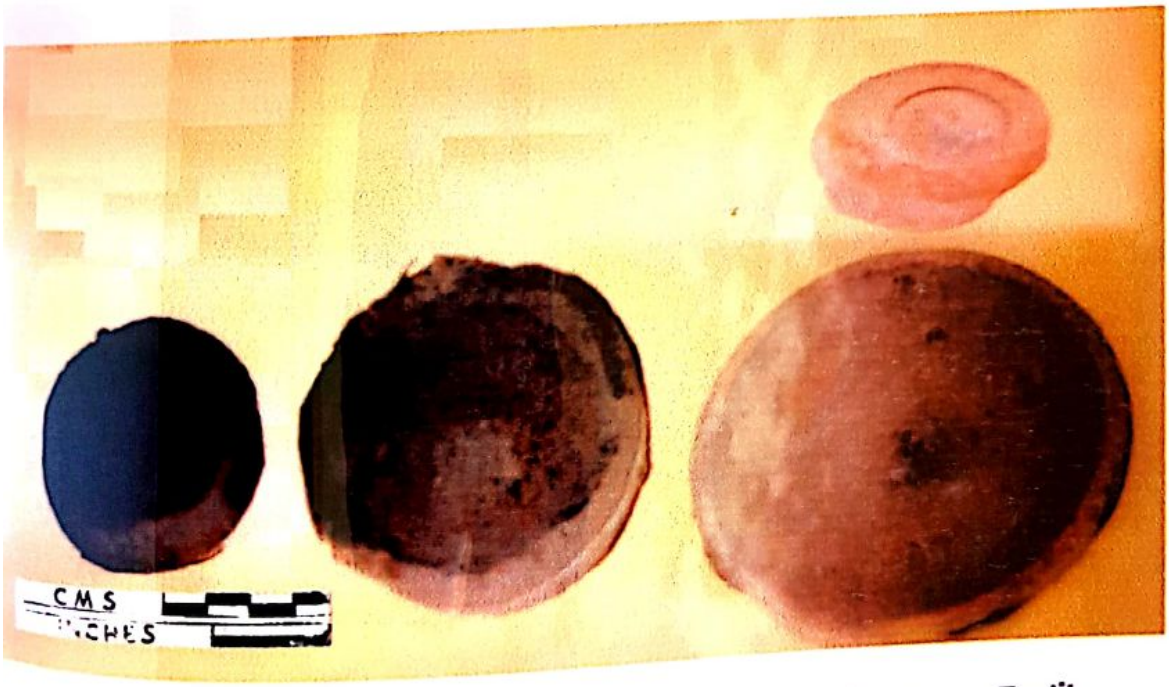

चित्र संख्या–35 : ताम्रपाषाणकालीन कटोरे व थालियाँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–36 : ताम्रपाषाणकालीन कटोरे व लोटा

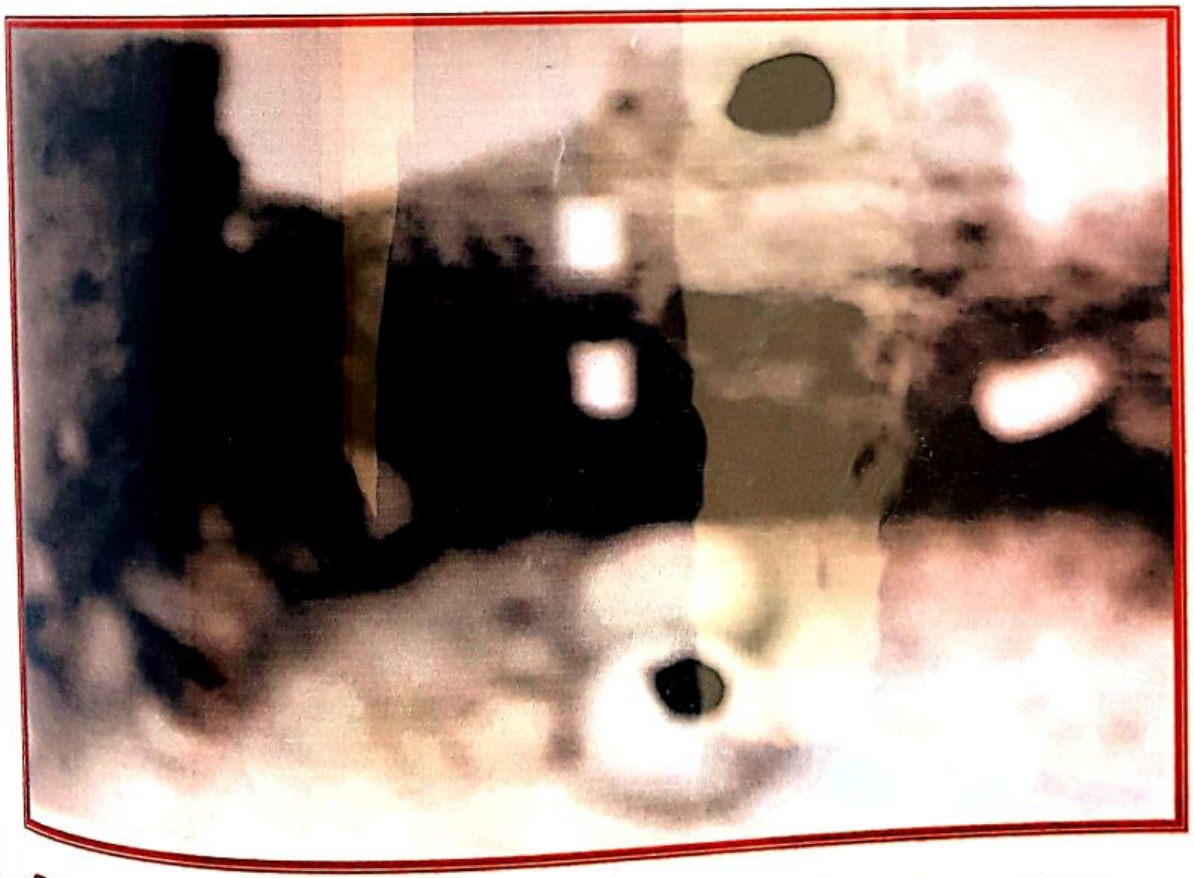

चित्र संख्या–37 : ताम्रपाषाणकालीन खदान में प्राप्त मृद्भाण्ड

Scanned by CamScanner

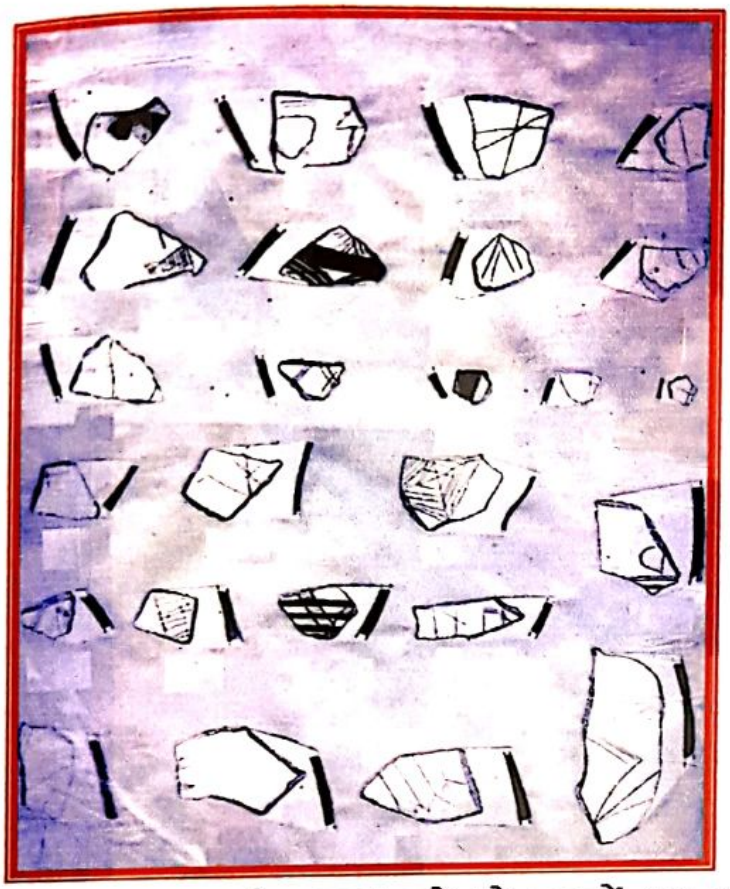

चित्र संख्या–38 : ताम्रपाषाणकालीन मृद्भाण्डों के टुकड़ों पर उत्खचित ग्रेफिटी

चित्र संख्या–39 : ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–40 : ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी

चित्र संख्या–41 : ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी

Scanned by CamScanner

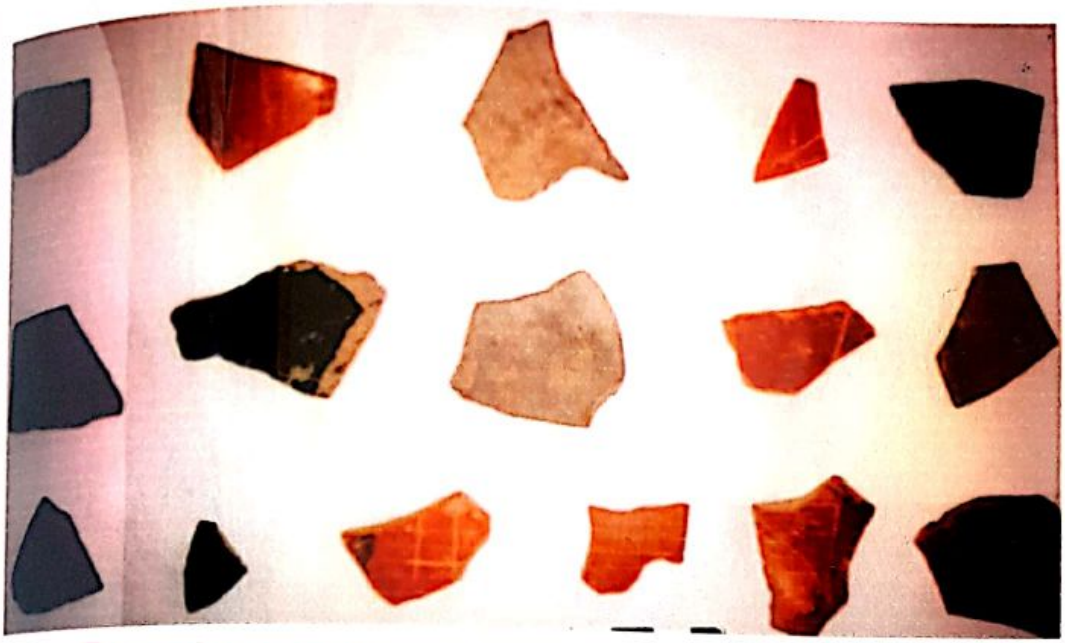

चित्र संख्या–42 : ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी

चित्र संख्या–43 : ताम्रपाषाणकालीन ग्रेफिटी

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–44 : ताम्रपाषाणकालीन मानव मृण्मूर्तियाँ

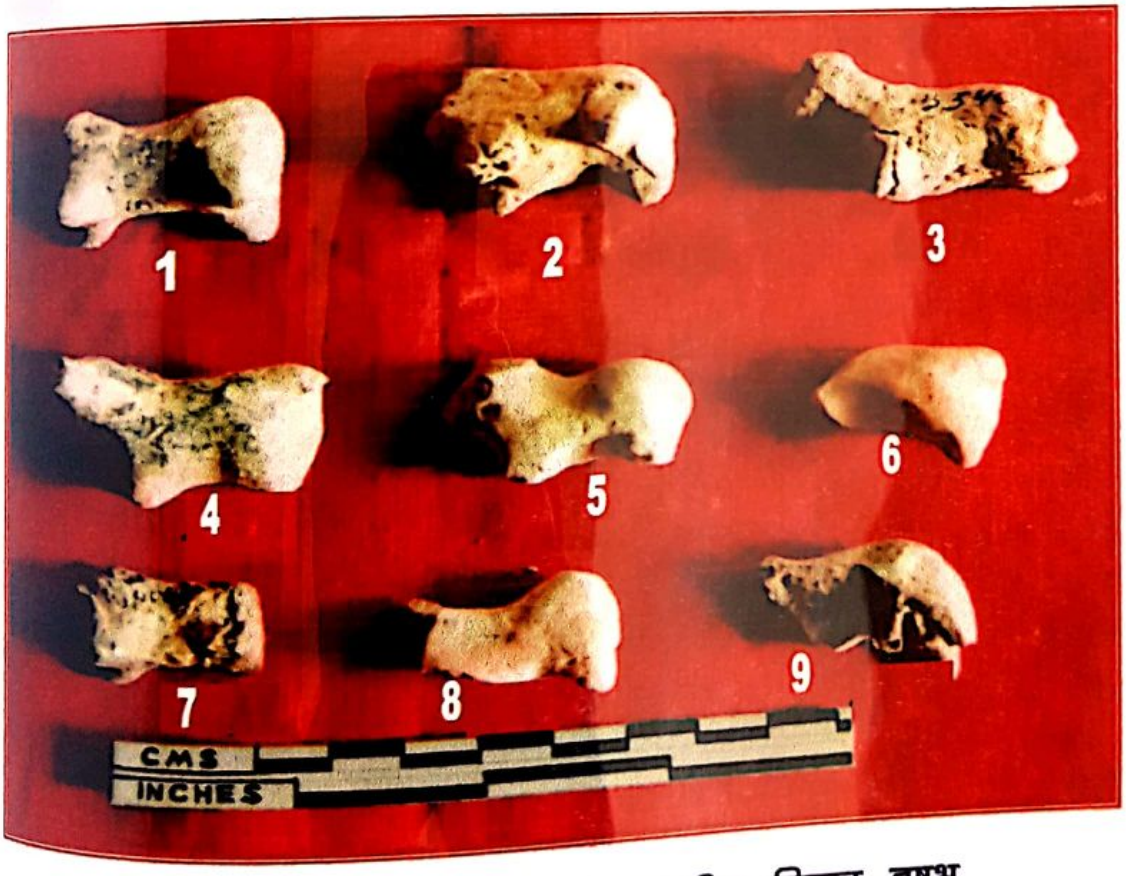

चित्र संख्या–45 : ताम्रपाषाणकालीन निरूढ वृषभ

Scanned by CamScanner

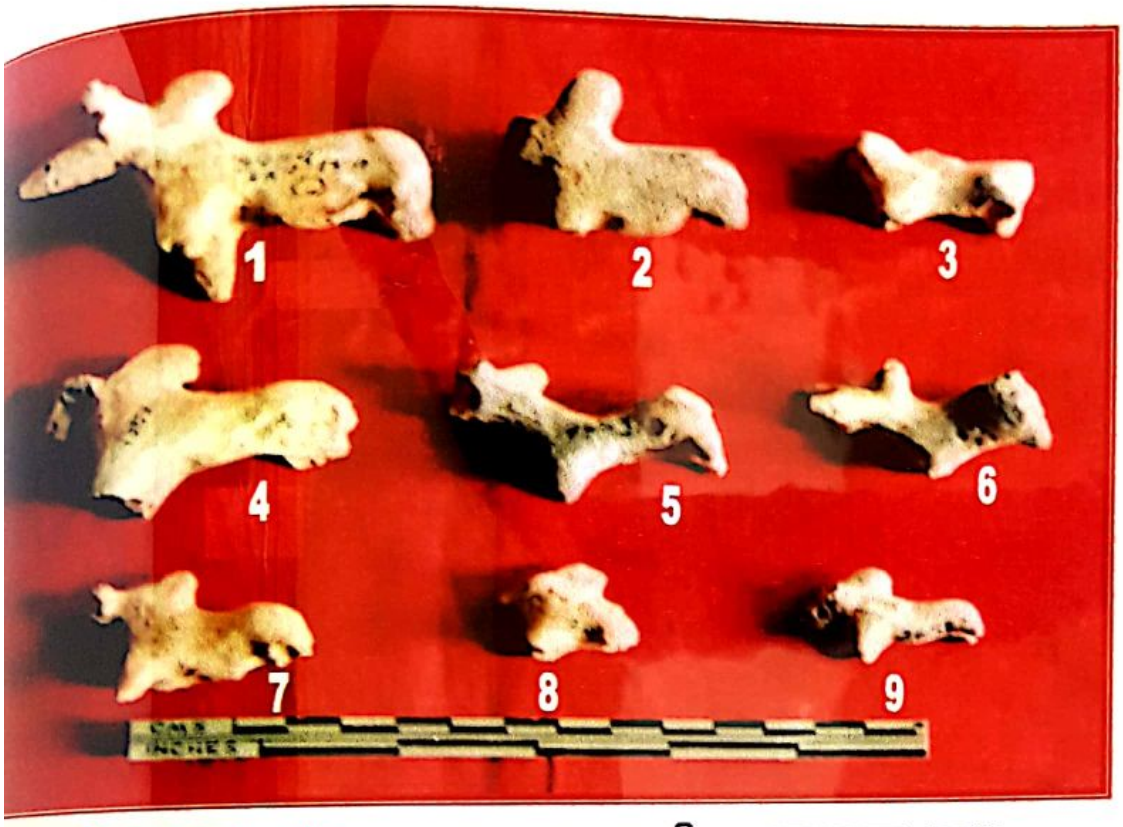

चित्र संख्या–46 : ताम्रपाषाणकालीन ककुदमान वृषभ

चित्र संख्या–47 : ताम्रपाषाणकालीन ककुदमान वृषभ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–48 : ताम्रपाषाणकालीन हरिण मृण्मूर्तियाँ

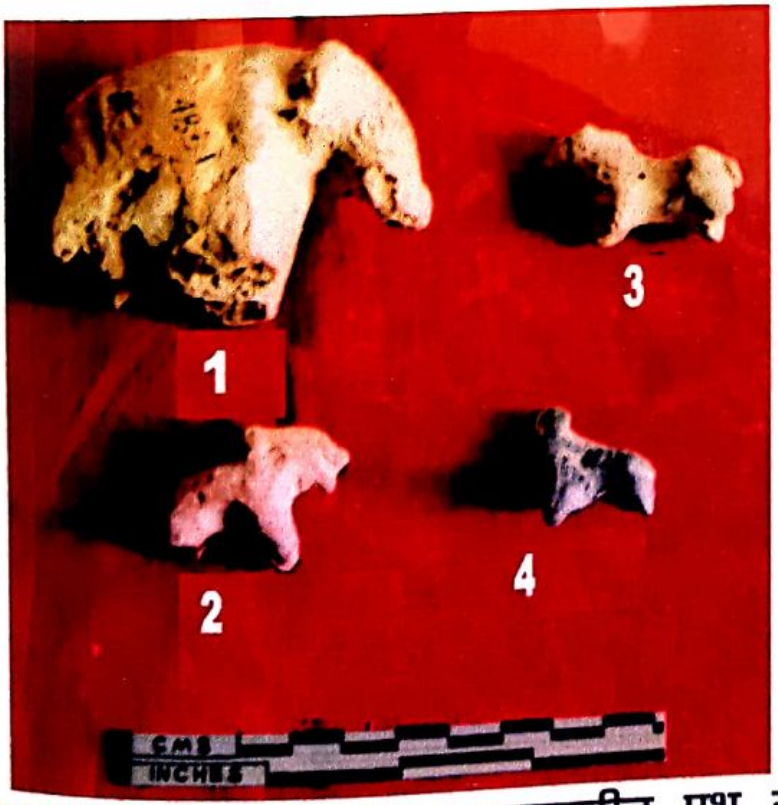

चित्र संख्या–49 : ताम्रपाषाणकालीन पशु मृण्मूर्तियाँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–50 : ताम्रपाषाणकालीन पक्षी मृण्मूर्तियाँ

चित्र संख्या–51 : ताम्रपाषाणकालीन पक्षी मृण्मूर्तियाँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–52 : ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–कुठार

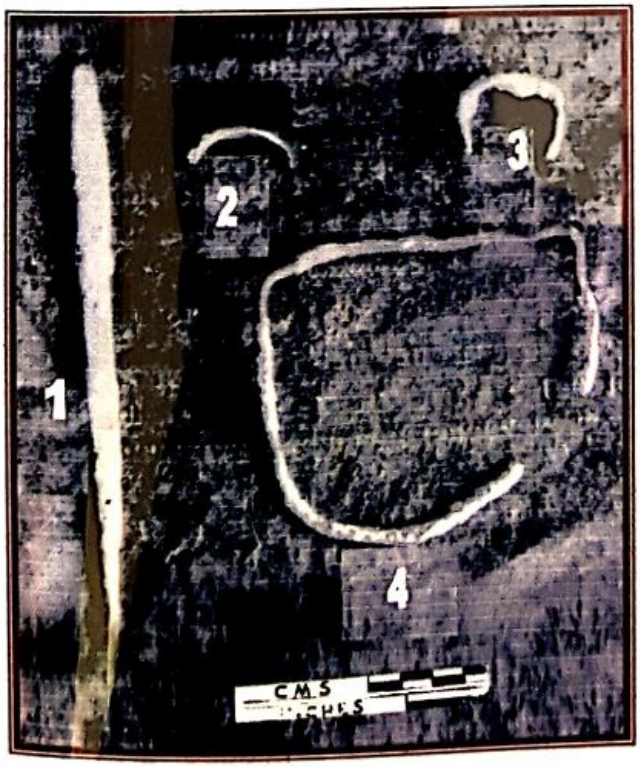

चित्र संख्या–53 : ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–54 : ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ

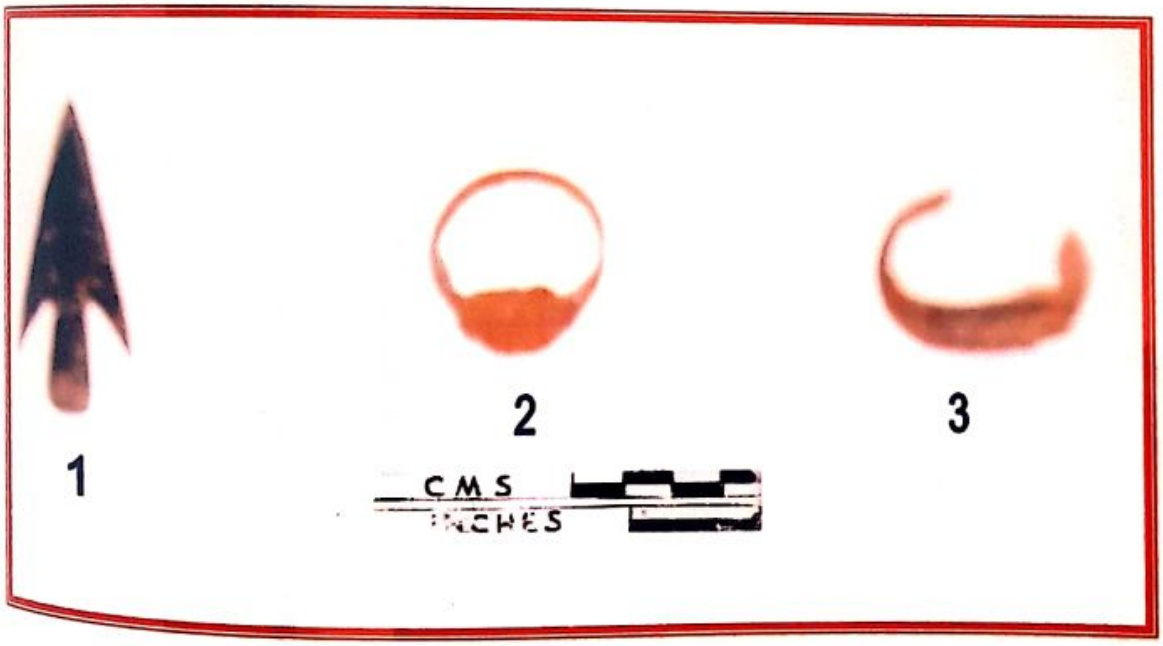

चित्र संख्या–55 : ताम्रपाषाणकालीन ताम्र–वस्तुएँ

Scanned by CamScanner

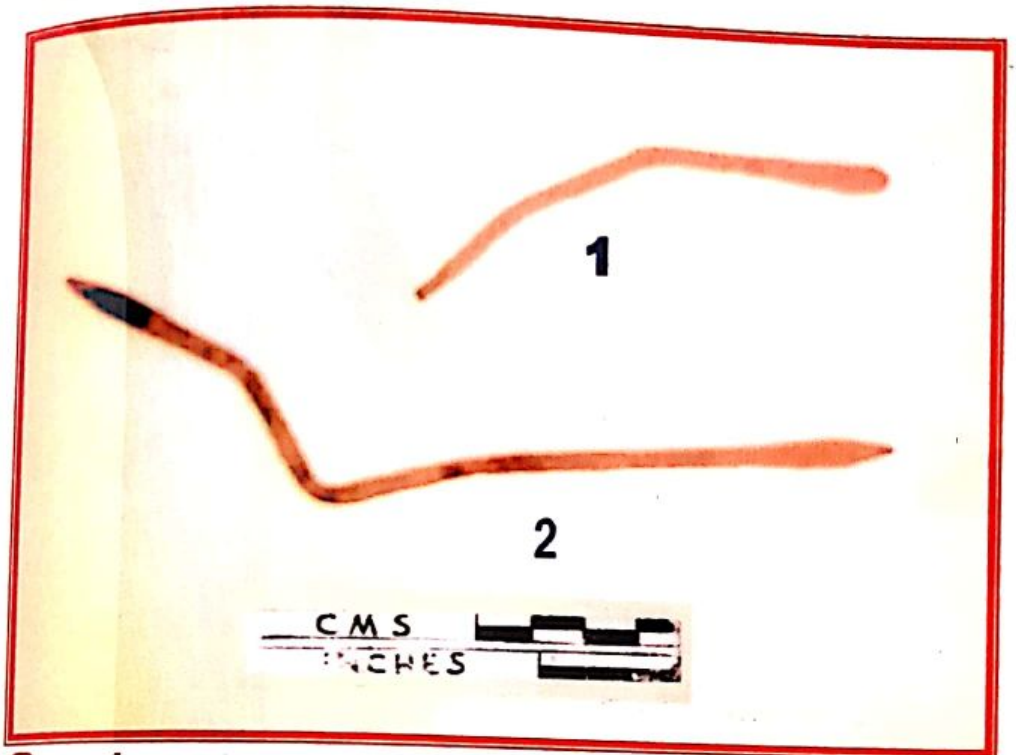

चित्र संख्या–56 : ताम्रपाषाणकालीन ताम्र अंजन–शलाकाएँ

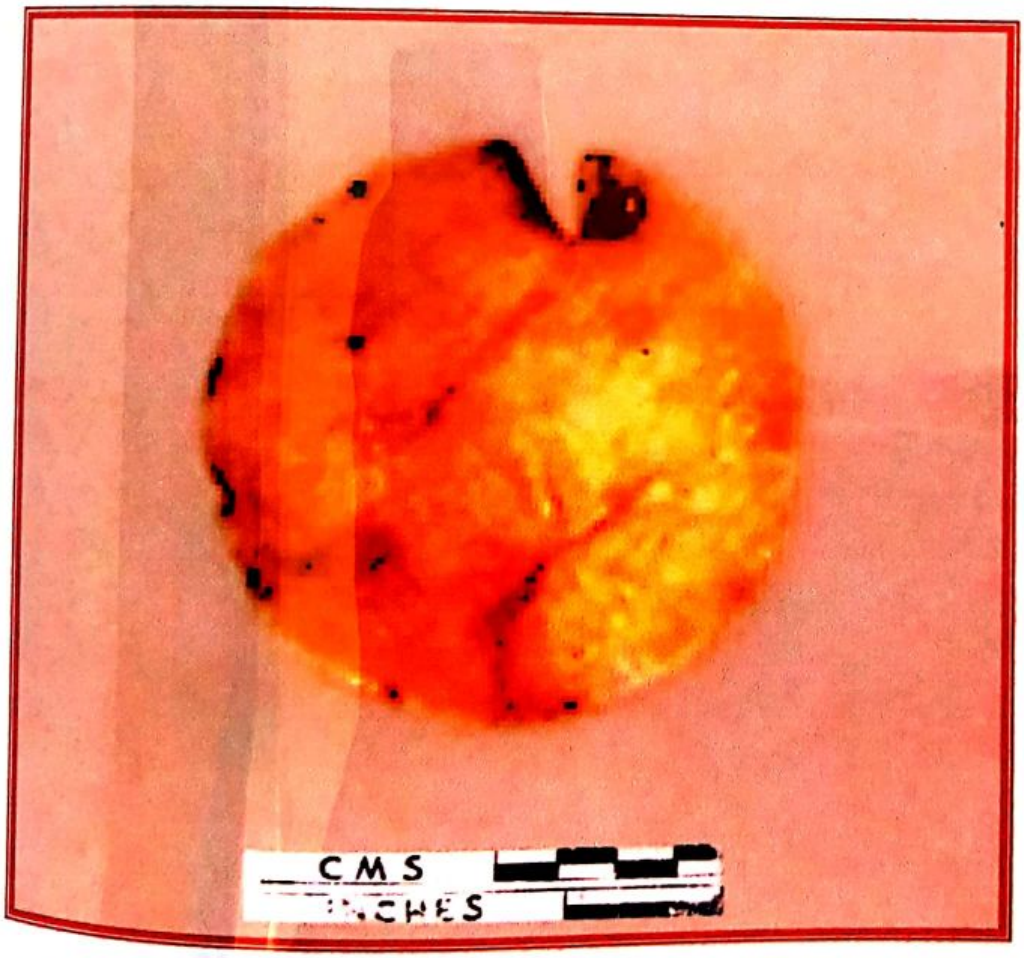

चित्र संख्या–57 : ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण–पत्तर

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–58 : ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण अंगूठी

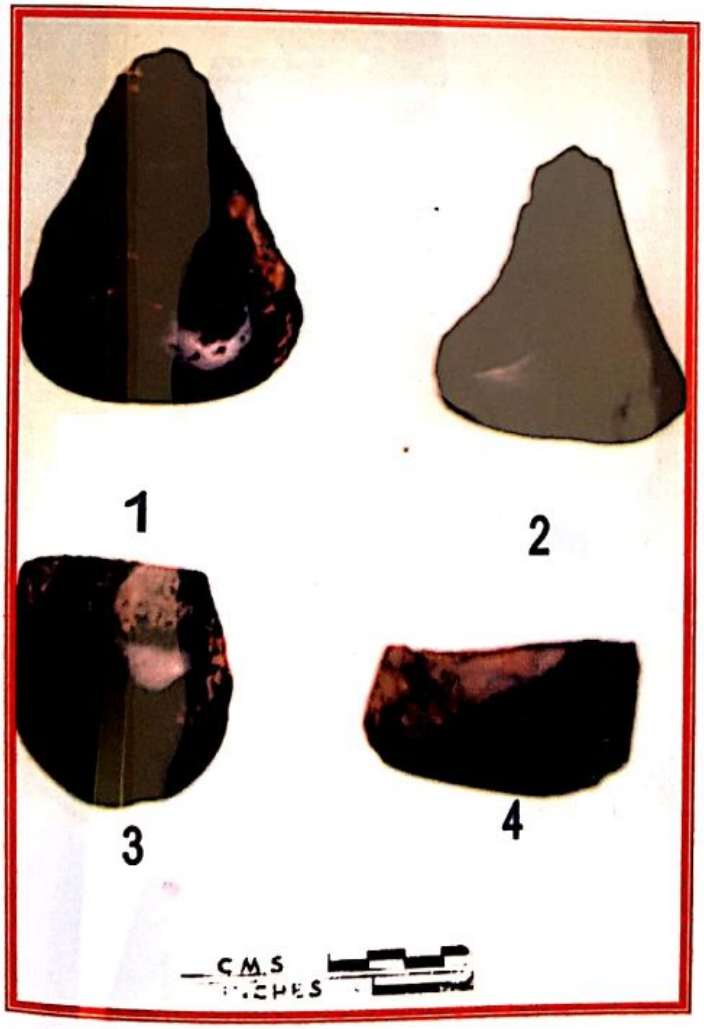

चित्र संख्या–59 : ताम्रपाषाणकालीन स्तर से प्राप्त नवपाषाणकालीन कुल्हाडियाँ

Scanned by CamScanner

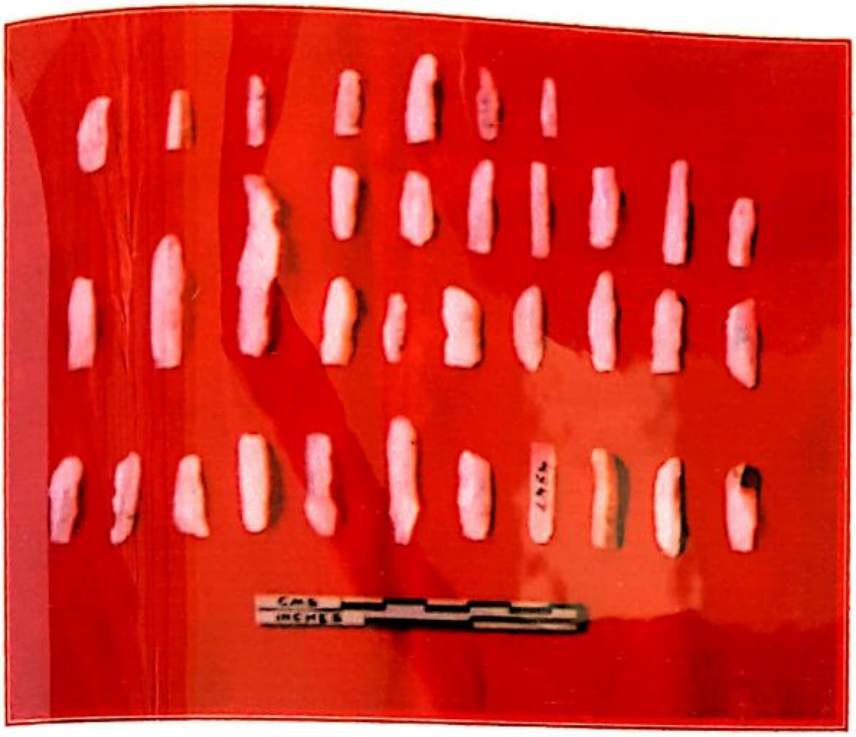

चित्र संख्या–60 : ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण

चित्र संख्या–61 : ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण

Scanned by CamScanner

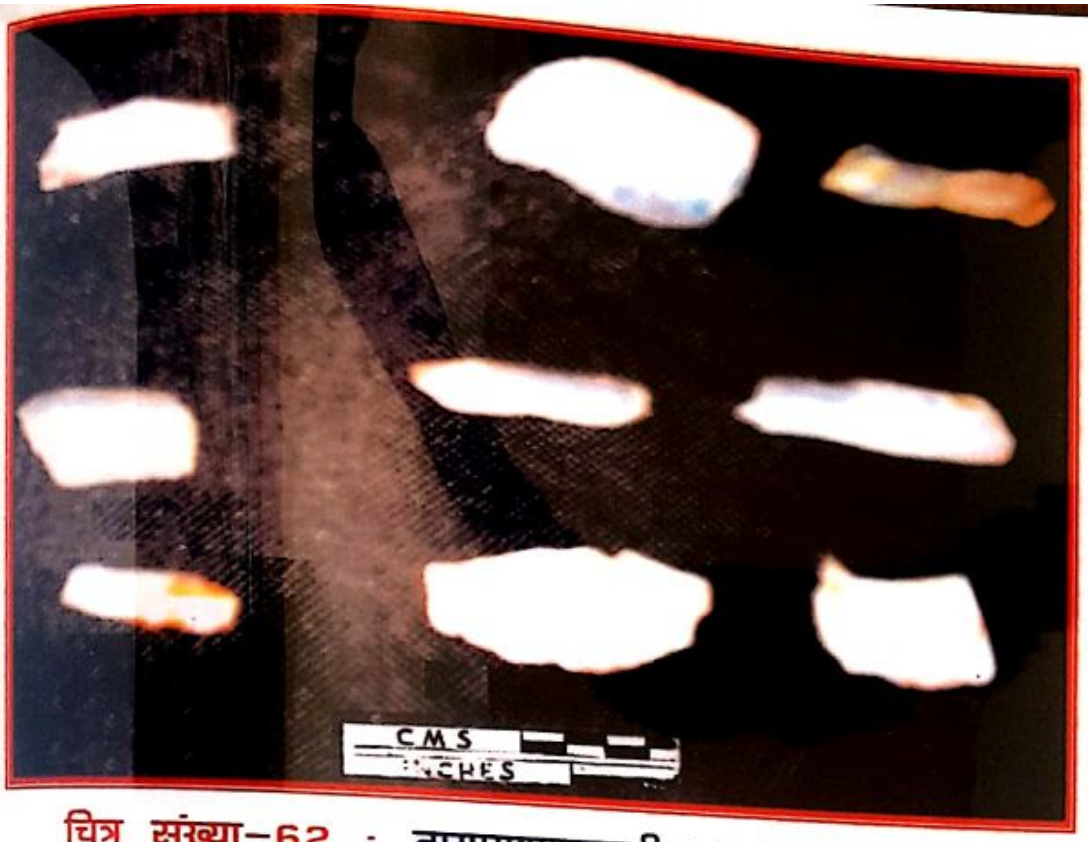

चित्र संख्या–62 : ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण

चित्र संख्या–63 : ताम्रपाषाणकालीन लघुपाषाण उपकरण

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–64 : ताम्रपाषाणकालीन सिल व गदाशीर्ष

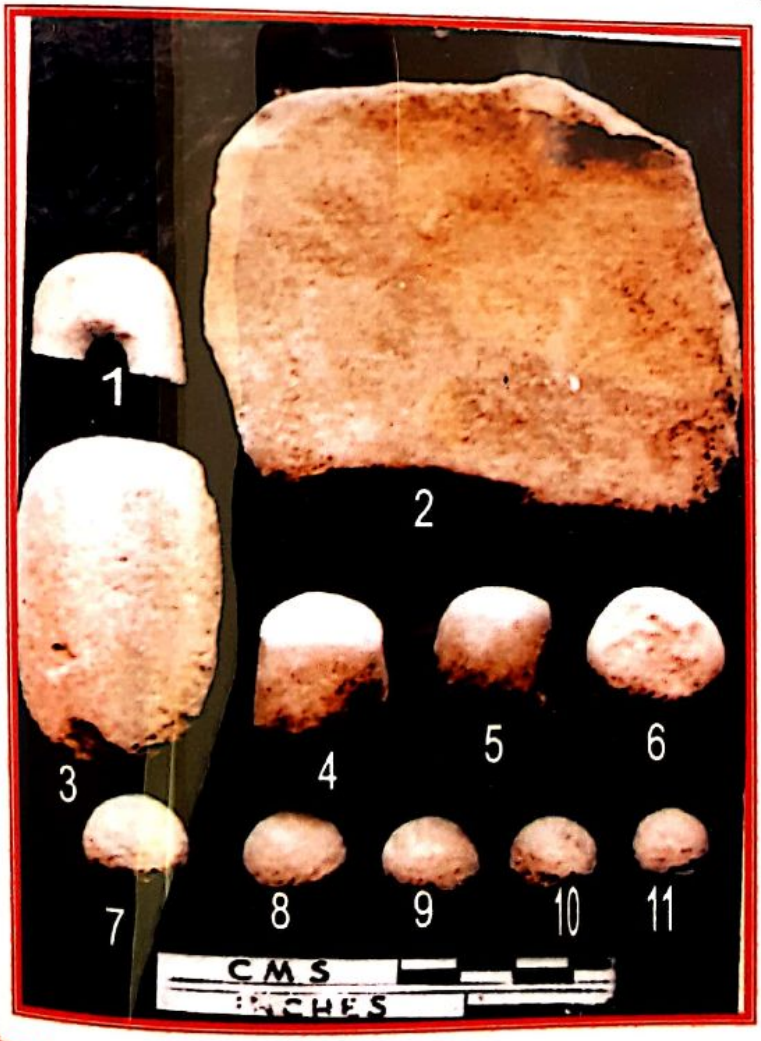

चित्र संख्या–65 : ताम्रपाषाणकालीन सिलबट्टा व गोलियाँ

Scanned by CamScanner

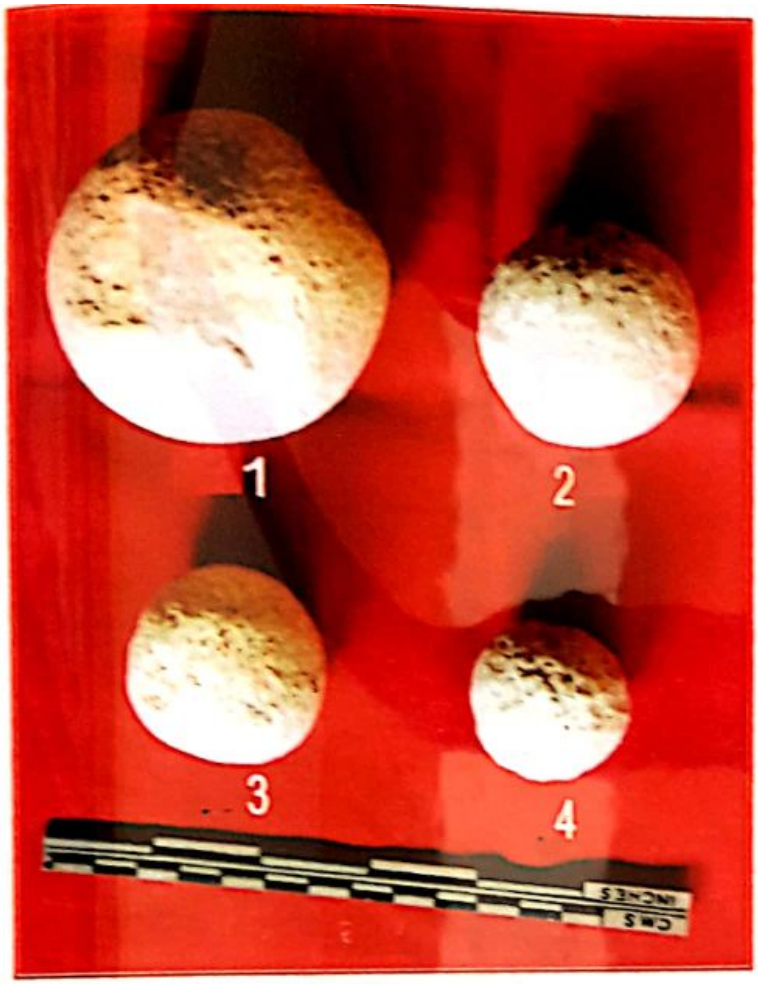

चित्र संख्या-66 : ताम्रपाषाणकालीन शिकार में प्रयुक्त होने वाली गोलियाँ

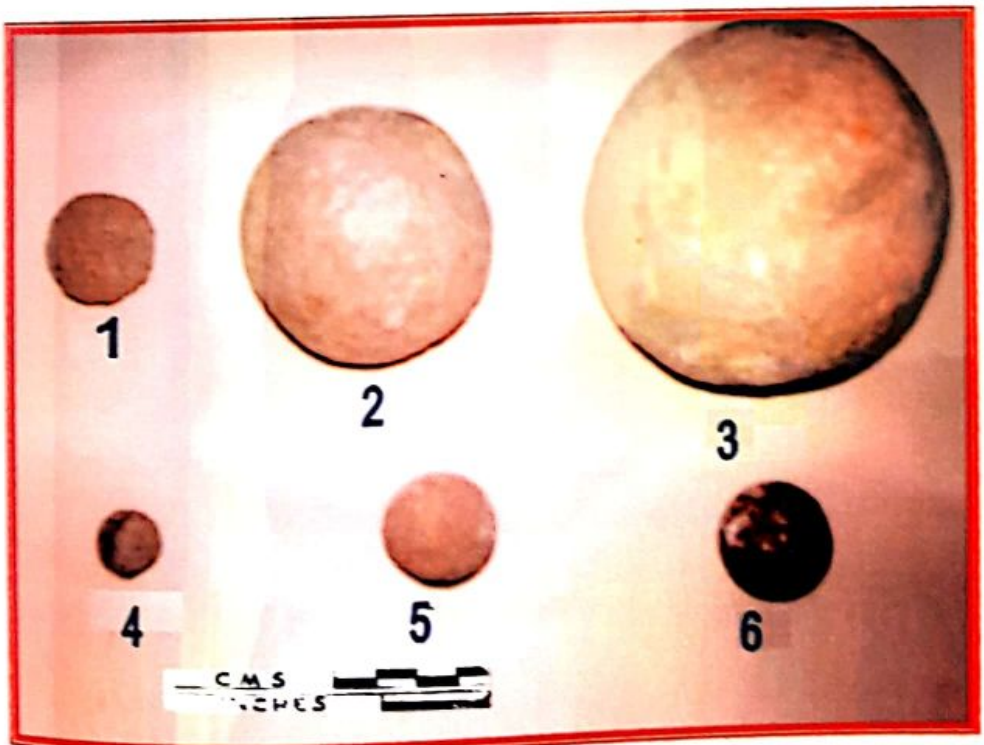

चित्र संख्या-67 : ताम्रपाषाणकालीन शिकार में प्रयुक्त होने वाली गोलियाँ

Scanned by CamScanner

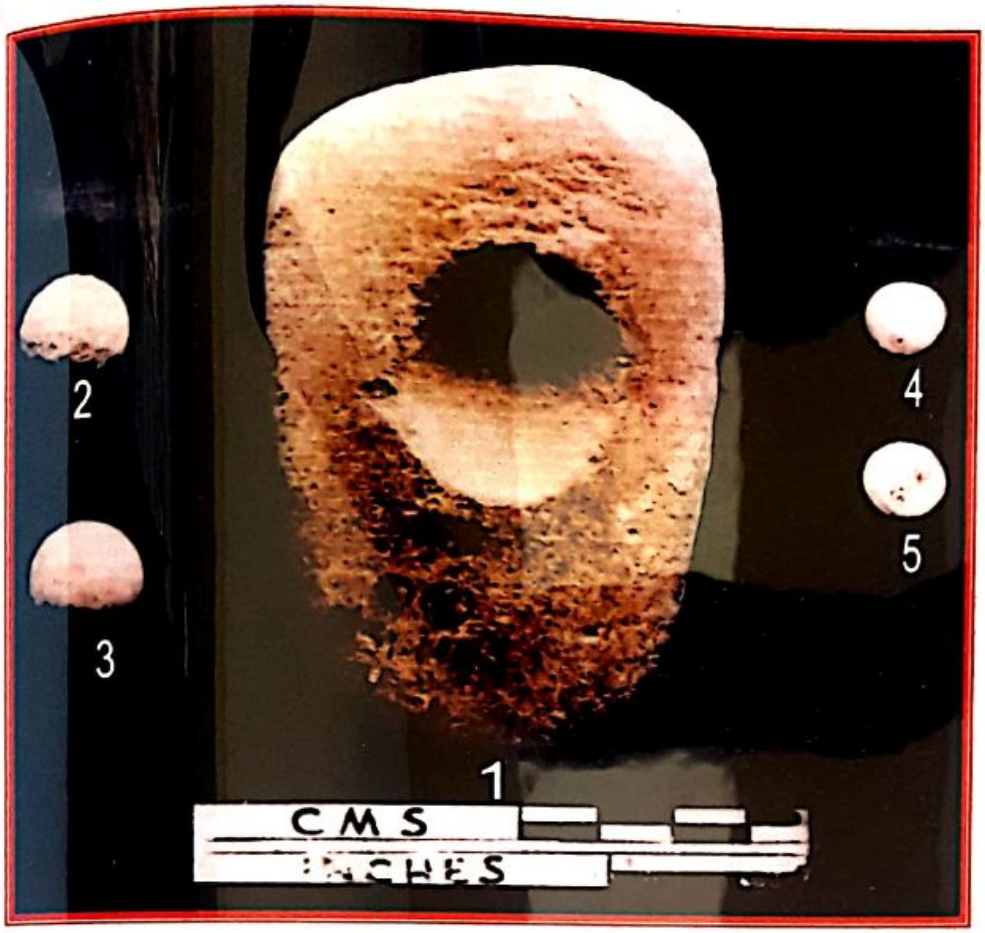

चित्र संख्या–68 : ताम्रपाषाणकालीन मनके व छोटी गोलियाँ बनाने वाला उपकरण

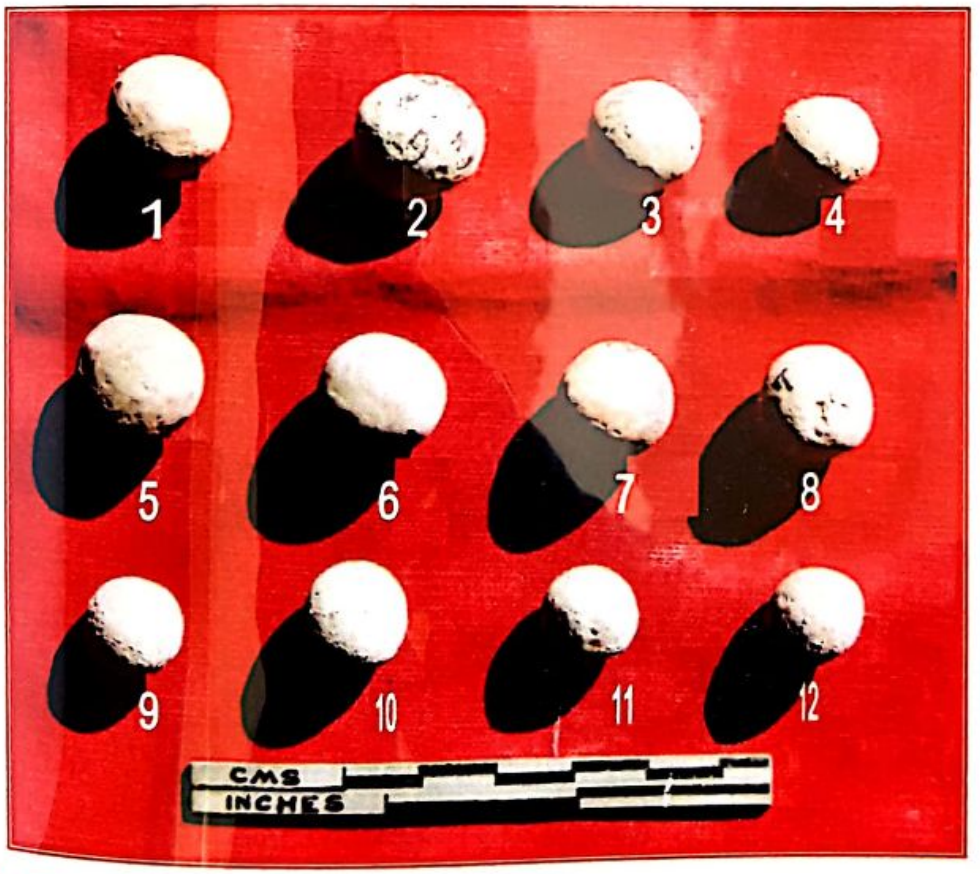

चित्र संख्या–69 : ताम्रपाषाणकालीन गोफन में प्रयुक्त होने वाली गोलियां

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–70 : ताम्रपाषाणकालीन तौल–बाँट

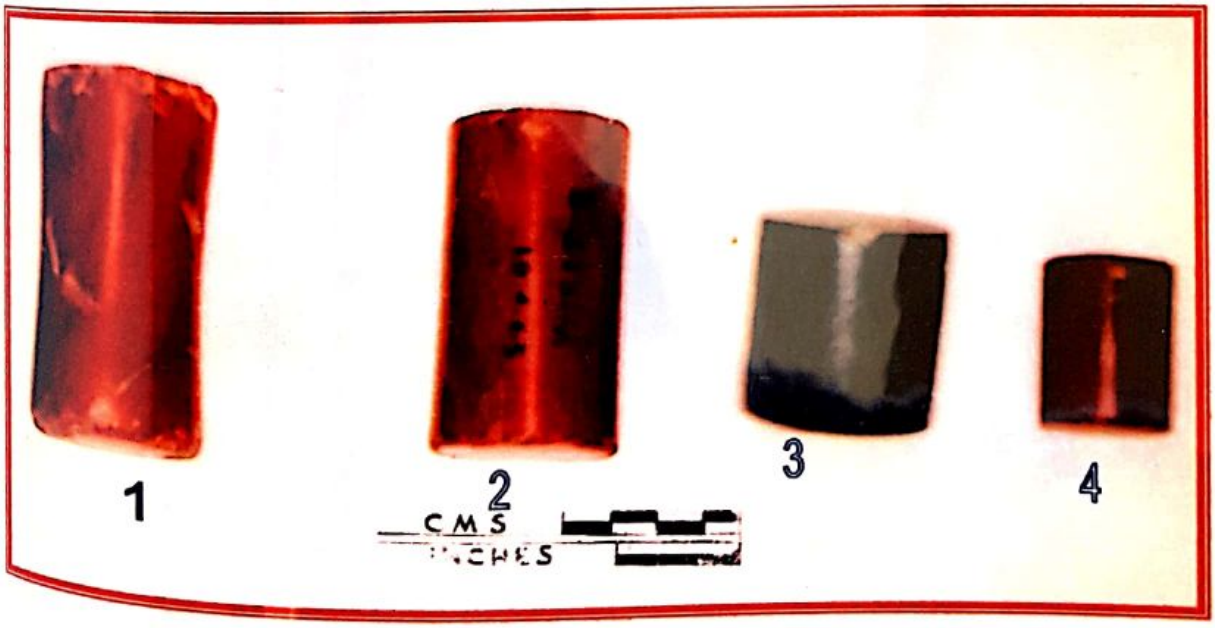

चित्र संख्या–71 : ताम्रपाषाणकालीन तौल–बाँट

Scanned by CamScanner

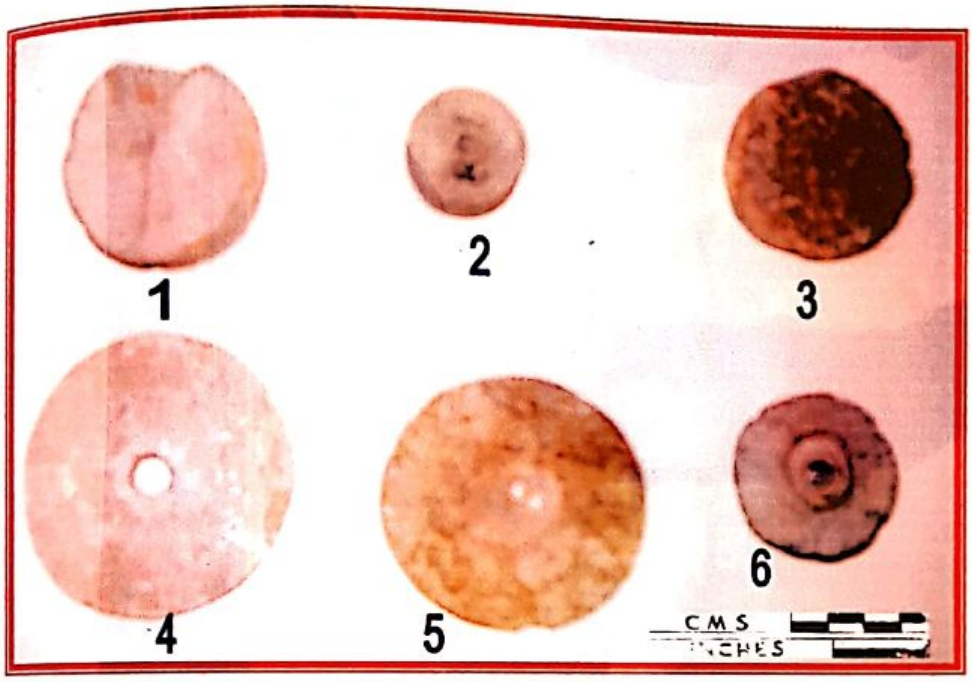

चित्र संख्या–72 : ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी की विविध वस्तुएँ

चित्र संख्या–73 : ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी की विविध वस्तुएँ

Scanned by CamScanner

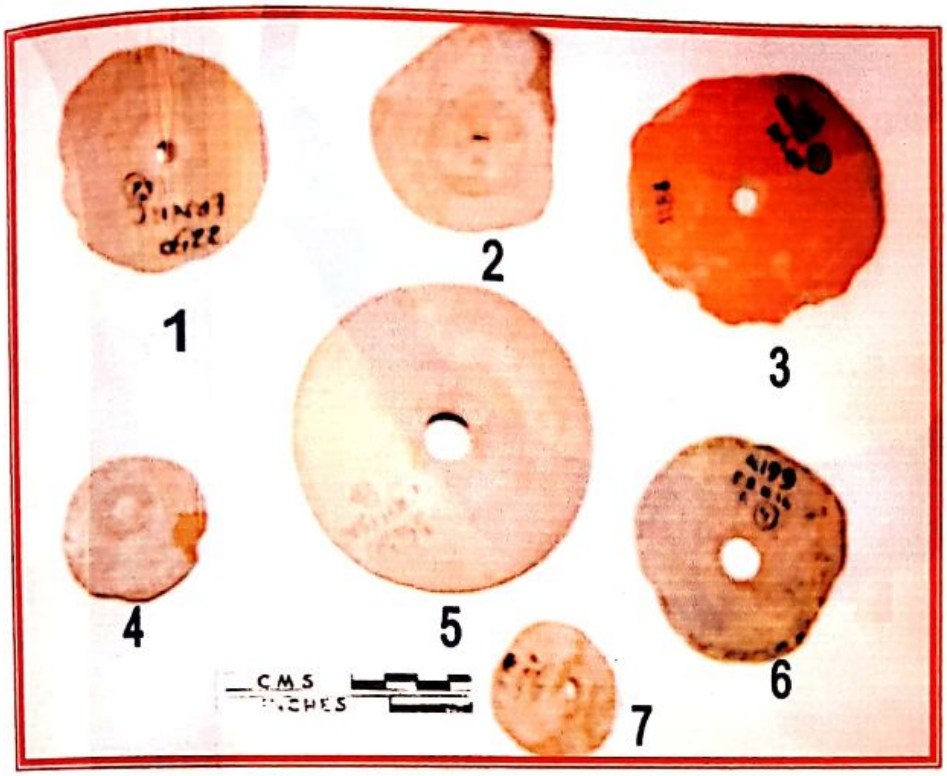

चित्र संख्या–74 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी के खिलौना गाड़ी के पहिया

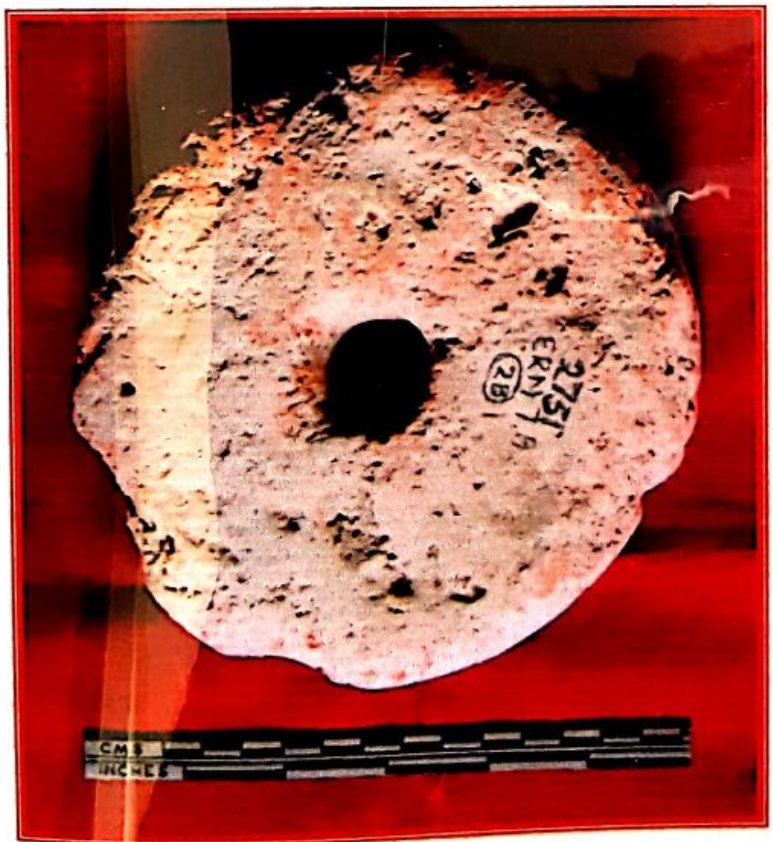

चित्र संख्या–75 : ताम्रपाषाणकालीन खिलौना गाड़ी का पहिया

Scanned by CamScanner

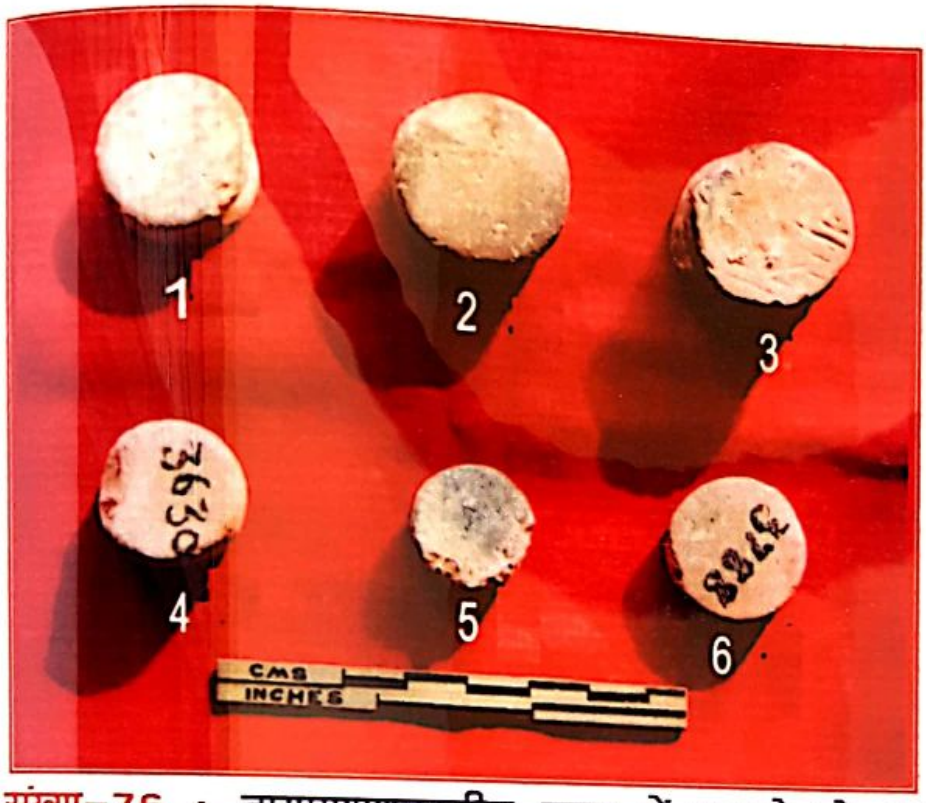

चित्र संख्या–76 : ताम्रपाषाणकालीन कान में पहनने के आभूषण

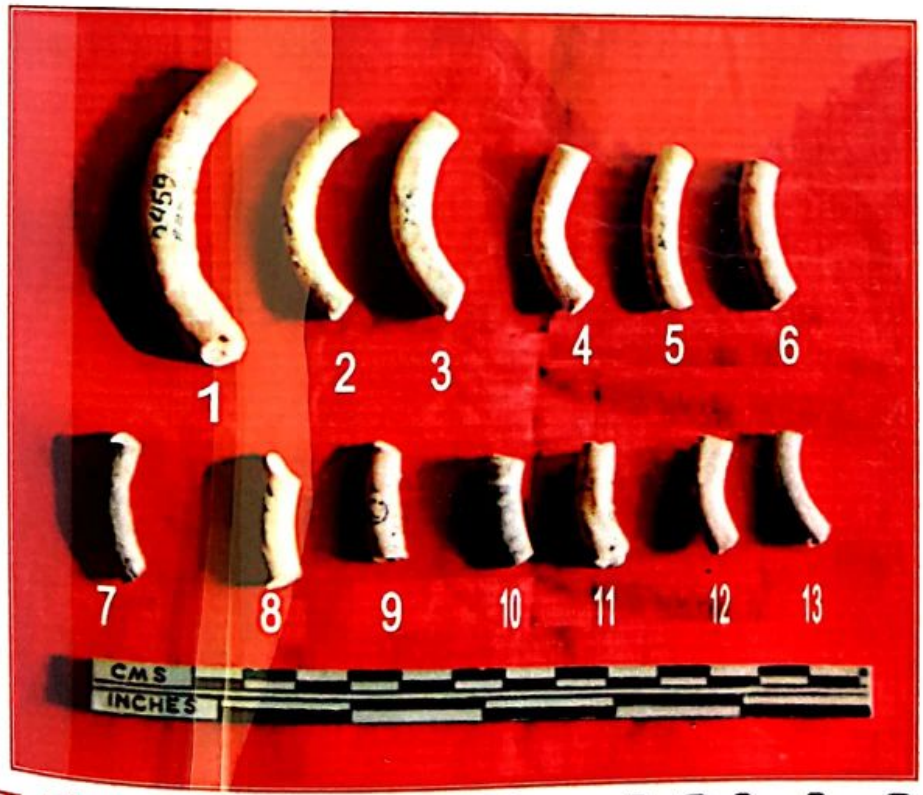

चित्र संख्या–77 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी की चूडियाँ

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–78 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा अग्रभाग

चित्र संख्या–79 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौपड़ का पाँसा पृष्ठभाग

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–80 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौकोर पाँसा अग्रभाग

चित्र संख्या–81 : ताम्रपाषाणकालीन पकी मिट्टी का चौकोर पाँसा पृष्ठभाग

Scanned by CamScanner

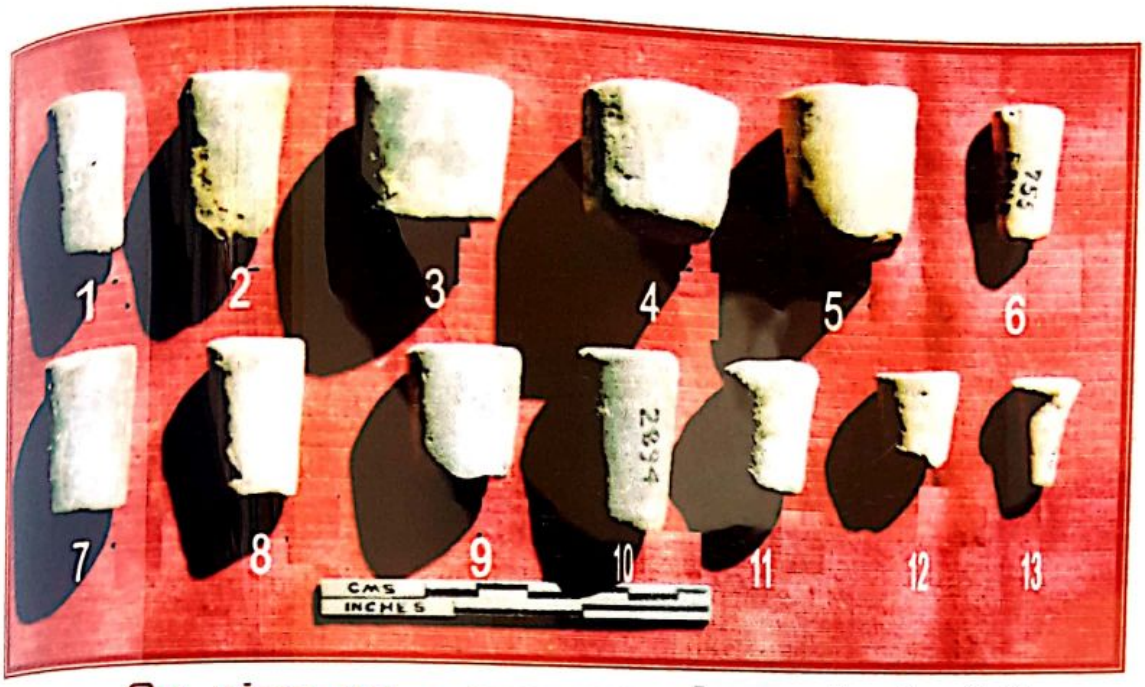

चित्र संख्या–82 : ताम्रपाषाणकालीन शतरंज के मोहरें

चित्र संख्या–83 : ताम्रपाषाणकालीन शतरंज के मोहरें

Scanned by CamScanner

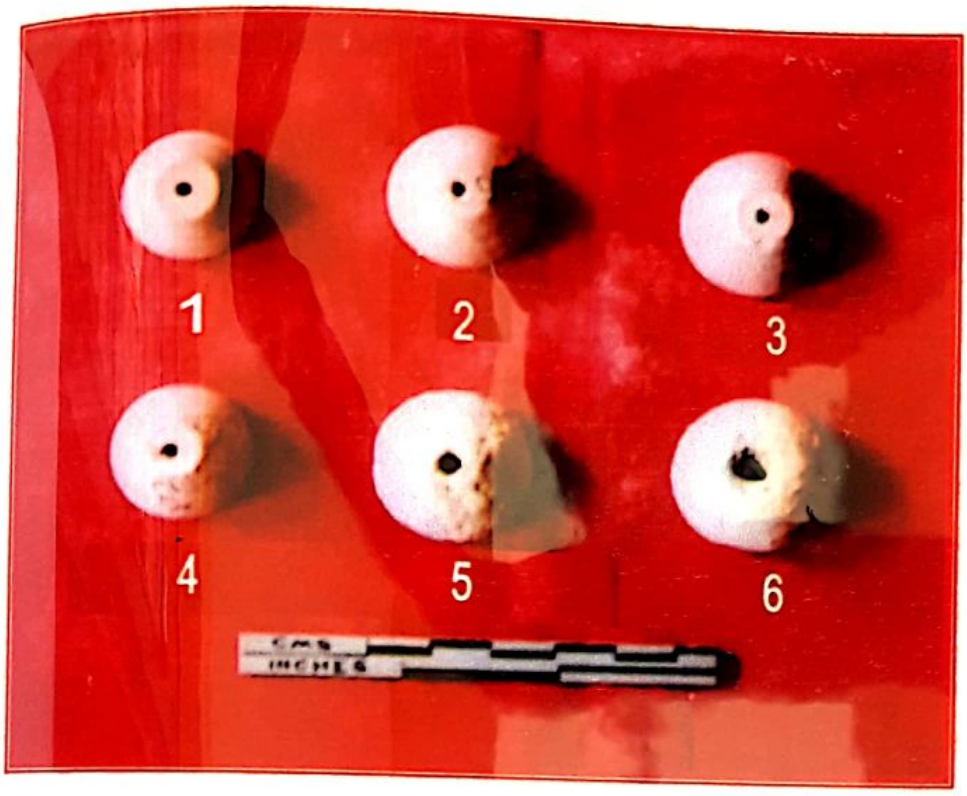

चित्र संख्या–84 : ताम्रपाषाणकालीन बच्चों के खेलने वाली छिद्रयुक्त गोलियाँ

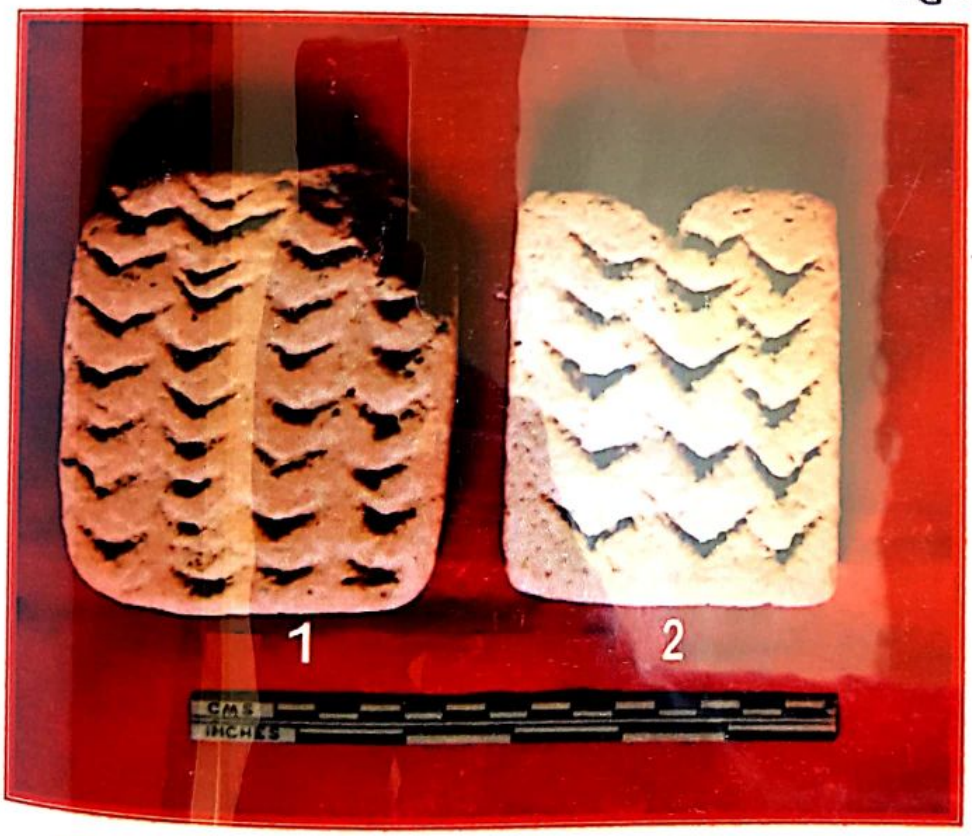

चित्र संख्या–85 : ताम्रपाषाणकालीन त्वचा–मर्दक

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–86 : ताम्रपाषाणकालीन ईंट

चित्र संख्या–87 : ताम्रपाषाणकालीन अग्रास्त्र हड्डी के बाणफलक

Scanned by CamScanner

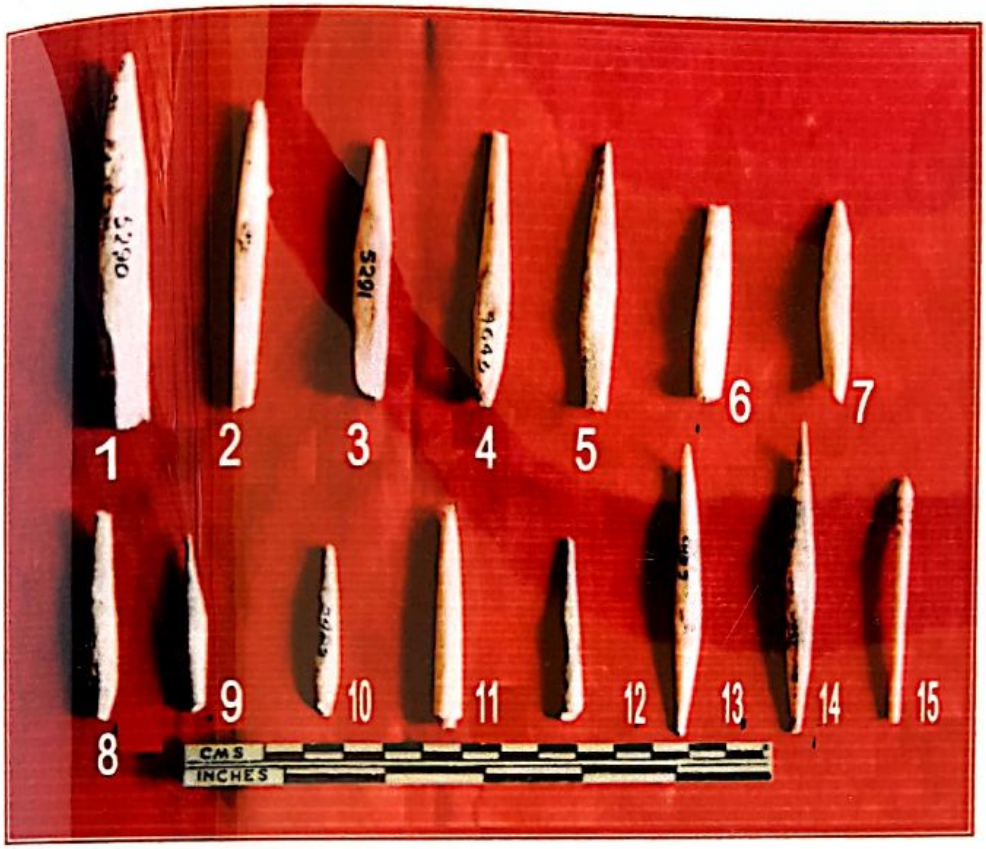

चित्र संख्या–88 : ताम्रपाषाणकालीन अस्थि बाणफलक

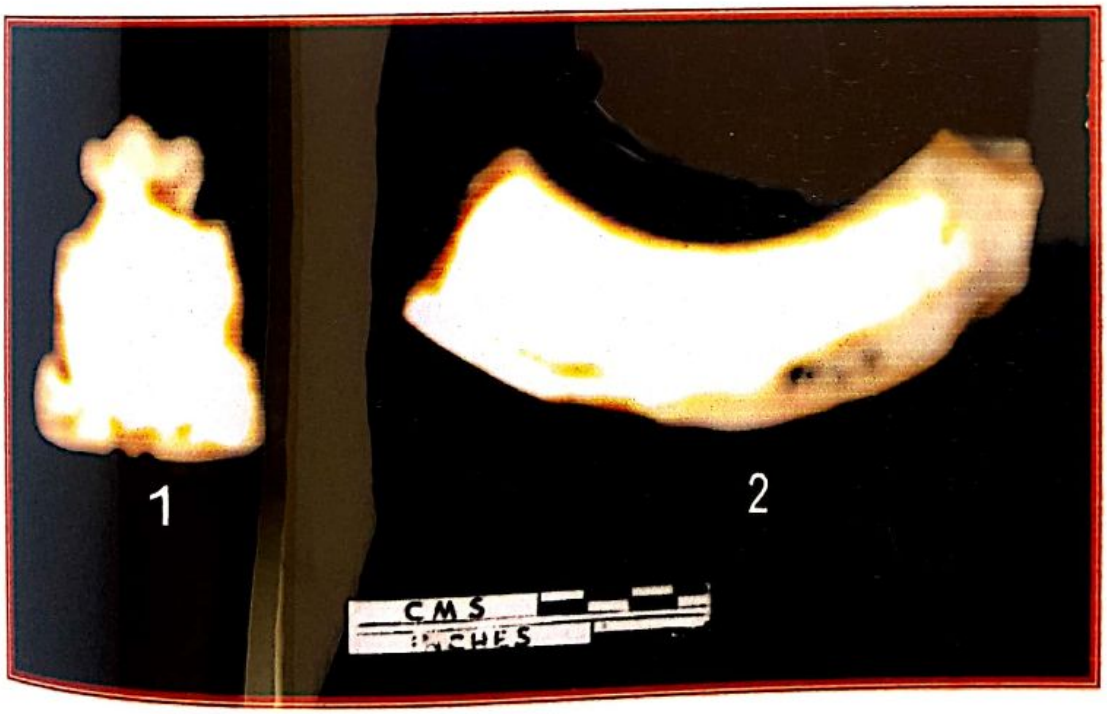

चित्र संख्या–89 : ताम्रपाषाणकालीन हाथी–दांत की चूड़ी व लटकन

Scanned by CamScanner

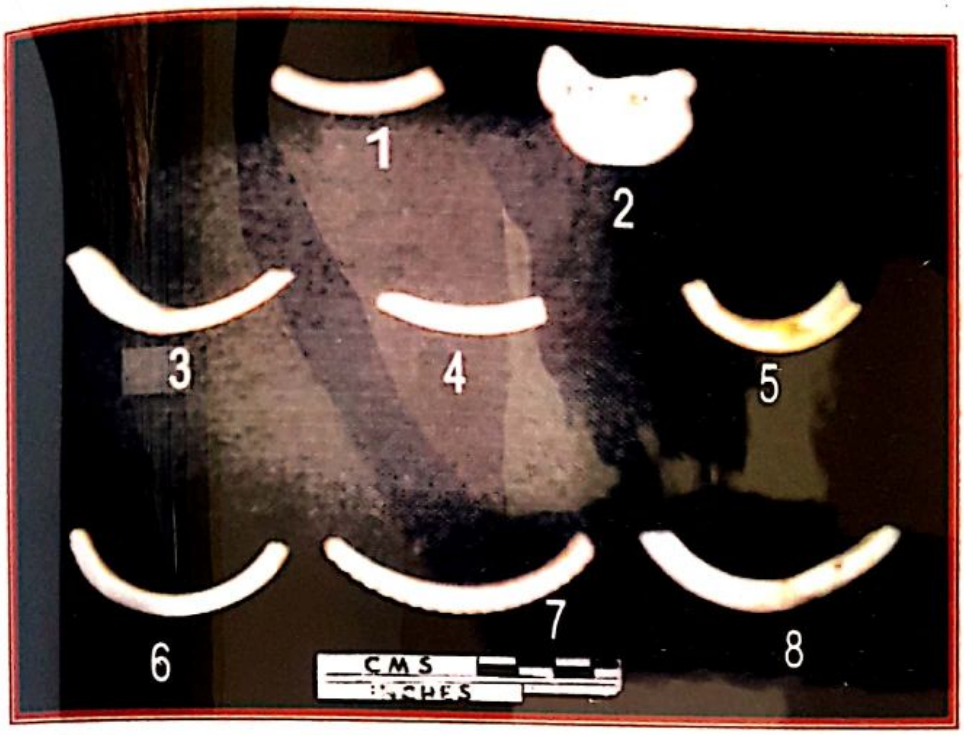

चित्र संख्या–90 : ताम्रपाषाणकालीन शंख हाथी–दांत की चूड़ियों के टुकड़े

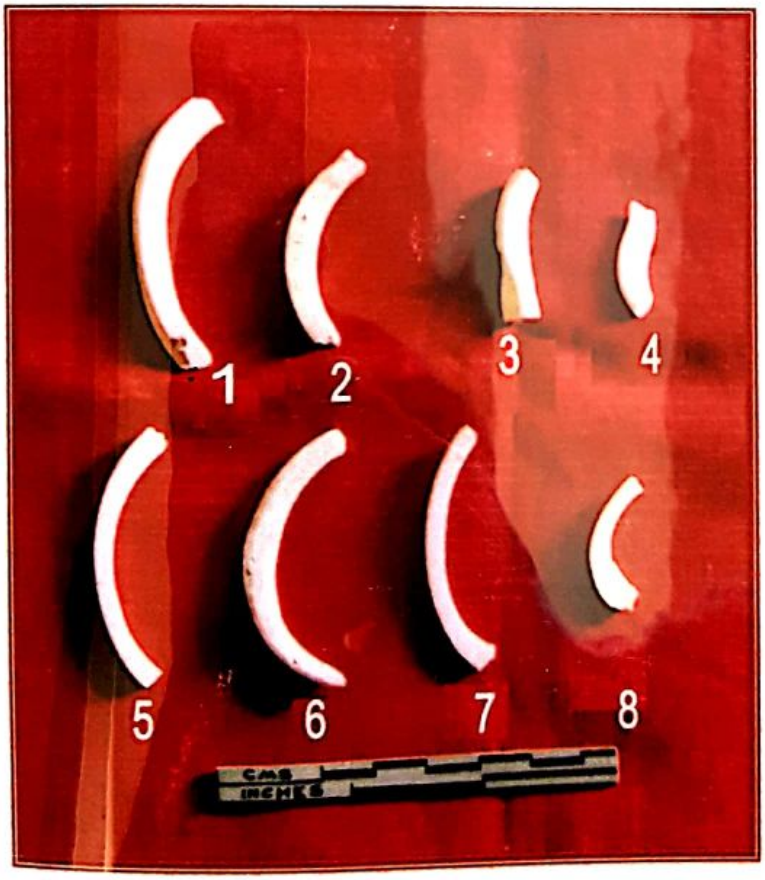

चित्र संख्या–91 : ताम्रपाषाणकालीन शंख हाथी–दांत की चूड़ियों के टुकड़े

Scanned by CamScanner

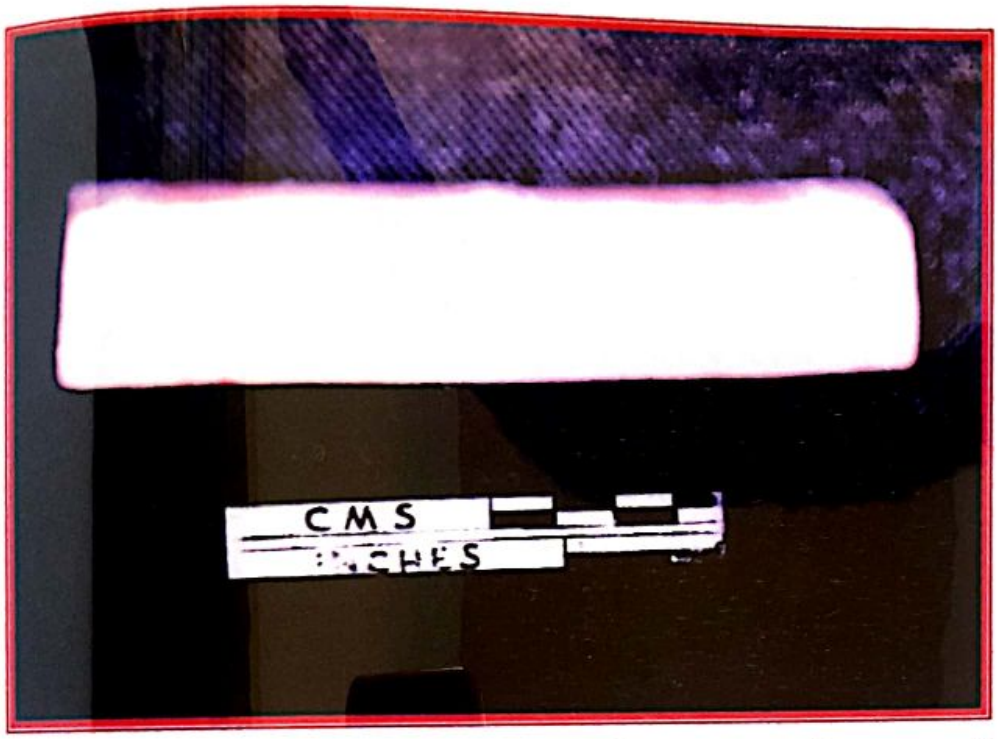

चित्र संख्या–92 : ताम्रपाषाणकालीन हाथी–दांत का चौपड का पाँसा

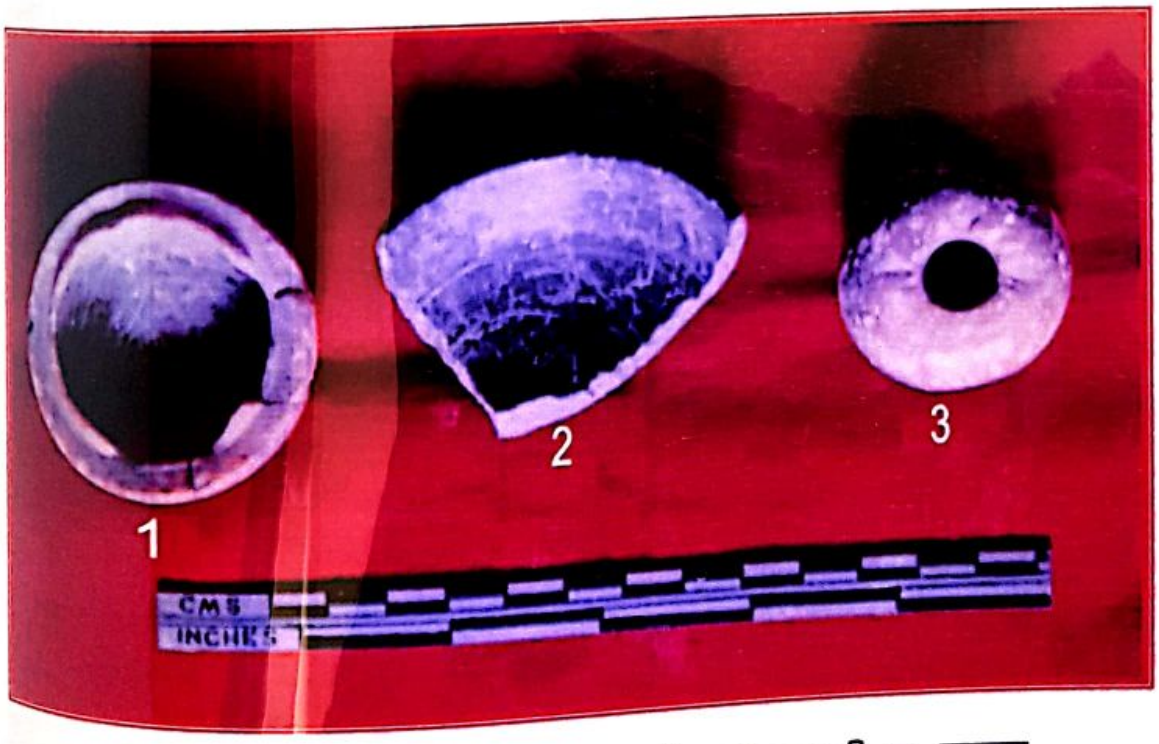

चित्र संख्या–93 : ताम्रपाषाणकालीन श्रृंगारदानी व मनका

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–94 : ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके

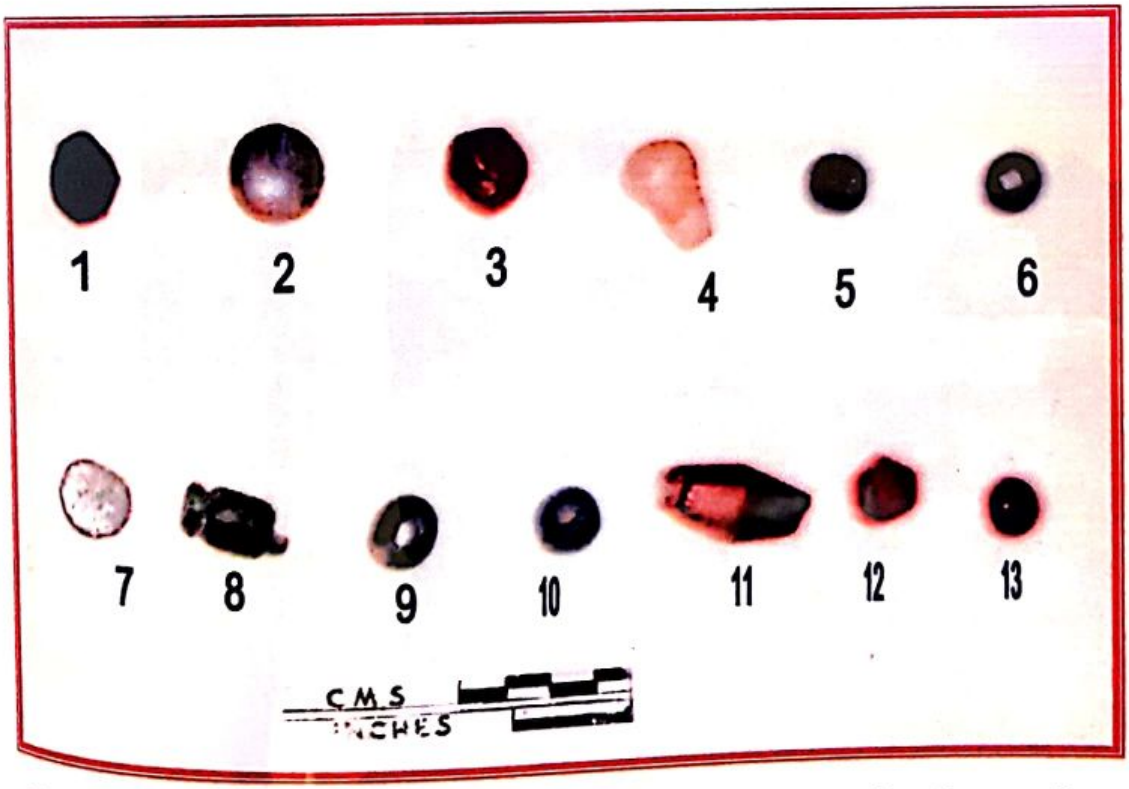

चित्र संख्या–95 : ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–96 : ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके

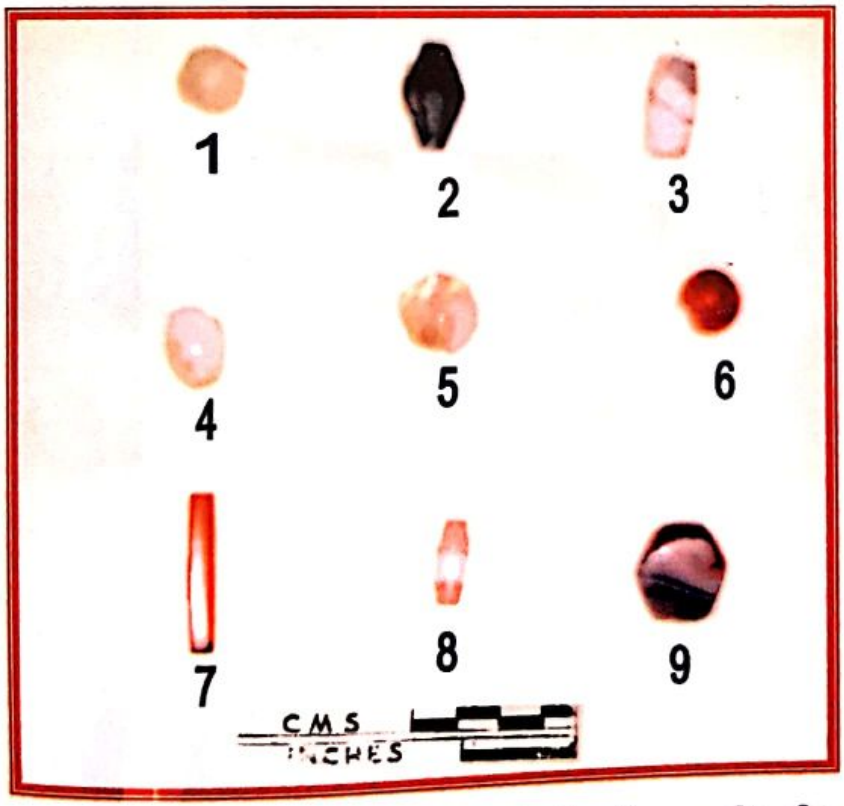

चित्र संख्या–97 : ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–98 : ताम्रपाषाणकालीन अर्धकीमती पत्थरों के मनके

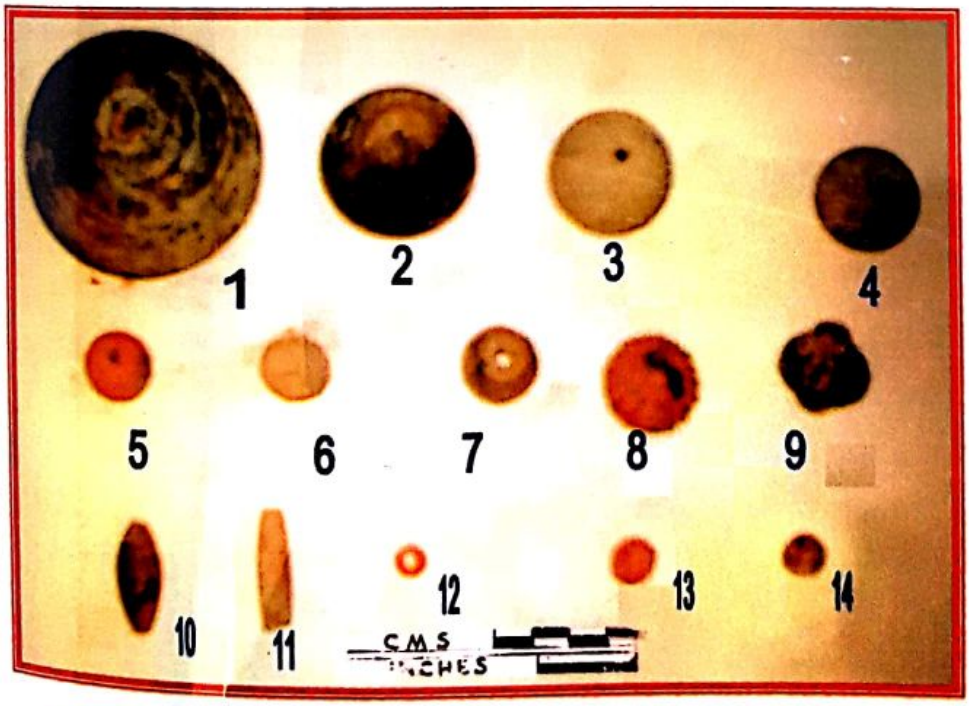

चित्र संख्या–99 : ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी के मनके

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–100 : ताम्रपाषाणकालीन मिट्टी के मनके

चित्र संख्या–101 : ताम्रपाषाणकालीन स्तम्भगर्त

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–102 : ताम्रपाषाणकालीन ईंटे (उत्खनन में प्राप्त)

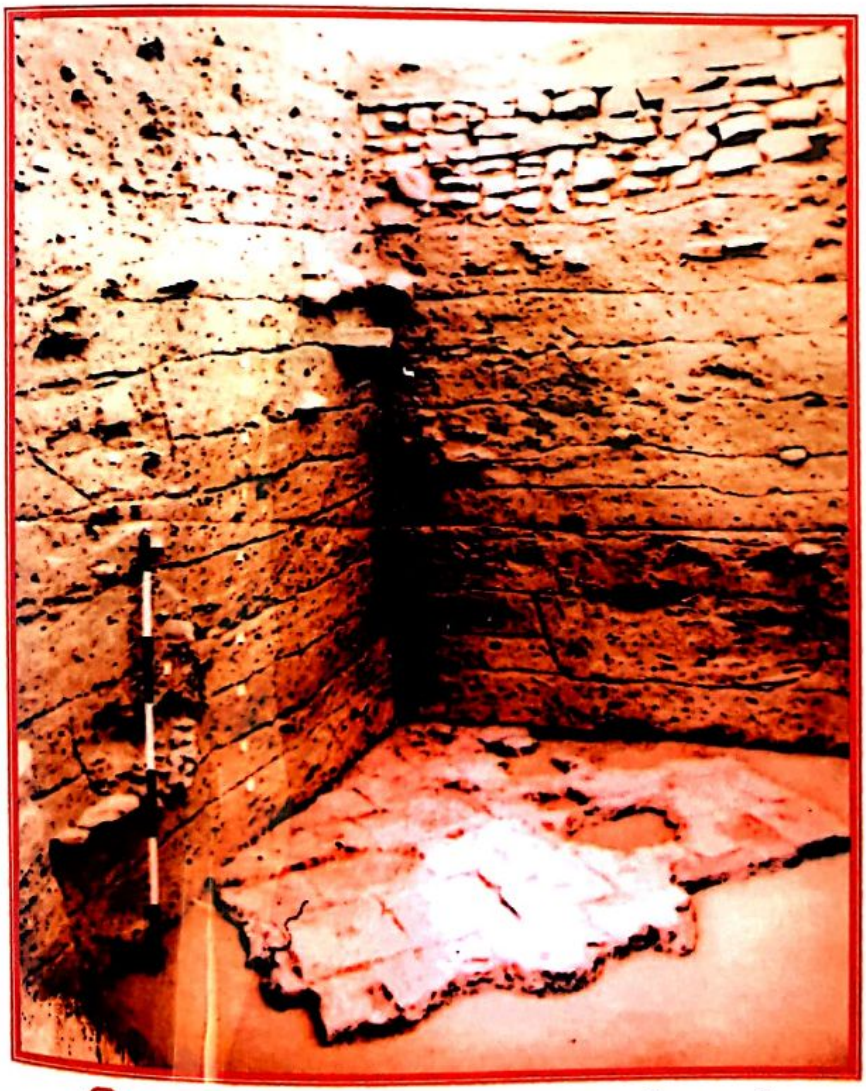

चित्र संख्या–103 : ताम्रपाषाणकालीन फर्श

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–104 : ताम्रपाषाणकालीन अग्निकुण्ड

चित्र संख्या–105 : ताम्रपाषाणकालीन जुड़वा चुल्हे

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–106 : ताम्रपाषाणकालीन स्वर्ण पत्तर

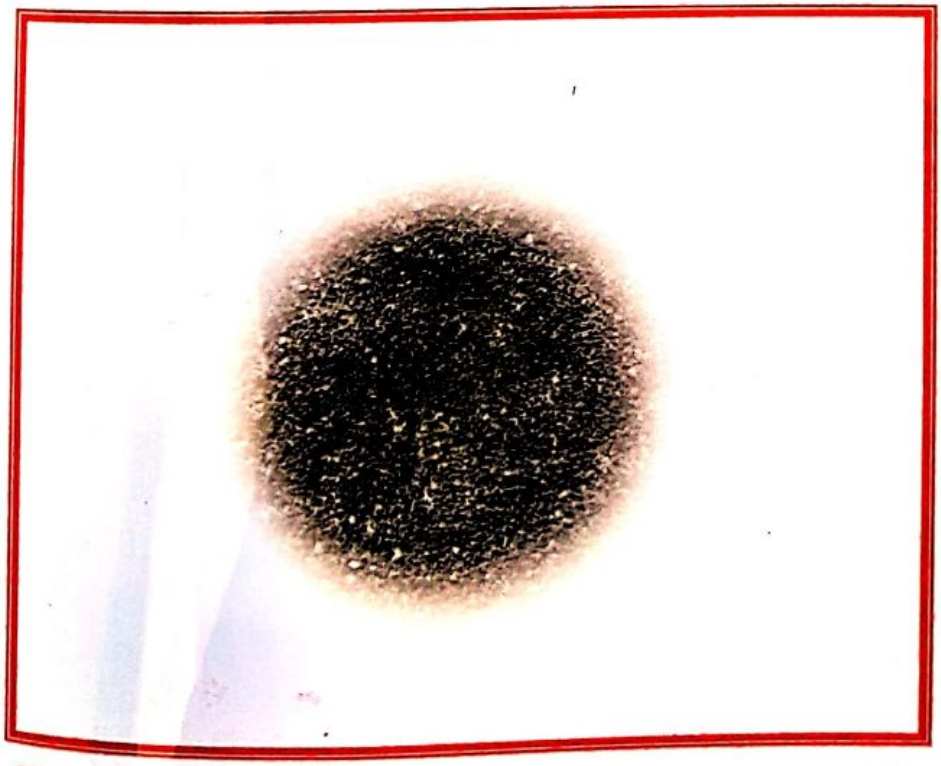

चित्र संख्या–107 : ताम्रपाषाणकालीन जले अनाज के दानें

Scanned by CamScanner

चित्र संख्या–108 : नवपाषाणकालीन घोड़े को दफनाने के साक्ष्य

चित्र संख्या–109 : नवपाषाणकालीन घोड़े को दफनाने के साक्ष्य

Scanned by CamScanner

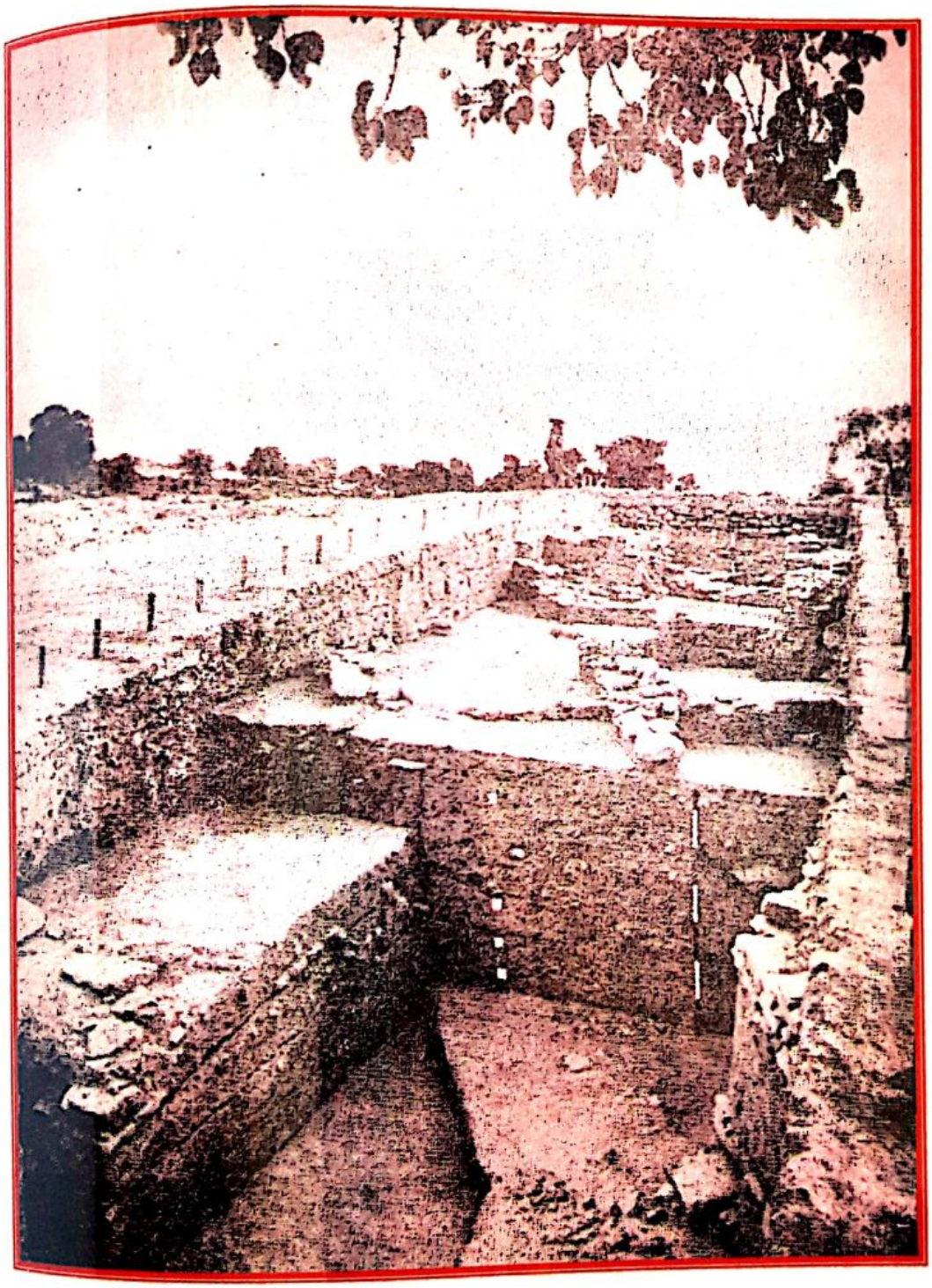

चित्र संख्या–110 : एरण उत्खनन का सामान्य दृश्य

Scanned by CamScanner

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग,

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

2007

Scanned by CamScanner